JAINA INSCRIPTIONS.

(Containing Index of Places, Glossary of Names of Acharyas, &c.)

Collected & Compiled

BY

Puran Chand Nahar, M.A., B.L., M.R.A.S.,

Vakil, High Court, Calcutta; Member, Asiatic Society of Bengal; Bihar & Orissa Research Society; Bhandarkar Institute, Poona; Jain Swetambar Education Board, Bombay; &c. &c.

PART II.

(With Plates.)

1927.

Price Rs. 5/-

PRINTED BY
Turantlal Mishra
at the
VISWAVINODE PRESS,
48, Indian Mirror Street,
Calcutta.

Published by the Compiler
48, Indian Mirror Street,
CALCUTTA.

जैन लेख संग्रह ।

कतिपय चित्र और आवश्यक तालिकायों से युक्त

द्वितीय खंड ।

संग्रह कर्त्ता

पूरण चंद नाहर, एम० ए०, बी० एल०,

वकील हाईकोर्ट, रयाल एसिआटिक सोसाइटी, एसियाटिक सोसाइटी
बंगाल, रिसार्च सोसाइटी बिहार–उड़ीसा आदिके मेम्बर,
विश्वविद्यालय कलकत्ता के परीक्षक इत्यादि २

कलकत्ता ।

वीर सम्वत् २४५३

मूल्य — ५)

Jalmandir at Tirtha Pawapuri (North view)

आज बड़े हर्ष के साथ "जैनलेख संग्रह" का दूसरा खंड पाठकों के सन्मुख उपस्थित करता हूं। इसका प्रथम खंड प्रकाशित होने के पश्चात् द्वितीय खंड शीघ्र ही प्रकाशित करने की इच्छा रहते हुए भी कई अनिवार्य कारणों से विलम्ब हुआ है। न तो प्रथम खंड में कोई विस्तृत भूमिका दी गई थी और न यहां ही लिख सके।

जैनियों का खास करके हमारे मूर्त्तिपूजक श्वेताम्बर भाइयों का धर्मप्राण शताब्दियों तक बराबर आचार्यों के उपदेश से देवालय और मूर्त्तिप्रतिष्ठा की ओर कहां तक अग्रसर था और वर्त्तमान समय पर्य्यंत कहां तक है यह "लेख संग्रह" से अच्छी तरह ज्ञात हो सकता है। ऐतिहासिक दृष्टि से जिस प्रकार उपयोगी समझ कर प्रथम खंड प्रकाशित किया था यह खंड भी उसी इच्छा से विद्वानों की सेवा में उपस्थित करता हूं।

सन् १९१८ में प्रथम खंड प्रकाशित होनेपर प्रसिद्ध ऐतिहासिक श्रद्धेय श्रीमान् राय बहादुर पं० गौरीशंकर ओझा जी ने पुस्तक भेजने पर उस संग्रह के उपयोगिता के विषय में जो कुछ अपना वक्तव्य प्रकट किये थे उसका कुछ अंश नीचे उद्धृत किया जाता है। उक्त महोदय अजमेर से ता० २६-१०-१९१८ के पत्र में लिखते हैं कि :—

"आपके जैनलेख संग्रह को आदि से अंत तक पढ़ गया हूं। आपका यह ग्रन्थ इतिहासवेत्ताओं तथा जैनसंसार के लिये रत्नाकर के समान है। अंत में दी हुई तालिकायें भी बड़े काम की बनी हैं उनसे भिन्न २ गच्छों के अनेक आचार्यों के निश्चित समय का पता लगता है, यदि इसके दूसरे भाग भी निकलेंगे तो जैन इतिहास के लिये बड़े ही काम के होंगे"।

प्रथम खंड में साधारण सूची के अतिरिक्त "प्रतिष्ठास्थान", "श्रावकों की ज्ञाति-गोत्रादि" और "आचार्यों के गच्छ और संवत्" की सूची दी गई थी। इस बार इन सभोंके शिवाय राजा महाराजाओं के नाम, जो इन लेखों में पाये गये हैं, उनकी तालिका भी समय २ पर आवश्यक होती है समझ कर इस खंड में दी गई है।

मैं प्रथम खंड की भूमिका में कह चुका हूं कि केवल ऐतिहासिक दृष्टि से यह संग्रह प्रकाशित हुआ है। जिस समय यह खंड छप रहा था उसी समय श्री राजगृह तीर्थ में श्वेताम्बर दिगम्बरों में मुकद्दमा छिड़ गया था पश्चात् केस आपस में तै हो चुका है अतएव इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु मुझे बड़े खेद के साथ लिखना पड़ता है कि दिगम्बरी लोग मुझे ऐसे कार्यमें उत्साहित करने के बदले स्वार्थवश उक्त मुकद्दमे में इजहार के समय मेरे जैनलेख संग्रह पर हर तरह से हैरान किये थे।

हाल में बेलोग मुद्दई होकर श्री पावापुरी तीर्थ पर जो मुकद्दमा उपस्थित किये हैं उस में मेरा भी मुद्दालहों में नाम रख दिये हैं। मैं प्रथम से ही धार्म्मिक झगड़ों से अलग रहता था परन्तु जब सर पर बोझ पड़ा है तो उठाना ही पड़ेगा। दुःख इसी बात का है कि शासननायक वीर परमात्मा के परम शान्तिमय निर्वाणस्थान में मुकद्दमेबाजी से अशांति फैलाना अपने जैनधर्म पर धब्बा लगाना है। मैं इस समय इस संबंध में कुछ मतामत प्रकाश करना अनुचित समझता हूं। इसी वर्ष के अक्षयतृतीया के दिन मेवाड़ के अन्तर्गत श्री केशरियानाथजी तीर्थ में मंदिर के ध्वजादंड आरोपन के उपलक्ष में जो बीभत्स कांड हुआ है वह भी दूसरा दुःख का समाचार है। काल के प्रभाव से इस तरह प्रायः हमलोगों के सर्व धर्मस्थान और तीर्थों में अशांति देखने में आती है।

ई० सम्वत् १९१४।१५ से मुझे ऐतिहासिक दृष्टि से जैन लेखों के संग्रह करने की इच्छा हुई थी तबसे अद्यावधि संग्रह कर रहा हूं और उन सब लेखों को जैसे २ सुभीता समझता हूं प्रकाशित करता हूं। यद्यपि मैंने इस संग्रह-कार्य के लिये तन, मन और धन लगाने में त्रुटि नहीं रक्खी है फिर भी बहुत सी भूलें रह गई हैं। राय बहादुर पं० गौरीशंकर ओझाजी मुझे प्रथम खंड के त्रुटियों पर अपना मन्तव्य सूचित किये थे जिस कारण मैं अन्तःकरण से उनका आभारी हूं और उस पर मैंने विशेष ध्यान रखने की चेष्टा की है। यह लेख संग्रह का कार्य बहुत कठिन और समय सापेक्ष है, कई जगह समय की अल्पता हेतु और कई जगह मेरे ही भ्रम से जो कुछ पाठ में अशुद्धियां रह गई हैं उनके लिये मैं पाठकों से क्षमाप्रार्थी हूं तथा ऐसी २ त्रुटियां रहने पर भी विद्वानों की तथा अनुसंधित्सूसज्जनों को उस ओर दृष्टि आकर्षित करने की इच्छा से इन लेखों को प्रकाशित करने का साहस किया हूं।

प्रथम खंड में १००० लेखों का संग्रह प्रकाशित हुआ था। उनमें जो कुछ नंबर छूट गये थे वे पुस्तक के अंत में दे दिया था। इस खंड में १००१ से २१११ तक याने ११११ लेख प्रकाशित किये जाते हैं। इस वार भी भ्रमवश २ नंबर छूट गये हैं। नं० ११८७ पुस्तक के अंत में छप गया है और नं० १६९० यहां दिया जाता है।

श्वेताम्बरों के प्रसिद्ध स्थान जेसलमेरु दुर्ग (जेसलमेर) के मंदिर के लेखों को संग्रह करने की अभिलाषा बहुत दिनों से थी। वहां भी क्षेत्रस्पर्शना हो गई है और निकटवर्त्ती " लोद्रपुर (लोद्रवा) " नामक प्राचीन स्थान भी दर्शन किया है। आगामी खंड में वहां के लेखों को प्रकाशित करने की इच्छा रही।

नं० ४८ इण्डियन मिरर ष्ट्रीट,
कलकत्ता।
सं० १९८४-ई० सं० १९२७

निवेदक
पूरण चंद नाहर।

[1690] *

संवत् १६७१ वर्षे आगरा वास्तव्य......कल्याण सागर सूरिः......।

---

* यह लेख पटने के पास 'फतुहा' के दिगम्बर जैन मंदिर में श्वेत पाषाण की खंडित श्वेताम्बर मूर्त्ति के चरण चौकी पर है।

सूचीपत्र।

स्थान	पत्रांक

कलकत्ता।

अजिमगंज — मुर्शिदाबाद।

सैंतीया — बीरभूम।

रंगपुर — उत्तर बंग।

श्री सम्मेतशिखर तीर्थ।

मधुवन।

श्री पावापुरी तीर्थ।

श्री राजगृह तीर्थ।

श्री क्षत्रीकुंड तीर्थ।

लछवाड़।

स्थान	पत्रांक

पटना ।

बनारस ।

चंद्रावती ।

अयोध्या ।

नवराई ।

फैजाबाद ।

लखनउ ।

देहली ।

मथुरा ।

आगरा ।

स्थान	पत्रांक

बेरावल—काठियावाड़।

ऊना—काठियावाड़।

गाणेसर—गुजरात।

प्रभासपाटण—गुजरात।

खंभात—गुजरात।

पोसिना—मरुधर।

बम्बई।

सिरपुर—सी० पी०।

रायपुर—सी० पी०।

हैदराबाद—दक्षिण।

मद्रास।

प्रतिष्ठा स्थान ।

प्रतिष्ठा स्थान		लेखांक	प्रतिष्ठा स्थान		लेखांक
सवाई जयनगर (जैनगर)	...	११७८,१२१९,१४४१	सोरोही	...	१२८३,१३३९,१४६५
सहाजगपुर	...	... १७७८	सीहा	...	... १४७७
सहुआला	...	११९३,१७५३	सुआउलपुर	...	... ११७३
साकर	...	... ११९८	सुद्रोयाणा	...	... १२६९
साचुरा	...	... १७२९	सुरमाणपुर	...	... १७०७
सावलटन	...	... ११९५	साजात	...	... १३२०
साहगञ्ज	...	... १४९९	स्तम्भतीर्थ (खंभात)	...	११६६,१२१५,१७५९, १७९३,१७९४,१९४८
सांतपुर	...	... १३९८	स्तम्भतीर्थ बंदिर	...	१७९९,१८००
सिद्धक्षेत्र	...	... १४८६	स्यातराय नगर (वाग्वरदेश)	...	... १७६५
सिद्धपुर	...	१३३६,१४४४	स्थिराद्र	...	... २०९७
सिंहपानाय	...	... १४२६	हालावाड़ा	...	... २०९४
सिंहुद्रड़ा	...	... १७७६	हाविल ग्राम	...	... २१०९
साणुरा	...	... १०९१	हुगली	...	... १८४७
सातापुर	...	... १०११	हैदराबाद (दक्षिण)	...	... २०६१
सोपोर	...	... १८२९			
सारूंज	...	... १७५१			

राजाओं की सूची।

संवत्	नाम	स्थान	लेखांक	संवत्	नाम	स्थान	लेखांक
१६३३	अकबर, सुरत्राण		१७८२	१७१३	अकब्बर, पातिसाहि		१७९७
१६५२	अकब्बर, पातिसाहि		१७९६	१४९१	कुंभकर्ण, राणा	मेवाड़	२००६
१६६१	,, ,,		१७९४	१४९४	कुंभकर्ण, भूपति	देवकुलपाटक	१९५८
१६७०	अकबर, सुरत्राण		१६२८	१६९३	जगत्सिंह, राणा	उदयपुर	[illegible]

संवत्	नाम	स्थान	लेखांक	संवत्	नाम	स्थान	लेखांक
१८०१	जगतसिंह, महाराणा	उदयपुर	१११५	११५०	महीपाल	,,	१४२६
१५६६	जगमाल, महाराजाधिराज	अचलगढ	२०२७	११५०	मूलदेव	गोपाचल	१४२६
१५४८	जशसिंघ, राजा		२०३६	११५०	मंगलराज	,,	१४२६
१६७८	जसवंतसिंहजी, जाम,	नवानगर	१७८१	१२०२	रणसिंह, मिहरराज	टिंवान	१७७७
१६७१	जहांगीर, पातिसाह	आगरा दुर्ग	१५८०-८१-८२	१७६८	राघव, राजा	देवकुलपाटक	२००८
१६७१	,, ,,	आगरा	१५८३-८४	१६६७	लक्षराज, जाम	नवानगर	१७८१
१६७१	जहांगीर, पातिसाह सवाइ सुरत्राण		१५७८-७९	१०३४	वज्रदाम, महाराजाधिराज		१४३१
१६७१	,, ,,	उग्रसेनपुर	१४५६	११५०	वज्रदाम	,,	१४२६
१६७४	जहांगीर साह,		१४६०	१२११	वस्तुपाल, महामात्य	अणहिल्लपुर	१७८८
१४६७	डुंगरसिंह, महाराजाधिराज	गोपाचल	१४२७	१५६२	बीकाजी, महाराजा राई	बीकानेर	१३५०
१५१०	,, ,,	गोपगिरि	१४२८	१६३३	शत्रुसल्ल, जाम	नवीननगर	१७८२
१५१०	डुंगरसिंहदेव, राजाधिराज	गोपाचल	१२३२	१६७६	शत्रुसल्य, जाम,	नवानगर	१७८१
१५२५	डुंगरसिंह, राउधर सायर	अर्बुदगिरि	२०२५	१६७१	शाहजहां		१५२०
१६६६	तेजसिंजी, राउल	वीरमपुर	१७१५	१८६३	सहादतअलि, नवाब	लखनऊ	१५२५
११५०	त्रैलोक्यमल्ल	,,	१४२६	१६८६	साहजांह, पादशाह		१७६५
११५०	देवपाल	गोपाचल	१४२६	१६८८	साहिजां, पातिसाह सवाइ	अर्गलपुर	१४५४
११५०	पद्मपाल	,,	१४२६	१६६८	साहजांह, पातिसाह		१६६७
१३६२	पृथ्वीचंद्र, महाराजाधिराज	चित्रकूट	१६५५	१८५६	सुरतसिंह, महाराज	बीकानेर	१३४६
१५४६	भीमसिंघ, रावल	मण्डासा	१०१५	११५०	सूर्यपाल	,,	१४२६
११५०	भुवनपाल	,,	१४२६	१५२६	सोमदास, राउल	डूंगरपुर नगर	२०२६
१५५२	मल्लसिंहदेव, महाराजाधिराज.	गोपाचल	१४२६	१६६६	हठीसिंहजी, महाराज	रामगढ दुर्ग	१८६६
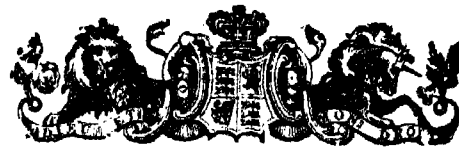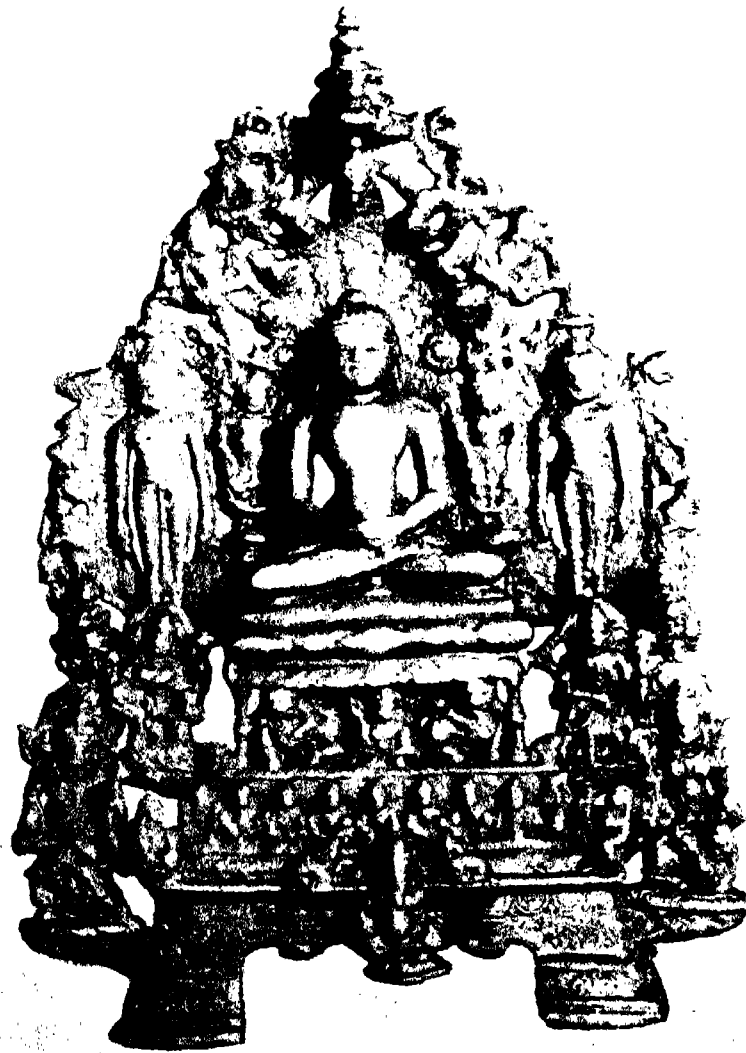
METAL IMAGE OF SHRI ADINATH
Dated, V. S. 1077, (A. D. 1020.)

JAIN INSCRIPTIONS.

जैन लेख संग्रह ।

दूसरा खण्ड ।

कलकत्ता ।

श्रीआदिनाथजी का देरासर ।

कुमारसिंह हाल—नं० ४६, इण्डियन मिरर स्ट्रीट ।

धातु की मूर्त्तियों पर ।

[1001] *

(१) पज्जक सुत अंब

(२) देवेन ॥ सं १०७७

[386] ×

(१) ब्रह्माल सत्क सं

---

* चित्र देखो । लेख पश्चात् भागमें खुदा हुआ है । यह प्राचीन मूर्त्ति भारतके उत्तर पश्चिम प्रान्त से प्राप्त हुई है । दोनों तर्फ कायोत्सर्ग की खड़ी और मध्यमें पद्मासनकी बैठी मूर्त्तियें हैं । सिंहासनके नीचे नवग्रह और उसके नीचे वृषभ युगल है, इस कारण मूल मूर्त्ति श्रीआदिनाथजी की और यक्ष यक्षिणी आदियों के साथ बहुत मनोज्ञ और प्राचीन है ।

× यह लेख प्रथम खण्डमें छपा था, पुनः जोधपुर निवासी पण्डित रामकर्णजी का यह संशोधित पाठ है । इसमें भी दोनों तर्फ कायोत्सर्गकी और मध्यमें पद्मासनकी मूर्त्ति है और गुजरात प्रान्तसे मिली है ।

(२) पंकः श्रिया वे सुन
(३) स्तु पुन्नक श्राद्धः सी
(४) लगल सूरि जक्तश्चन्द्र कु
(५) ले कारयामासः ॥
(६) संवतु
(७) १०७२

[1002]

संवत् १६४२ वर्षे पो० सु० १२ सोमे श्रीश्रजित बिंबं का० सा० नानू जुदिजाकेन प्र० श्रीहीरविजय सूरि ।

धातुकी चौविशी पर ।

[1003]

ॐ ॥ श्रीमन्निवृतगछे संताने चाम्रदेव सूरीणां । महणं गणि नामाद्या चेल्ली सर्व देवा गणिनी ॥ वित्तं नीतिश्रमायातं वितीर्य शुजवारया। चतुर्विंशति पट्टाकं कारयामास निर्मलं ॥

हीरालालजी गुलाबसिंहजी का देरासर—चितपुर रोड ।

धातु की चौविशी पर ।

[1004]

संवत् १५०६ वर्षे श्रीश्रीमालज्ञातीय दोसी डूंगर जार्या म्यापुरि सुत मुंजाकेन जार्या सोही सुत वीका युतेन श्रा० श्रेयसे श्रीसुविधिनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगछे श्रीश्रमरसिंह सूरि पट्टे श्रीहेमरत्नगुरूपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गन्धार वास्तव्य ॥ शुजं जवतु ॥श्रीः॥

लाजचन्दजी सेठ का घर देरासर—पुलिस हस्पिटेल रोड ।

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1005]

संवत् १६२३ ज्येष्ठ शुक्ल ५ महोपाध्याय युग प्र० विजयेन''''प्रतिष्ठितं जं । यु । प्र । ज श्रीजिनरंगसूरि राज्ये ।

[1006]

संवत् १७२७ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ७ रवौ खरतरगच्छीय महोपाध्याय रामविनयगणिना प्र० पार्श्वबिम्बं ।

स्फटिक के बिम्ब पर ।

[1007]

संवत् १८७७ मा । सु० १३ प्र । ख । श्रीजिनचन्द्र सूरिभिः ।

रौप्य के चरण पर ।

[1008]

जंगम युग प्रधान भट्टारक श्रीजिनदत्त सूरीश्वराणां पादुके । श्रीजिनकुशलसूरीश्वराणां पादुके । वीर संवत् २४४८ वि० १९७९ आषाढ शुक्ल १ चन्द्रे रांका गोत्रीय लालचन्द्र शेठेन आत्मकल्याणार्थं इमे पादुके निर्मापिते, श्री बृ० ख० ग० ज० युग० भट्टारक श्रीजिनचन्द्र सूरि विजयराज्ये श्रीमद्दिग्मण्डलाचार्य श्रीनेमिचन्द्रसूरि अन्तेवासि पं० श्रीहीराचन्द्रेण यतिना प्रतिष्ठापिते श्री शुभं भूयात् ।

इण्डियन म्युज़ियम—चौरङ्गी रोड ।

धातु की मूर्त्ति पर ।

[1009] *

संवत् १४५७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ श्रीमूलसंघे प्रतिष्ठाचार्य श्रीपद्मनन्दि देवोपदेशेन···· श्रीभीमदेव । भार्या महदे । सुत गणपति भार्या करमू ॥··········प्रणमति ।

अजिमगञ्ज—मुर्शिदाबाद ।

श्रीनेमनाथजीका मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1010]

संवत् १५१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ दिने सोमवारे ऊकेश वंशे लोढा गोत्रे सा० वीशल भार्या

* यह चौविशी हाल में यहां पर दिल्ली से आई है ।

भावलदे तत्पुत्र सा० कर्म्मा तद्भार्या कउतिगदे तत्पुत्र सा० सहसमल्ल श्रावकेण सपरिवारेण आत्मश्रेयोर्थं श्रीचन्द्रप्रभ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरि पट्टे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

[1011]

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ४ सोमे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि विरूआ भार्या मुक्ति सुत हीरा भार्या हीरादे सुत भावड़ कजूआभ्यां स्वपित्रोः श्रेयोर्थं श्रीधर्म्मनाथ विंबं पञ्चतीर्थी कारापितः प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागरसूरि पट्टे श्री विमल सूरिभिः ॥ सीतापुर वास्तव्यः ॥

[1012]

सवत् १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे ऊ० ज्ञातीय विद्याधर गोत्रे । सा० सूंमण । भा० सूमलदे । पु० वेला भा० बगू नाम्ना पु० सोमा युतयां स्वभ्रातृ पुण्यार्थं श्रीआदिनाथ विंबं का० प्र० वृहद्गच्छे घोकमीयावटंके (?) श्रीधर्म्मचन्द्रसूरि पट्टे श्रीमलयचन्द्र सूरिभिः । सोडाड ग्राम ॥

[1013]

॥ ए० ॥ संवत् १५२२ वर्षे आषाड़ सुदि ८ उकेशिज्ञातीय रूवेयता गोत्रे । सा० केसराज भार्या····रतनाकेन श्रेयसे श्रीसुमति बिंबं प्रतिष्ठितं धर्म्मघोषगच्छे श्रीसाधु···· ॥

[1014]

संवत् १७०६ व । ज्ये । शु० श्री राजनगरवास्तव्य । प्राग्वाटज्ञातीय वृहद्‌शाषायां सा० कृषभदास भा० ऊकु नाम्न्या श्रीनमिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छे । भ० । श्री ५ श्रीविजयानन्दसूरिभिः ॥ आचार्य श्री ५ श्रीविजयराजसूरि परिकरितैः ॥ श्रीरस्तु । भ ॥१॥

पाषाण की मूर्त्ति पर ।

[1015] *

संवत् १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्रीमूलसंघे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवा सा०···राज पापड़ीवाल सप्रणमति का० श्रीभीमसिंघ रावल । सहर मण्डासा ।

---

* धरणेन्द्र पद्मावती सहित श्रीपार्श्वनाथजीकी श्वेत पाषाणकी २ मूर्त्तियां पर एकही तरहके २ लेख हैं ।

सैंतीया (वीरभूम)

श्री आदिनाथजी का मन्दिर।

धातुकी पञ्चतीर्थी पर।

[1016]

संवत् १५४३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरौ श्रीउपसवंशे दो० वकूआ भार्या मेघू पुत्र जईता सुश्रावकेण भा० जीवादे भ्रातृ जटा सहितेन स्वश्रेयसे॥ श्रीअंचलगच्छेश्वर। श्रीजयकेसरि सूरीणामुपदेशेन श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन श्री पत्तने॥ ठः॥

रङ्गपुर (उत्तर बङ्ग)

श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का मन्दिर—माहीगञ्ज।

शिला लेख नं० १

[1017]*

(१) अत्यद्भुतं सज्ज्ञानसिद्धिदायकं भव्यांगिना मो
(२) दकरं निरन्तरं जिनालये रङ्गपुरे मनोहरे चन्द्रप्रभं
(३) नौमि जिनं सनातनं॥ १॥ संवत् १८९३ मि। माघ वदि १। र
(४) वौ श्रीरङ्गपुरे। भ। श्रीजिन सौभागा सूरिजी विजयी।
(५) राज्ये वा। आनन्दवल्लभगणेरुपदेशात् श्रीमक्षुदावा
(६) द बालूचर वास्तव्य दू। निहालचन्द तत्पुत्र बाबू इन्द्रच०
(७) न्द्रेण श्रीचन्द्रप्रभ जिनः प्रासादः कारापितः प्रतिष्ठापि
(८) तश्च। विधिना॥ सतां कल्याण वृद्ध्यर्थम्॥
(९) श्रीरस्तुः॥ १॥

---

* यह शिलालेख श्याम वर्णके पत्थर पर लंबाई इञ्च-१४ चौड़ाई इञ्च-६ सभामण्डप के दक्षिण तर्फ की दीवार पर लगा हुआ है।

शिला लेख नं० २

[1018] *

(१) अत्यद्भुतं सज्ञानसिद्धिदायकं भव्यांगिना
(२) मोक्षकरं निरन्तरं जिनालये रङ्गपुरे मनोहरे चं
(३) द्रप्रजं नौमि जिनं सनातनं ॥ १ ॥ संवत् १९
(४) ३२ शाके १७९७ मिति आषाढ़ सुदि ९ चन्द्रवासरे
(५) रङ्गपुरे । भ । श्रीजिनहंस सूरीजी विजे राज्ये ॥ श्री
(६) हंसविलास गणि तत्शिष्य श्री कनकनिधान मुनि
(७) रुपदेशेन । श्रीमक्षुदावाद बालूचर वास्तव्य ॥
(८) दूगड़ इन्द्रचन्द्रजी जीर्णोद्धार कारापितं ॥ नाहटा मो
(९) जीरामजी तत्पुत्र नाहटा गुलाबचन्दजी तत्पुत्र इन्द्र
(१०) चन्द्रजी मारफत श्री चन्द्रप्रभ जिन प्रासादस्य सिषरं
(११) नवीन रचिता वेदका नवीन निजद्रव्यै कारपितं ॥ प्रति
(१२) ष्ठितं विधिना सतां कल्याण वृद्ध्यर्थम् ॥ १ ॥
(१३) ॥ मिस्तरी षोलाराम सिलावट लालू मक्सूदका

मूल नायक की पाषाण की मूर्त्ति पर ।

[1019]

संवत् १८७३ वर्षे····सुदि दिने····श्रीचन्द्रप्रभ विंबमिदं प्रतिष्ठितं भ० श्रीजिनहर्ष सूरि कारापितं····शीलचन्द्रेन । बालूचर मध्ये ।

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1020]

संवत् १९३६ मिती आ०·········शुक्रवारे यु । प्र० श्री·········जी विजयराज्ये श्री शान्ति जिन कारापितं आणन्दवल्लभजी तत् शिष्य·········प्रतिष्ठितं ।

---

* यह मिर्जापुरी पत्थर पर खुदा हुआ न० १ के समान साइज का बायें तर्फ दीवार पर लगा हुआ है ।

[1021]

सं० १९३६····सौभाग्यसूरिजी विजय राज्ये नाहटा मौजीरामजी तत्पुत्र गुलाबचन्दजी श्री आदिजिन कारापितं श्री आणन्द······।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1022]

सं० १९२० मि० फा० कृ० २ बुधे सा० प्रतापसिंहजी डुगड़ भार्या महताब कुँवर श्री श्रेयांस जिन बिंबं कारापितं।

[1023]

सं० १९२० मि: फा० कृ० २ बुधे सा० प्रतापसिंह भार्या महताब कुँवर श्री अभिदत्त २२ जिन बिंबं का०।

चौविशी पर।

[1024]

संवत् १७८१ मिती आषाढ़ सुदि १३ कारितं चोरवेड़ीया सा० सांवल पतिना॥ प्रतिष्ठितं उ० श्री कर्पूरप्रिय गणिभिः।

पंचतीर्थियों पर।

[1025]

सं० १५१३ व० ज्येष्ठ वदि ११ उके० ज्ञा० कोठारी गोत्रे सा० मफुणा भा० काउ पु० नेता डूंगर नेताकेन भा० नेतादे स० श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारि० प्र० श्रीसंडेर गच्छे श्री ईश्वर सूरिभिः

[1026]

संवत् १५५७ वर्षे पोष सुदि १५ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० सायर भा० रत्नादे पु० सा० मालाकेन भा० हांसू पुत्र गोइन्दादि कुटुम्बयुतेन निज श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री हेमविमल सूरिभिः॥ श्रीः॥

दादाजी का मन्दिर—माईगञ्ज ।

पाषाण के चरण पर ।

[1027]

संवत् १८७४ रा वर्षे जेठ मासे शुक्ल पक्षे १० तिथौ बुधवासरे श्री चन्द्रकुलाधिप । बृहत् श्री खरतरगच्छे जंगम युगप्रधान भट्टारक । श्री १०८ श्री जिनदत्त सूरिजी श्री १०८ श्री जिनकुशल सूरीणां चरण स्थापितं । उ । श्री रत्नसुन्दरजी गणि उपदेशात् साह श्री डूगड़ बुधसिंहजी तत्पुत्र । बाबू श्री प्रतापसिंहजी कारापितं ॥ श्रीसङ्घ हितार्थम् । जङ्गमयुगप्रधान भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिजी विजय राज्ये श्रीरस्तु ॥ श्रीकल्याणमस्तुः ॥

उदयपुर (मेवाड़)

श्री शीतलनाथस्वामी का मन्दिर ।

[1028] *

ॐ ॥ संवत् १६९३ वर्षे कार्त्तिक वदि ॥ सोमवासरे उदयपुर राणा श्री जगतसिंह राज्ये तपागच्छे श्री जिन मन्दिरे श्री शीतलजिन बिंबं पित्तलमय परिकर कारितः आसपुर वास्तव्य वृद्धशाखा प्राग्वाट ज्ञातीय पं० कान्हा सुत पं० केसर भार्या केसर दे तत्सुत पं० दामोदर स्वकुटुम्बयुतैः ॥ भट्टारक श्री विजयदेव सूरीश्वर तत्पट्टप्रभाकर आचार्य श्री विजयसिंह सूरीश्वर निदेशात् सकलसङ्घयुते पण्डित श्री मतिचन्द्र गणिभिः वासक्षेपः श्री सकलसङ्घस्य कल्याणं भूयात् ॥

धातु की चौविशी पर ।

[1029]

संवत् १४८९ वर्षे जे० व० ११ प्राग्वाट दो० सूरा भा० पोमी सुत दो० आसाकेन भा० रूपिणि सुत राउल माणिकलाल जोगादि कुटुम्बयुतेन स्वभ्रातृ गोला स्वसुत सारङ्ग श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० तपागच्छनायक भट्टारक प्रभु श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥ वीसलनगर वास्तव्यः ॥

* मूल बिंब श्वेत पाषाण का प्राचीन है, लेख मालूम नहीं होता ; पश्चात् धातु की परकर बनी है उस पर यह लेख है ।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1030]

सं० १५१७ वर्षे पोष वदि ८ रवौ प्राग्वाट ज्ञा० सा० डूंगर जा० सुहासिणि पुत्र लषम सिंहेन जा० सोनाई पुत्र नगराजादि कुटुब युतेन स्वपितुः श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं। प्रतिष्ठितं तपागछे श्री रत्नशेखर सूरिभिः अहिमदाबाद वास्तव्यः।

[1031]

सं० १५५७ वर्षे मार्गशिर सुदि ए शुक्रे श्री नाणा वालगछे उस० कावू गोत्रे का० सोंगा भा० सोंगलदे पु० धूलाकेन भार्या पूजी सहितेन पूर्वज पुण्यार्थं श्री शीतलनाथ बिम्बं का० श्री महेन्द्र सूरिभिः॥

पञ्चतीर्थी और मूर्त्तियों पर। *

[1032] ×

१ सं० ७८ गे० पमा विनिगो बाज० लृगापति कारितं।

[1033]

ॐ॥ संवत् ११ए६ माघ सुदि १२ गुरौ सहज मत्साम्बा श्री ऋषभनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं आमदेव सूरिभिः॥

[1034]

संवत् १२५८ जेष्ठ सुदि १० रवौ। श्रे० चाएसीहेन निज कुटुम्ब सहितेन पार्श्वनाथः कारितः प्रतिष्ठितः श्री देवभद्र सूरिभिः।

[1035]

सं० १२६२ फागुण सुदि १० रवौ श्रे० प्रवदेव सुत वीराणसदेव श्रेयोर्थं का० प्र० श्री भावदेव सूरिभिः।

---

* ये मूर्त्तियां श्री मन्दिर जी के प्राङ्गनके दाहिने कोठरी में रखी हुई हैं।

× यह मूर्त्ति बहोत प्राचीन है परन्तु अक्षर घिस जाने के कारण स्पष्ट पढ़ा नहीं गया।

[1036]

१३····आषाढ़ सुदि ८ उवएस वाधि सीहेण पु० गामा माल्हाभ्यां पितृ श्रेयोर्थं बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सर्वगुप्त सूरिभिः।

[1037]

सं० १३२३ ज्येष्ठ सुदि १·······श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उद्योतन सूरिभिः॥

[1038]

सं० १३२५ वर्षे फागुण सुदि ४ शुक्रे। श्रे० धामदेव पुत्र रणदेव धारण भा० आसलदे श्रे० राम श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं श्री कक्क सूरिभिः।

[1039]

सं० १३२८ वर्षे वैशाष शु० ६ षण्डेरक गच्छे श्री यशोभद्र सूरि सन्ताने सा० सद्धाणल भा० जल्हू पु० रुण्ड श्री आस सिंह भा० मील्हा···काया बिम्बं कारितं प्र० श्री शान्ति सूरिभिः।

[1040]

सं० १३२९ वैशाख वदि ९ शुक्रे कडु ऊदा भार्या ललतू श्रेयसे कर्मणेन श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं ····।

[1041]

संवत् १३५२ वर्षे फागुण सुदि १० बुधे श्री चैत्र गछिय धर्कट वंशे नाहर गोत्रे सा० हापु सुत सा० विजयसीहेन भातृ धारसीह श्रेयसे ····माग्यकेन श्री वासपूज्य बिम्बं कारितं प्र० श्री गुणचन्द्र ····।

[1042]

सं० १३५४ माघ व० १० गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० पुन पाल सुत सोमल पितृ पुन पाल श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं श्री रामं (?) प्रायागच्छे प्रतिष्ठितं श्री शीलचन्द्र सूरिभिः॥

[1043]

सं० १३७५ वर्षे फागुण सुदि......श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारिता प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1044]

सं० १३९६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १२ बुधे श्री माल ज्ञातीय पितामह श्रे० वील्हण पितृ श्रे० सोमा पितृव्य साजण भ्रातृ झाहा......श्रेयोर्थं सुत राणा धरणिकाभ्यां श्री पार्श्वनाथ पञ्च-तीर्थी का० ।

[1045]

संवत् १३७९ वर्षे माघ वदि ११ गुरौ श्री....दाहड़ वीरम श्री चन्द्रप्रभ बिम्बं प्रतिष्ठितं ।

[1046]

सं० १३५१ मड्डाहडीय गच्छे श्रे० पादा भा० जाइल पु० कर्म सीहेन पित्रो श्रेयोर्थं श्री महावीरं श्री रत्नाकर सूरि पट्टे श्री सोमतिलक सूरिभिः ॥

[1047]

संवत् १३९९ वै० सुदि १ प्राग्वाड़ श्री अभाड़ा भार्या वाल्हु....बिम्बं प्र० श्री भावदेव सूरि ।

[1048]

सं० १४०५ वर्षे वैशाष सुदि ५ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ षेता मातृ जगतल देवि तयो श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री नागेन्द्र गच्छे श्री रतनागर सूरिभिः ॥

[1049]

सं० १४०६ वर्षे ज्येष्ठ सु० ९ रवौ सा०....कुटुम्ब श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं जीरापल्लीयैः श्री रामचन्द्र सूरिभिः ॥

[1050]

सं० १४०७ वैशाख वदि ४ रवौ श्री माल ज्ञातीय पितामह उदयसीह पितृ लषणसीह श्रेयसे सुत षोषाकेन श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री गुणसागर सूरि शिष्य श्री गुणप्रभ सूरिभिः ।

[1051]

सं० १४०९ वर्षे फागुण सुदि २ बुधे हुंबड़ ज्ञातीय भ्रातृ पातल श्रेयसे ठ० वीरमेन श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री सर्वानन्द सूरि सहितैः श्री सर्वदेव सूरिभिः ॥

[1052]

सं० १४२१ वर्षे माघ वदि ६ दिने नाहर गोत्रे सा० देवराज भा० रुपी पु० सा० लोला भार्या नाल्ही.........पौत्रादि सहितै आत्मश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिम्बं कारितं श्री रुद्रपल्लीय ग० भ० श्री जिनहंस सूरि पदे श्री जिनराज सूरिभिः ॥

[1053]

सं० १४२२ वर्षे वैशाष सु० ११ बुधे प्राग्वाट ज्ञा० कम्बोली वास्तव्य श्रेष्ठि तिहुणा भा० वांहणि पितृ श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री रत्नप्रभ सूरिभिः ।

[1054]

सं० १४२३ फागु० सु० ८ सोमे प्रा० व्य० हरपाल भार्या आल्हण दे पु० विजयपालेन पित्रो श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं का० प्र० श्री शालिभद्र सूरिभिः ॥

[1055]

सं० १४२३ फागुण सु० ९ सोमे श्रीमाल व्य० जोहण भा० माल्हण दे सुत आल्हा पाल्हाभ्यां पितृव्य आसपाल भ्रातृभ्याभ्यां श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिम्बं कारितं श्री अभय चन्द्र सुरिणामुपदेशेन ।

[1056]

सं० १४३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने मंत्रि दलीय गोत्रे सा० सारङ्ग भा० सारू पु० सीधरण भा० सुहवदे पुत्र सा० मांज मैस परवतादि युतेन श्री कुन्थुनाथ बिम्बं का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1057]

संवत् १४३७ वर्षे वैशाख वदि १० सोमे। श्री कारंटगच्छे श्री नन्नाचार्य सन्ताने उपकेश ज्ञा० श्रे० सोमा भा० सूमलदे पुत्र सोनाकेन पितृ मातृ श्रे० श्री आदिनाथ बिम्बं का० प्र० श्री सांवदेव सूरिभिः ।

[1058]

सं० १४५० वर्षे मगसिर बदि ६ रवौ उपकेश ज्ञातीय सा० षाषण जा० षीमसिरि तयो श्रियोर्थं सुत आल्हा ऊदा देवाकेन श्री वासुपूज्य बिम्बं पञ्चती० का० प्र० श्री नागेन्द्रगच्छे श्री रत्नसंघ सूरि पट्टे श्री देवगुप्त सूरिभिः। जारा सलषा श्रेयोर्थं ॥ श्री ॥

[1059]

सं० १४५३ वर्षे वैशाष सुदि २ हुंबड़ ज्ञा० श्रे० देवड़ जा० चामल देवि पुत्र हापाकेन हापा जा० हलू पु० सु० पातल सुत जीला हुंबड़गच्छी श्री सर्वानन्द सूरि प० श्री सिंहदत्त सूरिभिः।

[1060]

सं० १४५५ विणचट गोत्रे सा० तीषण जा० तिहुणश्री पु० मोषाटन आत्मपूर्वजनिमित्तं चन्द्रप्रभ बिम्बं का० प्र० धर्मघोष गच्छे श्री सर्वाणन्द सूरिभिः।

[1061]

सं० १४५७ आषाढ सुदि ५ गुरौ प्रा० ज्ञा० व्यव० ठाहड़ भार्या मोखलो पुत्र त्रिभुवणाकेन पित्रो श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं साधु पू० प० श्री धर्मतिलक सूरि उपदे० ....

[1062]

सं० १४६० वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ रवौ ऊकेश वंशे गाहहीया गोत्रे सा० देपाल पुत्र आना भार्या भीमिणि श्रेयोर्थं श्री शांन्तिनाथ बिम्बं कारितं प्रति० उपकेश गच्छे श्री देवगुप्त सूरिभिः॥

[1063]

सं० १४७२ वर्षे फाल्गुन वदि २ शुक्रे श्रीमाल संघे श्री पद्मनन्दि गुरू हुंवड़ ज्ञातीय व्य० पेथड़ भार्या हीरादे सु० द्रय सारग सायर बध गोत्रे श्री आदिनाथ बिम्बं ....।

[1064]

ॐ ॥ सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ शुक्रवारे बावेल गोत्रे नरवच पु० आल्हा पाल्हा मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिम्बं कारापितं श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मसिंह सूरिभिः॥

[1065]

सं० १४७४ वर्षे माघ सुदि ७ शुक्रे रनघणा गोत्रे वुंवड़ ज्ञातीय श्रे० वरजा जा० रूपी सु० सुप सूरा ॥ पितृश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामी बिम्बं का० श्री सिंहदत्त (रत्न ?) सूरिभिः ॥

[1066]

संवत् १४७८ वर्षे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० नरदेव भार्या गांगी पुत्र श्रे० जावटेन जा० कडू पुत्र ···· पितृव्य चांपा श्रेयोर्थं श्री चन्द्रप्रभ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1067]

सं० १४७९ प्राग्वाट व्य० कल्हा भमी सुत सूरीकेन भा० नीणू भ्रा० चांपा सुत सादा पेथा पदमादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री कुन्थु बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुंदर सूरिभिः ॥

[1968]

सं० १४८० वर्षे फा० सु० १० बुधे उप० ज्ञा० श्रे० कपूयर भार्या कुसमीरदे सु० गेहा केन पित्रो श्रेय० श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० मड्डा० रत्नपुरीय भ० श्री धणचन्द्र सूरि प० श्री धर्म्मचन्द्र सूरिभिः ॥

[1069]

सवंत् १४८१ वर्षे वैशाख शुदि ३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० काला भार्या कील्हणदे सुत सरवणेन पितृमातृ श्रेयसे श्री चन्द्रप्रभ स्वामि पंचतीर्थी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मडाहड़ गच्छे श्री उदयप्रभ सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1070]

सं० १४८२ वर्षे वैशाष वदि ५ उपकेश ज्ञा० राका गोत्रे सा० भूणा भा० तेजलदे पु० कानू रूल्हा भा० रयणीदे पु० केल्हा हापा शाल्हा तेजा सोनीकेन कारापितं नि० पुण्यार्थं आत्म श्रे० उपकेश गच्छे कुकदाचार्य सं० प्र० श्रीसिद्ध सूरिभिः ॥

[1071]

सं० १४७३ वर्षे द्वि वैशाख वदि ५ गुरौ श्री प्राग्वाट ज्ञा० व्य० खीमसी भा० सारू पुत्र व्य० जेसाकेन पुत्र वीकन आसाभ्यां सहितेन श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं श्री अंचल गच्छनायक श्री जयकीर्त्ति सूरि गुरूणां उपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[1072]

सं० १४७४ वर्षे वैशाख वदि १२ रवौ उपकेश ज्ञातीय सा० कूंता भा० कुंवरदे पुत्र भरमा भा० भावलदे पु० सायर सहितै श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छ सिद्धाचार्य सन्ताने मेदरथ श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1073]

सं० १४७४ वर्षे ज्येठ सु० ५ बुधे श्री नागेन्द्र गच्छे उपकेश ज्ञा० सा० साल्हा भा० माल्हा पु० धांगा भा० सामी पितृमातृ श्रे० श्री संभवनाथ बिंबं का० प्र० पद्माणंद सूरिभिः ॥

[1074]

सं० १४८१ वर्षे वैशाष सु० ६ गुरौ व० धरणा भा० पूनादे सुत हीराकेन भा० हीरादे पुत्र श्री सुमतिनाथ बिंबं श्री सोमसुन्दर सूरि प्र० .... ।

[1075]

सं० १४८१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे ओसवंशे पंचाणेचा सा० वस्ता भार्या लीलादे पुत्र क्रमाकेन सपरिवारेण स्वपुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० खरतर ग० श्री जिनसागर सूरिभिः ॥

[1076]

सं० १४८२ वर्षे ज्ये० व० ११ प्राग्वाट सा० अरसी भा० आल्हणदे सुत चाचाकेन भा० चाहणदे सुत तोला बाला सुहडा राणा पांचादि युतेन स्वसुत मोसा श्रेयसे श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1077]

सं० १४८५ ज्येष्ठ सुदि १४ बुधे सांखुला गोत्रे सा० डीहिल पु० चांपा भा० चापलदे पु० लाषाकेन भा० लषमादे पुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मशेषर सूरि पट्टे भ० श्री विजयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1078]

सं० १४९६ वर्षे फागुण वदि २ शुक्रे हुंवड़ ज्ञातीय ठ० देपाल भा० सोहग पु० ठ० राणाकेन मातृपितृ श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं निवृतिगछे श्री सूरिभिः ॥

[1079]

सं० १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ गुरौ सुराणा गोत्रे सा० सोनपाल भा० तिहुणी पु० धिणराजेन गुणराज दशरथ सहसकिरण समन्वितेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री धर्म्मघोष गछे भ० श्री पद्मशेषर सूरि प० भ० श्री विजयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1080]

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ शुक्रे दहदहड़ ······· श्री अरुनाथ बिंबं का० प्र० राम सेनीया वरफे (?) श्री धर्म्मचन्द्र सूरि पट्टे श्री मलयचन्द्र सूरिभिः ।

[1081]

सं० १५०५ वर्षे वैशाष सु० ६ सोमे श्री संडेरगछे ऊ० ज्ञा० वासुत गोत्रे सा० गांगण पु० पेरु पु० बुलाकेन सा० गोगी पुत्र ठाड़ा कुंजा सहितेन स्वपुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं का० प्र० श्री ············ ।

[1082]

सं० १५०६ मा० सु० ८ दिने श्री ऊपकेशज्ञातौ सिरहठ गोत्रे सा० सहदेव भा० सुहवदे पु० सालिगेन पित्रो निमित्तं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रति० श्री सर्व्व सूरिभिः ॥

[1083]

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० ऊप० चिपड़ गोत्रे सा० रावा भा० जेठी पु० देफाकेन मातृपितृ पुण्या० आत्म श्रे० श्री शान्तिनाथ बिंबं का० ऊपकेश गछे० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

[1084]

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठ शु० १३ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सोमा भा० धरमिणि सुत मालाकेन लाला भा० गेलू राजू युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री वर्द्धमान बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिभिः ॥ कूणिगिरि वास्तव्य ॥

[1085]

सं० १५०९ वै० शु० ३ प्राग्वाट व्य० मेघा भार्या हीरादे पुत्र व्य० आसा मोमा भा० केलू आल्हा पुत्र शिखरादि कुटुम्ब युताभ्यां स्वश्रेयोर्थं श्री युगादि बि० का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिभिः ॥

[1086]

सं० १५१० वर्षे वैशाष वदि ५ सोमे गिरिपुर वास्तव्य हुंवड़ ज्ञाति डेभिकठ गोयद (?) भा० वारू सु० जाला भा० हीसू सु० आसाकेन भा० रूपी युतेन स्व० श्री सुविधिनाथ बि० का० श्री वृ० तपापक्षे श्री रत्नसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1087]

सं० १५११ वर्षे माह वदि ६ गूर दिने उप० ज्ञा० चलद (?) गोत्रे सा० ठाड़ा भा० सहवादे सा० जाड़ा भा० जसमादे ···· सहितया स्वश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंब का० प्र० श्री भ० रामसेनीया भटकरा० श्री मलयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1088]

॥ सं० १५१३ व० चै० सु० ६ गुरौ उपकेश वं० ताल गो० सा० महिराज पु० सा० काल्हा भा० कलसिरि सु० धना भा० धरण श्री पु० चोषा यु० श्री शितलनाथ बिंबं का० प्र० धर्म्मघोष ग० श्री साधुरत्न सूरिभिः ॥

[1089]

॥ सं० १५१३ पौष शुदि ७ ऊकेश वंशे विमल गोत्रे सं० नरसिंहांगज सा० ऊाऊणेन श्री कुंथु बिंबं का० प्र० ब्रह्माणी उदयप्रभ सूरि तपा भट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे हेम हंस सूरिभिः ॥

[1090]

॥ सं० १५१५ वर्षे जे० सुदि ५ उपकेस ज्ञा० जोजा उरा सा० वीदा भा० वारू पुत्र गांगा हुदाकेन पूर्वज निमित्तं श्री कुंथनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्रगछे भ० श्री रामदेव सूरिभिः ॥

[1091]

सं० १५१७ वर्षे फा० शु० ११ शनौ सीणुरावासि प्राग्वाट व्य० चूका भा० गउरी पुत्र सा० देल्हाकेन भा० रूपिणि पुत्र गरु आदि कुटुम्ब युतेन निज श्रेयसे श्री श्री विमलनाथ मूलनायक बिंबालंकृत चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० तपागछे श्री रत्नशेषर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1092]

सं० १५२३ वर्षे माघ सु० ६ रवौ रेवती नक्षत्रे प्राग्वाट श्रे० घेघा भा० जमलू सुत श्रे० रीली भार्या श्रे० सोमा भार्या बाछलदे पुत्री हुलू नाम्ना स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ आगीया ग्रामे।

[1093]

सं० १५२५ वर्षे चैत्र वदि १० गुरौ उस वास्तव्य हूंबड़ ज्ञातीय भररजा (?) गोत्रे पे० कर्मणजा भा० नांनू सुत (?) कान्हा श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं प्रति० श्री ज्ञान सागर सूरिभिः ॥

[1094]

सं० १५२७ वर्षे आषाड़ सु० १३ रवौ ऊ० ज्ञातीय गूंदोचा गोत्रे सा० भांभा भा० मापुरि पु० मांभा भा० वाल्हणदे पु० मूना पाल्हा सहितेन सुता श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्रगछे श्री सोमकीर्त्ति सूरि पट्टे श्री श्री चारुचन्द्र सूरिभिः ॥

[1095]

॥ संवत् १५२९ वर्षे ज्येष्ठ सु० शुक्रे उशवाल ज्ञा० ताहिड़ गोत्रो सा० मूलू भा० लूणादे द्वि० सुहागदे पु० सा० भाषर भा० नीली पु० रणधीर जगा हडो रहा धोपा श्रेयोर्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० खरतर गछे श्री जिनचन्द सूरिभिः।

[1096]

संवत् १५३१ वर्षे फागुन सु० ८ शनौ उप० ज्ञा० ईटोडका गो० सा० गपो भा० मानू पु० माका षेढा रतना भाला ऊबू पु० भादा सहितेन आत्म श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्रति० श्री चैत्रगछे श्री सोमकीर्त्ति सुरि पट्टे आ० श्री नारचन्द्र सूरिभिः ॥

[1097]

संवत् १५३३ वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री प्राग्वाट ज्ञातीय सा० नाऊ भा० हांसी पुत्र सा० ठाकुरसी सा० वरसिंघ भ्रातृ सा० वीसकेन भा० सोनी पुत्र सा० जीणा सहितेन श्री अंचलगच्छेश श्री श्री श्री जयकेसरि सूरीणामुपदेशेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री संघेन मांढी ग्रामे ॥ श्री श्री ॥

[1098]

॥ सं० १५३५ वर्षे मार्ग वदि १२ साधुला गोत्रे साह पाल्हा भा० रहणादे पु० सा० तेजा भा० तेजलदे पु० बलिराज वीसल लोला । माणिकादि युतेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री पद्मशेषर सूरि पट्टे श्री पद्माणंद सूरिभिः ॥

[1099]

सं० १५३६ वर्षे मार्गसिरि सुदि १० बुधवासरे श्री संडेर गच्छे ऊ० तेलहरा गो० सा० धना पु० काल्ह पूजा भा० खलतू पु० टोहा हीरा टोडा भा० वरजू पु० .... स्वश्रे० लाला निमित्तं श्री शीतलनाथ बिंबं का० श्री जिण भद्र (?) सूरि सं० श्री सालि सूरिभिः ॥

[1100]

सं० १५४२ वर्षे फा० व० २ दिने जालउर महादुर्गे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० पोष भा० पोमादे पुत्र सा० जेसाकेन भा० जसमादे भ्रातृ लाषादे कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्र० तप श्री सोमसुन्दर सन्ताने विजयमान श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्रियोस्तु ॥

[1101]

सं० १५५९ वर्षे आषाढ़ सुदि २ उसवाल ज्ञाती कनोज गोत्रे सा० षेढा पु० सहसमल भा० सुहिलालदे पु० ठाकुरसि ठकुर युतेन आत्मश्रेयसे माल्हण पितृपुण्यार्थं शीतलनाथ बिंबं का० ॥ प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1102]

सं० १५६६ वर्षे वै० व० १३ र० पत्तनवासि प्रा० दो० माणिक भा० रबकू सुत पासाकेन भा० ईडू सु० नाथा सोनपालादि कुटुम्बयुतेन श्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं तपागच्छे श्री हेमविमल सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[1103]

सं० १५६६ वर्षे फा० व० ६ गुरौ प्रा० सा० तोला भा० रुषमिणि पु० गांगाकेन भा० पींबू पु० लाला लोला लाषादि कुटुम्बयुतेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि सन्ताने श्री कमलकलस सूरि पट्टे श्री नन्दकल्याण सूरिभिः ॥ श्रीः ॥ श्री चरणसुन्दर सूरिभिः ॥

[1104]

सं० १५९६ वर्षे ज्ये० शु० २ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय ज्यायपुर वा० सा० हापा भा० दानी पु० सुश्रावक सा० सरवण भा० मना भ्रा० सा० सामन्त भा० कम्म पु० सा० सूरा सा० सींमा षेता प्रमुख समस्त परिवार युतैः निज पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्र० श्रीमत्तपा गच्छे श्री पूज्य श्री आनन्दविमल सूरि पट्टे सम्प्रति विजयमान राजा श्री विजयदान सूरिभिः ॥

[1105]

सं० १६६७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ लोढा गोत्रे प। माता हर्षमदे सु० कपूराकेन सुत वार दास प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्री विजयसेन सूरीणां निदेशात् उ० श्री सायविजय (?) गणिभिः ॥

[1106]

संवत् १६७६ वैशाष सुदि ८ उदयपुर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय वरडिया गोत्रे सा० पीथाकेन पुत्र पोषादि सहितेन विमलनाथ बिंबं का० प्र० त० भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः। स्वाचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥

[1107]

सं० १६९० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ सोमे ऊकेस वंशे कांगरेचा गोत्रे सा० गोविन्द भार्या गारवदे पुत्र सा० समरथ श्री खरतरगच्छे श्री जिनकीर्त्ति सूरि श्री जिनसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

[1108]

संवत् १६७४ वर्षे वैशाष .... श्री अनन्तनाथ बिंबं का० प्र० च तपगच्छाधिराज •भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः ॥ स्वोपाध्याय श्री लावण्यविजय गणि का० भ० ....

[1109]

सं० १७०३ सा० तेजसी कारिता श्री विमलनाथ बिंबं .... ।

[1110]

संवत् .... जीवा पु० सीहड़ भार्या श्रीया देवि पु० राजापाल प्रजापाल श्री श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० .... ० श्री वर्द्धमान सूरिभिः ॥

[1111]*

॥ सं० १४९३ श्री ज्ञानकीय गच्छे । सा० बाहड़ भा० प्रमी पु० पाल्हा लोलाभ्यां अम्बा (?) कारिता ॥

श्री वासुपूज्यजी का मन्दिर ।

धातु की पञ्चतीर्थियों पर ।

[1112]

संवत् १५०६ व० ऊकेश सा० बछराज सु० सा० हीरा भा० हेमादे हरसदे पु० सा० जगा भा० फदु .... श्रेयसे श्री शीतल बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरिभिः श्री देवकुलपाटक नगरे ।

[1113]

सं० १७४२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ गुरुवार सुराणा गोत्रे सा० चेतन पु० नारायण .... सु० लीला .... गोकलदास .... श्री चन्द्रप्रभ बिंबं कारितं ।

---

* यह मूर्त्ति देवी की है और वाहन घोड़ा है ।

श्री गौड़ीपार्श्वनाथजी का मन्दिर।

धातुकी मूर्त्तियों पर।

[1114]

सं० १७०५ माघ सु० १३ सोमे राणा श्री ....

[1115]

सं० १८०१ ज्येः सु० ए उदेपुर महाराणा श्री जगतसिंहजी बापणा गोत्र साह श्री ..... ।

[1116]

सं० १८०० वर्षे शाके १६९३ .... जेठ सु० ए बुधे तपा श्री विजयदेव सूरि श्री विजय धर्म सूरि राज्ये उदयपुर वास्तव्य पोरवाड़ जण्डारी जीवनदास जार्या मटकू श्री पार्श्व बिंबं कारापितं।

धातु की चौवीशी पर।

[1117]

ॐ ॥ सं० १५१२ वर्षे पो० व० १ गुरौ कक्कैरा वासि उकेश व्य० जेसा जा० जसमादे सुत व्य० वस्ता जार्या वीऊलदे नाम्न्या पुत्र व्य० जीम गोपाल हरदास पौत्र कर्मसी नरसिंग थावर रूपा प्रमुख कुटुम्बयुतया निजश्रेयसे श्री शान्ति बिंबं का० प्र० तपागछ श्री लक्ष्मी सागर सूरि श्री सोमदेव सूरिजिः। श्रेयः॥

धातु की पञ्चतीर्थियों पर।

[1118]

ॐ सं० १५११ वर्षे वैशाष वदि ५ शनौ श्री मोढ़ ज्ञातीय मं० जीमा जार्या मञु सुत मं० गोराकेन सुत जोला महिराज युतेन स्वपितुः श्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं विद्याधरगछे श्री विजयप्रज सूरिजिः॥

[1119]

सं० १५४७ वर्षे पोष वदि १० बुधे ऊ० ज्ञातीय सा० कोला जार्या षीमाई पु० दीना

भा० लाडिकि नाम्न्या देवर सा० हेमा भा० फटू पु० धरणादि युतया स्वश्रेयसे श्री शान्ति नाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमा पक्षे श्री जयचन्द्र सूरि शिष्याण श्रा० श्री जयरत्न सूरि उपदेशेन वरुखी ग्रामे ।

धातु के यंत्र पर ।

[1120]

सं० १५३४ श्री मूलसंघे भ० श्री भूवनकीर्त्ति श्री भ० श्री ज्ञानभूषण हूं० दो० लाषा भा० अमरा भ्रातृ दो० हीरा भा० अरघू सु० भूठा भगिणि सु० माणिक .... ।

भण्डार की धातु की पञ्चतीर्थियों पर ।

[1121]

सं० १३३० वर्षे चैत्र वदि ७ शुक्रे मह० हीरा श्रेया मह० सुत देवसिंहेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1122]

सं० १३६१ ज्येष्ठ सु० ए बुधे श्रे० आसपाल सुत अजयसिंह तद्भार्या श्री लहणदेवि तयोः सुत कान्हड़ पूनाभ्यां पितृव्य लूणा श्रेयसे श्री शान्तिनाथ कारितः । प्र० श्री यशो भद्र सूरि शिष्यः श्री विबुधप्रभ सूरिभिः ॥

[1123]

सं० १४३७ वर्षे द्वि (?) वैशाष व० ११ सोमे ओश० व्य० नरा भा० मेघी पु० भीम सिंहेन पित्रो श्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० ब्रह्माणीय श्री रत्नाकर सूरि पट्टे श्री हेमतिलक सूरिभिः ।

[1124]

सं० १४४ए वर्षे वैशाष शुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञा० पितृ भीमा मातृ षेतलदे श्रेयोर्थं सुत वाघाकेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री नागेन्द्र गच्छे श्री उदयदेव सूरिभिः ।

[1125]

सं० १४७७ ज्येष्ठ व० १ प्राग्वाट ठ० ठकुरसीकेन पित्रो ठ० पूनसीह जा० पूमलदे ···· श्री चन्द्रप्रज बिंबं का० प्र० मलधारि श्री मुनिशेखर सूरिजिः ।

[1126]

सं० १५०१ माघ वदि ५ गुरौ प्राग्वाट व्य० धणसी जा० प्रीमलदे सुत व्य० लाषा जा० लाषणदे सुत व्य० षीमाकेन निज श्रेयसे श्री सुमति बिंबं कारि० प्र० तपा श्री मुनि सुन्दर सूरिजिः ।

[1127]

सं० १५१६ वर्षे वै० व० १२ शुक्रे उकेश ज्ञाती व्य० नारद जा० घरघति पुत्र बाघाकेन जा० वल्हादे ज्रा० पहिराजादि कुटुम्ब युतेन स्वपितु श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० श्री सूरिजिः ॥ महिसाणो वास्तव्य ॥

[1128]

सं० १५२० वर्षे वैशाष सु० ३ सोमे उपकेश ज्ञा० मह० काल्ू जा० आघू पुत्र ३ जावड़ रतना करमसी स्वमातृनिमित्तं श्री चन्द्र प्रज स्वामि बिंबं करापितं उपकेश गछे श्री कक्क सूरिजिः सत्यपुर वास्तव्यः ॥

[1129]

सं० १५२४ वर्षे ज्ये० सु० ए श्री श्री वंशे स० समधर जार्या जीविणि सुता वाल्ही वि० हेमा युतया पितृ मातृ श्रेयसे श्री अंचल गछ श्री जयकेशरी सूरिणामुपदेशेन श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री संघेन ।

[1130]

सं० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १० दिने प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० साजण जा० माल्हू पुत्र डगड़ा देवराज जा० देवलदे स्वपुण्यार्थं श्री श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० मडाहड़ गछ रत्नपुरीय ज० गुणचन्द्र सूरिजिः । उ० आणंदनंद सूरि तेन उपरिकेम ।

[1131]

संवत् १५८९ वर्षे आषाढ़ शुदि २ मेडतवाल गोत्र सा० इसा जा० मील्हा पुत्र ताल्हा जार्या तिलसिरि स्वपितृश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गछे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः।

[1132]

सं० १६५२ माह सुदि १० श्री मूलसंघ ज० श्री प्रजचन्द्र देवा तत्पट्टे ज० श्री चन्द्र कीर्त्ति तदाम्नाये चंदवाड़ गोत्रे सं० चाहा पुत्र तेजपाल पुत्र केसै। सुरताण श्रीवंत नित्य प्रणमंति मालपुर वास्तव्य ॥

जयपुर।

श्री सुपार्श्वनाथजी का पञ्चायती बड़ा मन्दिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1133]

सं० १३३२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १ गुरौ व्य० महीधर सुत झांझणेन आत्मश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं सूरिजिः।

[1134]

ॐ सं० १३४० वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ रवौ गूर्जर ज्ञातीय ठ० राजड़ सुत महं देल्हणेन पितृव्य वीरम श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चैत्रगछिय श्री देवप्रज सूरि सन्ताने श्री अमरचन्द्र सूरि शिष्यैः श्री अजितदेव सूरिजिः।

[1135]

सं० १३९० वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री काष्ठासंघे श्री लाडवा गडगणे श्रीमत्

आचार्य श्री तिहुणकीर्ति गुरूपदेशेन हुंबड़ ज्ञातीय व्य० वाहड़ भार्या लाछी सु० व्य० षीमा भार्या राजूल देवि श्रेयोर्थं सु० का० देवा भार्या राजुल देवि नित्यं प्रणमन्ति।

[1136]

सं० १४३७ वर्षे वैशाष वदि ११ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि गोढ़ा भार्या ललतादि सुत मूजाकेन। पितृभ्रातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ का० प्र० श्री रत्नप्रभ सूरीणामुपदेशेन।

[1137]

सं० १४३ए वर्षे पौष वदि ए सोमे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्री मा० पितृ माषसी भा० मोषलदे प्र० सुत सोमलेन श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बुद्धिसागर सूरिभिः॥ श्रीः॥

[1138]

सं० १४६५ वर्षे .... आत्मार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री .... ।

[1139]

सं० १४६ए वर्षे ऊकेशवंशे नवलषा गोत्रे सा० साघर आत्मश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रति० खरतर ग०। जिनचन्द्रेण .... स्तव्य।

[1140]

संवत् १४७ए वर्षे पोस सुदि १२ शुक्रे श्री हुंबड़ ज्ञातीय थावेका गललयोः पुत्रेण था० हापाकेन स्वभ्रातृ थावड़ा मुलासी श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री बृहत्तपागच्छे श्री रत्नसिंह सुरिभिः॥ शुभं भवतु॥ श्री॥ छ॥

[1141]

सं० १४७४ माह सु० ११ गुरौ श्री संडेरगच्छे ऊ० ज्ञा० संबाफि गौष्ठिक सा० सुरताण पु० धर्मा भा० धर्मसिरि पु० वासलेन भा० कानू पु० नापा नाल्हा स० पित्रोः श्रेयसे श्री श्रेयांस तु० का० प्र० श्री शान्ति सुरिभिः शुभं।

[1142]

सं० १५०१ वर्षे माह सुदि १० सोमे श्री संडेरगछे उपकेश ज्ञा० साह कालू जार्या वाल्ही पुत्र कान्हा जार्या सारू पितृमातृश्रेयोर्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्रति० प० श्री सांति सूरिजिः ।

[1143]

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे श्री ज्ञानकापगछे उपकेश० सोलस गोत्रे साह कान्हा जार्या कर्म्म सिरि पुत्र श्राला जार्या जाकु पुत्र धाना रामा काना जार्या अरपू आत्म श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारा० प्रति० श्री शान्ति सूरिजिः ।

[1144]

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे चिरुत गोत्रे सा० माल्हा पु० अरजुण जार्या साल्ह पुत्र कान्हाकेन जा० झूंदी .... पु० दफस्या श्री पद्मप्रजः का० प्र० श्री धर्म्मघोषगछे श्री महीतिलक सूरिजिः आ० विजयप्रज सूरि सहितैः ॥

[1145]

संवत् १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ शनौ ऊ० ज्ञा० जाजा उटाणा सा० कम्मां जा० सागू पु० षेमा जइताषेण जा० राणी पु० पंचायण जयता जा० मूंता पित्रोः श्रे० श्री शान्तिनाथ बिंबं का० श्री चैत्रगछे प्र० श्री मुनितिलक सूरिजिः ।

[1146]

सं० १५०२ वै० ब० ५ प्रा० व्य० लाषा लाषणदे पु० सामन्तेन सिंगारदे पु० पाल्हा रतना मीम्रादि युतेन श्री कुंथु बिंबं का० प्र० तपा रत्नशेखर सूरिजिः ।

[1147]

सं० १५०४ फागुण शुदि ११ ठूंगटिया श्रीमाल सा० साधारण पुत्रेण सा० ममुधरेण श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठितं श्री तपाजट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिजिः ॥

[1148]

सं० १५०५ आषाढ सुदि ए श्री उप० सुचिंतित गोत्रे सा० सीहा जा० फावटही पु० सा० सोलाकेन पुत्र पौत्र युतेन आत्म पु० .... श्री चन्द्रप्रज बिंबं का० प्र० श्री उपकेशगच्छे श्री कक्क सूरिजिः ।

[1149]

सं० १५०६ फा० ब० ए श्री उ० ग० श्री ककुदाचा० .... गो० सा० समधर सु० श्रीपाल जा० परवाई पु० मुद .... जव ससदा रंगाज्यां पितु श्रे० श्री सम्जवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजिः ।

[1150]

ॐ सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर सुदि ३ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय जढरू गोत्रे संदणसीह जार्या दादाह बीसल जाती महिपाल पु० मगराज साधी आत्मपुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० श्री वृहद्गच्छे श्री सागर सूरिजिः ।

[1151]

सं० १५०७ वर्षे चैत्र वदि ५ शनौ लोढा गोत्रे । श्रे० गुणा जार्या गुणश्री पुत्र श्रे० पूजा कचरोज्यां पितृव्य धन्ना पुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ बिं० का० प्र० खरतर श्री जिनजद्र सूरि श्री जिनसागर सूरि ।

[1152]

सं० १५१० वर्षे चैत्र वदि ४ तिथौ शनौ डिंगड़ गोत्रे गौरम्द पुत्रेण सा० सिंघकेन निज श्रेयो निमित्तं श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपा० ज० श्री हेमहंस सूरिजिः ।

[1153]

सं० १५१२ माघ सुदि ७ बुधे श्री ओसवाल ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० सिंघा पु० ज्येल्हा जा० देवाई पु० दशरथेन भ्रातृपितृश्रेयसे श्री अनन्तनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेश गच्छे श्री कुकदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजिः ॥

[1154]

सं० १५१५ वर्षे फागुण शुदि ४ शुक्रवारे ओसवाल ज्ञातीय बहुरा गोत्रे सा० धीना जा० फाई पु० देवा पद्मा मना बाला हरपाल धर्मसी आत्मपुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ बिं० का० प्र० श्री मलधार गच्छे .... सूरिभिः।

[1155]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख सुदि २ बुधे श्री श्री मा० श्रे० जइता जा० लालू तयो० पु० माधव निमित्तं लालू आत्मश्रेयोऽर्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं का० पिप्पल ग० ज० श्री विजयदेव सू० मु० प्र० श्री शालिभद्र सूरिभिः।

[1156]

सं० १५२३ वर्षे वैशाख सुदि ४ बुधे जालहू गङ्गा० मंचूणा जा० देऊ सुत पितृ पांचा मातृ तेजू श्रेयसे सुत गोयंदेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं पूनिम गच्छे श्री साधुसुन्दर सूरि उपदेशेन प्रतिष्ठितं।

[1157]

। सं० १५२३ वर्षे वैशाख सुदि १३ दिने मंत्रिदलीय ज्ञातीय मुंऊगोत्रे सा० रतनसी जार्या बाकुं पुत्र सा० देवराज जार्या रामाति पुत्र सा० मेघराज युतेन स्वपुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतरगच्छ श्री जिनहर्ष सूरिभिः॥

[1158]

सं० १५२७ वर्षे विदि १ सोम दिन श्रीमाल वंशे जूनीवाल गोत्रे सा० दासा पुत्र सा० पिउराजकेन समस्तं परिवारेण आत्मश्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ बिंबं का० श्री षरतर गच्छे श्री जिनप्रभ सूरि अन्वयप्रतिष्ठितं श्री जिनतिलक सूरिभिः। शुभं जवतु॥ छ॥

[1159]

सं० १५२९ वर्षे आषाढ सु० २ रवौ श्री ओसवाल ज्ञा० चांणाचाल गच्छे षांमलेचा गोत्रे सा० साढूल जार्या मेघादे पु० जाषर जार्या जावलदे पु० मोहण हरता युतेन मातृ मेघू निमित्तं श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० ज० श्री वज्रेश्वर सूरिभिः।

[1160]

सं० १५३० वर्षे माघ वदि २ शु० पालणपुर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० नरसिंग भा० नामलदे पु० कान्हा भा० सांवल पु० षीमा प्रमु माषी भा० सीचू श्रेयोर्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे भ० श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

[1161]

सं० १५३० वर्षे मा० व० १० बुधे प्राग्वाट सा० सिवा भा० संपूरी पुत्र सा० पाल्हा भा० पाल्हणदे सुत सा० नाथाकेन भ्रातृ ठाकुरसी युतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत बिम्बं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः धार नगरे ।

[1162]

सं० १५३३ वर्षे वै० सुदि ६ दिने श्रीमाल वंशे स० जईता पु० स० मारूण भा० लीलादे पु० षीमा जातड़ युतेन श्री सुपार्श्व बिंबं का० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनभद्र सूरिभिः ।

[1163]

सं० १५३४ वर्षे कार्त्तिक शुदि १३ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० गोत्रजा अम्बिका श्रेष्ठि चांद्रसाव भा० ऊमकु सुत वानर भा० ताकू सुत जागा भा० नाथी सहितेन स्वपूर्वजश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्रगच्छे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

[1164]

सं० १५३४ फा० शु० २ वासावासि प्राग्वाट व्य० आल्हा भा० देसू पुत्र परवतेन भा० भरमी प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे श्री रत्नशेषर पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

[1165]

॥ सं० १५३७ फा० व० ७ बुधे ऊ० षांटड़ गो० म० पूना भा० अनू पु० राणाकेन भा० रयणादे पु० हरपति गुणवति तेज । हरपति भा० हमीरदे प्रमुख कुटुम्ब सहितेन स्वश्रेयसे

श्री सुमति बिंबं का० प्रतिष्ठितं जावरुहरा गछे श्री जावदेव सूरिजिः॥ खिरहालू वास्तव्येन ॥

[1166]

संवत् १५४५ वर्षे माघ शु० १३ बु० लघुशाखा श्रीमाली वंशे मं० घोघल जा० अकाई सुत मं० जीवा जा० रमाई पु० सहसकिरणेन जा० ललनादे वृद्ध जा० इसर काका सूरदास सहितेन मातु श्रेयसे श्री अंचलगछेश श्री सिद्धान्तसागर सूरीणामुपदेशेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन श्री स्तम्जतीर्थे।

[1167]

सं० १५४ए वर्षे वैशाष सुदि ५ रवौ उपकेशज अचोवल० दढागोत्रे सा० साज जा० तेजसर पु० कुंप कोन्हा सहिसा सीधरा अरष युतेन स्वपुण्यार्थ श्री नमिनाथ बिं० का० प्र० श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री मणिचन्द्र सूरिजिः।

[1168]

संवत् १५५७ वर्षे शाके १४२२ वैशाष सुदि ५ गुरौ चाण्डाल्या गोत्रे सा० तेजा जा० रूपी पु० अचला जा० देमी आत्मश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारापितं श्री मलयधार गछपति श्री गुणवषान सूरिजिः।

[1169]

सं० १५६२ व० माघ सु० १५ गु० उ० नैक० गोत्र० सा० जेसा जा० जिसमादे पुत्र राणा जा० पूणदे पु० अरुवाल तेजा आ० श्रे० श्रेयांस बिं० कारि० बोकड़ी० श्री मलयचन्द्र पट्टे मुणिचन्द्र सूरिजिः।

[1170]

संवत् १५६६ वर्षे फागुण सुदि ३ सोमे विश्वलनगरे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० जीवा जार्या रंगी पुत्र रत्न श्रे० काहीआ ज्रातृ श्रीवन्त। केन जार्या श्री रत्नादे द्वि० दाम्भिदे सुत षीमा जामादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागछ जट्टारक श्री हेमविमल सूरिजिः॥ कल्याणमस्तु॥

[1171]

संवत् १५७१ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ उप० सा० धरमा भा० काउ सु० सोता मांडण सु० रूपा सोता भा० सुहड़ादे सु० नरसिंघ आल्हा नापा माला मारूण भार्या माणिकदे पु० गांगा मोका पद्म रूपा भार्या हासू सु० सेटा नोमा सुकुटुम्बेन रूपा नापा निमित्तं श्री शान्तिनाथ बिंबं का० प्र० श्री देवरत्न सूरिभिः ॥

[1172]

सं० १५०७ वर्षे पोस वदि ६ रवौ प्राग्वाट ज्ञातीय प० काका भा० बाक सुत प० पहिराज भा० वरबागं आत्मश्रेयोर्थं श्री चन्द्रप्रभ स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः श्रीरस्तुः ॥

[1173]

सं० १६०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० १ दिने सुजाउलपुर वास्तव्य श्री० तिलका श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री विजयदेव सूरिभिः ।

धातु की चौवीशी पर ।

[1174]

सं० १५०९ वर्षे आषाढ सुदि २ सोमे उसिवाल ज्ञातीय सूराणा गोत्रे सा० लषणा भा० लषण श्री पु० सा० सकर्म्मण सा० सिवराजेन श्री कुन्थुनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारितं प्रतिष्ठितं श्री राजगछे भट्टारक श्री पद्माणंद सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1175]

संवत् १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ रणासण वासि श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० धर्म्मा भा० धर्म्मादे सुत भोजाकेन भा० भली प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ चतुर्विंशतिः पट्टः कारितः प्रतिष्ठितं श्री सुविहित सूरिभिः । श्रीरस्तु ॥

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1176]

संवत् १६०१ वर्षे श्री आदिकरण बोटा बा० रंजा श्री श्रीमाली न्यात श्री धर्म्मनाथ श्री विजयदान सूरि।

[1177]

संवत् १९४४ वर्षे फागुण सुदि १ तिथौ बुधवासरे तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री विजय प्रभ सूरि निदेशात् श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं बा० मुक्तिचन्द्र गणिभिः कारितः।

धातु के यंत्र पर।

[1178]

सं० १८५२ पोस सुदि ४ बृहस्पतिवासरे श्री सिद्धचक्र यंत्रमिदम् प्रतिष्ठितं बा० लालचन्द्र गणिना कारितं सवाई जैनगर वास्तव्य से० वषतमल तत् पुत्र सुषलालेन श्रेयोर्थं। ठ।

[1179]

सं० १८५६ माघ मासे शुक्लपक्षे तिथौ ५ गुरौ श्री सिद्धचक्र यंत्रं प्र० श्रीमद् बृहत् खरतरगच्छे भ० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः जयनगर वास्तव्य श्रीमालान्वय फोफलिया गोत्रीय अनन्दराम त० पूबचन्द तत् पुत्र बहादुरसिंघ सपरिकरेण कारितं स्वश्रेयोर्थं।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1180]

ॐ संवत् १४८६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ सोमवासरे जाईलवाल पवित्र गोत्रे संघवी ठीहूल पुत्र सं० भेजा भि० जस ···· पु० वाहड सहितेन आत्मश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री महीतिलक सूरिभिः॥

[1181]

सं० १४९१ आषा० वदि ३ श्री श्रीमालवंशे वडली वास्तव्य सं० सांफा जा० कामलदे पुत्र सं० मना जा० रत्नादे पुत्राभ्यां सं० समधर सं० सालिग अन्यो जा० राजू साधू सुत सिंघा माणिक रत्ना प्रमुख कुटुम्ब सहिताभ्यां श्री सुपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छाधिराजैः श्री सोमसुन्दर सूरिभिः शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

[1182]

सं० १४९३ वैशाष सुदि ५ उप ज्ञा० आदित्यनाग गोत्रे। सा० पदमा पु० षेढा भा० पूजी पुत्र षीमाकेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं का० श्री उपकेशगच्छे कुक० प्र० श्री सिद्ध सूरिभिः ॥

[1183]

सं० १५०६ वर्षे माह वदि ए श्री कोरंटकीयगच्छे श्री नन्नाचार्य सन्ताने। ऊ० ती० सुचन्ती गोत्रे भा० आभरमुणया पु० हाला भा० हुती पु० मांफण भा० माणिक पु० षेतादि श्री वासपूज्य बिंबं कारापितं प्र० श्री सांबदेव सूरिभिः।

[1184]

सं० १५१३ ओसवाल मं० भारमल्ल भावलदे पुत्र रत्नाकेन भा० अपू भ्रा० टील्हा शिवादि कुटुम्बयुतेन श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री सोमसुन्दर सूरि श्री मुनिसुन्दर सूरि श्री जयचन्द्र सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिभिः।

[1185]

संव० १५१३ वर्षे चैत्र शु० १३ गु० प्राग्वाट ज्ञा० सा० लषमण भा० साधू पुत्र साह गोवळे भा० राजू युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्व बिंबं का० प्र० तपागच्छेश श्री मुनिसुन्दर सूरि तत् पट्टे श्री रत्नशेषर सूरिभिः ॥

[1186]

सं० १५४९ फा० सु० ११ भौ० श्री मू० त्रिभुवनकीर्ति देवा० तत् पट्टान्व सा० पची। भा० वरम्हा पु० सा० अनु। भा० चादंगदे पु० वहू भा० नूपा। त्रि० पु० सा० भेवा भा० वानसिरि व० पु० अजितू भा० नैना कके (?) बिजसी .... ।

[1193]

संवत् १५८७ वर्षे पोस वदि ५ सकरे सहूआला वास्तव्य प्राग्वाट वृद्ध शाखायां दो० वीरा ज्ञा० जाणा ज्ञा० जरमा दे तेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिन साधु सूरिभिः ॥

[1194]

सं० १६१२ वर्षे फागुण शुदि २ तिथौ श्री ओसवाल वंशे सा० आकत ज्ञा० रेणमा सणो सा० चतुह धर्मते कारापितं श्री ढहितेरा गछे ज० श्री जावसागर सूरि त० श्री धर्म्म-मूर्त्ति सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री अनन्तनाथ ।

[1195]

॥ संवत् १६२४ वर्षे माह्य शुदि ६ सोमे ओसवाल ज्ञातीय दोसी जामा संत दोसी पू० । ज । जार्या बाई मेलाई सुत वानरा श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारापितं ॥ तपागछ श्री ७ श्री डारा विजय सूरि प्रति० सावलटन नगरे ।

[1196]

सं० १६५३ वषे अलाई ४२ संवत् ॥ माघ सुदि १० दिने सोमवारे ऊकेश वंशे शंख-वाल गोत्रीय सा० रायपाल जार्या रूपा दे पुत्र सा० पूना जार्या पूना दे पुत्र मं० पाता मं० देहाभ्यां पुत्र जिणदास म० चांपा मूला दे मू । सामल सपरिकराभ्यां श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री वृहत् खरतर गछाधीश्वर श्री अकबरसाहिप्रतिबोधक श्री जिन-माणिक्य सूरि पट्टालङ्कार युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ।

[1197]

सं० १७०३ वर्षे मार्गशिर्षे सित १ दिने मेडता नगरे वास्तव्य शंखवालेचा गोत्रे सा० कूंगर पुत्र सा० माईदासकेन श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागछाधिराज सुवि-हित चट्टारक श्री विजयदेव सूरि पट्टे आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥ कृष्णगढ नगरे मुदपत्त जयचन्द्र(?) प्रतिष्ठायां ॥

[1188]

सं० १५५९ वर्षे वैशाख सुदि १३ सोमे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रेष्ठि मंईआ भार्या माणिक सुत सामल भार्या साऊ सु० धर्मण धाराकेन स्वपित्र पूर्विज श्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारापितं प्र० श्री विमल सुरि पट्टे श्री बुद्धिसागर सूरिभिः वणड वास्तव्य: ॥

[1189]

ॐ सं० १५५९ वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे ओसवाल ज्ञातौ तातहड़ गोत्रे सा० आढ भा० गोपाही पु० सुलखित । भा० सांगर दे स्वकुटुंबयुतेन श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ककुदाचार्य सन्ताने उपकेश गच्छे भ० श्री देवगुप्त सूरिभिः ।

[1190]

सं० १५६३ माह सु० १५ गुरु श्री संडेर गच्छे उसवाल पूगलिया गोत्रे स० काजा भा० रानू पु० नरवद भा० राणी पु० तिहुण करमा कुवाला सहसा प्र० आरम पु० श्री मुनिसुव्रतस्वामि बिंबं कारापितं प्रति० श्री शान्ति सुरिभिः ॥

[1191]

सं० १५६९ वर्षे वैशाष सुदि ६ दिने सूराणा गोत्रे सं० चांपा सन्ताने । सं० सधारू सु० सं० गांडा भा० धणपालही पु० सं० सहसमल्ल भ्रातृ आढा पु० सोमदम युतेन मातृ पुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं का० श्री धर्म्मघोष गच्छे प्र० भ० श्री नन्दिवर्द्धन सूरिभिः ॥

[1192]

सं० १५७४ वैशाष वदि ५ ओसवंशे वरहडिया गोत्रे सा० लाषा पुत्र सा० हर्षा भार्या हीरा दे पुत्र सा० टोडर श्रावकेण स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च अंचल गच्छे श्रावकेण श्रेयोस्तु ॥

धातु की चौवीशी पर।

[1198]

॥ संवत् १५३२ वर्षे वैशाख वदि २ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० मामल जा० कांई सु० पाता जा० वाळं सु० देवाकेन जा० देवलदे प्र० भ्रातृ सामंत जा० लाम्ही सु० समधर जा० अजी सु० मांकण जोजा राणा द्वि० भ्रा० ऊदा जा० बाई पु० साईआ जा० सहिज्यादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री संभवनाथ चतुर्विंशति पट्टः जीवितस्वामी पूर्णिमापक्षे श्री पुण्यरत्न सूरीणामुपदेशेन का० प्र० सुविधिना साकरग्रामे।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1199]

सं० १६३२ श्री संभवनाथ बिंबं पास०।

[1200]

सं० १७७४ माघ तिन २३२ वासा गुलालचन्द श्री सुमति बिंबं कारितं।

[1201]

सं० १८३१ वर्षे मार्गशिर वदि १ शनौ रोहिणी नक्षत्रे भ० श्री विजयधर्म्म सूरीश्वरराज्ये मुनि श्री ऋद्धिविजय गणि प्रतिष्ठितं पं० विद्याविजय गणि श्री वृषभनाथ बिंबं कारापितं स्वश्रेयसे।

[1202]

श्री ऋषभदेवजी मीती माग श्री सु० ३ सं० १९०६।

[1203]

श्री हंसराज श्रेयोर्थं श्री अभिनन्दन बिंबं।

धातु के यंत्र पर।

[1204]

संवत् १९४० आश्विन शुक्ल १५ दिने तपागछाधिराज श्री विजेजिनेन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं सिद्धचक्र यंत्रमिदं कारापितं पटणी बाहादुरसिंहेन स्वश्रेयसे पं० पुन्यविजे गणीनामुपदेशात् ॥

[1205]

संवत् १९५२ पोस सुदि ४ दिने वृहस्पति वासरे श्री सिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं जैनगरमध्ये वा० लालचन्द्र गणिना वृहत् खरतरगछे कारितं बीकानेर वास्तव्य जै० मघेन श्रेयोर्थं ॥ श्री ॥

श्री आदिनाथजी का (नया) मन्दिर।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1206]

संवत् १४३६ वर्षे माघ वदि ११ तिथौ श्री मालान्वये ढोर गोत्रे सा० तोल्हा तद्भार्या श्रा० माणी तत् पुत्र सा० महराज श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगछे भ० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

[1207]

सं० १४९९ फागुण वदि २ गुरौ श्री उपकेश ज्ञातो श्री धरकट गोत्रे सा० हरिराज प्रसिद्धनाम सा० भगुला पुत्रेण सा० लाषा श्रावकेन भार्या गजसीही पुत्र बलिराज युतेन श्री संभवनाथ बिंब का० प्र० श्री वृहद्गछे श्री रत्नप्रभ सूरिभिः।

[1208]

॥ सं० १५२४ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ५ रु० सा० लाषा भा० लषमादे सा० गुणराज धर्म्म

पुत्री श्रा० भारू नाम्न्या श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छनायक श्री सोमसुन्दर सूरि संताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ सा० गुणराज सुत सा० कालू सुत सा० सदराज ॥

[1209]

सं० १५३१ वर्षे चैत्र वदि ८ बुधे चंदेरी वास्तव्य ओसवाल सा० दापा भा० हरषमदे सुत समराकेन भार्या शीतादे सु० वेला मेघराज हंसराज प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री अनंत बिंबं का० प्र० श्री खरतरगच्छे भ० श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1210]

सं० १५३६ ज्येष्ठ शु० ५ रवौ उप० सीसोदिया गोत्रे सा० देवायत भार्या देवलदे पु० षेता भार्या षेतलदे पुत्र भाषर युतेन स्वपुण्यार्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्रति० संडेर-वालगच्छे श्री सालि सूरिभिः ।

[1211]

॥ सं० १५४२ वर्षे वैशाष सुदि ९ शुक्रे ऊकेश ज्ञा० सिंघाडिया गोत्रे सं० रेडा सं० सा० कदा भार्या जदतदे पु० सा० भाकू श्रीमल जिणदत्त । पारस युतेन श्रा० पु० श्री मुनिसुव्रत बिंबं का० श्री मेरुप्रभ सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1212]

संवत् १५५९ वर्षे माग्रस (मार्गशीर्ष) शु० १५ सोमे श्री श्रीमाल भ० वरसिंग भा० देमी० सु० हेमा सु० हराज सु० जयता पोमा सु० पांचाकेन आत्मश्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री मनसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं मारबीआ (ग्रामे ?) ।

[1213]

॥ संवत् १५७० वर्षे माघ सुदि १३ भूमे श्री प्राग्वाट० सा शेवा भा० सहजलदे पुत्र हरषा रूपा हरषा भा० लाडकि पुत्र मातृपितृभ्रातृ भृ० श्रेयोर्थं श्री श्री श्री आदिनाथ बिंबं कारापितं । प्रतिष्ठितं श्री नागेन्द्रगच्छे भट्टा० श्री हेमसिंघ सूरिभिः ।

[1214]

॥ संवत् १६२० वर्षे फाल्गुन शुदि ७ बुधे कुमरगिरि वासि प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्ध शाखायां अंबाई गोत्रे व्यवहा० खीमा भा० कनकादि पुत्र व्य० ठाकरसी भा० सोभागदे पुत्र देवर्ण परिवारयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं। प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपागच्छे श्री पूज्याराध्य श्री विजयदान सुरि पट्टे श्री पूज्य श्री श्री श्री हीरविजय सूरिभिः आचंद्रार्कं नन्द्यात् श्रीः ॥

[1215]

संवत् १६३० वर्षे माघ शुदि १३ सोमे श्रीस्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री श्रीमाल ज्ञातीय सा० वस्ता भा० विमलादे सुत सा० थावरकेन .... आ श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं श्रीमत्तपागच्छे भट्टारक श्री हीरविजय सुरिभिः प्रतिष्ठितं शुभं भवतु ॥

धातु की चौवीशी पर।

[1216]

संवत् १५६ए वर्षे वैशाष शुदि ए शुक्रे श्री बायड़ा ज्ञातीय म० मांण्यक भा० गोमति स० वेलाकेन भा० वनादे सु० लहूंआ लारूण लहूंआ भा० लालू सकुटुम्ब श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारापितं श्री आगमगच्छे श्री सोमरत्न सूरि प्रतिष्ठितं विधिना श्रीरस्तु।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1217]

सं० १७१० ज्येष्ठ सुदि ६ सा० कपूरचन्द। चन्द्रप्रभ भ। तपागच्छे प्रतिष्ठितं।

[1218]

सं० १८२७ वर्षे ॥ घाइ। सावर। शेन। श्री ऋषभनाथ बिंबं श्री तपागच्छे।

धातु के यंत्र पर।

[1219]

संवत् १७५९ वर्षे ७ पोष सुदि ४ दिने सिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं वा० लालचन्द्र गणिना कारितं सवाई जयनगरमध्ये समस्त श्रीसंघेन वृहत् षरतरगच्छे। शुभमस्तु॥

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर—श्रीमालोंका महल्ला।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1220]

सं० १४६५ वर्षे वैशाष सुदि ३ सापुग गोत्रे सा० वेला भार्या स० वील्हणदे पु० साधु षिमराज पेमाभ्यां पितृ मातृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं॥ प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री सोमचन्द्र सूरि पट्टे श्रीमलचन्द्र सूरिभिः॥

[1221]

सं० १५११ वर्षे माघ शु० ५ गुरू श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मकुणसी भार्या नाऊ सुत कीयाकेन पितृमातृनिमित्तं आत्मश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे श्री मुनिचन्द्र सूरिभिः मेहूणा वास्तव्य। श्री।

[1222]

संवत् १५३० वर्षे पोष वदि ६ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० मंत्रि समधर भा० श्रीयादे सुत षीकाकेन आत्मश्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री पिप्पलगच्छे श्री गुणदेव सूरि पट्टे श्री चन्द्रप्रभ सूरिभिः रालजग्रामे।

[1223]

सं० १५३१ वर्षे वै० शु० १० सोमे उसवंशे लोढा गोत्रे सा० चाहड़ भा० देल्ह सु०

नील्हा जा० सोनी करमी सु० सा० हासकेन भ्रातृ सा० नाऊ सा० षेत हासा जार्या रतनी सु० सा० ठाकुर सा० ईसटला० ऊधादि प्रमुखयुतेन स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० प्रति० श्री वृहद्गछ श्री सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[1224]

॥ संवत् १५५५ वर्षे फागुण सुदि ए बुधे सीधुम गोत्रे ठधरि गऊपाल जा० गोरादे सुत वस्तुपाल भ्रातृ पोमदत्त वस्तपाल जा० वल्हादे पुत्र त्रैलोक्यचंद्र श्रेयोर्थं श्री संजवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतरगछे ज० श्री जिनसमुद्र सूरिजिः ॥

[1225]

संवत् १६२४ वर्षे वै० शुदि १ शुक्रवासरे तपगछे नायक ज० प्रज श्री हीरविजय सूरि मनराजो श्री पद्मप्रज बिंबं प्रतिष्ठितं प्रतिष्ठापितं नागपर गहिलड़ा गोत्र सा० अमीपाल जा० अमूलकदे पु० कूअरपाल जा० कुरादे प्रतिष्ठितं शुजं जवति ॥

धातु की मूर्त्ति पर।

[1226]

सं० १७७७ माघ शुक्ल १३ बुधे श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं कारितं। प्र० बृ० त ख० श्री जिनचन्द्र सूरिजिः।

धातु के यंत्र पर।

[1227]

संवत् १७५६ वर्षे वैशाष मासे शुक्ल पक्ष तिथौ ३ बुधे श्री सिद्धचक्र यंत्रं प्रतिष्ठितं ज० जिनअक्षय सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनचन्द्र सूरिजिः जयनगर वास्तव्य श्रीमालान्वये सींघम गोत्रीय किसनचन्द्र तत्पुत्र उदयचंद्र सपरिकरेण कारितं स्वश्रेयोर्थं ॥

[1228]

सं० १९०१ वर्षे आश्विन मासे शुक्ले पक्षे पूर्णमासी तिथौ बुधे जयनगर वास्तव्य

श्रीमालवंशे फोफलिया गोत्रीय चुनीलाल तत् पुत्र हीरालालेन श्री सिद्धचक्र यंत्र कारितं चारित्रउदय उपदेशात् प्र० ज० खरतरगच्छीय श्री जिननन्दीवर्द्धन सूरिभिः पूजकानां .... ती भूयात् ।

—•●•—

आम्बेर । *

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1229]

सं० १३०० वर्षे पोष सुदि १२ सोमे श्री काष्ठासंघे .... सुत ताहड़ श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ प्रतिष्ठितं ।

[1230]

सं० १५२५ वर्षे मार्गसिरि वदि १२ शुक्रे उपके० बावेल गोत्रे सा० अह पुत्र लोला भार्या लाफिमदे .... स्वश्रेयसे पितृमातृपुण्यार्थं श्री चंद्रप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधार गच्छे श्री गुणसुन्दर सूरिभिः ।

[1231]

॥ सं० १५४२ वर्षे फागु० व० २ दिने सीतोरेचा गो० ओस० सा० सूरा भा० सूरमादे पु० परवत भा० सहजादे तथा परवत देलू समधर वीजा सहस भा० पगमलदे सहित भा० सहजा पुण्यार्थं श्री संभवनाथ बिंबं का० प्र० श्री नाणकीयगच्छे श्री धनेश्वर सूरिभिः ॥छ॥

* जयपुर शहरसे ५ मैल पर यह स्थान है और यहांका विशाल प्राचीन दुर्ग प्रसिद्ध है ।

अलवर।

पाषाण के मूर्त्ति पर।

[1232] *

(१) ॥ सिद्धि ॥ संवत् १५१० वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ दिने शुक्रवासरे श्री गोपाचल नगरे राजाधिराज श्री डूंगर-सिंह-देवराज्ये ऊकेश विं (वं) शे।

(२) [पं] चलउट गोत्रे जण्डारी देवराज जार्या देल्हणदे तत्पुत्र जं० नाथा जार्या रूपाई स्वश्रेयोर्थं श्री संजवनाथ बिंबं कारितं प्रति-

(३) ष्ठितं श्री षरतरगछे श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्य श्री जिनसागर सूरिजिः ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ ठ ॥

नागौर।

श्री ऋषजदेवजी का बड़ा मंदिर—हीरावाडी।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1233]

१। ॐ संवत् सु० १०६६ फाल्गुन विदि २
२। मा मुलक व सतो पाहूरि सा-
३। वकेणं सन्तरसुतेन नित्य-
४। श्रेयोर्थ कारिताः ॥

[1234]

संवत् १३६१ वर्षे ········ सुदि २ सोमे श्रेष्ठि धणपाल जार्या पाल्ह पुत्रेण कुमरसिंह श्रावकेण आत्मश्रेयोर्थं श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ·····················।

---

* यह लेख राय गौरीशङ्करजी बहादुर से मिला है उनके विचार से इस लेख का राजाधिराज डूंगरसिंह देव ग्वालिअर का तंवर (तोमर) वंशी—राजा डूंगरसिंह ही हैं। इस मूर्त्ति की मूल प्रतिष्ठा ग्वालिअर में हुई थी, यहां से किसी प्रकार अलवर पहुंची है।

[1235]

संवत् १४३० वर्षे चैत्र सुदि १५ सोमे रावगणे वोवे (?) नेपाल भा० पूरी पु० सा० पेथा स्वपितृमातृश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री पद्मशेषर सूरिभिः ॥

[1236]

संवत् १४५० वर्षे वैशाख वदि २ बुधे उपकेश ज्ञातीय केकडिया गोत्र .... भा० रूदी ७ जेस भा० जसमादे पित्रोः श्रे० श्री चन्द्रप्रभस्वामि बिंबं का० रामसेनीय श्री धनदेव सूरि पट्टे श्री धर्म्मदेव सूरिभिः ॥

[1237]

संवत् १४५० वर्षे फाल्गुण वदि १ शुक्रे उपकेशीय वृहद्याचि जोभा० सा० पानात्मज सा० सजना भा० श्रीयादे पुत्र मलूणवकेन श्री सुमति बिंबं कारितं प्रति० श्री पल्लिगच्छे श्री शान्ति सूरिभिः ॥

[1238]

संवत् १४५३ वर्षे बैशाख वदि १ उपकेशवंशे श्रे० लाडा पुत्र श्रे० केल्हाकेन कुमरपाल देपालादियुतेन श्री शान्तिनाथ बिंबं स्वपुण्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं खरतरगच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरिभिः ॥

[1239]

संवत् १४७४ वर्षे फाल्गुन वदि २ सूराणा गोत्रे से० हेमराज भा० हीमादे पुत्र सं० पेल्हाकेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री पद्मशेखर सूरिभिः ॥

[1240]

संवत् १४७५ वर्षे मागसिर वदि ४ दिने वभाहृभा गोत्रे सा० डुंगर पुत्रेण सा० शिखर केन निजश्रेयसे श्री आदिनाथ प्रतिमा कारिता प्र० तपा श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे भट्टारक श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

[1241]

संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ७ जौमे प्राग्वाट् ज्ञातीय व० साढा श्री जादी पु० सहसा जा० सीतादे पु० पाल्हा स० आत्मश्रेयसे श्री संजवनाथ बिंबं कारितं प्रति० पूर्णिमा पक्षे श्री सर्वानन्द सूरिजिः ॥

[1242]

संवत् १४७० वर्षे माह सुदि .... पक्षे श्री ओसवंशे कछग ज्ञातीय सा० अजीआ सुत सा० जेसा जार्या जासू पुत्र पोमासाणादिजिः अञ्चलगछेश श्री जयकीर्त्ति सूरीणामुपदेशेन श्री चन्द्रप्रज बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[1243]

संवत् १४७३ वर्षे वैशाख सुदी ३ सोमे उपकेश ज्ञातीय सा० टाहा जा० कर्म्मादे पुत्र मेघा जा० अणुपमदे सहितेनात्मश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रति० श्री अमरचन्द्र सूरिजिः ॥

[1244]

सवत् १४७३ वर्षे फाल्गुन विदि १ दिने श्रीवीर बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनजद्र सूरिजिः उपकेशवंशे सा० वाहड़ पुत्र पूजाकेन कारितम् ॥

[1245]

संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बुध उपकेश वंशे लघुशाखा मण्डण सा० मन्दलिक जार्या फदकू सुत सा० डूंगरसी जार्या दल्हादे पुत्र सा० सोना जीवा थीनेन मातृपुण्यार्थं श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतरगछे श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि तत् पट्टे श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

[1246]

संवत् १४७६ वर्षे फाल्गुण सुदि ए बुध उपकेश ज्ञातीय व्यव० शाखा जा० चांपू पुत्र ऊधरणकेन जार्या देपू सहितेन आत्मश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रति० बोकडियागछे जट्टा० श्री धर्मतिलक सूरिजिः ॥

[1247]

संवत् १४९८ वर्षे फाल्गुण विदि २ फांफटिया गोत्रे सा० मोहण भार्या कुमरी पुत्र सा० मेहाकाह्वाभ्यां स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्यं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री पद्मशेखर सूरि पट्टे श्री विजयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1248]

संवत् १५०१ वर्षे आषाढ सुदि ९ दिने उपकेशवंशे करमदिया गोत्रे सा० वील्हा तत् पुत्र सा० धना पुत्र भापा वाल्हा वाछा प्रमुख परिवारेण श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतरगच्छे श्रीमत् श्री जिनसागर सूरि शिरोमणिभिः ॥ शुभम् ॥

[1249]

संवत् १५०४ व्य० (वर्षे) गवल्हो रत्नदे पुत्र लक्ष्मण भाल्हणदे पुत्र नाथू भा० दोया भ्रातृ चीढा युतया सूल्ही नाम्ना कारितः श्री सुपार्श्वः । प्रति० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥

[1250]

संवत् १५०७ वर्षे कार्त्तिक सुदि ११ शुक्रे प्राग्वाट को०ठा० लापा भा० लाषणदे पुत्र को० परवत .... भोला काह्वा नाना कुंगर युतेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं उएस गच्छे श्री सिद्धाचार्य सन्ताने प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1251]

सं० १५०७ वर्षे माह सुदि १३ शुक्रे पटवड़ गोत्रे सा० साल्हा भार्या सोना पुत्र सा० कुसमाकेन भा० कमलश्री पुत्र धानादियुतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्म्मघोषगच्छे पद्माणन्द सूरिभिः .... श्री हेमचन्द्र सूरीणामुपदेशेन ॥

[1252]

संवत् १५०९ वर्षे चैत्र सुदि १२ श्री काष्ठासंघे श्री मलयकीर्त्ति श्री राल्ह भार्या चील्ह

पुत्र राजा भार्या साल्ही द्वितीय पुत्र णइराणो राजा सुता इरूरु पउमदरा रतन एतेषां प्रणमति ॥

[1253]

संवत् १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ३ उपकेश ज्ञातीय आईरी गोत्रे सा० लूणा पुत्र सा गिरिराज भा० सुगुणादे पु० सोनाकेन ठाकुर देवात् श्री चन्द्रप्रभस्वामि बिंबं का० उपकेश गच्छे ककुदा० प्र० श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1254]

संवत् १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ९ बुधे श्री ओसवंशे वृद्धशाखीय सा० हता भा० रंगादे पुत्र सा० माका श्री सुमतिनाथ बिंबं कारापितं श्री साधु सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु श्री अमदाबाद् वास्तव्य ॥

[1255]

संवत् १५०९ वर्षे मार्गशिर सुदि ७ दिने उपकेशवंशे साधुशाखायां सा० लखमण सुत सा० महिपाल सा० वील्हाख्यौ तत्र सा० महिपाल भार्या रूपी पुत्र ण० तेजा सा० वस्ताभ्यां पुत्रादि परिवारयुताभ्यां स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री खरतर श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

[1256]

संवत् १५०९ वर्षे माह सुदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे सा० कूरसी पु० पासड़ भा० जइनलदे पु० पारस भा० पाल्हणदे पु० पदा परवतयुतेन पितृश्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं कारितं उ० श्री ककुदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः ।

[1257]

संवत् १५०९ वर्षे माघ सुदि १० शनौ श्रीमान् भा० मुठीया गोत्रे सा० षिउंपाल पु० सोनाकेन आत्मश्रेयसे आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनतिलक सूरिभिः ॥

[1258]

संवत् १५१० वर्षे चैत्र सुदि १३ गु० प्राग्वाट सा० गोगन भार्या सडू पुत्र सा० जेसाकेन भा० राणी ..... भ्रातृ जामा भा० हीरू प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं कारापितं प्रति० तपागच्छेश श्री रत्नसागर सूरिभिः ॥

[1259]

संवत् १५११ वर्षे मार्गशिर सुदि ५ रवौ उपकेश ज्ञातीय शाह आसा भा० अहिवदे पु० शाह ठाकुरसी भा० जानू सहितेन पितृ भ्रातृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारापितं श्री कोरण्टगच्छे प्रति० श्री सावदेव सूरिभिः ॥

[1260]

संवत् १५१२ मार्ग० शुदि १५ .... वारे प्राग्वाट श्रेष्ठि गोधा भा० फसी सुत नरदे सहसा माटा भ्रा० धीराकेन भा० तारू सुत खीमादिकुटुम्बयुतेन निजश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

[1261]

संवत् १५१२ माघ विदि ७ बुधे उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० तेजा पुत्र सुहका भा० सोना पु० सादावछा हंसा पासादेवादिभिः पित्रोः श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सन्ताने श्रीकक्क सूरिभिः ।

[1262]

संवत् १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि ९ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० तरसी सुत काला सुतवर्द्धमान सुत दो० बालाकेन भा० कूअरि सुत सा० अरण प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वभ्रातृ जयारामा तौ श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

[1263]

संवत् १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि १२ श्री उपकेशगच्छे श्री कक्कुदाचार्य सन्ताने श्री उपकेश ज्ञातौ श्री आदित्यनाग गोत्रे सा० आसा भा० नीबू पुत्र भानू भा० भाजलदे पितृ-मातृश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1264]

संवत् १५१३ वर्षे वैशाख सुदि ५ शुक्रे गूंदोचा गोत्रे सा० धीरा भार्या धारलदे पु० देता भा० सहजलदे पाल्हा भा० पोमादे० स्वश्रेयोर्थं संभवनाथ बिंबं का० प्र० श्री चित्रा-बालगच्छे श्री मुनितिलक सूरि पट्टे श्री गुणाकर सूरिभिः।

[1265]

संवत् १५१३ वर्षे आषाढ सुदि २ गुरू दिने उपकेश ज्ञातीये मणहलेचा गोत्रे सा० वुहथ भा० कड्हणदे पुत्र रणमल भार्या रतनादे पु० माहायुतेन श्री आत्मश्रेयसे श्री सुविधि-नाथ बिंबं कारापितं प्रति० श्री वृहद्गच्छे भानोरावटंके भट्टा० श्री हेमचन्द्र सूरि पट्टे श्री कमलप्रभ सूरिभिः ॥

[1266]

सवत् १५१३ पोस सुदि ७ उपकेश वंशे लोढा गोत्रे सा० भूणा पुत्रेण सा० साल्हाकेन निज भार्या निमित्तं श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपा भट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

[1267]

संवत् १५१७ वर्षे माघ वदि ५ दिने श्री उपकेश ज्ञातौ डूंगरू गोत्र सा० सुहमा भा० गुणपाल ही पु० नगराज भा०. नावलदे पु० नानिगमूला सोढद वीरदे हमीरदे सहितेन श्री श्रेयांस बिंबं कारितं श्री रूद्रपल्ली गच्छे श्री देवसुन्दर सूरि पट्टे श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥

[1268]

संवत् १५१९ वर्षे वैशाख विदि ११ टौबाची वासि प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० केसव जा० जोली सुत सा० लाम्पणेन जा० मरगादे सुत जसवीर प्रमुखकुटुम्बयुतेन निजश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छाधिराज श्री श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1269]

संवत् १५१९ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे श्री ब्रह्माणगच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रेष्ठि देवा जा० हरपू सुत चाम्पाकेन जार्या जईती करणकुंजायुतेन पित्रो श्रेयसः श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बुद्धिसागर सूरि पट्टे श्री विमल सूरिभिः ॥ सुडीयाणा वास्तव्य ।

[1270]

संवत् १५१९ वर्षे माघ सुदि १० उपकेशवंशे श्रुजगोत्रे सा० गूजरेण जा० गउटपे पुत्र पेदा अजाणडू जा० कुसजगदे पाटेवाट (?) सहितेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1271]

संवत् १५२० वर्षे मार्गशीर्ष वदि १२ उपकेश० ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे वैद्य शा० सांगण पुत्र स० सोनाकेन जार्या लाछलदे पुत्र समस्त स० वृद्धपुत्र संसारचन्द्रनिमित्तं श्री चन्द्रप्रज स्वामि बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सन्ताने श्री कक्क सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1272]

संवत् १५२१ माघ सुदि १३ गुरौ प्रा० ज्ञातीय व्यव० नींबा पुत्र खीमा जार्या फूली पुत्र जांघा हेमा पाल्हा सहितेन श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1273]

संवत् १५२४ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे दिने प्रा० वंशे सा० आका जार्या ललतादे तयोः पुत्र धारा जार्या वीजलदे श्री अञ्चलगच्छे श्री श्री केशरि सूरीणामुपदेशेन निज श्रे० श्री शीतलप्रज बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजि; ॥ जयतलकोट वास्तव्य; ॥

[1274]

संवत् १५२४ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० सीधर पुत्र संसारचन्द्र जार्या सादाही पुत्र श्रीवन्त शिवरताज्यां मातृपुण्यार्थं श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य सन्ताने श्रीकक्क सुरिजि; ॥ नागपुरे ॥ श्रीः ॥

[1275]

संवत् १५२५ वर्षे ज्येष्ठ विदि १ गुरौ उपकेश ज्ञातीय खावड़ी गोत्रे साह भूणी जा० लूणादे पुत्री बाई कर्पूरी आत्मपुण्यार्थं श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री कृष्णऋषि गछे तपा शाखायां जट्टारक श्री कमलचन्द्र सूरिजिः शुजम् श्रीरस्तु ॥

[1276]

संवत् १५२७ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे उप० ज्ञा० सा० आना जा० पूरी० पु० देपाकेन जा० देवलदे पु० वच्छा हर्षा नयणा युतेन श्री शीतलनाथ बिंबं कारापितं प्रति० मलाह० प० श्री नयचन्द्र सूरिजिः ॥

[1277]

संवत् १५२७ वर्षे पौष विदि १ सोमे इन्डीयवासि उपकेश मं० कान्हा जार्या जमी सुत मं० कुम्पाकेन जा० सावित्री सुत तेजादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रतस्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ श्री ॥

[1278]

संवत् १५२७ वर्षे पौष विदि ६ शुक्रे ऊप० गहिलड़ा गो० सा० षेढा जा० दाडिमदे प्रभृति पुत्रादियुतेन स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गच्छे श्री विद्यासागर सूरि पट्टे श्री गुणशेखर सूरिभिः ॥ खीमसा वास्तव्य ॥

[1279]

संवत् १५२७ वर्षे प्राग्वाट् सा० प्रथमा जा० पाल्हणदे सुत सं० परवत जा० चाम्पू सुत सा० नीसलेन जा० नांई श्रेयोर्थं सुत जगपालादि कुटुम्बयुतेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपा लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

[1280]

संवत् १५२९ वर्षे वैशाख विदि ६ चंद्रे ऊपकेश ज्ञातौ डूगड़ गोत्रे सा० सिखा जा० थली पुत्र धनपालेन जा० मारू पु० नागिन सोनपाल प्रमुख सहितेन स्वश्रेयसे श्री शीतल-नाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री वृहद्गच्छे श्री मेरुप्रभ सूरिभिः ।

[1281]

संवत् १५२९ माघ सुदि ६ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय पिप्लवेलापट (?) नामलदे सु० ताजा जा० राजलदे सु० कर्म्मसी तेजा सा० श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं श्री पूर्णिमापक्षीय श्री साधुसुन्दर सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं । जूहारुड वास्तव्यः ॥ श्री ॥

[1282]

संवत् १५३० वर्षे वैशाख सु० ३ ऊपकेश ज्ञातीय सा० रणसिंह जा० तेजलदे पुत्र सा० कीताकेन जा० कुनिगदे प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ लूडाड़ा वास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

[1283]

संवत् १५३० वर्षे माघ सुदि ४ प्रा० ज्ञा० रादा जा० आघू पु० सिरोही वासी सा० मांकणेन जा० माणिकदे पु० लषमादियुतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं तपा श्री सोमसुंदर सूरि सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1284]

सं० १५३० वर्षे फाल्गुण सुदि ७ बुधे श्रीमाल ज्ञातीय सा० राना जा० राजलदे जागेयर स्वश्रेयोर्थं श्री अंचलगच्छे श्री जयकेसरि सूरीणामुपदेशेन श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[1285]

संवत् १५३२ वर्षे वैशाख सुदि १० शुक्रे श्री उपसवंशे चण्डालिया गोत्रे सा० नेमा जा० मीनी पुत्र सा० सोहिल जार्या माईठी पुत्र सा० पहिराज जार्या पाल्हणदे पुत्र सा० रत्नपाल सुश्रावकेण पितृव्य शाह जोपाल प्रमुख कुटुम्ब सहितेन पितुः श्रेयसे श्री सुविधि-नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गच्छे श्री पुण्यनिधान सूरिभिः ॥ पहिराज पुण्यार्थं ॥

[1286]

संवत् १५३३ वर्षे चैत्र सुदि ४ शुक्रे ओसवंशे बाबेल गोत्रे सा घेल्हा पुत्र शा० खेता जा० खेतश्री पुत्र शा० देदाकेन स्वपिता श्रेयसे श्री अभिनन्दन नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गच्छे श्री गुणसुन्दर सूरि पट्टे श्री गुणनिधान सूरिभिः ॥

[1287]

संवत् १५३४ वर्षे ज्येष्ठ शित १० दिने सोमे उपकेशवंशे कटारीय गोत्रे जापचा जार्या पाल्हणदे पुत्र सामरसिंह श्रीरकेण श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्रति० श्री षरतरगच्छे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ श्रेयसे ॥

[1288]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ उप० कयणआ गोत्रे सा० लषमण भार्या लषमादे पु० टिता साजा भा० कील्हणदे स्वश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्र० जापङाण गच्छे श्री कमलचन्द्र सूरिभिः ॥

[1289]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ ऊकेश वंशे जहड गोत्रे सा० भगच पुत्र सा० खरहकेन भा० नीविणि पुत्र माला वला पासड सहितेन धर्म्मनाथ बिंबं निज श्रेयोर्थं कारापितं श्री खरतरगच्छे भट्टा० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1290]

संवत् १५३४ वर्षे माह वदि ५ तिथौ सोमे उपकेश ज्ञाती धरावही गोत्रे लढण वीर्पा म० कान्हा भार्या हीमादे पुत्र सतपाक तिहुअणाभ्यां पित्रोः पुण्यार्थं श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं श्री कन्हरसा तपागच्छे श्री पुण्यरत्न सूरि पट्टे श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1291]

सं० १५३४ मा० शु० १० ङा० व्य० नरसिंह भार्या नमलदे पुत्र मेलाकेन भा० वीराणि सुत रातादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ पालणपुरे ॥

[1292]

संवत १५३५ वर्षे आषाढ द्वितीया दिने उपकेश ज्ञातीय आयार गोत्रे लूणाउत शाखायां सा० झांझा पु० चउत्थ० भा० मयलहदे पु० मूलाकेन आत्मश्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं ककुदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1293]

संवत १५४६ वर्षे आषाढ विदि २ ओसवाल ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे वैद्य शाखायां सा०

सिंघा जा० सिंगारदे पु० वींजा ठाजू ताज्यां पुत्र पौत्र युताज्यां श्री चन्द्रप्रज बिंबं सा० सिंधा पुण्यार्थं कारापितं प्र० श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[1294]

संवत् १५५२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ ओसवाल ज्ञातीय म० साईजा जा० केल्ही सु० ठाकुरसीकेन जार्या गिरसू सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं श्री वृद्धतपापक्षे ज० श्री जिनसुन्दर सूरिजिः प्रतिष्ठितं च विधिना ॥

[1295]

संवत् १५५५ वर्षे चैत्र सुदि ११ सोमे उपकेश वंशे मेडतावाल गोत्रे शा० पगारसीह सन्ताने शा० सहसा सु० हा० श्रवण जा० सालिगसुतेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्र० हर्षपुरीय गछे जट्टारक श्रो गुणसुन्दर सूरि पट्टे ॥ श्री ॥

[1296]

संवत् १५५६ वैशाख सुदि ३ शनौ श्री सण्डेरगछे ऊ० बढाला गोत्रे सा० लूला लीला पु० आला हरा लोजा जार्या तारू पु० हरालजइ (?) तू पु० पु० सु० श्रे० श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री शान्ति सूरि .... ।

[1297]

संवत् १५५ए आषाढ सुदी १० बुधे श्री पल्लुवरू गोत्रे शा० तोला सन्ताने कुँअरपाल पुत्र साधू .... वेत जा० देवल० पु० पाप रूपचंद युतेनात्मश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० वृहद्गच्छे ज० श्री मेरुप्रज सूरि पट्टे श्री मुनिदेव सूरिजिः ॥

[1298]

संवत् १५५ए वर्षे माह सुदि १० दिने शनिवारे उपकेशवंशे सखवाल गोत्रे सा गुणदत्त जार्या जंगादे पुत्र सा० धणदत्त जार्या धन श्री पुत्र सा० हीरादे परिवारयुतेन श्री शीतल

नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनसमुद्र सूरि पट्टे श्री जिनहंस सूरिभिः ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीः ॥

[1299]

संवत् १५६३ वर्षे माह सुदि १५ उ० उच्छितवालगोत्रे संघवी देवा भा० देवलदे सा० वील्हा भार्या वील्हणदे पुत्र तेजा वस्ता धन्ना आत्मपुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री श्री श्रुतसागर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1300]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुन सुदी ३ सोमवासरे उपकेशवंशे रांका गोत्रे शा० श्रीरंग भा० देऊ पु० करमा भा० रूपादे स्वश्रेयसे आत्मपुण्यार्थं नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० उपकेश गच्छे भ० श्री सिद्ध सूरिभिः ॥

[1301]

संतृव १५७२ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे श्री श्रीवंशे मं० सिंघा भा० रह्वा पु० मं० करण भा० रमादे पु० मं० अजा सुश्रावकेण भा० आह्वदे पु० राणा तथा पितृव्य पु० मा० गोगद प्रमुखसहितेन मातृ साधुपुण्यार्थं नागेन्द्रगच्छे सुगुरूणामुपदेशेन श्री वासुपूज्य बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन वीवलापुरे ॥

[1302]

संवत् १५७६ वर्षे चैत्र सुदि ५ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० राजा भा० रमादे पुत्र खीमाकेन भा० हीरादे पुत्र धनादि समस्त कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे भीमपल्लीय भ० श्री चारित्रचन्द्र सूरि पट्टे श्री मुनिचन्द्र सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ नेवीआए मगम वास्तव्य ॥

[1303]

ॐ संवत् १५७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ९ उ० सुराणा गोत्रे शा० हेमराज भार्या स० हेमश्री

पुत्र श्रा० देवदत्तेन स्वपितृपुन्यार्थेन कारितं श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री धर्म्मघोष गछे भट्टारक श्री पद्माणंद सूरि पट्टे श्री नन्दिवर्द्धन सूरिभिः ॥

[1304]

सं० १५७६ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ उप० ज्ञा० टप गोत्रे ठ० सदा भा० सक्तादे पु० थिरपाल भा० षेमलदे पु० सहसमल्ल हापा जगा सहितेन पितृ नि० श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्र० श्री सण्डेरगछे श्री शांतिसुन्दर ॥

[1305]

संवत् १५९२ वर्षे आषाढ सुदि ९ दिने आदित्यनागगोत्रे तेजाणी शाखायां शा० मुहणा पु० हासा पुत्र सखारण दा० नरपाल सधारण भार्या सूहवदे पुत्र ४ श्री करणरंगा समरथ अर्मीपाला सखारण स्वपुण्याय कारितं । श्री उपकेश गछे भट्टा० श्री सिद्ध सूरिभिः श्री अभिनन्दन बिंबं प्रतिष्ठितं स्वपुत्रपौत्रीय श्रेये मातु ॥

[1306]

संवत् १५९९ वर्षे वैशाख विदि १३ सोमे श्री सण्डेरगछे ऊ० भण्डारी गोत्रे भ० ईसर पु० बीसल भा० कील्हूपत्ते निमित्तं श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः ॥

[1307]

संवत् १६१५ वर्षे वैशाख बदि १० भोमे जवाठ वास्तव्य हूंबड ज्ञातीय मंत्रीश्वर गोत्रे दोसी श्रीपाल भार्या सिरीआदे सुत दोसी रूढाकेन भा० राणी युतै श्री पद्मप्रभ बिंबं तपा० श्री तेजरत्न सूरिभिः प्रति० ॥

[1308]

संवत् १६४३ वर्षे फाल्गुन सित ११ अहमदावाद वास्तव्य बाई कोडमकीसञ्ज्ञया प्राग्वाट सेठि मूला भा० राजलदे पुत्री श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री विजयसेन सुरिभिः श्री तपागछे ॥

[1309]

संवत् १६९६ वर्षे मिगसिर सुदि १० रवौ उपकेश ज्ञातीय लघु शाखायां बुरा गोत्रे फुमण गोत्रे बाइ गेलमादि पुत्र ठाकुरसी टाइसिंघ श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारापितं श्री तपागछे गुरु श्री विजयदेव सूरि तत्पटे विजयशिव सूरिः प्रतिष्ठितं ॥

[1310]

संवत् १६९७ वर्षे वैशाख शुक्ल ए दिने .... श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागछे श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥

[1311]

संवत् १६९७ वर्षे फाल्गुन विदि २ तिथौ सा० पुरुणाकेन शीतल बिंब कारितं प्रतिष्ठितं .... गछे आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥

[1312]

संवत् १७१५ श्री श्रीमाल ज्ञातौ शाह आसा भार्या अणुपमदे पुत्र थिर पाखेन भ्रातृ लूणसिंह .... निज भार्या .... निमित्तं श्री पञ्चतीर्थी का० प्र० श्री नागेन्द्र गछे श्री पद्मचन्द्र सूरि पट्टे श्री रत्नाकर सूरिभिः ॥

चौवीसी पर।

[1313]

संवत् १५२० वर्षे पौष विदि ५ शुक्रे श्रीमोढ ज्ञातीय मे० काल्हा भार्या काचू सु० भूराकेन भा० मांई सु० अजनरामा सहितेन पितृभ्रातृश्रेयसे स्वपूर्वजनिमित्तं श्री कुन्थुनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रति० श्री विद्याधरगच्छे श्री विजयप्रभ सूरि पट्टे श्री हेमप्रभ सूरिभिः ॥ वर्द्धमान नगरे ॥

[1314]

संवत् १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ मण्डपदुर्गे प्राग्वाट सं० अजन भा० टबकू सुत सं० वस्ता भा० रामा पुत्र सं० चाहाकेन भा० जीविणि पुत्र संजाग आकादिकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री चन्द्रप्रभ २४ पट्ट का० प्र० तपा पक्षे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

श्री आदिनाथजी का मन्दिर—दफ्तरियों का महल्ला।

[1315]

संवत् १५१३ माघ शुक्ल ७ बुधे श्री उसवाल ज्ञातौ लोढा गोत्रे सा० भूचर भा० सरू पु० हंरू भा० सहमाई पु० भरहूकेन पितृ श्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं श्री रुद्रपल्लीय गच्छे श्री देवसुन्दर सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥

[1316]

संवत् १५२७ वर्षे आषाढ सुदी २ गुरौ उपकेश ज्ञातीय तावअजा भार्या आहलदे पुत्र नीबा भा० मानू सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं। प्रतिष्ठितं अञ्चलगच्छे श्री जयकेसर सूरिभिः ॥

[1317]

संवत् १५३४ वर्षे आषाढ सुदि २ दिने उपकेशवंशे बोथरागोत्रे शा० जेसा पु० थाहा सुश्रावकेण भा० सुहागदे पुत्र देल्हा मानी वाकि युतेन माता लखी पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1318]

संवत् १५३४ वर्षे मिगसिर वदि ५ उपकेश ज्ञातीय नाहर गोत्रे शा० चाहरू भार्या हरखू पुत्र वीझाकेन भा० वींझलदे पुत्र केशवयुतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री धर्म्मसुन्दर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1319]

संवत् १५३४ वर्षे प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० सोमा जा० देऊसु जोटाकेन जा० वानरि भ्रातृ जोजा प्रमुखकुटुम्बेन युतेन श्री संजवनाथ बिंबं का० प्र० तपापक्षे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः॥ वीसनगरे॥

[1320]

संवत् १५६० वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने सोजात वास्तव्य उपकेश ज्ञातीय शा० जाणा जा० जावलदे पु० आशाकेन जा० मीड सुत वापा वीदा प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक श्री हेमविमल सूरिजिः॥

[1321]

सवत् १५७७ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमवार पुष्य नक्षत्रे नाहर गोत्रे सं० पटा तत् पुत्र से० पासा जार्या पाल्हणदे तत् पुत्र सं० लाखणाख्येन तद् जार्या जाषणदे तत् पुत्र सं० नानिग सं० खीमसिंह .... सहितेनात्मश्रेयसे बिंबं कारितं श्री शांतिनाथस्य श्री धर्म्मघोष गछे जट्टारक श्री नन्दिवर्द्धन सूरिजिः प्रतिष्ठितः जद्रं जवतात्॥

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1322]

संवत् १५२७ वर्षे पौष विदि ५ शुक्रे प्राग्वाट श्रे० हरराज जा० अमरी पु० समधरेण जा० नाई प्रमुखकुटुम्बसहितेन स्वश्रेयसे श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री उपकेश गछे सिद्धाचार्य सन्ताने श्री देवगुप्त सूरि पट्टे श्री सिद्ध सूरिजिः॥

चौवीसी पर ।

[1323]

संवत् १५३१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्री वायम ज्ञातीय मं० माहव जा० हलू सु० म(हा)देवदास जा० जीवि सु० सिंहराज भ्रातृ हरदास भाई आसुरा पश्चायण अमीपाल श्रेयसे श्री पार्श्वनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगच्छे श्री अमररत्न सूरि गुरूपदेशेन प्रतिष्ठितश्च विधिना ॥ देकावाभा वास्तव्य ॥

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—(घोमावतों की पोल)

पंचतीर्थियों पर ।

[1324]

संवत् १३१६ वर्षे चैत्र विदि ६ जौमे श्री बृहद्गच्छीय श्री उद्योतन सूरि शिष्यैः श्री हीरचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं । श्रे० शुभंकर जार्या देवइ तयोः पुत्रेण श्रे० सोमदेवेन जार्या पूनदेवि पुत्र श्रीवत्स नागदेवादियुतेन आत्मश्रेयोर्थं श्री वीरजिन बिंबं कारितं ॥

[1325]

संवत् १५०३ वर्षे माल्हू गोत्रे सा० जाखर जरमी श्राविकायाः पुण्यार्थं सा० खलाकेन जीवा खीदा जीदा जादा पुत्र युतेन कारितं स्वपुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ श्रीखरतरगच्छे ॥

[1326]

संवत् १५२९ वर्षे वैशाख विदि ५ ओसवाल ज्ञातौ सूराणा गोत्रे सा० सखर सहस-वीरेण जार्या जोजी पु० भीमा वरता रंगू रत्नू युक्तेन स्वजार्या पुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितः प्रति० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री पद्माणन्द सूरिभिः ॥

[1327]

संवत् १५४५ वर्षे ज्ये० विदि ११ दिने वीरवाडा वासि प्रागू० ज्ञाति सा० रत्ना भा० माघू पु० सा० भीमाकेन भा० हेमी कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री श्री श्री सूरिभिः ॥ श्रिये ॥

[1328]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुण सुदि ३ सोमे श्री नाणावालगच्छे उसभ गोत्रे को० वुढथ भा० चाहिणदे पुत्र वीजावणा वधा दोहावणी पुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री शांति सूरिभिः ॥ मेरूता नगरे ॥

चौवीसी पर।

[1329]

संवत् १४९० वर्षे फाल्गुन शुक्ल ए जाइलंवाल गोत्रे सा० शिखर पुत्राभ्यां शा० संग्राम सिंह धनाभ्यां निज मातृ साल्हीं श्रेयो निमित्तं श्री सुविधिनाथ चतुर्विंशति पट्टं कारितः प्रतिष्ठितं। तपा भट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे भट्टारक श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

बीकानेर।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी का मन्दिर।

आसानियों का मुहल्ला—बांठियों के उपासरे के पास।

पंचतीर्थियों पर।

[1330]

सं० १४९६ फागुण वदि ६ बुधे ऊकेश ज्ञातीय सा० जगसी भा० ऊवकू पुत्र्या श्रा०

रोहिणी नाम्न्या क० जिणंद वासा स्वजर्तृनिमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री कोरंटगच्छे श्री कक्क सूरि पट्टे श्री सावदेव सूरिः ॥

[1331]

सं० १४७७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ सोमे प्राग्वाट व्य० जइता जार्या वरजू पु० लुगा स० आत्मश्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मं .... श्री मुनिप्रज सूरिजिः ॥

[1332]

सं० १५०८ वर्षे वै० सु० ५ दिने सोमे ओसवाल ज्ञातीय सुचिंती गोत्रे सा० धन्ना जार्या अमरी पु० तोलूकेन स्वपूर्वज रीजा पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[1333]

सं० १५०९ वर्षे माघ सु० ७ ऊकेशवंशे मालू शाषायां सा० पूना सुत सा० सहसाकेन पुत्र ईसर महिरावण गिरराज माला पांचा महिपा प्रमुख परिवारेण स्वश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनजद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[1334]

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ५ दिने श्री उपकेशगच्छे ककुदाचार्य संताने जाडगोत्रे सा० साधा सा० सारंग जा० तल्ही पु० षीमधर जा० जेठी पु० षेता षेमायुतेन आत्मश्रेयसे श्री संजवनाथ बिंबं का० प्रति० श्री कक्क सूरिजिः ।

[1335]

सवत् १५१६ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० दिने ऊकेशवंशे दोसी सा० जादा पुत्र सा० धणदत्त तथा ठकण पुत्र सा० वच्छराज प्रमुखपरिवारयुतेन श्री शीतल बिंबं मातृ अपू पुण्यार्थं कारितं प्र० खरतर श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ।

[1336]

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० ५ बुधे ऊकेश शुभ गोत्रे श्रे० आसधर पुत्र श्रे० पूनड़ जार्या फली पुत्र सा० कारमखेन जार्या कर्मादे धर्म्म पुत्र सा० समरा जार्या महकलदे सुत तज्जादि कुटुम्बयुतेन श्री प्रथम तीर्थंकर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः। श्री सिद्धपुर वास्तव्य ॥

[1337]

सं० १५३२ फा० सुदि .... श्री .... संजवनाथ बिंबं श्री संडेरगच्छे जट्टारक श्री .... ।

[1338]

सं० १५३४ वर्षे मा० सुदि ५ सोमे श्री उपकेश वांज गोत्रे। सा० वड़ा जा० वीरिणि पु० सा० सच्चू जा० लषमादे मातृपितृ पु० आत्म पु० श्री कुंथुनाथ बिंबं कारापितं श्री मलधर ग० प्र० श्री गुणविमल सूरिजिः ॥

[1339]

सं० १५३६ वर्षे फागु० सु० २ रवौ ओसवाल धामी गोत्रे सा० पदमा जार्या प्रेमलदे पु० जोला जा० जावलदे पु० देवराज युतेन स्वपुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारापितं प्र० ज्ञानकीय गच्छे श्री धनेश्वर सूरिजिः ॥ सोरो .... ।

[1340]

संवत् १५३६ वर्षे फागुण सु० ३ तइट गोत्रे सा० सीधर पुत्र गुरपतिना जा० गरलदे पु० सहसा पुनि जार्या रासारदे पुत्र करमसी पहराज युतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं निज पुण्यार्थं कारितं प्र० नमवाल गच्छे श्री देवगुप्त सूरिजिः।

[1341]

सं० १५३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने ऊकेश .... रा गोत्रे सा० डूल्हा पुण्यार्थं पुत्र सा० अषयराज तद् भ्रातृ ली .... युतेन श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनजद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥ श्री ॥

[1342]

सं० १५३९ वर्षे वैशाष सुदि ४ शुक्रे उ० ज्ञातीय प्राह्मचा गोत्रे व्य० चांदा भा० धर्म्मिणि पु० गांगा भा० म्यापुरि सहितेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० भावड़ गछे श्री भावदेव सूरिभिः।

[1343]

संवत् १५४९ वैशाष सु० ५ बुध काष्ठासंघ भट्टारक श्री ······· तस्याम्नाये ··················।

[1344]

सं० १५५४ वर्षे फा० शु० ६ शनौ श्रीमा० ज्ञातीय सा० मुंज भा० मुजादे पु० सा० परवत भा० अमरादे सा० पर्वत श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागछे श्री हेमविमल सूरि।

[1345]

संवत् १५६१ वर्षे माह सुदि ५ दिने शुक्रे हुंबड़ ज्ञातीय श्रे० विजपाल भा० हीरू सु० श्रे० पद्माकेन भा० चांपू सु० षोना भा० रषी सु० कर्मसी प्रमुखपरिवारपरिवृत्तेन स्वश्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागछाधिराज श्री लक्ष्मीसागर सूरि तत्पट्टे श्री सुमतिसाधु सूरि तत् पट्टे साम्प्रत विद्यमान परमगुरु श्री हेमविमल सूरिभिः॥ वीचावेडा वास्तव्य॥

[1346]

सं० १५८७ वर्षे वैशाष वदि ७ श्री श्रीमवंशे भनसाली गोत्रे। पीरोजपुर स्थाने। सा० धनू भार्या ···· सुत सा० वीरम भार्या वीरमदे सुत दीपचंद उधरणादि कुटुम्बयुतेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं। प्रतिष्ठितं ·············।

[1347]

संवत् १५९६ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमवारे श्री आदित्यनाग गोत्रे चोरवेड्या शाखायां

सा० पासा पुत्र ऊदा भा० पऊमादे पु० कामा रायमल देवदत्त ऊदा पुण्यार्थं शांतिनाथ बिंबं कारापितं उपकेश सिद्ध सूरिभिः प्रति .... ।

[1348]

संवत् १६२७ वर्षे पोष वदि ३ दिने साह काजड़ गोत्र साह चापसी भार्या नारंगदे पु० श्री वासपु श्री वासुपूज्य बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री हीरविजय सूरिभिः ।

जैन उपासरा का शिला लेख ।

[1349]

(१) पृथवी नव मांहि प्रगटः बड़ो नगर बीकांण ।
(२) सुरतसींह महाराजजुः राज करै सुविहाण ॥ १ ॥
(३) गुर्णा क्षमामाणिक्य गणिः पाठक पुन्य प्रधान ।
(४) वाचक विद्या हेमगणिः सुप्रत सुख संस्थान ॥ २ ॥
(५) सय अढार गुणसठ में महिरवान महाराज ।
(६) नठय बनाय उपासरो दियो सदा थिर काज ॥ ३ ॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मन्दिर—बाजार में ।

शिलालेख ।

[1350]

॥ संवत् १५६१ वर्षे आषाढ़ सुदि ९ दिने वार रवि । श्री बीकानेर मध्ये महाराजा राई श्री श्री श्री बीकाजी विजयराज्य । देहरो करायो श्री संघ ॥ संवत् १३८७ वर्षे श्री जिनकुशल सूरि प्रतिष्ठितः ॥ श्री मंडोवर मूलनायक ॥ श्री श्री आदिनाथ चतुर्विंशति

महं ॥ [illegible] रासल पुत्र [illegible] राजपाल पुत्र श्री [illegible] सा० नेमिचंद [illegible]
साह वीरम डुसाऊ देवचंद कान्हड़ महं ॥ संवत् १५९२ वर्षे श्री श्री श्री चउवीस इन्द्रजी रो परघो महं वछावते भरायो छे ॥

चौवीस जिनमाता के पट्ट पर ।

[1351]

॥ संवत् १६०६ वर्षे फागुण वदि ७ दिने श्री बृहत् खरतरगच्छे । श्री जिनभद्र सूरि सन्ताने । श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिनसमुद्र सूरि पट्टे ॥ श्री जिनहंस सूरि तत् पट्टालंकार श्री जिनमाणिक्य सूरिभिः प्रतिष्ठिता श्री चतुर्विंशति श्री जिनमातृणां पट्टिका कारिता । श्री विक्रमनगर संघेन ॥

चरण पर ।

[1352]

संवत् १९०५ वर्षे शाके १७७० प्रमिते माधव मासे शुक्ल पक्षे पौर्णिमास्यां तिथौ गुरुवारे बृहत् खरतर गणाधीश्वर भ० । जं० । युग प्र० श्री १०८ श्री हर्ष सूरि जित्पादुके श्री संघेन कारापितं प्रतिष्ठितं च भ० । जं० । यु० । प्र० । श्री जिनसौभाग्य सूरिभिः श्री विक्रमपुर वरे ॥ श्री ॥

श्रीमन्दिर स्वामी का मन्दिर—भांडासर ।

[1353]

सं० १५३७ वर्षे मार्ग सुदि १२ ऊकेश ज्ञातीय बांहटिया गोत्रे सा० समुधर पुत्रेण सा० भालु .... युतेन श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं तपा भ० श्री हिमसमुद्र सूरि पट्टे श्री हेमरत्न सूरिभिः ।

[1354]

सं० १५७९ वर्षे प्राग्वाट श्रे० गोगेन भा० राणी सुत वरसिंग भा० वीबू बान्धवा भ्रातृ

भ्रमा नरसिंह लोलादि कुटुम्बयुतया श्री संजव विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागछे श्री इन्द्रनन्दि सूरिजिः पत्तने ॥ श्री ॥

कुंरु और नहर पर की शिलालेख ।

[1355]

॥ श्री नेमिनाथाय नमः ॥

श्री बीकानेर तथा पूरब बंगाला तथा कामरू देस आसाम का श्री संघ के पास प्रेरणा करके रुपया जेला करके कुंड तथा आगोर की नहर बनाया सुश्रावक पुण्य प्रजावक देवगुरुजक्तिकारक गुरुदेव को जक्त चोरडिया गोत्रे सीपानी चुन्निलाल रावतमलाणि सिरदारमल का पोता सिंघिया की गवाड़ में वसता मायसिंघ मेघराज कोठारी चोपड़ा मकसुदाबाद अजिमगंजवाले का गुमास्ता और कुंड के ऊपर दारईकेलाव (?) बकतावर चंद सेठिया बनाया संवत् १९५४ शाके १७९० प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे जाद्रवामासे शुक्ल पक्षे पंचम्यां तिथौ जौमवासरे ।

मोरखानो–बीकानेर ।

[1356] *

१. ॥ ॐ ॥ श्री सुसाणं कुलदेव्यै नमः ॥ मूलाधारनिरोधबुरूफणिनीकंदादिमंदानिले ।
(ऽ) नाक्रम्य ग्रहराज मंरु

* यह स्थान "देशनोक" से दक्षिण-पूर्व कोण १२ मील पर है। यहां के देवी मंदिर में काले पाषाण पर यह लेख खुदा हुआ है और टेसिटोरी साहब ने अपने ई० सं० १९१६ की रीपोर्ट में छापी है। See J & P of the A. S. of Pengal' Vol XIII, pp. 214-215.

२. लधिया प्रागुपश्चिमांतं गता। तत्राप्युज्वलचंद्रमंडलगलत्पीयूषपानोल्लसल्लैव-
ल्यानुजव्या सदास्तु जगदानं

३. दाय योगेश्वरी ॥ १ या देवेंद्रनरेंद्रवंदितपदा या नद्रतादायिनी। या देवी किल
कल्पवृक्षसमतां नृणां दधा-

४. ···· लौ। या रूपं सुरचित्तहारि नितरां देहे सदा बिभ्रती। सा सूराणासवंश
सौख्यजननी भूयात्प्रवृद्धिं क-

५. री ॥ २ तंत्रैः किं किल किं सुमंत्रजपनैः किं भेषजैर्वा वरैः। किं देवेंद्रनरेंद्र-
सेवनतया किं साधुभिः किं धनैः। ए-

६. का या भुवि सर्वकारणमयी ज्ञात्वेति भो ईश्वरी। तस्याध्यायत पादपंकजयुगं
तद्ध्यानलीनाशयाः ॥ ३ ॥ श्री भूरिर्द्धर्म-

७. सूरी रसमयसमयांभोनिधेः पारदृश्वा। विश्वेषां शश्वदाशा सुरतरुसदृशस्त्या-
जितप्राणिहिंसां। सम्यग्दृष्टि ····

८. मनणु गुणगणां गोत्रदेवीं गरिष्ठां। कृत्वा सूराणवंशे जिनमतनिरतां यां चका-
रात्मशक्त्या ॥ ४ तद्यात्रां महता महेन

९. विधिवद्विज्ञो विधायाखिले निर्ग्गे मार्गणचातकप्रणगुणः सञ्जारटंकछटः। जातः
क्षेत्रफले प्रहृष्टमरुधरा धारा-

१०. धरः ख्यातिमान् संघेशः शिवराज इत्ययमहो चित्रं न गर्ज्जिध्वजः ॥ ५ तत्पुत्रः
सच्चरित्रे वचनरचनया भूमिराजः

११. समाजालंकारः स्फारसारो विहित निजहितो हेमराजो महौजाः। चंगप्रोत्तुंग-
शृगं भुवि भवनमिदं देवयानोप-

१२. मानं। गोत्राधिष्ठातृदेव्याः प्रसृमरकिरणं कारयामास भक्त्या ॥ ६ संवत् १५७३
वर्षे ज्येष्ठमासे सितपक्षे पूर्णिमा-

१३. स्यां शुक्रे ऽनुराधायां षीमकर्णे श्री सूराणवंशे सं० गोसल तत्पुत्र सं० शिवराज तत्पुत्र सं० हेमराज तद्भार्या सं० हेमश्री त-

१४. त्पुत्र सं० षजा सं० काजा सं० नाल्हा सं० नरदेव सं० पूजा भार्या प्रतापदे पुत्र सं० चाहड़ भा० पाटमदे पुत्र सं० रणधीर

१५. सं० नाथू सं० देवा सं० रणधीर पुत्र देवीदास सं० काजा भार्या कऊतिगदे पुत्र सं० सहसमल्ल सं० रणमल

१६. सहसमल पुत्र मांडण । रणमल पुत्र षेता षीमा । सं० नाल्हा पुत्र सं० सीहमल्ल पुत्र पीथा सं० नरदेव पुत्र मोकला-

१७. दिसहितेन । सं० चाहड़ेन प्रतिष्ठा कारिता सपरिकरेण श्रीपद्मानंद सूरि तत्पट्टे भ० श्री नंदिवर्द्धन सूरीश्वरेभ्यः ॥

चुरू—बीकानेर ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1357]

सवत् १३०४ ······ गच्छे ······ कारितं श्री पार्श्वनाथ बिंबं ।

[1358]

॥ सं० १३०० ज्येष्ठ सु० १४ श्री उपसगच्छे श्रे० म ···· ला भा० मोषलदे पु० देल्हा कमा पितृ मातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री ककुदाचार्य सं० श्री कक्क सूरिभिः ।

[1359]

सं० १४६९ वर्षे फा० वदि २ शनौ नागर ज्ञातीय अलियाण गोत्र श्रे० कर्म्मा जार्या भाणू सुत रूग भ्रातृ सांगा श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० अंचलगछ ना० श्री मेरुतुंग सूरिजिः ॥

[1360]

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० ओसवंशे नाहरे गोत्रे सा० हेमा जा० हेमसिरि पु० तेजपालह आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० धर्म्मघोषगछे .... ।

[1361]

सं० १५३० वर्षे फा० व० २ रवौ प्राग्वाट ज्ञा० साह करमा जा० कुनिगदे पु० सा० दोला जा० देल्हा चोला भ्रातृ जुंणा स्वश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णि० कछोली-वालगछे ज० श्री विद्यासागर सूरीणामुपदेशेन ।

[1362]

॥ सं० १५४५ वर्षे माह सु ३ गुरौ उपकेश ज्ञा० श्रेष्ठि गोत्रे साह आसा जा० ईसरदे पु० जईता जा० जीवादे पुत्र चाहा युतेन पित्रो श्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मड्डाहरज गछे .... ज० श्री कमलचंद्र सूरिजिः ॥

गवालियर (लस्कर) ।

पंचायती मंदिर — सराफा बजार ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1363]

ॐ सं० ११५० ज्येष्ठ सु० १२ देवम सुतया वीटिकया कारितेयं प्रतिमा ।

[1364]

सं० १३४० वै० सुदि २ गुरौ श्रीमाल ज्ञातीय .... श्री प्रद्युम्न सूरिभिः।

[1365]

संवत् १३७६ वर्षे वैशाख सु० ३ .... प्रणमंति।

[1366]

सं० १४९१ माघ सुदि ६ बुधे उप० वोहड़ वर्धमान गोत्रे सा० राणा भा० सूहवदे पु० महिपा मोकल श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं खरतरगच्छे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरि प्रति० ॥

[1367]

सं० १४९८ फागुण वदि १० चंडेजरिया गोत्रे। सा० धर्मा पुत्रेण जीणाजूणाभ्यां निजपितृनिमित्तं श्रीपद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे भट्टारक श्री हेमहंस सूरिभिः।

[1368]

संवत् १५०० वर्षे वैशाख सुदि ३ भाज श्रीमाल ज्ञातीय। श्रे० सादा भा० मनूं सुत माईआ भा० अघू सुत देवराजेन पितानिमित्तं श्री शीतलनाथ पंचतीर्थी बिंबं कारापितं प्रति० श्री ब्रह्माणगच्छे प्र० भ० श्री विमल सूरिभिः।

[1369]

संवत् १५०१ वर्षे मा० सु० ५ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० भांषर सुत भट्टसा भा० भानि पु० सायकरणा परनारायभिः पित्रो श्रे० चंद्रप्रभ स्वामि बिंबं प्र० श्री वृहत् सा .... गच्छे प्र० श्री मंगलचंद्र सूरिभिः।

[1370]

सं० १५०५ वर्षे चै० सु० १३ शान्ति बिंबं का० प्र० तपापक्षे श्री जयचंद्र सूरिभिः।

[1371]

सं० १५०७ वैशाष सु० ९ फूका बेविकाभ्यां स्वश्रेयसे कारिता .... ।

[1372]

सं० १५०९ वर्षे माघ सु० १० शनौ ऊकेशवंशे माल्हू गोत्रे मं० भोजराज भा० ऊमादे पुत्र सं० देवाकेन भ्रा० मं० सोनार संग्रामादि सहितेन सू (?) भा० देवलदे श्रेयोर्थं श्री अजित बिं का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनसागर सूरिभिः ॥

[1373]

सं० १५१२ माघ सु० १ बुधे श्री ओसवाल ज्ञातौ सुहणाणी सुचिंती गो० सा० सारंग भा० नयणी पु० श्रीमालेन भा० षीमी पु० श्रीवंत युतेन मातृश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं उपकेशगच्छे ककुदाचार्य सं० प्र० श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1374]

सं० १५१३ पोष सु० ७ ऊकेशवंशे वि .... क गोत्र सं० नरसिंहांगज सा० मार पुत्रेण सा० कील्हाकेन निजमातृपुण्यार्थं श्री नमि बिंबं का० प्र० ब्रह्माण तपागच्छे उदयप्रभ सूरि भट्टारक श्री पूर्णचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः ।

[1375]

सं १५१३ वर्षे माह सु० २ ऊकेश षीथेपरिया गो० सा० षिथपाल भार्या षेमश्री ...... पु० भापू सेषू भा० सोम श्री ...... माश्री ...... प्ररपांध (?) आ० श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० श्री वृहद्गच्छे श्री सागरचंद्र सूरिभिः ।

[1376]

संवत् १५१५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ सोमे गूर्जर ज्ञातीय दो० अमरसी भा० रूपिणि सुत

ऊसाकेन भा० वइजीयुतेन पितुरादेशेन आत्मश्रेयसे जीवितस्वामी श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं पूर्णिमापक्षे भीमपल्लीय भट्टारक श्री जयचंद्र सूरीणमुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ ठ ॥

[1377]

सं० १५२० वर्षे वैशाष सुदि ए सोमे श्रीमाल ज्ञातीय फतड़ा (?) गोत्रे सा० वछराज पु० सा० जाटा भार्या गउवदे पु० सा० ठाजू भार्या हर्षमदे पु० सा० रत्नपाल सीधर समदा सायराभ्यः स्वपितृणां श्रेयसे श्री श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री धर्म्मघोषगछे श्री विजयचंद्र सूरि पट्टे श्री साधुरत्न सूरिभिः ॥

[1378]

॥ संवत् १५२१ वर्षे वैशाष वदि ८ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० देवसीय भार्या पाल्हणदे पुत्र सा० भामवेन भा० माकू सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री पद्मप्रभ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री साधपूर्णिमापक्षे ५। श्रीरामचंद्र सूरि पट्टे पूज्य। श्री पुज्य चंद्र सूरीणामुपदेशेन विधिना श्राचष्टे।

[1379]

सं० १५२६ वर्षे वैशाष वदि ७ भौमवारे प्रामेचा गोत्रे सा० जाटा भा० जइतो पुरषी माता जाटी पु० भइरवदास ...... भा० फुल्लादे सहितेन लाभि निमित्ते श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं खरतरगछे प्रतिष्ठितं श्री जिनचंद्र सूरिभिः। शुभं भवतु।

[1380]

सं० १५३२ वर्षे वैशाष सुदि ६ सोमे श्री कोरंटगछे श्री नन्नचाय संताने उप० पोमालेचा गोत्रे सा० जगमाल भा० जासहदे पु० सा० सारंग भा० संसारद पु० सा० मेहा नरसि सहितेन श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं प्र० श्री सांवदेव सूरिभिः ॥

[1381]

संवत् १५३३ वर्षे माघ सुदि १३ सोमवासरे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० हेमा भा० मानू पुत्र

स० बकूष्या जा० कार्ही ···· पु० स० वता जा० मत्तकूं पुत्र डूंगर आत्मश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं साधुपूर्णिमापक्षे प्रतिष्ठितं श्री जयशेखर सूरिभिः ।

[1382]

सं० १५३४ वर्षे फागुण सुदि ए बुधवारे प्रा० ज्ञा० सा० मोकल जा० मोह्णदे पु० मेहाके० जा० कुंती पु० रो० जा० लषमण आसर वीसल सहितेन आ० श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० पू० द्वि० कछोली वा० ज० श्री विजयप्रज सूरीणामुपदेशेन ।

[1383]

संवत् १५४ए वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ सोमे ओसवाल ज्ञातीय सा० मूला जा० माणिकदे सं० माणिक जा० गंगादे सु० जूनं च जा० लाठी बिंबं कारितं मूला श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्रतिष्ठितं । श्री संडेरगछे श्री सुमति सूरिभिः ॥

[1384]

सं० १५६३ वर्षे माह सुदि ५ गुरौ उपकेश ज्ञा० जूरि गोत्रे सा० चांपा चउहथ चां० जा० चांपले पु० कान्हा जा० चंगी पु० देवा शिवा सुकुटुम्बयुतेन चउहथ श्रियोर्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं श्री धर्मघोषगछे ज० श्री श्रुतसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं । शुजं जवतु ॥

[1385]

सं० १५६७ वर्षे वैशाष सुदि १० बुधे गूंदेचा गोत्रे ऊकेशवंशे सा० ठाकुर जार्या टहन पु० ऊधा सुत कचा वर्जू जा० २ जसा गुणा प्रमुख कुटुंबसहितैः श्री अंचलगछे जावसागर सूरीणामुपदेशेन ।

[1386]

सं० १५७२ वर्षे वैशाष सुदि ५ सोमे ऊ० ज्ञा० फूलपगर गोत्रे सा० दधीरथ पु० सा० धर्मा जा० २ पाबू साल्हही पाबू ···· पु० कांका जा० पूरी ···· पुत्र मोकल प्रमुख समस्त

कुटुम्बेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री वडगच्छे श्री श्री चंद्रप्रभ सूरिभिः ॥ ॥ श्री ॥ भावर वास्तव्य ॥

[1387]

सं० १५७७ वर्षे वैशाष सु० ६ सोमे कूकर वाड़ा वा० नागर ज्ञातीय श्रे० कान्हा भा० धनी सु० श्रे० हरपतिलदणकेन भा० लषमादे प्र० क० सुतेन नपा सीपा पदमा श्रे० श्री श्रेयांसनाथ बिंबं का० श्री बृहत्तपा प० श्री धनरत्न सूरि श्री सौभाग्यसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1388]

सवत् १६२७ वर्षे वैशाष शुदि ३ शुक्रे ऊकेशवंशे गोठ १ गोत्रे सोप श्रीवछ सोप भोला पुत्र सो० उदयकरण भार्या अहवोदे पुत्र सो० जसवीर । सो० नका सो० धवजी प्रमुख परिवारयुतैः श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं श्री बृहत्खरतरगच्छे श्री जिनसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

चौवीसी पर ।

[1389]

सं० १५२१ वर्षे वैशाष सुदि १० श्री उपकेश ज्ञातीय बापणा गोत्रे सा० देहड़ पु० देल्हा भार्या धाइ पुत्र सा० लूला भीमा कान्हा स० भीमाकेन भा० वीराणि पुत्र श्रवणा मारू भाफू सहितेन श्री शांतिनाथ मूलनायक प्रभृति चतुर्विंशति जिनपट्टः का० श्री उपकेशगच्छे ककुदाचार्य संताने प्र० श्रीसिद्ध सूरि पट्टे श्री कक्क सूरिभिः ॥ शुभं ॥

[1390]

सं० १५४१ वर्षे आषाढ सु० ३ शनौ उप० श्रेष्ठि गोत्रे सा० रामा भा० रत्नू पु० राजा माजा शिवा राजा भा० टहकू पु० वना सांगा मांगा गीईआ आसा सहदेव भार्या भटी सा० सांगाकेन भा० करमी द्वि० भा० रामति प्र० समस्तकुटुम्बसहितेन भ्रातृ वना

निमित्तं श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति पट्टकं का० श्री मडूहड़ गच्छे रत्नपुरीय ज० श्री धर्म्मचंद्र सूरि पट्टे ज० श्री कमलचंद्र सूरिजिः ॥ शाल्मलीयपुरे ।

धातु की मूर्त्ति पर ।

[1391]

सं० १६७५ वर्षे वै० सु० १५ दिने इंदलपुर वास्तव्य प्रा० वाद (प्राग्वाट) ज्ञातीय बाई वज्र का० श्री संजव बिं० प्र० श्री । विजयदेव सूरिजिः ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1392]

संवत् ११७७ फागुण सुदि ए सालिगदे लूण वति जा० कारिता ।

[1393]

सं० १३०६ माह वदि २ श्री बृहद्गच्छ वा० श्री देवार्य स० ऊकेश ज्ञा० श्रे० आसचंद्र सा० श्रे० देदारिसीहेन पितृश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिं० का० प्र० श्री अमरचंद्र सूरि शिष्यैः श्री धर्म्मघोष सूरिजिः ॥

[1394]

॥ सं० १४६६ वर्षे वैशाष सुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातौ म० साल्हा सुत पितृ म०मूलू मातृ मूमी सुत ठकुरसिंहेन पितृमातृश्रेयसे श्री संजवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ब्रह्माणगच्छे श्रीवीर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[1395]

सं० १४६ए वर्षे माह सुदि ६ षंडेरकीयगच्छे ऊ० सा० अजा जा० कपूरदे सु० लिडुआ

भा० माल्हणदे पु० तेजाकेन पितृ घरसमेठी सहितेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांति बिंबं का० प्रति० श्रीसुमति सूरिभिः ॥

[1396]

सं० १४७० वर्षे माघ सु० १२ गुरुवारे आदित्यनाग गोत्रे सा० सलषण पुत्र कम्मण भा० सांवत दीर तेजाकेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीदेव सूरिभिः ॥ ० ॥

[1397]

सं० १४७९ माघ सुदि १० शनौ श्रीमाल ज्ञातीय मं० षेता संताने मं० ठाड़ा भा० नाऊ नाम्ना पु० कान्हा सोना सहितया भर्तु श्रेयसे श्री श्रेयांस बिंबं का० प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे श्री विद्याशेखर सूरीणामुपदेशेन विधिना श्राद्धैः ॥

[1398]

संवत् १४९९ माह सुदि ५ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय वीटवल व्य० पाता सुत वयरसी भार्या माही .... पितृमातृश्रेयोर्थं सुत मेलाकेन आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं श्री नागेन्द्र गछे श्री गुणसागर सूरिः शिष्यैः प्रतिष्ठितं श्री श्री गुणसमुद्र सूरिभिः ॥ श्री सांतपुरे पितृव्य देवलवणीली ।

[1399]

सं० १५०४ वर्षे फागण शु० ११ गुरौ दिने नाहर गोत्रे सा० जाहड़ भा० भोलाई सा० राजा भा० लाबू .... पु० ऊफू सहितं निजपूण्यार्थं श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० श्री धर्म० गछे श्री विजयचंद्र सूरिभिः ।

[1400]

सं० १५०७ ज्येष्ठ सुदि २ दिने ऊकेशवंशे सा० भोणसी भार्या कपूरदे श्राविकया निज भर्तृ भोणतीपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारि० प्रति० खरतरगच्छाधिराज श्री जिनराज सूरि पट्टालङ्कार प्रति० श्री जिनभद्र सूरि राजैः ॥

[1401]

ॐ ॥ सं० १५११ वर्षे माघ वदि ए गोहरिया गोत्रे सा० दातु पूरेण ..... श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा जट्टारक श्री पूर्णचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिजिः ॥

[1402]

सं० १५११ फा० शु० ए रवौ प्राग्वाट० सा० पेषा जार्या राजू सुत वीढाकेन जार्या कमा सुत दरपाल टाहा जरकीता जरमा कगतादि कुटुम्बयुतेन श्री संजवनाथ बिंबं स्वश्रेयसे कारितं प्रतिष्ठितं तपागछ नायक जट्टारक श्री सोमसुंदर सूरि प्रांषज श्री रत्नशेषर सूरिजिः।

[1403]

सं १५१३ वर्षे मा० व० ५ प्राग्वाट व्य० तिहुणा जा० कर्मा पुत्र हासा जगिन्या व्य० दमा पल्या श्रा० मनी नाम्न्या श्री वासुपूज्य बिंबं स्वश्रेयसे का० प्र० तपा श्री रत्नशेषर सूरिजिः ॥

[1404]

संवत् १५१७ वर्षे माह सुदि १० बुधे श्री कोरंटगच्छे उपकेश ज्ञा० काला पमार शाखायां सा० सोना जा० सहजलदे पु० सादाकेन ज्रातृ चउड़ा जादा नेमा सादा पु० रणवीर वणवीर सहितेन स्वश्रेयसे श्री चंद्रप्रज बिंबं कारि० श्री कक्क सूरि पट्टे श्रीपाद .... ।

[1405]

संवत् १५१० वर्षे वैशाष सुदि ३ गुरु श्री श्रीमाल ज्ञातीय बजोला जार्या देमाइ सुत व्यव० कुरुपालेन जार्या कमलादे सुत व्यव० विद्याधर वीरपाल प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्टितं तपागच्छनायक जट्टारक श्री सूरसुंदर सूरिजिः। श्रीपत्तन वास्तव्य शुजं जवतु ॥ श्री ॥

[1406]

॥ संवत् १५१० वर्षे माह सुदि १० दिने श्रीमालवंशे । पल्हवड़ गोत्रे सा० भेया जार्या

मेलाही पु० सा० वीरमेन भार्या षीमा पु० सा० समरा सहसू श्रे० श्री शांतिनाथ बिं० प्र० श्री वृहद्गच्छे श्री रत्नाकर सूरि प० श्री मुनिनिधान सूरि श्री मेरुप्रभ सूरिभिः ॥

[1407]

सं० १५२१ वर्षे वैशाष सु० १० सोमे ओसवाल ज्ञा० सा० ठाकुरसी भा० वीसलदे सुत सा० धनाकेन भार्या सोनाई पुत्र सा० हांसादियुतेन सुता बाबू श्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री वृहत्तपापक्षे श्री उदयवल्लभ सूरिभिः ।

[1408]

संवत् १५३३ वर्षे वैशाष वदि ५ श्री संडेरगच्छे ओसवाल ज्ञा० राणु डायेच (?) गोत्रे केडादेन भणा आल्हू पु० गोकाला डुदेल्ह ···· जयनादर्पदयुतेन आत्मपुण्यार्थं श्री चंद्रप्रभ स्वामि बिंबं का० प्र० श्री ···· सूरि संताने श्री शांति सूरिभिः ।

[1409]

सं० १५३३ माघ सुदि ५ श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जयशेषर सूरिभिः।

[1410]

सं० १५३६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ भौमे श्री श्री माल ज्ञा० महाजन । सदा भा० सूहवदे सुत बीका आका महा० बीका भा० कपूर सुत ताल्हा कान्हा जनासहितेन मातृपितृश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं का० प्रति० श्री चैत्रगच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरि० चांडसमीया असारि गोयं वासर (?) वा० ।

[1411]

॥ सं० १५३६ वर्षे माघ सुदि ९ सोमे प्रा० । ज्ञाति सा० सरवण भा० सहजलदे सुत सा० सूरा पाल्ह सा० जोगा भार्या कर्मी सुत डूसख प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं प्र० ···· सूरिभिः ॥ छ ॥ श्री ॥

[1412]

सं० १५५४ वर्षे वरडउद वास्तव्य ऊकेश ज्ञातीय गांधी गोत्रे सा० सारंग भार्या भाल्ही पुत्र सा० फेरू भार्या सूहवदेकेन भाराऊयुतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचलगच्छे श्री सिद्धान्तसागर सूरिभिः ।

[1413]

सं० १५५७ वर्षे वैशाष सु० ६ शुक्रे ऊकेशवंशे भणसाली गोत्रे भ० गुणराज पु० भ० सहदे पु० भ० हासा भ० राजी ···· पु० भ० वसुपाल भा० लीला पु० भ० सालिग सुश्रावकेण भा० भीमी प्रमुखपरिवारयुतेन पितृश्रेयोर्थं स्वपुण्यार्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री ।

[1414]

सं० १५५९ वर्षे वैशाष शु० ८ बुधे उपकेश ज्ञा० श्रे० सालिग सुत श्रे० नरवद भा० षेतू पुत्र राणाकेन पितुः पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री वृहद्गच्छे बोकडिआ बंट्ठकेन श्री श्री श्री मलयचंद्र सूरि पट्टे श्री मणिचंद्र सूरिभिः ॥

[1415]

सं० १५६७ वर्षे माघ सु० ५ दि० श्रीमाल धांधीया गोत्रे सा० सारंग पु० सा० दोदा भा० संपूरी पु० सा० झालण सा० ऊदा सा० टाला सा० झालण पु० गोपचंद्र श्रीचंद्र इत्यादिपरिवृत्ताभ्यां सा० ऊदा० सा० टालाभ्यां श्री सुविधिनाथ बिं० का० स्वपितृव्य दोदा श्री संपूरी पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1416]

सं० १५७१ वर्षे पोस सुदि ५ शुक्र दिने उ० शीसोद्या गोत्रे गोत्रजा वायण सा० पद्मा भा० चांगू पु० दासा भा० करमा पु० कमा अपाई भ्रातृता पातिः स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० श्री संडेर गणे कवि श्री ईश्वर सूरिभिः ॥ श्री ॥ श्री चित्रकूटदुर्गे ।

धातु के यंत्र पर।

[1417]

॥ संवत् १८५५ वर्षे आश्विन शुक्ल १५ दिने सिद्धचक्र यंत्रमिदं। प्रतिष्ठितं वा। लावण्य कमल गणिना। कारितं श्री नागोर नगर वास्तव्य लोढा गोत्रे ज्ञानचंद्रेण श्रेयोर्थं ॥ श्रीरस्तु ॥

[1418]

ॐ ॥ श्रीमन्त्रि ···· गच्छे संगनद्र (?) देव सूरीणां महप्प गणिना न०········ ।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—दादावाड़ी।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1419]

॥ सं० १३०१ माघ शुक्ल ५ कुशल पु ··········· श्री शांतिनाथ बिंबं।

[1420]

संवत् १४४३ वर्षे वै० सु० १३ श्री मूलसंघे ···· ।

[1421]

सं० १४८२ वर्षे फा० सुदि ३ श्रीमाल ज्ञा० श्रे० सादा जा० मटकू सुत श्रे० देवराज हरपति भ्रातृयुत श्रे० वरसिंह भार्या कपूरादे सुत पर्वतेन भार्या वरणू निज पितृमातृश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्र० श्री तपागच्छ नायक श्री श्री श्री सोमसुंदर सूरिभिः।

[1422]

॥ सं० १४९६ वर्षे वैशाख सु० ५ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० माका भा० भार्या

[1412]

सं० १५५४ वर्षे वरडउद वास्तव्य ऊकेश ज्ञातीय गांधी गोत्रे सा० सारंग भार्या जाल्ही पुत्र सा० फेरू भार्या सूहवदेकेन भाराऊयुतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचलपक्षे श्री सिद्धान्तसागर सूरिभिः ।

[1413]

सं० १५५७ वर्षे वैशाष सु० ६ शुक्रे ऊकेशवंशे भणसाली गोत्रे भ० गुणराज पु० भ० सहदे पु० भ० हासा भ० राजी .... पु० भ० वसुपाल भा० लीला पु० भ० सालिग सुश्रावकेण भा० भीमी प्रमुखपरिवारयुतेन पितृश्रेयोर्थं स्वपुण्यार्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री ।

[1414]

सं० १५५९ वर्षे वैशाष शु० ८ बुधे उपकेश ज्ञा० श्रे० सालिग सुत श्रे० नरवद भा० षेतू पुत्र राणाकेन पितुः पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री बृहद्गच्छे बोकडिआ बंटुकेन श्री श्री श्री मलयचंद्र सूरि पट्टे श्री मणिचंद्र सूरिभिः ॥

[1415]

सं० १५६७ वर्षे माघ सु० ५ दि० श्रीमाल धांधीया गोत्रे सा० सारंग पु० सा० दोदा भा० संपूरी पु० सा० कालण सा० ऊदा सा० टाला सा० कालण पु० गोपचंद्र श्रीचंद्र इत्यादिपरिवृत्ताभ्यां सा० ऊदा० सा० टालाभ्यां श्री सुविधिनाथ बिं० का० स्वपितृव्य दोदा श्री संसरी पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1416]

सं० १५८१ वर्षे पोस सुदि ५ शुक्र दिने उ० शीसोद्या गोत्रे गोत्रजा वायण सा० पद्मा भा० चांगू पु० दासा भा० करमा पु० कमा अषाई लावेता पातिः स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० श्री संडेर गणे कवि श्री ईश्वर सूरिभिः ॥ श्री ॥ श्री चित्रकूटदुर्गे ।

धातु के यंत्र पर।

[1417]

॥ संवत् १७५५ वर्षे आश्विन शुक्ल १५ दिने सिद्धचक्रं यंत्रमिदं। प्रतिष्ठितं वा। लावण्य कमल गणिना। कारितं श्री नागोर नगर वास्तव्य लोढा गोत्र ज्ञानचंद्रेण श्रेयोर्थं ॥श्रीरस्तु॥

[1418]

ॐ ॥ श्रीमन्वि ···· गच्छे संगंनद्र (?) देव सूरीणां महप्प गणिना ज० ········ ।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—दादावाड़ी।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1419]

॥ सं० १३८१ माघ शुक्ल ५ कुशल पु ··········· श्री शांतिनाथ बिंबं।

[1420]

संवत् १४४३ वर्षे वै० सु० १३ श्री मूलसंघे ···· ।

[1421]

सं० १४८२ वर्षे फा० सुदि ३ श्रीमाल ज्ञा० श्रे० सादा जा० मटकू सुत श्रे० देवराज हरपति भ्रातृसुत श्रे० वरसिंह जार्या कपूरादे सुत पर्वतेन जार्या वरणू निज पितृमातृश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्र० श्री तपागछ नायक श्री श्री श्री सोमसुंदर सूरिभिः।

[1422]

॥ सं० १४९६ वर्षे वैशाष सु० ५ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० माका जा० शाणी

सुतो सालगगदा श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं श्री मुनिसिंह सूरीणामुपदेशेन प्र० श्री शीलरत्न सूरिभिः ॥ शुभं ॥

[1423]

॥ सं० १५३६ वर्षे माह सुदि ५ ओसवालान्वय सूराणा गोत्रे स० नाल्हा भा० नावलदे पु० । यग पञ्चषु सरषन कारापित वासुपूज्य बि० धर्म्मघोष गछे श्री .... सूरि प्रतिष्ठितः।

मुरार।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1424]

सं० १४९६ वर्षे फा० व० २ हुंबड़ ज्ञातीय ठ० चाकम भा० वाल्हणदे सुत करमसी देवसीभ्यां निज पितृश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ मङ्गलं भवतु ॥ छ ॥

चरण पर—दादावाड़ी।

[1425]

सं० १९२१ शा० १७८६ माघ मासे शुक्लपक्षे षष्ठ्यां - ६ पूर्वं तु मरुदेशे मेरुतेति नाम नगरस्थोऽभूत् अधुना च मुरारि छावण्यां वास्तव्य धाड़ीवाल गोत्रीय शंभुमल्ल सुजानमल्लाभ्यां युगप्रधान दादा श्री जिनदत्त सूरीणां श्री जिनकुशल सूरीणां च पादन्यासौ कारापितौ प्रतिष्ठितौ च बृ । भ । खरतरगच्छीय श्री जिनकल्याण सूरिभिः उ० माणिक्यचंद तच्छिष्य पं० हुकुमचंद्रोपदेशात् ।

ग्वालियर (गोपाचल) दुर्ग ।

शिलालेख । *

[1426] †

पहला पत्थर ।

(१) ॐ नमः पद्मनाथाय । हर्षोत्फुल्लविलोचनैर्दिशि दिशि प्रोत्क्षीयमानं जनैर्मेदिन्यां विततन्ततो हरिहरब्रह्मास्पदानि क्रमात् । श्वेतीकृत्य यदात्मना परिणतं श्री पद्मजूभृद्यशः पायादेष जगन्ति निर्म्मलवपुः श्वेतानि रुद्धश्चिरम् ॥ १ ॥ मौलिन्यस्तमहानीलशकलः पातु वो हरिः । दर्शयन्निव केशस्थ नवजीमूत कर्णिकाम् ॥ २ ॥ मुक्ताशैलस्थलेन क्षितिति

(२) लकयशो राशिना निर्म्मितोऽयन्देवः पायादुषायाः पतिरतिधवलस्वच्छकान्तिर्जगन्ति । मन्वानः सर्वथैव त्रिभुवनविदितं श्यामता पल्लवं यः शङ्के स्वं वर्णचिह्नं मुकुटतटमिलन्नीलकान्त्या बिभर्ति ॥ ३ ॥ इदं मौलिन्यस्तं न भवति महानीलशकलं न मुक्ताशैलेन स्फुरति घटितश्चैष

(३) भगवान् । उषाकर्णोत्तंसीकरणभुजगं नीलनलिनं वहत्यव्याप्यस्याश्चिरविरहपाण्डूकृततनुः ॥ ४ ॥ आसीद्दीर्घलघुक्तेन्द्रतनयो निःशेषभूमीभृतां वन्द्यः कच्छपघातवंशतिलकः क्षौणीपतिर्लक्ष्मणः । यः कोदण्डधरः प्रजाहितकरश्चक्रे स्वचित्तानुगाल्लामेकःपृथुवत्पृथूनपि हठादुत्पाद्यपृथ्वीभृतः ॥ ५ ॥ तस्माद्वज्रधरोपमः क्षिति

(४) पतिः श्रीवज्रदामाभवद्दुर्व्वारोर्जितबाहुदण्डविजिते गोपाद्रिदुर्गे युधा । निर्व्याजंपरिभूय वैरिनगराधीशप्रतापोदयं यद्वीरव्रतसूचकः समभवत् प्रोद्घोषणाडिण्डिमः ॥ ६ ॥

---

* ग्वालियर किले के लेख डाः राजेन्द्रलाल मित्र के "इंडुएरियनस्" में छपे थे । वह पुस्तक अब दुष्प्राप्य होने के कारण वे भी यहां प्रकाशित किये गये ।

† Indo-Aryans, Vol. II pp. 370-373.

न तुलितः किल केनचिदप्यभूद्भगति भूमिभृतेति कुतूहलात्। तुलयतिस्म तुला पुरुषः स्वयं स्वमिह वर्ष्म विशुद्धहिरण्मयैः ॥ ७ ॥ ततो रिपुध्वान्तसहस्रधामा नृपोभव-

(५) -न्मङ्गलराजनामा। यद्धेश्वरैकप्रणति प्रजावान् महेश्वराणाम्प्रणतः सहस्रैः ॥ ८ ॥ श्री कीर्तिराजो नृपतिस्ततोभूद्यस्य प्रयाणेषु चमूसमुत्थैः। धूलीवितानैः सममेव चित्रं मित्रस्य वैवर्ण्यमभूद् द्विषश्च ॥ ९ ॥ किं ब्रूमोस्य कथामृतं नरपतेरेतेन शौर्याब्धिना धत्ते मालवभूमिपस्य समरे सङ्ग्रामतीतोर्जितः यस्मिन् रङ्गमुपागते दिशि दिशि त्रासा-

(६) -त्करान्मच्युतैर्ग्रामीणाः स्वगृहाणि कुन्दनिकरैः सञ्छादयाञ्चक्रिरे ॥ १० ॥ अद्भुतः सिंहपानीयनगरे येन कारितः। कीर्तिस्तम्भ इवाभाति प्रासादः पार्वतीपतेः ॥ ११ ॥ तस्मादजायत महामतिमूलदेवः पृथ्वीपतिर्भुवनपाल इति प्रसिद्धः। श्री नन्ददण्ड-गदनिन्दितचक्रवर्तिचिह्नैरलंकृततनुर्मनुतुल्यकीर्त्तिः ॥ १२ ॥ यस्य ध्वस्तारि भूपालां सर्वाम्पालयतः

(७) प्रभोः। भुवन् त्रैलोक्यमल्लस्य निःसपत्नमभूज्जगत् ॥ १३ ॥ पत्नी देवव्रता तस्य हरेर्लक्ष्मीरिवाभवत्। तस्यां श्री देवपालोभूत्तनयस्तस्य भूपतेः। दानेन कर्णमजयत् पार्थं कोदण्डविद्यया। धर्मराजश्च सत्येन स युवा विनयाश्रयः ॥ १४ ॥ सुनुस्तस्य विशुद्धबुद्धिविभवः पुण्यैः प्रजानामभून्मान्धातेव स चक्रवर्तितिलकः श्रीपद्मपालः प्रभुः यस्त्वाम्येपि क-

(८) रप्रवृत्तिरपरस्येतीव यश्चिन्तयन्दिग्यात्रासु मुहुः खरांशुमरुणं सान्द्रैश्च भूरेणुभिः ॥ १५ ॥ कृत्वान्याः स्ववशे दिशः क्रमवशात्लक्ष्मापतिर्दक्षिणानुल्लिखाचलसञ्जिजानविरत --- वाजिव्रजैः। उद्भूतान् पततः प ---: संप्रेक्ष्य रेणूत्करान् भूयोप्युग्रटसेतुबन्धभ-धिया त्रस्यन्ति --- ॥ १६ ॥ तस्येन्दुद्युतिसुंदरेण यशसा नाके सुराणांगवे सोवर्ण्यभ्रमशीलसंकुल-

(९) जयादप्राप्नुवत्य: प्रियान्। नूनं शक्रपुर: सुरासुरवधूसङ्घा: श्रिये साम्प्रतं ······ यंति ये प्रथमत: सर्वा वपु: संश्रिते॥ कैर्ह्प्ता ···· पादपां गाव:कामदुघा ····· कैश्चि-न्तितार्थप्रदा:। पूर्णा: कस्य मनोरथा इह न कै: ···· मुना पूरिता वीरो यानि तदस्ति तद्गुणवतः कस्य द्रुमादीन्यपि। श्रुत्वा न पद्मनृपतिं परिरक्षितारं प्रासोदयोपि यदसौ वत नम्रभाव:।

(१०) योद्यापि ···· तनुर्विपिनेष्यशो ···· ॥ भ्रम: कुलालचक्रे च लाभ: पुण्यार्जनेषु च। काठिन्यं
कुम्भेषु क ···· शासविमर्दिनीम्॥ असम्मतो ···· पीडा साधुर्न निस्त्रिंशपरि ···· तोपि ह ···· लक्ष्मेन धनुर्न चासिं तथापि या वैरिगणं जिगाय। सथ ····

(११) ···· पाधिप शिरोमणिं भि ····। लोकानुरागयशसापि ···· प्रतापं विस्तारयां यदसि ···· ॥ वलयानीव नारीणां हिमानीव नभ:श्रिय:। ···· स विमृश्य नदीपूरचत्वरे सम्पदायुष: पूर्त्तधर्म्मे मतिं चक्रे जिघृक्षुरनयो: फलम्॥ प्रजा ···· त्वते

(१२) न क्षितितिलकभूतं न भवनं ···· कारितमद:। ···· मिव गिरा यस्य शिखरं समारूढसिंहो मृगमिव नृ ···· मशितुम्॥ ···· सश्च ···· वरशिखरस्पर्द्धिनो हिममण्ड ···· त्यावतीयं शशिकरधवला वैजयन्ती पतन्ती। निर्व्वातं भाति भूतिच्छुरितनिज-तनोर्देवदेवस्य शम्भो: स्वर्गाङ्गेव पिङ्गस्फुटवि-

(१३) कटजटाजूटमध्यं विशन्ती॥ तदेतद्ब्रह्माण्डं स इह भविता पङ्कजभुव: पुनर्वेयं बोढास्मो वयमिह ···· वियति ····। ···· तदिदमुररीकृत्य सकलं ध्रुवं संसेवन्ते हरिपदन ···· तममी॥ ···· कनकाचल: शुभविद्यावन्त: स्थित: श्रीपतिर्विप्राणोद्विजसत्तमानुदधि-भावास्तो नृसिंहान्वित:। निर्म्माता स्वयं: समस्तविबुधैर्लब्धप्रतिष्ठैरयं प्रासोदश्च

(१४) धरातले सममहो कल्पं हरे: कल्पताम्। ··· द्विजपुङ्गवेषु प्रतिष्ठितेष्वथ पद्मपाल: युवैव दैवप्रतिकूलभावा ···· बभूव॥ तस्य भ्राता नृपतिरभवत् सूर्यपालस्य सूनु: श्री

गोपाद्रेः प्रकृतनिलयः श्री महीपालदेवः। यम्प्राप्यैव प्रथितयशसन्तावभूतां सनाथौ सोयं त्यागी हरिरविसुताभावङ्कस्थोऽचिरेण। सृष्टिङ्कुर्वन्नमाल्यानां विप्रा-

(१५) णां स नृपस्थितिम्। प्रलयं विद्विषामासीद् ब्रह्मोपेन्द्रहरात्मकः यत्र धामनिधौ राज्ञि पालयत्यवनीतलम्॥ ···· मुद्वहन्ति शिरसःखलु राजहंसाः सृष्टास्त्वया पुनरिमाः समयात्रसन्नाः। ·नाथ प्रजाः सुमनसां प्रथमो ···· सि त्वं सिद्धवीररसता-

(१६) मरसोद्भवस्य॥ लक्ष्मीपतिस्त्वमसि पङ्कजचक्रचिह्नं पाणिद्वयं वहसि भूप भुवं विभर्षि। श्यामं वपुः प्रथयसि स्थितिहेतुरेकस्त्वं कोपि नीतिविजितो ······· सम्पालयस्य निश-मर्थिजनस्य कायं रामश्रिया त्वमसि नाथ मु ···· । सङ्कर्षणस्त्वमसि विद्विषदायुधन्त्वं त्वं कोसि सच्चरितहालहलायुधस्य॥ ···· ख्यातारति ···· रूपं तवातिश ····

(१७) यविस्मयकारिदेव। त्वं मीनसिद्धपुरुषोत्तमसम्भवोसि कस्त्वं क्षितीशवरशंकर सूदनस्य॥ भूभृत्सुता पतिरसि द्विषतां पुराणि भेत्ता त्वमीश ···· म्। भूतिं दधास्य मलचन्द्रविभूषिताङ्गः कस्त्वं सदम्बुजदिवाकर शङ्करस्य॥ त्वं तेजसा शिखिन मिद्धमधः करोषि शक्तिं दधासि ····। त्वन्तारकं रिपुबलं

(१८) ···· बलान्निहंसि कस्त्वं नवीनघननीलमलब्धजन्मा (?)॥ त्वं वज्रभृत्त्वमसि पक्षभिदप्य-शेषं भूमीभृतां विवुधबन्धगुरुप्रियोसि ···· दुर्गाचरणोसि कोसि त्वं भीमसाहससहस्र-विलोचनस्य। ख्यातं तवेश बहु पुण्यजनाधिपत्यं कान्तालकावलिभिरासतमैः सुगुप्ता॥ त्वामामनन्ति परमेश्वरबद्धसख्यं त्वं कोसि सद्गुणनिधानधरा-

(१९) धिपस्य। तेजोनिधिस्त्वमसि भूमिभृतः समग्राः क्रान्ताः करैः प्रयतमुन्नतैस्तवेश। प्राप्तोदयः सततमर्थिजनस्य कोसि त्वं कदपभूधरसरोरुहबान्धवस्य॥ आनन्ददोसि जनतानयनोत्पलानामाप्यायिताखिलजनः करमार्दवेन। त्वं शश्वदीश्वरशिरस्तलदत्त-पादस्त्वं कोसि मर्त्यभुवनेश निशाकरस्य॥ त्वामंशमीश नि-

(२०) गदन्ति मधुद्विषोमी श्यामाभिरामतनुरस्य मलप्रबोधः पुण्यं ···· रतमिदं विहितं त्वयैव

त्वं कोसि सत्यधनसत्यवती सुतस्य । .... न्ति सुरसिन्धुरियं समुद्रप्रान्तन्त्वयो-न्नतिमसौ गमितः स्ववंशः । पूर्वे पवित्रवनके विहिताश्च कोसि वंशस्थलब्धपरता ....जगीरथस्य ॥ एतत्त्वया कृतमताङ्कमासुधिस्त्वं व्याप्ता महीह

(२१) .. रीश मनोजवैस्ते पुण्यावतारकरणकृतदुर्दशास्वस्त्वं कोसि हन्त रिपुलाघव राघवस्त्वम् । धर्म्मप्रसूस्त्वमसि सत्यधरस्त्वमेकस्त्वं वासुदेवचरणार्चनदत्तचित्तः । त्वं कोसि विप्रजनसेवितशेषभूतिः संग्रामनिष्ठुर युधिष्ठिरपार्थिवस्य ॥ त्वं भूरिकुञ्जरबलो भुवनैकमल्ल .... भूषित तनुर्नृपपावनोसि । प्रच्छन्न

दूसरा पत्थर । *

(१) .... : कस्त्वं कवीन्द्रकृतमाद .... कादरस्य । पकस्त्वमीक्ष भुवि धर्मभृतां वरिष्ठः सस्वामिकाग्गुिणदर्पहरस्त्वमाजौ । त्वं सर्व्वराजपृतनाविजयाप्तकीर्तिस्त्वं कोसि सुन्दर पुरन्दरनन्दनस्य । दुर्योधनारिबलदर्पहृतस्त्ववेश यत्नः पराजेनयशः प्रसरे निरोद्धुम् । त्वं कोसि भूजनित .... कर्त्तन विकर्त्तनसम्भवस्य ।

(२) .... यस्त्वमसि कर्म गभीरतायास्त्वं पासि पार्थसमभूमिभृतः प्रविष्टान् । अन्तः स्थितस्तव हरिः सततं नरेश कस्त्वं विदीर्णरिपुजागरसागरस्य ॥ .... क्रमसमागतसत्त्वभृत्तिस्त्वं राजकुञ्जरशिरः प्रवितीर्णपादः । दीप्तारिभास्करतिरस्कृतिसिंहिकाभूः कस्त्वं महीपतिमृगाङ्कमृगाधिपस्य । दानं ददासि विकटो वत वंशशोभस्त्वं दन्तपालिकरवा-

(३) लहृतारिदर्पः क्षोणीभृतो जयसि तुङ्गतया नरेन्द्र त्वं कोसि वैरिबलदारण वारणस्य ॥ सद्म श्रियस्त्वमसि मित्रकृतप्रमोदस्त्वं राजहंससमलंकृतपादमूलः । स्वामिन्नधः कृतजडोसि जनाभिरामः कस्त्वं सिताग्र्यमुखपङ्कज पङ्कजस्य ॥ सत्पत्रभूषिततनुः सुविशुद्धकोश स्त्वं चन्द्रकीर्त्तिसमलंकृतकान्तमूर्त्तिः ख्यातं तवैव कविवर्ण .... व वुहिक ....

---

* Indo-Aryans, Vol. II, pp. 373-377.

(४) समरभैरवकैरवस्य ॥ त्वं पश्यतां हरसि देव मनांसि सश्चन्मङ्गल्यभूस्त्वमसि निर्मलताभिरामः । कोसि प्रसीद बहु सद्गुणरत्नयोनिस्त्वंकच्छपारिकुलभूषण भूषणस्य ॥ धात्रा परोपकरणाय विसृष्टकायः सञ्जातजन्मसमलंकृततुङ्गगोत्र । ब्रूहि ···· भवनीश्वरवन्दनीयस्त्वं कोसि सूर्यनृपनन्दन चन्दनस्य ···· ॥ नत्वाशु शुभ्रहृदय प्रथितो·

(५) प्रभायस्त्वं भानुना कृतवृषो न जडीकृताहस्तेनास्तु नाथ हरिणोपमितिः कथं ते ॥ नित्यं सन्निहिते कृपाणतमसा प्रायोभिभूयेत स त्वत्प्रासाद् भुवनैकनाथ हरिणा· स्तस्योदरे प्राविशन् । मूर्त्तिस्ते च कलङ्किता सजडतां धत्ते ···· : शङ्खस्थैर्विदित स्तथापि नृपते राजा त्व····द्भुतः····विमुखतां पार्थेन नीताः परे व्यसिनस्तुतिरर्ज्जुन·

(६) स्यासिहिते व्यक्तापि पूर्वं किल तात्सम्यक् प्रतिभाति सम्प्रति पुनः श्रीमन्महीपालवत् त्वामालोक्य सहस्रशो रिपुबलं निघ्नन्तमेकं रणे ॥ किं ब्रूमोपि ···· स्त्वं नीतिपात्रं परं वृत्तान्तं जगतीपतेरनिस्तृणात्मप्रियाणां शृणु । कीर्त्तिर्भ्राम्यति दिक्षु ···· किं चित्रं भुवनैकमल्ल यदि

(७) मन्दाकिन्योपयभूलोकाङ्कुशरता भगीरथनृपेणानायि निम्नां महीम् । आश्चर्यं पुनरेतदीश यदि ते निम्नान्महीमण्डलादूर्द्धं कीर्त्ति····णीकमलभूलोकं त्वया प्रापिता । चित्रं नात्र फल ···· सर्वात्मना विद्धो विशिखैः संमूर्छितस्याहवे । ···· मध्ये

(८) भ्रताश्चर्यकृत् ॥ अत्यंबुधिभवद्वैमत्यादित्यभवन्महः । अतिसिंहभवत्शौर्यमतः केनोपमीयते ॥ केयूरं बलभूपालभुजदण्डे विराजते किरीटमिव ···· भिधासि विजय· श्रियः । ···· भुवनगुरोस्तोत्रमकृथास्तदेष

(९) वैतालिकैरित्थमभिष्टुतेन संपूजितामर्त्यसुरद्विजेन । विमुक्तकाराग्रहसंचयेन विदीर्णभूताभयदक्षिणेन । तेनाभिषिक्तमात्रेण प्रतिजज्ञे दृयं स्वयम् । पश्चात्पात्र भूसिद्धिः कन्यायाः ···· ॥ ···· यशः शरीरम् ॥ स·

(१०) तर्पिता ब्रह्मपुरी च तेन शेषान् विधायावनिदेवमुख्यान्। प्रवर्ति ··· व्रमतन्द्रितेन मृष्टान्नपानैरतिधार्मिकेण ॥ श्री पद्मनाथस्य सलोकनाथ ··· नैवेद्यपाका ··· विला

(११) सिनीवा ·· नादिर्यथार्हतः पादकुलस्य मूर्त्तिम्। स पद्मनाथस्य पुरः समग्राम-कल्पयत्प्रेक्षणकायभूपः ॥ पाषाणपल्लीं प्रविभज्य सम्यग् देवाय ··· । सम्पाद-यामास तथा द्विजेभ्यः ·· ।

(१२) गतो योगीश्वरांगोद्भवः ख्यातः सूरिसलक्षणः क्षितिपतेः सर्वत्र विश्वासभूः। आधारो विनयस्य शीलभवनं भूमिः श्रुतस्याकरः स्वाध्यायस्य क क वसतिः ····

(१३) हीपाले नटो विप्रास्तस्मिन् ग्रामे प्रतिष्ठिताः। तेषां नामानि लिख्यन्ते विष्णुः शासनोदितः ॥ देवलक्षिधः सुधीरात्मयस्ततः श्रीधरदीक्षितः ॥

(१४) ··· रामेश्वरो द्विजवरस्तथा दामोदरो द्विजः। अष्टादशैते विप्राश्च ···· द्विजः। पादोनपदिका ···· णेकौसुरार्चकौ। द्वावर्द्धपदिनावेष विप्राणां संग्रहः कृतः। ···दर्द्धपदं नृपः। विधाय ··कायस्य सूरये देवाय दत्तः सौवर्णो राज्ञा रत्नैः समाचितम्। ··· हरिणमणिमयं भूप—

(१५) ··· कं ददौ। रत्नैर्विचित्रं निष्कञ्च निष्क ····: स भूपतिः ॥ प्रा—केयूरयुगलं रत्नैर्बहुभिराचितम्। कङ्कणानां चतुष्कञ्च महार्हमणिभूषितम्। ···· द्वितीय मनि ···· स्य सौवर्णं केवलं यथा। कङ्कणानां चतुष्कञ्च नीलपट्टद्वयं तथा। ···· लैः पंचभिर्युता। ···· धारापात्रञ्च कां।

(१६) ··· चतुष्टयम्। सुवर्णाण्डत्रयं देवपरिवारविभूषणम्। ···· परिहेमाब्जमातपत्रीकृतं विभोः ॥ निवेश्य ताम्रपट्टे च तन्मयेनैवम ····। प्रतिमा नित्यं मणि ···· राजती ··· प्रतिमा ···· का द्वितीया ···· द्युती। राज ···· मयी चान्या ····। ताः प्रयत्नेन तिलोपि पूज्यते ····वेश्मनि। तत्र ताम्रमयं देवं दीपार्थं मणिडकाकृतम्।

(१७) ....क। ताम्रार्घपात्रद्वितयं तथा दत्तं महीभुजा। सधूपदहनाः सप्त घण्टाश्च ....। दत्ताः शङ्खाश्च सप्तैव ताम्रपात्रीचतुष्टयम्। स कांस्यभाजनं प्रादान्नृपतिः ....चामरं दण्ड... बृहच्चतुष्टयम् ताम्रमयं तास्ता ...। दत्ताश्च दशतन्मयाः॥ ....देवोपकरणद्रव्याणां संग्रहः कृतः।

(१८) ....वापीकूपतडागादि ... नानावनेषु च। दशमासं तथा विंशत्यूर्द्ध्वं सर्वत्र मण्डले। ददौ राजा नि ...यते सर्वं प्रवर्तते। अयं देवालयो नाम ...स्फटिकामल ... भारद्वाजेन मीमांसान्यायसंस्कृतबुद्धिना। कवीन्द्ररामपौत्रेण गोविन्दकविसूनुना। कविता मणिकर्ण्णेन सुभाषितसरस्वती। प्रशस्ति

(१९) ....लङ्केश्वरवान् द्वितीयां विभ्रत्सुहृतां मणिकण्ठसूरेः। पश्चासे चाश्विने मासे कृष्णपक्षे नृपाज्ञया। रचिता मणिकर्ण्णेन प्रशस्तिरियमुज्ज्वला॥ अङ्कतोपि ११५० ॥ आश्विनबहुलपक्ष।

(२०) ... खिलां महीम्। यस्य गीर्वाणमन्त्री च मन्त्री गौरो भव। प्रशस्तिरियमुत्कीर्णा सद्वर्णा पद्मशिल्पिना।

(२१) ● ● ● ● ●

मूर्त्तियों के चरणचौकी पर।

[1427]*

श्री आदिनाथाय नमः॥ संवत् १४९७ वर्षे वैशाख ... ७ शुक्रे पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीगोपाचलदुर्गे महाराजाधिराज राजा श्रीडुंग ...संवर्त्तमानो श्रीकाञ्चीसंघे मायूरान्वयो पुष्करगणभट्टारक श्रीगणकीर्त्तिदेव तत्पदे यत्यः कीर्त्तिदेवा प्रतिष्ठाचार्य श्रीपंडितरघूतेपं

* श्री आदिनाथजी की बड़ी मूर्ति पर यह लेख है। Indo-Aryans, Vol. II, p. 382.

आम्नाये अग्रोतवंशे मोङ्गलगोत्रा सा ॥ धुरात्मा तस्य पुत्रः साधु जोपा तस्य जार्या नाह्ली । पुत्र प्रथम साधुक्षेमसी द्वितीय साधुमहाराजा तृतीय असराज चतुर्थ धनपाल पञ्चम साधुपाल्हा। साधुक्षेमसी जार्या नोरादेवी पुत्र ज्येष्ठ पुत्र जधाधि पतिकौल ॥ ज—जार्य, च ज्येष्ठ स्त्री सुरसुनी पुत्र मल्लिदास द्वितीय जार्या साध्वीसरा पुत्र चन्द्रपाल। क्षेमसी पुत्र द्वितीय साधु श्रीजोजराजा जार्या देवस्य पुत्र पूर्णपाल॥ एतेषां मध्ये श्री॥ त्यादिजिनसंघाधिपति काला सदा प्रणमति ॥

[1428] *

(१) सिद्धि संवत् १५१० वर्षे माघसुदि ८ अष्टम्यां श्रीगोपगिरौ महाराजाधिराज रा
(२) जा श्रीडंगरेन्द्रदेवराज्यप्र .... श्रीकाष्ठासंघे मायूरान्वये जट्टारक श्री ।
(३) क्षेमकीर्त्तिदेवस्तत्पदे श्रीहेमकीर्तिदेवास्तत्पदे श्रीविमलकीर्त्तिदेवा: ....
(४) डिता .... सदाम्नाये अग्रोतवंशे गर्गगोत्रेसा .... त
(५) योः पुत्राः ये दशाय श्रीवंद जार्या मालाही तस्य प्रवसा०षषार रा .... जीसा .... डु
(६) तीयसा० हरिचंदजार्या जसोधर द्वितये .... णसा साo सधा सा० तृती
(७) य हेमा चतुर्थ सा० रतीपुत्र सा० सह सापं .... मु सा० धं....सा० सल्हापुत्र एसेवं..ए
(८) तेषां मध्ये साधु श्रीचंद्रपुत्र शेषा तथा हरिचंद्र देवकी जार्या ....
(९) दीप्रमुखा नित्यं श्रीमहावीर प्रतिमा प्रतिष्ठाप्य जूरिजक्त्या प्रणमंति ॥
(१०) अङ्गुष्ठमात्रां प्रतिमां जिनस्य जक्त्या प्रतिष्ठापयतो महत्या । फलं बलं राज्य
(११) मनन्त सौख्यं जवस्य विच्छित्तिरथो विमुक्ति ॥ शुजं जवंतु सर्वेषां ॥

[1429]

(१) श्रीमङ्गोपाचलगढदूर्गे ॥ महाराजाधिराज श्री मल्लसिंह देवराज्ये प्रवर्त्तमाने । सवंत् १५५२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ।

* Indo Aryans. Vol, II. pp. 383—84.

(२) ... सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये। भ० श्रीपद्म नन्दिदेव तत् पट्टालंकार श्री।

(३) शुभचंद्र देव। तत्पट्टे भ० मणिचंद्र देव। तत्पट्टे पं मुनि ... गणि कचरदेव तदन्वये वारह जेणीवंशे साधुम भार्या व –

(४) युक पु ४ तेषां मध्ये आणंद भार्या उदैसिरि। पुत्र ६ लोहंगराम मुनिसिंघ अरजुन उधरण मल्हू नल्हू। मल्हू भार्या।

(५) पियौसिरि पुत्र पारसराम भार्या नव। द्वितीय पुत्र रामसि भार्या नागसिरी। तृतीय पुत्र लिख। चतुर्थ पुत्र रोपणि॥ सा मल्हु।

(६) .. तीर्थंकर विंबं निर्मापितं प्रणमति प्रीत्यर्थं॥

सुहानीय।

पाषाण की मूर्त्तियों के चरणचौकी पर।

[1430] *

संवत १०१३ माधवसुतेन महिन्द्रचन्द्रकेन कला खोदिता।

[1431] †

संवत १०३४ श्रीवज्रदाम महाराजाधिराज वइसाख वदि पाचमी ● ● ●

* Indo Aryans, Vol. II, p. 369.
† Do. p. do.

[1432] *

६ः ॥ सिद्धि । सन्तु १४०७ वर्षे बैशाख सुदि १५ दि – नमो ··· मथावे वे र ··· करा ब्रह्मजुता सर ··· गत्या र ··· आदि असंड ढा ··· ओस्व ··· क···सुत ··· रिता मु ठ ढ ··· व ···

[1433] †

· ११६० कातिक सुदि १३ गुरू दिने रतन लिषितं राऊन ताढ ··· तथार दिवसम्मि पंच ··· षंड्राना पसावे आदेसू संवतु १५२२ वर्षे चैत सुदी १० बुधे।

मथुरा।

श्रीपार्श्वनाथजी का मंदिर—घीयामंडि।

पंचतीर्थियों पर।

[1434]

॥ सं १३७५। श्र० फूसर्सीह जार्या मालू पुत्री लषमिणि मातापितृ श्रयसे श्री शांतिनाथ का० प्र० ब्रह्माणीय श्रीमदनप्रज सूरि पट्टे श्रीविजयसेन सूरिजिः॥

[1435]

ॐ सं० १३०० वर्षे माघसुदि ५ उस० सुचिंती गोत्रे सा० धीमा पुत्र सा० भूणा जोजा·· श्रीजिनजड़ सूरि शिष्य श्रीजगत्तिलक सूरिजिः। ··· श्रीपद्मानंद सूरिजिः॥

[1436]

सं० १४६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रे उपकेश ज्ञा० व्य० जइता पु० जगपाल जा० पूजलदे पु० लोलाकेन पितृमातृ श्र० श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० वृद्धगच्छे श्रीरामदेव सूरिजिः।

* Indo-Aryans, Vol. II, p. 381.

† किले पर "सास बहु" के मंदिर की मूर्त्ति पर यह लेख है।

[1437]

सं० १५२३ व० वै० सु० ६ प्राग्वाट श्रे० वस्ता भा० फडू सुत श्रे० सारंगेण भा० मरगादे पुत्र श्रे० वीकादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथ बिम्बं का० प्र० तपागछे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्रीलक्ष्मीसागर सूरिभि : ॥ जइतपुर ॥

[1438]

सं० १५२८ वर्षे फागुण - - श्रीमालज्ञातीय टांक गोत्रे स० भाविनो पुत्र श्रीभागू श्रावक श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगछे श्री जिनसागर सूरि तत्प० श्री सुंदर सूरि पट्टे श्री हर्ष सूरिभिः ।

[1439]

सं० १५७९ वर्षे माघसुदि ६ शुक्रे वैशाष वदि ५ उसवंशे लाषाणी गांधी गोत्रे सा० तेजपाल पुत्र सा० कुयरपाल भार्या सालिगदे पुत्र रायमल्ल श्रावकेण स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचलगछे श्रावकेण श्री गुणनिधानसूरि उपदेशात् ।

धातुकी मूर्त्ति पर

[1440]

सं० १६०८ फाग० सु० १० क्षेमकीर्त्ति .... ।

धातुके यंत्र पर ।

[1441]

सं० १८५२ पोष सुदी ४ दिने । बृहस्पति वासरे श्रीसिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं सवाई जैनगर मध्ये वा० लालचंद्र गणिना कारितं वीकानेर वास्तव्य कोठारी अनोप चंद तत्पुत्र जेठमल्लेन श्रेयोर्थं शुभं भवतु ॥

आगरा ।

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर—रोशन मोहल्ला ।

पंचतीर्थियों पर

[1442]

॥ संवत् १३७९ वर्षे वैशाख सुदी ६ बुधे श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० अरसीह भा० पामना-पुत्र ... वाल्हाकेन श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1443]

॥ संवत् १५२४ वर्षे मार्गशिर बदी ४ रवौ उपकेश ज्ञातीय लिंगा गोत्रे सा० पीघा भा० ऊदी ... पु० सा० चेडन भा० सूहवादे पु० शेषा सरूजन अरजन अमरासहितेन स्वपु० श्रीकुन्थुनाथ बिम्बं का० प्र० श्रीउपकेशगच्छे ककुदाचार्यसन्ताने श्री सिद्ध सूरि पट्टे श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1444]

॥ सं० १५३३ वर्षे पोस सुदि १५ सोमे सिद्धपुर वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय सा० नासण भा० वानू सु० बडाकेन भा० माई मुसूरा प्र० कुटुम्बयुतेन श्री सुमतिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीवृद्धतपागच्छे श्री ज्ञानसागर सूरि पट्टे श्री उदयसागर सूरिभिः ॥

[1445]

॥ संवत् १५३६ व० ज्येष्ठ वदि ४ सोमे श्रीश्रीमाली दोसा रगना उपरिसन प्रावरू भा० हपारा सुत भैरवदासेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बि० का० प्रति० बृहत्तपा श्री उदयसागर-सूरिभिः ॥

[1446]

॥ संवत् १५७२ सा० लीबा भा० का० .... सं० गांडण रणधीर र... देवाति प्रणमन्ति

[1447]

॥ संवत् १५७१ माघ सुदी ५ बुधवासरे श्री मूलसंघे भ० श्री जिनचन्द्र तदाम्ना जसवाल इल्हा ... कुवेसल श्री हेमणे ....

[1448]

॥ संवत् १६२० वर्षे ज्येष्ठ वदी २ .... श्री सुपार्श्वनाथ बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री-बृहत् खरतरगछे भ० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1449]

॥ स० १७३१ वर्षे आगरा वास्तव्य लोढा गोत्रे प्रतापसिंहस्य भा० मूल श्रीनवपद कारितं प्रतिष्ठितं श्री (?) विजयसूरी.... ।

धातु की चौविशी पर।

[1450]

॥ संवत् १५३४ वर्षे वैशाख सुदी दशमी शुक्र ओसवाल ज्ञातीय राका शाखायां वलह गोत्रे सं० रत्नापुत्र स० राजा पु० सं० नाथू भा० वल्हा पुत्र सं० चूहड़ भा० हीसू पु० स० महाराज भा० संश्री पुत्र सोहिल लघुभ्रातृ महपति भा० माणिकदे सु० नरहपाल भा० मलूही पु० धनपाल स० हेमराज भा० उदयराजी पु० संघागोराज भ्रातृ सैन्यरत्न भा० श्रीपासी पु० संघराज समस्तकुटुम्बसहितेन सुश्रावकेन हेमराजेन श्री धर्मनाथ बिम्बं कारापितं श्रीउपकेश गछे ककुदाचार्यसन्ताने प्रतिष्ठितं भ० श्री सिद्ध सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1451]

ॐ सिद्धिः ॥ संवत् १६६० ज्यैष्ठ सुदि १५ तिथौ गुरुवासरे अनुराधा नक्षत्रे। ओस-वाल ज्ञातीय अरडक सोनी गोत्रे साह पूना संताने सा० कान्हड़ भा०जामनी वहु पुत्र सा०

हीरानंदेन बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनवर्धन सूरि संताने .... श्री लब्धिवर्द्धन शिष्येन ।

[1452]

श्रीमत्संवत १६२१ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री आगरावासी उसवाल ज्ञातीय चोरडिया गोत्र साह .... पुत्र सा० हीरानंद भार्या हीरादे पुत्र सा० जेठमल श्रीमदंचलगच्छे पूज्य श्रीमद्धर्म्ममूर्त्ति सूरि तत्पट्टे ....

पाषाण के चौविशी के चरण पर ।

[1453]

संवत १८६२ ज्येष्ठ शुक्ल १३ गुरुवारः श्री सिंघाड़ो बाई ने बनाया । श्री आगरा वास्तव्य व्य० संघपति श्री श्री चंद्रपालेन प्रतिष्ठा कारिता ।

शिलालेख ।

[1454]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ संवत् १६७७ वर्षे आसोज सुदी १५ श्री अर्ग्गलपुरे जलालुद्दीन पातिसाह श्री अकब्बर सुत जहांगीर सुत सवाई साहिजां विजयराज्ये .... राजद्वार शोभक सोनी .... श्री हीरानंद .... श्री जहांगीरस्य गृहे .... कृतं । तत्र तस्य नंदनवनोद्यानसमवाटिकायां ....निज धनस्य .... भार्या सोना सुत निहालचंद भार्या मृगां स्वोत्संग पुत्र चिरं सहसमल्ल सना श्री गंगाजल वारि पूरपूरित निर्मल कूपः कारापितः ॥ आचंद्रार्क यावत्तिष्ठतु ॥

[1455] *

१। ॥ श्री सद्गुरुभ्यो नमः ॥ सत्पट्टोत्तुंगश्रृंगोदयं शिखरि शिखा भानु बिंबोपमाना जैनोपज्ञा : स

---

* बड़े मंदिर के बगल में जो जड़ाई काम की नई वेदी और सभामंडप बने हैं उसके दाहिने तर्फ उपर में यह शिलालेख लगाया हुवा है। इसकी लंबाई अंदाज २ फिट और चौड़ाई १॥ फिट है और मामूली पत्थर है। शिलालेख के निचे ४ यंत्र है (१) २० का (२) १५ का (३) ३४ का और (४) १७० का खुदा हुवा है।

२। मं चञ्चरित चित तपस्तेजसा तप्यमाना: नूनं नंद्या सुरैरेते भुवि यशविमला राज
राजीव हंसा ॥

३। श्रेय:-श्री हीरनामा विजयपदयुता सूरिवंशावतंसा: १ भट्टारक श्री विजयेण युक्त:
श्री

४। धर्म सूरी जगति प्रसिद्ध: तत् प्राज्यराज्ये प्रगुणी कृतो य: श्री संघमानन्द विकास-
हेतु २ श्री

५। हीरवंशे भुवि कीर्त्तिविश्रुतं यशोत्तरं यस्य समीक्ष्य मानवा: पश्यंति ने[illegible] सुधाकरं
वरं श्री पा

६। ठकश्रेणिपुरन्दरप्रभु: ३ श्रीमेघनामा भुवि पाठक प्रभु प्रसह्य पापं दहतेस्म कामद:
महादवं

७। वन्हिरिव स्फुरद्युतिः ज्वलत्प्रतापावलि कीर्त्तिमंरूलं ४ तत्पट्ट विबुधार्चितो विजय-
प्राक् श्री

८। मेरुनामा मुनी तच्छिष्यो मणिसदृशो शुभमति माणिक्य भानू जयौ ताभ्यां शिष्य
कुशाग्रधीति कु

९। शलो जैनागमे यन्मति तद्वाक्यं श्रवणेन निर्मलधीयां निर्मापितोयं गृहं ५ श्री
अकब्बराबादपुरे

१०। श्रीसंघमेरुसदृशो धर्मे निर्मापय जिनभवनं करोति बहुभक्तिः वात्सल्यं ६ दिगष्टेक
मिते

११। वर्षे माघशुक्ले चतुर्दशी बुधवारे च पुष्यर्क्षे स्थापितोयं जिनेश्वरान् ७ श्रेयः कल्याणं
जयं

१२। ॥ सवैया ३१ प्रथम वसंत सिरी सीतल जू देवहु की प्रतिमा नगन गुन दस दोय
भरी है आग

१३। रे सुजन साचे अगौरसे दस आठे माह सुदी दस च्यार बुद्ध पुष धरी है देहरा
नवीन कीन्यौ संग

AGRA TEMPLE PRASHASTI
Dated, V. S. 1818 (A. D. 1761)

१४। जिनराय चिन्यौ कुशलविजय पुन्यास तपगछ धरी है देख श्रीवछ विचार सम्यक् गुन सुधार

१५। जरम की रज टार पूजा जिन करी है १ कुंरुलिया चोमुष की प्रतिमा चतुर धरम विमल जिन नेम

१६। मुनिसोवृत उर आनिकै करत जवानी पेम करत जवांनी पेम नेम जिन संष सुजानौ विमल लष

१७। न वाराह धरम जिन व (ज) र पिछानौ मुनिसोवृत जिन कूर्म लषन लष होत सबै सुष प्रनि

१८। मा चारौं जांन आंन सुन धरीसु चौमुष २ ॥

११	१	८
४	७	९
५	१२	३

६	७	२
१	५	[illegible]
८	३	४

१५	४	५	१०
६	९	१६	३
१२	७	२	१३
१	१४	११	८

२५	८०	क्षि	१५	५०
२०	४५	प	३०	७५
क्षि	प	ॐ	स्वा	हा
७०	३५	स्वा	६०	५
५५	१०	हा	६५	४०

[1456] *

पातिसाहि श्री जहांगी (र) ।

१। ॥ ए० ॥ श्री सिद्धेभ्यो नमः ॥ स्वस्ति श्री विष्णुपुत्रो निखिल गुणयुतः पारगो वीतरागः। पायाद्वः क्षीणकर्म्मा सुरशिखरि समः [कल्प]

२। तीर्थप्रदाने ॥ श्री श्रेयान् धर्म्ममूर्तिर्जनिकजनमनः पंकजे बिंबभानुः कल्याणांभोधिचंद्रः सुरनरनिकरैः सेव्यमा

३। नः कृपालुः ॥ १ ॥ ऋषभप्रमुखाः सर्वे गौतमाद्या मुनीश्वराः। पापकर्म्म विनिर्मुक्ताः क्षेमं कुर्वंतु सर्वदा ॥ २ ॥ कुंर ।

* यह लेख प्रफेसर बनारसीदासजी ने " जैन साहित्य संशोधक " खंड २ अंक १ पृ० २५-३४ में विस्तृत टिप्पणी के साथ प्रकाशित किया है ।

४। पाल स्वर्णपालौ। धर्म्मकृत्य परायणौ। स्ववंशकुजमार्त्तंडौ। प्रशस्तिर्लिख्यते तयोः
। ३। श्रीमति हायने रम्ये चन्द्रर्षि रस

५। भूमिते। १६७१ षट् त्रिंशत्तिथौ शाके। १५३६। विक्रमादित्यभूपतेः। ४। राधमासे
वसततौ शुक्लायां तृतीया तिथौ। युक्ते तु

६। रोहिणी तेन। निर्दोषगुरुवासरे। ५। श्रीमदंचलगच्छाख्ये सर्वगच्छावतंसके। सिद्धा-
न्ताख्यातमार्ग्गेण। राजिते विश्वविस्तृते। ६। उग्रसे

७। नपुरे रम्ये। निरातंके रमाश्रये प्रासादमंदिराकीर्णे। सद्भातौ ह्युपकेशके। ७
लोढागोत्रे विवस्वांस्त्रिजगति सुयशा ब्रह्मवी

८। र्यादियुक्तः श्री श्रंगाख्यातनामा गुरुवचनयुतः कामदेवादि तुल्यः। जीवाजीवादि-
तत्त्वे पररुचिरमतिर्लोकवर्गेषु यावज्जीवा

९। श्रंद्रार्कबिंबं परिकरभृतकैः सेवितस्त्वं मुदाहि। ८। लोढा सन्तानविज्ञातो। धन-
राजो गुणान्वितः। द्वादशव्रतधारी च। शुभ।

१०। कर्म्मणि तत्परः। ९। तत्पुत्रो वेसराजश्च। दयावान सुजनप्रियः। तुर्यव्रतधरः श्री मान्
चातुर्यादिगुणैर्युतः। १०। तत्पुत्रौ द्वा।

११। वज्जूतां च सुरागावर्धिनां सदा। जेठू श्रीरंगगोत्रौ च। जिनाज्ञा पालनोत्सुकौ
तौ जीण। सीहू मल्लाख्यौ। जेठूवात्मजौ बज्जूवतु

१२। :। धर्म्मविदौ तु दक्षौ च। महापूज्यौ यशो धनौ। १२। आसीच्छ्रीरंगजो नूनं।
जिनपदार्चने रतः। मनीषी सुमना भव्यो राजपा-

१३। ल उदारधीः। १३। आर्या। धनदौ चर्षभदास। षेमाख्यौ विविध सौख्य धनयुक्तौ।
आस्तां प्राज्ञौ द्वौ च। तत्त्वज्ञौ तौ तु तत्पु

१४। त्रौ। १४। रेषाजिधस्तयोर्ज्येष्ठः। कल्पद्रुरिव सर्वदः। राजमान्यः कुलाधारो।
दयालुर्धर्म्मकर्म्मठः। १५। रेषश्रीस्तत्प्रिया

१५। भव्या। शीलालंकारधारिणी। पतिव्रता पतौ रक्ता। सुयशा रेवती निजा। १६।
श्री पद्मप्रभबिंबस्य नवीनस्य जिनाल।

१६। ये । प्रतिष्ठा कारिता येन सत्श्राद्धगुणशालिना । १७ । अस्तौ तुर्यवृतं यस्तु । श्रुत्वा कल्याणदेशनां । राजश्रीनंदनः

१७। श्रेष्ठ । आणंदश्रावकोपम : । १८ । तत् सूनु: कुंरपाल: किल विमलमति: स्वर्णपालो द्वितीय । भ्रातुर्यौदार्यधैर्यप्रमु· ।

१८। स्वगुणनिधिर्भाग्यसौभाग्यशाली । तौ द्वौ रूपाभिरामौ विविधजिनवृषध्यानकृत्यैक· निष्ठौ । त्यागै: कर्णावतारौ निज·

१९। कुलतिलकौ वस्तुपालोपमार्हौ । १९ । श्रीजहांगीरभूपालमान्यौ धर्मधुरंधरौ । धनिनौ पुण्यकर्तारौ विख्यातौ भ्रा·

२०। तरौ भुवि । २० । याभ्यामुप्तं नव क्षेत्रे । वित्तबीजमनुत्तरं । तौ धन्यौ कामदौ लोके । लोढा गोत्रावतंसकौ । २१ । अवा

२१। प्य शासनं चारू । जहांगीरपतेर्नृनु: कारयामास तुर्धर्म्म । कृत्यं सर्व सहोदरौ । २२ । शालापौषधपूर्वाद्वे । यकाभ्यां सा

२२। विनिर्मिता । अधित्यका त्रिकं यत्र राजते चित्तरंजकं । २३ । समेतशिखरे जठये शत्रुंजयेर्बुदाचले । अन्येष्वपि च तीर्थेषु । गि

२३। रिनारिगिरौ तथा । २४ । संघाधिपत्यमासाद्य । ताभ्यां यात्रा कृता मुदा । महद्धर्या सवसामग्र्या । शुद्धसम्यक्त्वहेतवे । २५ । तुरंगा

२४। णां शतं कांतं । पंचविंशति पूर्वकं । दत्त तु तीर्थयात्रायां गजानां पंचविंशति: । २६ । अन्यदपि धनं । वित्तं । प्रत्तं संख्यातिगं खलु

२५। अर्जयामासतु: कीर्त्ति । मित्थं तौ वसुधातले । २७ । उत्तुंगं गगनालंबि । सच्चित्रं सध्वजं परं । नेत्रासेचनकं ताभ्यां । युग्मं चैत्य

२६। स्य कारितं । २८ । अथ गद्यं श्रीअंचलगच्छे । श्रीवीरादष्टचत्वारिंशत्तमे पट्टे । श्रीपावक गिरौ श्री सीमंधरजिनवचसा । श्रीचक्रे (श्वरीद)

२७। त्तवरा: । सिद्धांतोक्तमार्गप्ररूपका: । श्री विधिपक्षगच्छसंस्थापका: । श्री आर्यरक्षित सूरय । १ । स्तत्पट्टे श्री जयसिंह सूरि २ श्रीधर्म्मघो

२८ ष सूरि ३ श्रीमहेन्द्रसिंह सूरि ४ श्रीसिंहप्रजसूरि ५ श्रीअजितसिंह सूरि ६ श्री देवेंद्रसिंह सूरि ७ श्रीधर्मप्रज सूरि ८ श्री (सिंहतिलक सू)

२९। रि ९ श्रीमहेंद्रप्रजसूरि १० श्रीमेरुतुंगसूरि ११ श्रीजयकीर्त्ति सूरि १२ श्री जयकेशरि सूरि १३ श्री सिद्धांतसागर सूरि १४ (श्री जावसा)

३०। गर सूरि १५ श्री गुणनिधान सूरि १६ श्रीधर्म्ममूर्त्ति सूरय १७ स्ततपट्टे संप्रति विराजमानाः श्रीजट्टारकपुरंदराः स ······

३१। णय : श्रीयुगप्रधानाः। पूज्य जट्टारक श्री ५ श्रीकल्याणसागरसूरय १९ स्तेषामुपदेशेन श्रीश्रेयांसजिनबिंबादीनां ···

३२। कुंरपालसोनपालाज्यां प्रतिष्ठा कारापिता। पुनः श्लोकाः। श्री श्रेयांसजिनेशस्य बिंबं स्थापितमुत्तमं। प्रतिष्ठितं ···· गुरू

३३। णामुपदेशतः। २९। चत्वारिंशत् मानानि साधान्युपरि तत् क्षणे। प्रतिष्ठितानि बिंबानि जिनानां सौख्यकारिणां। ३०। ····

३४। तु लेजाते प्राज्य पुण्यप्रजावतः देवगुर्वोः सदाजक्तौ। शश्वतौ नंदतां चिरं। ३१। अथ तयोः परिवारः संघराजो पु ·····

३५। ····· ३२। सूनवः स्वर्णपाल ···· श्चतुर्भुज ··· पुत्री युगलमुत्तमं। ३३। प्रेमनस्य त्रयः पु (त्राः ····)

३६। षेतसी तथा। नेतसी विद्यमानस्तु सर्बालेन सुदर्शन। ३४। धीमतः संघराजस्य। तेजस्विनो यशस्विनः। चत्वारस्तनुजन्मानः ····· मताः। ३५। कुंरपालस्य स ····

३७। जार्या ···· पत्नीतु स ··· पतिप्रिया। ३६। तदंगजास्ति गंजीरा जादो नाम्नी स ···· दानी महाप्राज्ञो ज्येष्ठमल्लो गुणाश्रयः। ३७।

३८। संघश्रीसुलषश्रीर्वा डुर्ग्गश्रीप्रमुखैर्निजैः। वधूजनैर्युतौ जातां। रेषश्री नंदनौ सदा। ३८। जूमंडलं सजारंगमिद्दर्कयुक्त संव ·····।

श्री श्रीमंदिर स्वामी जी का मंदिर–रोशन महल्ला।

पाषाण की मूर्ति पर।

[1457]*

(१) ॥ सं० १६६० ज्येष्ठ सुदि १५ गुरौ ॥ ओसवा
(२) ल ज्ञाति श्रृंगार। अरडक सोनी गोत्रे
(३) सा० हीरानंद पुत्र सा निहालचंद
(४) न श्री पार्श्वनाथ कारितः सर्परूपाकार
(५) श्री खरतरगच्छे श्री जिनसिंह सूरि पट्टे श्री
(६) जिनचन्द्र सूरिणा। श्री आगरा नगरे

धातुकी मूर्त्तियों पर।

[1458]

॥ सं० १५३४ वर्षे माघ सुदी ५ श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये श्री जिनवरदेवाः तत् शिष्य मुनिरत्नकीर्त्ति उपदेशात् खण्डेलवालान्वये पहाड्या गोत्रे सा० तेजा भार्या रोहिणी पुत्रौ सा० पूना पाल्हा नित्यं प्रणमन्ति ॥

[1459]

॥ सं० १६४१ श्री सुपार्श्वनाथ बिं० का० प्र० श्री हीरविजय सूरिभिः ॥

[1460]

॥ संवत् १६७४ वर्षे माघ वदी १ दिने गुरूवारे पुष्यनक्षत्रे साह श्रीजहांगीर विजय मानराज्ये ओसवालज्ञातीय नाहर गोत्रे। सं० हीरा तत्पुत्र स० अमरसी भा० अन्तरङ्गदे तत्पुत्र सा० साहूला भा० सोभागदे युतेन श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं जहांगीर महातपाविरूद्धधारक भट्टारक श्री ५ श्री विजयदेवसूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

* यह लेख श्री पारश्वनाथ स्वामी की श्वेत पाषाण की कायोत्सर्ग मुद्रा की मनोज्ञ मूर्ति के चरणचौकी पर खुदा हुआ है।

पंचतीर्थियों पर

[1461]

॥ सम्वत् १५०० वर्षे वै० शु० ५ उपकेशज्ञातीय सा० नानिग भा० मल्हाइ सुत सा० लाखा भा० लाखणदे सुत सा० चाहडेन मातृ हासा सिधराज भा० चापलदेवी सुत वसुपा-लादिकुटुम्बयुतेन पितृ श्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपागछनायक श्री श्री मुनिसुन्दर सूरिभिः ॥

[1462]

॥ संवत् १५३६ वर्षे आषाढ सुदी नवम्यां तिथौ उप० वीरोलिया गोत्रे सा० मूमा भा० केल्हो पु० दशरथ नाम सा० दशरथ भा० दत्तसिरी पु० जिणदत्त श्री संभवनाथ बिम्बं का० प्र० श्री पल्लीवालगच्छेश भ० श्री उजोअण सूरिभिः ॥

[1463]

संवत् १५५९ वर्षे मह्रा सुदी १० श्रीमालवंशे वहकटा गोत्रे सा० तेजा पुत्र सा० जोगाकेन पुत्रादियुतेन श्रा० अमरसहितेन श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री खरतरगछे श्री जिनहंस सूरिभिः ॥ श्रेयसे ॥

[1464]

॥ संवत् १५७७ वर्षे ज्येष्ठ वदी० सोमे श्री अलवर वास्तव्य उपकेश ज्ञातीय वृद्धशा-खायां आयत्रिणयगोत्रे चोरवेडिया शाखायां सं० साहणपाल भा० सहलालदे पु० सं० रत्नदास भा० सूरमदे श्रेयोऽर्थं श्री उकेशगछे कुकदाचार्यसन्ताने श्री सुमतिनाथ कारापितं बिम्बं प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिभिः ॥

चौविशी पर।

[1465]

॥ संवत् १५३६ ज्येष्ठ शु० ५ प्रा० ज्ञातीय सं० पूजा भा० कमादे पुत्र स० नरजम भा०

नायकदे पुत्र स० खीमाकेन भा० हरषमदे पुत्र परवत गुणराज प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्री आदिनाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्र० लक्ष्मीसागर सूरिभिः सीरोही नगरे

के यंत्रों

[1466]

॥ सं० १६०४ वर्षे शाके १४७० प्रवर्त्तमाने आश्विनमासे वदिपक्षे १४ दिने रविवासरे दीपालिकादिने श्री श्रीमालगोत्रीय साह श्री जयपाल सुत साह सोरंगकेन सुखशांति श्री हर्षरत्न सदुपदेशेन श्री पार्श्वनाथ यंत्रं कारापितं प्रतिष्ठितम् शुभं भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥ छ ॥

[1467]

॥ संवत् १००५ वर्षे माघशुक्ल ५ गुरौ श्री गूर्जरदेशीय पाटण वास्तव्य श्री खरतरगच्छीय कावरीया गोत्रे सेठ वेलजी पुत्र सेठ हेमचन्द्रेण स्वात्मार्थे श्री सिद्धचक्र नवपदगुह्यकर्म क्षयार्थं करापितं श्री आगरा नगरमध्ये श्रीतपागच्छीय पं० कुशलविजय गणि उपदेशात् ॥ ह्रीँ ॥

[1468]

॥ सं० १००९ वर्षे आश्विन शुक्ल १० भौमे डूगड़ गोत्रीय सा० कपूरचन्द्र पुत्र सिताव सिंह गृहे तरसम्रित(?) सुखदे नाम्नी स्वात्मार्थे श्री सिद्धचक्रयंत्रं कारितं भट्टारक श्री विजयदेव सूरीश्वरराज्ये पं० कुशलविजय गणि उपदेशात् कृतम् ॥ श्रीः ॥

[1469]

सं० १९३१ वर्षे आगरा वास्तव्य लोढ़ा गोत्रे प्रतापसिंहस्य भार्या मूलो श्री नवपद कारितं प्रतिष्ठितं श्री धरणेन्द्रविजय सूरिराज्ये तपा ।

श्री सूर्यप्रभस्वामी जी का मंदिर—मोती कटरा

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1470]

॥ संवत् १५३३ मार्ग सुदि ६ शुक्रे ओसवाल ज्ञातीय बड़गोत्रे सा० भीमदे भा० रूल्हौ पुत्र सा० भोजा भा० जेठी नाम्न्या पुत्र सा० महीपति मेघादि कुटुम्बयुतया स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिम्बं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

[1471]

॥ संवत् १५४६ वर्षे पौष वदी ५ सोमे राजाधिराज श्री श्री श्री नाभिनरेश्वरराज्ञी श्री श्री श्री मरुदेवी तनया पुत्र श्री श्री श्री श्री श्री आदिनाथदेवस्य बिम्बं सुप्रतिष्ठितम् ॥

[1472]

॥ सं १५०७ वर्षे माघ सु० १३ रवौ श्री मंडपे श्रीमाल ज्ञातीय सं ऊदा भा० हर्षू सा० खीमा भा पूंजी पु० सा० जेगसी भा० माऊ पु० सा० गोल्हा भा० सापा पु० मेघा पु० कार्णा लघुभ्रातृ सं० राजा भार्या सागू पु० सं० जावडेन भा० धनाई जीवादे सुहागदे सत्तादे धनाई पुत्र सं० हीरा भा० रमाई सं० लालादिकुटुम्बयुतेन बिम्बं कारापितं निज श्रेयसे श्री कुन्थुनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं तपागछे श्री सोमसुन्दर सूरिसन्ताने लक्ष्मी सागर सूरिपट्टे श्री सुमतिसाधु सूरिभिः ॥

चौवीसी पर ।

[1473]

॥ सं० १५१३ वर्षे वैशाखमासे ऊकेश ज्ञातीय से० पेथड भा० प्रथमसिरी पुत्र सं० हेमाकेन भार्या हीमादे द्वितीया लाछि पुत्र देल्हा राणा पातादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्री-कुन्थुनाथादि चतुर्विंशतिपट्टः कारितः श्री अञ्चलगछेश श्री जयकेशरी सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

श्री गोड़ीपार्श्वनाथजी का मंदिर – मोती कटरा।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1474]

॥ सं० १५१३ वर्षे ज्येष्ठ वदी ११ सूगणा गोत्रे सा० धन्ना भा० धानी पुत्र सा० फलहूकेन आत्मपुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ बिम्बं का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मशेखर सूरि पट्टे श्री पद्मानणक सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1475]

॥ सं० १५२० वर्षे वैशाख शुदी १२ बुधे श्री श्रीमाली ज्ञातीय श्रे० हीरा भा० जीविणि सु० कान्हाकेन भा० पदमाई सु० रत्नायुतेन भ्रातृ हांसा मना निमित्तं श्री अरनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ अहमदावाद वास्तव्य ॥

[1476]

॥ संवत् १५३६ वर्षे कार्त्तिक शु० १५ गूजर श्रीमाल ज्ञातीय वहरा गोत्रे स० धन्ना भा० धारलदे सु० सा० माडा पुत्र देवाराजादि श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितम् ॥ प्रतिष्ठितम् ॥ श्री सूरिभिः ॥

[1477]

॥ संवत् १५५४ वर्षे मा० व० २ सीहा वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० अमा भार्या लखमादे पुत्र व्य० माल्हण भा० माल्हणदे सुत नरवद प्रमुखसमस्तकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं तपापक्षे श्री हेमविमल सूरिभिः ॥

[1478]

॥ ॐ ॥ सं० १७४० वर्षे वैशाखसुदी ५ भृगुवारे अर्गलपुरे ओसवाल वंशोद्भवे ज्ञातौ बैंद मोता गोत्रे साह० हंसराज चन्द्रपालस्य कारितं नेमनाथस्य बिम्बं प्रतिष्ठितम् ॥ कमला गच्छे श्री सिद्ध सूरिभिः ॥ उपकेश गच्छे ॥ ॥ श्री ॥ श्रेयम् ॥

चौवीसी पर।

[1479]

॥ संवत् १५०५ वर्षे वैशाख सुदी ६ श्री उपकेश ज्ञातीय आदित्यनाग गोत्रे सा० ठाकुर पु० सा० धणसीह जा० धणश्री पु० सा० साधू जा० मोहणश्री पु० श्रीवंत सोनपाल जिखू एतैः पित्रोः श्रेयसे श्रीअजितनाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारापितः। श्री उपकेशगच्छे श्री ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितः। जट्टारक श्री सिद्ध सूरिः तत्पट्टालंकारहार जट्टारक श्री कक्क सूरिजिः॥ ढः॥

[1480]

॥ सं० १५११ वर्षे माघे शुदी ५ गुरू श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्यवहीता सुत व्यव० कर्मसीह जार्या कस्मीरदे सुत सायरकेन जार्या मेघू सहितेन पितृमातृआत्मश्रेयसे श्री कुंथु नाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारितः श्री पूर्णिमापक्षे जट्टारक श्री राजतिलक सूरीणामुपदेशे प्रतिष्ठितम् ॥

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर — मोती कटरा।

पञ्चतीर्थी पर।

[1481]

॥ संवत् १४९६ वर्षे वैशाख सु० १२ गुरु डाहखा गोत्रे सं० घेल्हा पुत्र स० दद० डीडा पुत्र स० जादा सादा जार्या रू० डीडानिमित्तं श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितम् तपागछे जट्टा (रक) श्री पूर्णचंद सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिजिः॥

चौवीसी पर।

[1482]

॥ ॐ ॥ सं० १५०१ वर्षे ··· व० ६ बुधे लोढ़ा गोत्रे सा० हरिचन्दसन्ताने। सा० गोगा पु० सं० गोरा। पुत्र। स० आसपाल तत्पुत्रेण स० लाखाकेन। भ्रातृ स० वस्तुपाल तेजपाल

पूनपाल। पुत्र सोनपाल पासवीर। सं। हंसवीर भ्रातृ पुत्र। कुंवरपाल पर्वतादियुतेन निजमाता मूणी पुण्यार्थं श्री संभवनाथ बिम्बं चतुर्विंशति देवपट्टे। का० प्र० तपागच्छे श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः॥

धातु के यन्त्र पर

[1483]

॥ ॐ ॥ स्वस्ति संवत् १४९७ वर्षे माघ सुदी ५ गुरुवासरे श्रीमत् योगिनीपुरे राज्ये श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री श्री हेमकीर्त्तिदेवानुस्तत्पट्टे भट्टारक श्री हेमकीर्त्तिदेवाँस्तत् शिष्य श्री धर्मचन्द्रदेवान् श्री महेन्द्रकीर्त्तिदेवान् श्री जिनचन्द्र देवान् जिनचन्द्र शिष्यिणी बाई सहजाई एतेन श्री कलिकुण्डयंत्रस्वकर्मक्षयार्थं कारापितं ॥ शुभं भवतु ॥

श्री केशरियानाथजी का मंदिर — मोतीकटरा।

पञ्चतीर्थी पर।

[1484]

संवत् १५०१ वर्षे सुदी ६ शुक्रे उकेशवंशे घांघ गोत्रे सा० डीतर भा० लखमाई पुत्र सा० सांगा आसा० सिया हीरा तन्मध्ये सांगाकेन भा० सिंगारदे पु० राजसी रामसी...युतेन श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं मलधारि गच्छे श्री गुणसागर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः॥

श्री नेमनाथजी का मंदिर — हींगमंडी।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1485]

॥ संवत् १५२५ वर्षे मलारणावासी मुहरल गोत्रे श्रीमाल ज्ञातीय सा० धोधू भा० देल्हू पु० मडमथेन भा० माल्ही भ्रातृ हरिराज भा० पूरा पुत्र० सरजन प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिम्बं का० प्र० तपागच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः॥

[1486]

॥ संवत् १९२१ शा० १७८६ प्र० माघ शु० ७ गुरुवारे अञ्चलगच्छे कच्छ देशे कोठारा वास्तव्य उसवाल शा० गांधी मोहता गोत्र श्री केशवजी नायकेन श्री सिद्धक्षेत्र श्री नेमिनाथ जिन बिम्बं कारापितं प्र० भ० श्रीरत्नशेखर सूरिभिः ॥

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर — नमकमंडी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1487]

॥ सं० १४०५ वर्षे फा० सु ९ शुक्रे श्री ज्ञानकीय गच्छे उसभ गोत्रे उ० ज्ञातीय सा० शिवा भा० कांऊं पुत्र केल्हा भा० कील्हणदे सन्ततिवृद्ध्यर्थं पितृमातृनिमित्तं श्री कुंथुनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री शान्ति सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

[1488]

॥ संवत् १४२५ माघ वदि ७ सोमे श्री संडेरगच्छे श्री उपकेशज्ञाति सा० महीपाल भा० मल्हणदे पु० वेला भा० सहजादे पु० सरवणनैक (?) भ्रातृ कसामलस्य श्रेयसे श्री आदि नाथ पञ्चतीर्थी कारिता । प्र० श्री ईश्वर सूरिभिः ॥

[1489]

॥ सं० १४५३ ··· शु० ३ शनौ श्रीमाल माधलपुरा गोत्रे सा० केला पुत्रेण सा० तोलाकेन नरपाल श्री पालेत्यादि पुत्रयुतेन श्री धर्मनाथ बिम्बं कारितं प्र० तपागच्छे श्री पूर्णचन्द्र सूरिपट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः

[1490]

॥ सं० १४५७ वर्षे वै० शु० ३ शनौ उपकेश गच्छे धेधड भा० केली प्रा० रूपणा भा० षेमी पु० सीगकेन (?) पितृमातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बि० का० प्र० श्री श्रीमाले श्री रामदेव सूरिभिः ॥

[1491]

॥ सं० १४७५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ ऊसवाल खांटड गोत्रे सा० जादृजू भा० अहवदे पु० पूना पितृश्रेयसे श्री संभवनाथ बिम्बं का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री पद्मशेखर सूरिभिः ॥

[1492]

॥ सं० १५०३ मार्ग सुदि ५ ऊ० ज्ञा० भंडितवाल गोत्र सा० मेघा पुत्र सा० खेताकेन भा० हर्षमदे सह पूर्वपुरुषमेलानिमित्तं शान्तिनाथ बिम्बं का० प्र० श्री धर्मघोषगच्छे श्री महीतिलक सूरिभिः ॥

[1493]

॥ सं० १५०९ वर्षे ऊएश वंशे सा० पेथड़ भा० पीथाही पु० खेला सरवण साजण कै श्री अंचलगच्छेश श्री जयकेशरी सूरि उपदेशेन श्री विमलनाथ बिम्बं स्वश्रेयसे कारितं प्र०॥

[1494]

॥ सं० १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ७ रवौ उपकेश सुचिन्ति गोत्रे सा० नरपति पु० सा० सादहा पु० कमण भा० कैल्हाही पु० सुधारण भा० संसारदे युतेन पित्रोः श्रेयसे श्री आदिनाथ बिम्बं कारापितं उपकेश० ककुदाचार्य प्र० श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1495]

॥ सं० १५२४ वर्षे मागसिर वदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातीय मढं केल्हा भार्या कील्हण पुत्र सुरजणकेन भा० राणी सहितेन श्री कुन्थुनाथ बिम्बं का० प्रतिष्ठितं श्री ब्रह्माणीयगच्छे भ० श्री उदयप्रभ सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1496]

॥ संवत् १५५४ वर्षे माह वदि २ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय शृङ्गारसंघवी सिद्धराज सुश्रावकेन भार्या रणकू पुत्र सा० कूपा भार्या रम्मदे मुख्यकुटुम्बसहितेन श्री सुपार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

श्री दादावाडी – साहगंज ।

श्री महावीरस्वामी के वेदी पर ।

[1497]

संवत् १९७५ मिति वैशाख सुदि ३ सोमवारे दुलीचन्द के पुत्र प्यारेलाल चोरडिया की बहूने वेदी बनाई ॥

चरणों पर ।

[1498]

॥ सं० १९४४ मिति आषाढ़ सुदि १० श्री गोतमस्वामीजी प्रतिष्ठितं । पं० संवेगी श्री रणधीर विजय कारापितं ।

[1499]

श्री अर्गलपुरे साहगञ्जे प्रथम प्रतिष्ठा संवत् १७७९ मिति ज्येष्ट सुदि १५ खरतरगच्छे श्री १०८ श्री जिनकुशल सूरिजी के पादुके संवत् १९६४ मिति जेठ सुदी २ गुरुवार प्रतिष्ठा समय विद्यमान श्री तपागच्छ उपाध्याय श्री वीरविजयजी ॥

[1500]

॥ सकल भट्टारक पुरन्दर भट्टारक श्री १०८ श्री हीरविजय सूरीश्वरकस्य चरण प्रतिष्ठापितं तपागच्छे ।

[1501]

॥ संवत् १९६४ वर्षे ज्येष्ट शुक्ल २ दिने गुरुवारे श्री आगरा नगरे सकलसंघेन श्री लोंकागच्छे श्रीमद् आचार्य खेमकरणस्य पादुका श्री तपागच्छीय श्रीमद् वीरविजयेन प्रतिष्ठा कारिता ॥

लखनउ ।

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर – बोहरन टोला ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1502]

सं० १३०६ वर्षे वैशाख सु० १३ सा० करमण ज्ञा० ... लखिरि पु० गोसाकेन मातृपितृ श्रेयोर्थं श्री बिंब का० प्र० च धर्म्मप्रभ सूरि ... ।

[1503]

संवत् १४०२ वर्षे फा० सु० ३ ऊकेस वंशीय सा० जेसिंग सुत सामल जार्या सह-जलदे सुत सा० जसा जा० जासलदे भ्रातृ देधर जार्या श्रा० संगाई स्वश्रेयोर्थं श्री अजित नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥

[1504]

सं० १५१२ वर्षे वैशाष वदि ११ शुक्रे श्रीमाली ज्ञातीय मं० अर्ज्जुन जा० स्वसु पु० टाइं आमाइं ···· हदाकेन जा० लखी सहितेन निजश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० ऊकेशगच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने श्री कक्क सूरिजिः प्रतिष्ठितमिति ।

[1505]

संवत् १५१७ वर्षे वैशाष सुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञाती श्रे० ठाकुरसी सुत श्रे० चंगाकेन जार्या हीर्मी सु० धना वना मिला राजी युतेन श्री शीतलनाथादि पंचतीर्थी आगमगच्छे श्री हेमरत्न सूरीणामुपदेशात् कारिता प्रतिष्ठिता च माडलि वास्तव्य ।

[1506]

सं० १५२७ वर्षे माघ वदि ७ रवौ उप० ज्ञा० मं० कूपा जा० सोषल पुत्र रूपा जार्या रत्नू सुत जिंदा जुणा मिला आत्मश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री

जिरायपल्लीय गछे भट्टारक श्री सालिभद्र सूरि पट्टे श्री भ० श्री उदयचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री ॥ ९४ ॥

[1507]

संवत् १५९६ वर्षे वैशाष सुदि ६ सोमे सा० भचू भार्या सवीराई। पुत्र अका श्री विजयदाम सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

[1508]

संवत् १६१६ वर्षे वैशाष शुदि १० रवौ श्रीमाली ज्ञातीय सा० सता श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री विजयदान सूरिभिः ।

[1509]

सं० १६१६ वर्षे वै० शु० १० रवौ श्रे० ककुश्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंबं कारितं तपा गछे प्रतिष्ठितं श्री विजयदान सूरिभिः ।

[1510]

संवत् १६९८ व० फागुण सुदि ९ ······· ।

मूर्तियों पर ।

[1511]

॥ सं १९२४ मा० शु० १३ गुरौ श्री महावीर जिन बिंबं कारितं च उस वंशे बाजेड़ गोत्रे । लाला जीवनदास पुत्रेण डुर्गाप्रसादेन कारितं भट्टारक श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं विजयगछे ।

[1512]

॥ सं० १८२४ मा० शु० १३ सुमतिजिन बिंबं का० उस वंशे वैद मुहता बालचंद तद्भार्या महतावो बीबी प्र । विजयगछे श्री शांतिसागर सूरिभिः श्रेयोर्थं ।

[1513]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ मुनिसुव्रत जिन बिंबं कारितं ओस वंशे डाजेड़ गोत्रे लाला हरप्रसाद तत् पुत्र जीवनदास भार्या नन्ही बीबी श्रेयोर्थं भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं विजय गच्छे।

[1514]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ सुमतिनाथ जिन बिंबं वैद मुहता गोत्रे लाला धर्मचंद पुत्र शिषरचंद तद् भा० सोरन बीबी श्रेयोर्थं। भ० श्री पूज्य श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रति० विजय गच्छे

[1515]

॥ सं० १९२४ मा० शु० १३ महावीर जिन। वैद धर्मचंदजी विजय गच्छे भ० शांति-सागर सूरिभिः।

[1516]

सं० १९२४ मा० शु० १३ श्री सुमति जिन बिंबं का० ओस वंशे मालकस गोत्रीय धर्म चंद तत् पुत्री मंगल बीबी प्र०। विजयगच्छे भ०। श्री शांतिसागर सूरिभिः श्रेयोर्थे प्रतिष्ठितं हीरा बीबी।

[1517]

सं० १९२४ मा० शु० १३ संभव जिन। मालकस गो० धर्मचंद तत् पुत्र हीरा बीबी। प्र०। शांतिसागर सूरिभिः विजयगच्छे।

[1518]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ श्री धर्मनाथ बिंबं का० ओस वंशे सुचिंति गोत्रे ला० नोबतराय पु० रेवा प्रसादेन कारितं प्र० विजयगच्छे शांतिसागर सूरिभिः।

[1519]

सं १८९३ माघ सुदि १० बुधवारे राजनगरे ऊसवाल ज्ञाति वृद्ध शा० सा० वीरचंद रूपा श्रेयोर्थं शांतिनाथ बिंबं करावी प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठितं तपागछे ।

[1520]

शाहजहां विजय राज्ये । श्री विक्रमार्क समयातीत संवत् १६७१ वर्षे शाके १५३६ प्रवर्त्तमाने आगरा वास्तव्य ऊसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे अमाणी वंशे सं० शषनदास तत्पुत्र सं० श्री कुंरपाल सोनपाल संघाधिपाभ्यां श्री अनंतनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्रीमदंचल गछे पूज्य श्री ५० श्री धर्म्ममूर्त्ति सूरि पद्माम्बुज हंस श्री श्री कल्याणसागर सूरीणा मुदेशेन ।

श्याम पाषाणके मूर्त्तियों पर

[1521]

॥ सं० १८७९ फा० सु० ९ शनौ ऊश वंशे लोढा गोत्रे हरषचंद्रस्य ... श्री सुपार्श्व बिंबं ... ।

[1522]

॥ सं० १८७९ फा० सु० ९ शनौ ऊस वंशे मयाचंदजी तत्पुत्र धनसुख ... ।

[1523]

सं० १८७९ फा० सु० ९ शनौ श्रीमाल पाड़ मन्नुलाल ... ।

[1524]

॥ सं १८७९ फा० सु० ९ शनौ चोरडिया गोत्रे दयाचंद .... ।

श्वेत पाषाणके चरणों पर ।

[1525]

सं १८६३ मि० माघ सु० ५ दिने श्री अतीत चौविसी जगसन जी की ऊसवाल वंशी

नाहटा गोत्रे राजा बछराज बाबू विशेश्वरदास बाबू भैरुनाथ बाबू बैजनाथ बाबू जगन्नाथ बाबू लछमणदास ने चरण भगाया बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रेयोर्थं शासन देवो अस्य मंदिरस्य रक्षां कुर्वंतु ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री लखनउ नगरमध्ये नबाब साहब सहादतअलि विजय राज्ये।

[1526]

सं० १८६४ मि० वै० सु० ३ दिने वर्त्तमान चौविशी २४ भगवान जी के ओसवाल वंशे काकरिया गोत्रे खुपालराय। बखतावरसिंह। गोकलचंद। माणकचंद। स्वरुपचंद। रतनचंद। ताराचंद। सपरिवारेण चरण बनवाया श्री बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री लखनउ नगरे।

[1527]

सं० १८६४ मि० वै० सु० ३ दिने अनागतचोविसी ओसवाल वंशे नाहटा गोत्रे राजा बछराज तत्पुत्र बाबू जगन्नाथस्य भार्या स्वरुपनै इदं चरणं काराषितं श्रेयोर्थं श्री बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री लखनउ नगरे।

[1528]

सं० १८६४ मि० वै० सु० ३ दिने २० विहरमान ४ शास्वतानि भगवानजी के ओसवाल वंशे कांकरिया गोत्रे जेठमल गुजरमल बहादुरसिंह स्वरुपचंद सपरिवारेण चरण बनवाया श्री बृहत्खरतर गच्छे भ० श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री लखनउ नगरे।

सहस्त्रकूट पर।

[1529]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट बिंबानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रभाकर भट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्ष्मणपुर वास्तव्य प्रल्हावत गोत्र। श्री जेठमल तत्पुत्र कालकादास तत्पुत्र बलदेवदासेन श्रेयोर्थमानंदपुर

[1530]

॥ १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघशुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट बिंबानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रभाकर भट्टारक श्री जिन-महेंद्र सूरिभिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्ष्मणपुर वास्तव्य चो० । गो० । श्री हंसराज तद्भार्या सोना बिबि तया श्रेयोर्थमानंदपुरे ॥ पं० । प्र० । कनकविजय मुण्युपदेशात् ।

[1531]

॥ सं १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट बिंबानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रभाकर भट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्ष्मणपुर वास्तव्य ज० । गो० । सा० उमेदचंद तत्पुत्र हरप्रसाद रामप्रसाद तत्पुत्र जीवनदास धनपतराय तत्पुत्र दुर्गाप्रसादेन सपरिकरैः श्रेयोर्थमानंदपुरे ।

[1532]

॥ सं० १९१० शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट बिंबानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रभाकर भट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः सपरिकरैः कारितं श्री लखनउ समस्त श्री संघेन श्रेयोर्थमानंदपुरे ।

[1533]

संवत् १९१३ शाके १७७८ तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां परमार्हत श्रीमत् शांति जिन मोक्ष कल्याणक पादुका लक्ष्मणपुर वास्तव्य समस्त श्री संघेन कारितं प्र० च बृहत्खरतर गच्छीय भं । यु । प्र । श्री जिनचंद्र सूरि पङ्कजभृत् श्री जिन जयशेखर सूरिभिः ।

श्वेतपाषाण के पंचमुष्ठिलोच के भाव पर ।

[1534]

संवत १९१३ शाके १७७८ तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां ···· दीक्षा कल्याणक पादुका ··· हंस वंशे महता गोत्रे ···· ।

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर – बोहरनटोला।

शिलालेख। *

[1535]

॥ ए॰ ॥ ॐ नमः सिद्धं। संवत् १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ ॥ श्लोकाः ॥ विजयगच्छाधिपो सूरि। विहरन् सन् महीतलं ॥ शांति सूरीति नामेन। संप्राप्तो लक्षणेपुरे ॥ १ ॥ भगवान् देशनालब्धा। जिनभक्तिपमुल्लिका ॥ कादंबर्नीव संजाता। भव्यानां बोधहेतवे ॥ २ ॥ तदा तस्योपदेशेन। श्री संघो भक्तिवत्सल ॥ कारयतिस्म जिनं चैत्यं। ऋषभस्वामिमंदिरं ॥ ३ ॥ सूरिस्तु विचरन् भूम्यां। स्वशिष्यं स्थापितं मुदा ॥ धर्मचंद्राभिधानं च। संस्थिति धर्महेतवे ॥ ४ ॥ तत्रैव धर्म दिसैतिस्म। शिष्यान् पाठयति सदा ॥ स्वशिष्यं गुणचंद्राह्वं। गुरुभक्तिपरायणं ॥ ५ ॥ मंदिरोपरि भूम्यां च। त्रिद्वारं भमरिकायुतं ॥ मंदिरं कारयेत् संघः। जातः सप्तर्मवत्सलः ॥ ६ ॥ माघमासे शुक्लपक्षे। त्रयोदश्यां गुरौ दिने ॥ भट्टारक शांति सूरिः। प्रतिष्ठां चक्रिरे मुदा ॥ ७ ॥ तस्मिन् जिनमंदिरे। श्री चतुर्मुख बिंबानां चतुर्णां मध्ये। श्रीआदिजिनस्य बिंबं। ओसवंशे बरड्या गोत्रे लाला भंटेलाल पुत्रेण स्वरूपचंद्रेण कारितं। तथा द्वितीयं श्री वासुपूज्य जिनबिंबं। फूलपाणा गोत्री लाला सीताराम तद्भार्या भांडिया गोत्री तया कारितं। तृतीयं श्री शांतिनाथ जिनबिंबं। श्री शांतिसागर सूरि शिष्येण। ऋषिणा धर्मचंद्रेण कारितं। चतुर्थं श्री महावीर स्वामि जिनबिंबं। सुचिंता गोत्रे। लाला षेरातीमल्ल पुत्रेण गोविंदरायेण रूपचंद पुत्र सहितेन कारितं। श्री विजयगच्छाधीश्वर सार्वभौम जंगमयुगप्रधान भट्टारक श्री जिनचंद्रसागर सूरि पट्टप्रभालंकार श्री पूज्य श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं। ऋषिणा चतुर्भुजेनाथ। गोकुलचंद्रेण संयुता ॥ इयं कृति लिपिताभ्यां। गुरुभक्तिपरायणौ ॥ १ ॥ श्रीरस्तुः ॥ श्रीः ॥ पद्मावती लब्धवर प्रसादात्। यो मेदपाटाधिपतिं स्वरूपं। राणापदे संस्थित शत्रु सिंह रोगात् प्रमुच्येत स शांति सूरिः ॥ २ ॥

---

* इस लेखके अन्तमें चार यंत्र हैं; दाहिने २० का और बांये १६ का हैं, उनके निचे दाहिने ६ आने का और बांये ११ आने का यंत्र है, इनके जोड़ मिलते नहीं हैं।

१०	२	८
४	७	९
६	११	३

७	२	१०
९	६	४
३	११	५

३१	३०	३५	२२	२१	२६	६७	६६	७१
३६	३२	२८	२७	२३	१९	७२	६८	६४
२९	३४	३३	२०	२५	२४	६५	७०	६९
७६	८५	८०	४०	३९	४४	४३	३	८
८२	७७	७३	४५	४१	३७	९	५	१
७४	७९	७८	३८	४३	४२	२	७	६
१३	१२	१७	५८	५७	६२	४९	४८	५२
१८	१४	१०	६३	५९	५५	५४	५०	४६
११	१६	१५	५६	६१	६०	४७	५२	५१

६६	५३	४०	२७	१४	१	१२०	१०७	९४	८१	६०
६७	६५	५२	३९	२६	१३	११	११९	१०६	९३	८०
७९	७७	६४	५१	३८	२५	१२	१०	११८	१०५	९०
९१	७८	७६	६३	५०	३७	२४	२२	९	११७	१०४
१०३	९०	८८	७५	६२	४९	३६	२३	२१	८	११६
११५	१०२	८९	८७	७४	६१	४८	३५	३३	२०	७
६	११४	१०१	९९	८६	७३	६०	४७	३४	३२	१९
१८	५	११३	१००	९८	८५	७२	५९	४६	४४	३१
३०	१७	४	११२	११०	९७	८४	७१	५८	४५	४३
४२	२९	१६	३	१११	१०९	९६	८३	७०	५७	५५
५४	४१	२८	१५	२	१२१	१०८	९५	८२	६९	५६

धातु की मूर्त्ति पर।

[1536]

सं० । १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ साधु साखायां चेलड़िया वंशे सा० वरसा पुत्र सा० लखमसी पुत्र सा० वर्धमान सा० रीडा श्री पार्श्वनाथ प्रतिष्ठा कृता श्री साधु वचनात् ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1537]

सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर वदि २ बुधे सामसिया गोत्रे सा० जोसा पु० सा० झाफक

भ्रातृ उसीह ... भिः पितुः पु० श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० बृहद्गच्छे श्री महेंद्र सूरिभिः ॥ श्री शुभं ॥

[1538]

सं० १५११ वर्षे माघ वदि ५ उसवाल ज्ञाती जाइसवाल गोत्रे भोजा पुत्र धडिया पु० मोहण पुत्र षेताकेन स्वभार्या श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं श्री धर्मघोष गच्छे भ० श्री महीतिलक सूरिभिः ॥

चौवीशी पर।

[1539]

सं० १५१० माघ शुदि ५ दिने पत्तन वासी श्रीमाली श्रे० ठाकरसी भा० धारी सुत श्रे० गोधा साका भाणा भगिन्या श्रे० नरसिंग भार्या वैरामति नाम्न्या श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री सोमसुंदर सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥ श्री श्री तपगच्छ ॥

[1540]

सं० । १६१६ वर्षे शाके १४७२ प्रवर्त्तमाने वैशाख सुदि १० दिने रवौ अहमदाबाद वास्तव्य ऊकेस वंशीय सा० आंबा० भा० अमरा तत्पुत्र सा० राकर भा० संपू तत्पुत्र सा० मेघाख्येन भा० मेघादे पुत्र पुत्री परिवारयुतेन आत्मश्रेयोर्थं श्री अजितनाथ बिंबं कारितं तपागच्छे भट्टारक श्री आनंदविमल सूरि तत्पट्टे विजयदान सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

पाषाण के चरण पर।

[1541]

सं० १७२४। भूरा वंशे पहलावत गोत्रे लालु तत् पुत्र किसनचंद कारितं।

श्री महावीर स्वामीजी का मंदिर – बोहरनटोला।

मूलनायकजी पर।

[1542]

॥ सं० १९ ... श्री वर्द्धमान जिन बिंबं ऊसवंशे बहुरा गोत्रे लाला कीर्त्तिचंद तद्भार्या मुन्नीया बिबि तयो पुत्र मोतीचंदेन कारितं बृहत् विजय गच्छे ज० श्री सार्वभौम श्री पूज्य श्री जिनचंद्रसागर सूरि पट्टप्रभाकर जं। यु। प्र। शांतिसागर सूरिभिः।

मूर्त्ति पर।

[1543]

सं० १९ ... श्री पार्श्वजिन बिंबं ऊसवंशे बड़ड़िया गोत्रे लाला दयाचंद तत्पुत्र छोट-मल्लेन तत्पुत्र सरुपचंदेन सहितैः कारितं प्र० विजय गच्छे ...... सूरिभिः।

पंचतीर्थी पर।

[1544]

सं० १५१० वर्षे माघ वदी ८ रवौ सं० फाला भा० लषी सा० हर्षा भा० वारू सा० राजा भा० माजी सं० वसा भा० वाल्ही सं० जोगा श्री शांतिनाथ बिंबं तपा श्री हेमविमल सूरि। चंकिनी ग्रामे।

श्री पद्मप्रभ स्वामीजी का मंदिर – चूड़िवाली गली।

पंचतीर्थियों पर।

[1545]

सं०। १३९९ ज० श्री जिनचंद्र सूरि शिष्यैः श्री जिनकुशल सूरिभिः श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं कारितं च सा० केसव पुत्र रत्न सा० जेहड़ सुश्रावकेन पुण्यार्थं।

[1546]

सं० १४९१ वर्षे माह शुदि ५ बुधदिने गादहिया गोत्रे सा० सिवराज सुत सा० सहजाकेन माता पदमाईनिमित्तं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेस गच्छे प्र० श्री सिद्ध सूरिभिः ।

[1547]

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ११ ओसवाल ज्ञातीय अजमेरा गोत्रे सा० सुरजन भा० सहजलदे पु० सा० सहजाकेन आत्मपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिं० का० प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गच्छे भ० श्री विजयचंद्र सूरिभिः ।

[1548]

सं १५०८ वर्षे वैशाष वदि ४ शनौ श्री संडेर गच्छे पत्तनेवी गोष्टीगानान्वये सा० कुरपाल पु० धांधा भा० वारू पु० जुणाकेन भा० कोला पुत्र स्वश्रेयसे श्री शितलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः ।

[1549]

सं० १५१० वर्षे वै० व० ५ प्रा० सा० ... भा० राजू पुत्र सा० सरमाकेन भा० चांपू पुत्रेन स्वश्रेयसे श्री सुविधि बिंबं का० प्र० तपा श्री रत्नशेषर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1550]

॥ सं० १५११ वर्षे माघ सुदि ५ गुरौ श्री ऊकेस वंशे दोसी गोत्रे मं० डूडा पु० सा० नरचंद्र भा० सीतू तत्पुत्रेण सा० धाराकेन भार्या मणकाई पुत्र उदयसिंहयुतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः

[1551]

सं० १५२६ वैशाख वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ मांडण मातृयुक्तं श्रेयोर्थं सुत सांगाकेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं श्री ब्रह्माण गच्छे श्री मुनिचंद्र सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री वीर सूरिभिः गुंडलि वास्तव्यः ॥

[1552]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख सु० ५ श्री ज्ञानकीय गच्छे उप० किलासीया गोत्रे श्रे० रेखा भा० माल्हणदे पुत्र कर्मा भा० कर्मादे पु० घडसीसहितेन कर्मा पद्मा भ्रात्र्यां आत्म-पुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सिद्धसेन सूरि पट्टे श्री धनेश्वर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1553]

॥ संवत् १६१७ वर्षे माघ वदि १ गुरौ मं० आना भार्या अमलादे पु० मं० नींबाकेन भ्रातृ मं० कान्हाई सा० वस्था आजीवा भार्या जइवंत तत् पुत्र मं० कर्मसी राजसी नें तया कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० श्री तपागच्छे श्री दानविजय सूरिभिः श्री हीरविजय सूरि प्रमुखैः परिवारपरिवृतैः ॥

[1554]

सं० १५२७ वर्षे आषाढ़ शुदि ३ शुक्रे ऊसवाल ज्ञा० सा० खेषा भा० लषमादे पु० सा० राजलकेन भा० रत्नादे पु० सा० कोल्हा भा० शाल्हणदे पु० सा० गांगा सकुटुंबयुतेन स्वपुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० संडेरक गच्छे श्री शांति सूरिभिः ॥

[1555]

सं० १५३६ वर्षे चै० ९ चंद्रे ... भाईलेवा गोत्रे सा० पातल भा० वाचा पु० बीजा भा० मदना नाथी पु० ठाजू स्वपितृ श्रे० श्री चंद्रप्रभ बिंबं कारितं प्र० श्री पल्लीवाल गच्छे श्री नन्न सूरि पट्टे भ० उद्योतन सूरिभिः।

[1556]

संवत् १५६४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ शुक्रे काकरेचा गो० पूर्वं सा० ठोटा पु० चुंडा पु० षेता भा० भाउ तत्पुत्र कान्हा भा० कस्मीरदे सकुटुंबेन श्रे० पि० श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्री यशोभद्र सूरि संताने ... सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1557]

सं० १९३१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि पूर्णिमा तिथौ गुरुवारे मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जिन पंचतीर्थी जिनैः प्रतिष्ठितं श्री बृहत् परम भट्टारक श्री जिनसुख सूरि वराणां उपाध्याय श्री क्षेत्रराम गणिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥ कारितं चैतत् गणधर चोपड़ा गोत्रे शाह श्री लाल चंदजी पुत्ररत्न श्री कपूरचंदजीकेन स्वपुन्यविवृध्यर्थं ॥ शुभं भवतु ॥ श्री आदि जिन बिंबं ॥ श्री नेमिनाथ जिन बिंबं ॥ श्री शांति जिन बिंबं ॥ श्री महावीरस्वामी बिंबं ॥

श्री पार्श्वनाथजी की प्रतिमा पर

[1558]

संवत् १९२५ शाके १५९१ वैशाख सुदि ५ आदित्यवारे ····।

श्री आदिनाथजी का मंदिर – चुड़ीवाली गली।

मूर्त्ति पर।

[1559]

सं० १९२४ माघ शुदी ३ चंद्रप्रभ बिंबं कारितं। मालकोस गो० परमसुख करमचंद प्रति०। विजय गच्छे भ०। श्री शांतिसागर सूरिभिः ॥

पंचतीर्थियों पर।

[1560]

॥ सं० १५२४ वर्षे मार्ग सु० दसमी ऊकेस चउथ गोत्रे शा। पेडा भा०। देउ सुत म। षिमा। भा० भली लाषाकेन भा० अमरी पुत्र नाथू प्रमुखकुटुंबयुतेन निजपितृव्य श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं। प्र०। तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः श्रीरस्तुः ॥

[1561]

सं० १५३१ वर्षे माघ शु० ५ बुधे प्राग०। ज्ञा०। श्रे० कडूया भा० वानू सु० मूगा राजा रागा अवरद भा० जीविणी विरु मानू सु० थावर तेजा सहिजादि कुटुंबयुतेन पितृमातृ

श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का०। प्र०। श्री पार्श्वचंद्र सूरिभिः ॥

वीसस्थानक यंत्र पर ।

[1562]

सं० १०६१ वर्षे आश्विन शु० १५। गुरौ श्री सिद्धचक्रराज यंत्र प्रतिष्ठापितं श्री श्रीमाल पटणीय बहादुरसिंहजी तत्पुत्र लाला बखतावरसिंहजी श्रेयोर्थं तपागच्छीय जं। यु। प्र। ज। श्री १०० श्री श्री विजयजिनेंद्र सूरिभिः विजयराज्ये वाणारस्यां ।

श्री महावीर स्वामीजी का मंदिर - सुंधि टोला ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1563]

सं० १४३ए वर्षे पोष वदि ए ....।

[1564]

॥ सं० १४०२ वर्षे चैत्र वदि ५ शुक्रौ श्रीमाली ज्ञातीय फोफलिया नरसिंघ जा० नामलदे सुत बाछा पितामह पितृश्रेयसे माता वईजलदे युतेन सुतेन योगकेन श्री नमिनाथ मुख्य पंचतीर्थी का० पूर्णिमा पक्षे भीमपल्ली श्री पासचंद्र सूरि पट्टे श्री जयचंद्र सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

[1565]

॥ सं० १५०१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ए रवौ श्री श्रीमालज्ञातीय श्रे० सरवण जा० वारू पु० श्रे० गोवल जा० डूसी पु० सहसाकेन स्वपितृमातृश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं पूर्णिमापक्षे श्री गुणसमुद्र सूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना ॥ ० ॥ महिसाणा स्थाने ॥ श्री ॥

[1566]

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० र० श्री श्रीमाल० सं० सामल भा० लाखणदे सुत देवा भा० मेघू नाम्न्या दृढा कुटुंबान्वितया अंचल गच्छ श्री जयकेशर सूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥

[1567]

सं० १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय सा० झांटा भा० जासू सुत सा० सामंत भार्या काईसु श्रद्धाकेन भ्रातृ वहा पाशवीर प्रभृतिकुटुंबयुतेन मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं पूर्णिमा । श्री पुण्यरत्न सूरीणामुपदेशेन का० प्र० विधिना ।

[1568]

सं० १५२३ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ उपकेश ज्ञातीय सा० जेमा भार्या पोईणी सुत राजाकेन भार्या राजलदे भ्रातृ मौयंद भा० मारू प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री श्री श्री सुमति बिंबं का० प्र० कनकरत्न सूरिभिः ।

[1569]

सं० १५२४ वै० सु० १० प्राग्वाट सा० धन्ना भा० रांनू सुत सं० वेला भा० जीविणी सुत सं० समधर संग्रामाभ्यां स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं । तपागच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । जीर्णधारा वासिनः ॥ श्रीरस्तु ॥

[1570]

सं० १५२५ वर्षे माघ वदि ६ प्राग्वाट व्य० देवसी भार्या देल्हणदे पुत्र विंजाकेन भा० वींझलदे पुत्र सांडादिकुटुंबयुतेन श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । श्री नेवग्रामे ॥

[1571]

सं० १५२७ वर्षे वैशाख वदि ६ सोमदिने । उपकेश ज्ञातौ बलही गोत्रे रांका सा० गोयंद पु० सालिग भा० वाल्हदे पु० दोल्हू नाम्ना भा० ललतादे पुत्रादियुतेन पित्रोः

पुण्यार्थं स्वश्रेयसे च श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छीय श्री कक्कुदा० सं० श्री देवगुप्त सूरिभिः ।

[1572]

सं० १५२९ वर्षे वैशाष सुदि ३ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० नरसिंग भा० संजू सुत वकूआकेन भार्या रही प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक श्री रत्नशेषर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । मूंडहटा वास्तव्यः ॥

[1573]

सं० १५५४ वर्षे पोष सुदि १५ सोमे उपकेश ज्ञातीय सं० मेहा भा० सरूपदे पु० सं० रिणमलेन भा० रत्नादे पु० लाषा दासा जिणदास पंचायणकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचल गच्छे श्री सिद्धांतसागर सूरिभिः ॥

[1574]

सं० १५७१ वर्षे फागुण शुदि ३ शुक्रे उसवाल ज्ञातीय आदित्यनाग गोत्रे साह सहदे पुत्र साह नयणाकेन कलत्रपुत्रादिपरिवारयुतेन पुण्यार्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गच्छे कक्कुदाचार्य संताने भट्टारक श्री श्री सिंह सूरिभिः ॥ अलावलपुरे ॥ श्रीरस्तु ॥

[1575]

सं० १९०१ वर्षे मार्ग शिर कृष्णैकादश्यां रूढा बाई नाम्ना कारितं श्री नमिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री विजयदेव सूरि पट्टे प्रभाकर आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ।

[1576]

सं० ... ७२ वर्षे चैत्र वदि ३ बुधे उसवाल ज्ञातीय चोरवेडिया गोत्रे सं० सोहिल तत्पुत्र सघवा सिंघराज तस्य पुण्यार्थं सं० सिद्धपालेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं श्री रुद्रपाल गच्छे श्री सिद्ध सूरि प्रतिष्ठितं । पूजक श्रेयसे ॥ श्रीः ॥

चौवीशी पर।

[1577]

संवत् १५७१ वर्षे चैत्र वदि ७ गुरौ श्री वायड़ ज्ञातीय मं० मरसिंघ जा० षमकू सुत समधर द्वितीया जा० हीरू नाम्न्या देकावडा वास्तव्यः सुत मं० धनराज नगराज संघादि स्वकुटुंबयुतया स्वश्रेयसे श्री अभिनंदन स्वाम्यादि चतुर्विंशति पट्ट श्री आगम गच्छे श्री अमररत्न सूरि तत्पट्टे सोमरत्न सूरि गुरूपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर — सुंधिटोला।

मूलनायकजी के चरणचौकी पर।

[1578] *

(१) ॥ श्री विक्रम समयात् सं० १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ ॥ श्रीमत्क्षीराब्धि लोलक—

(२) ल्लोलडिंडीरपिंडप्रसरसरसशारदशशांककिरणसुयुक्तिमौक्तिकहारनिकरधवलय—

(३) शोभिः पूरितदिक्मंडलसकलधर्म्मकर्म्मनीतिप्रवृत्तिकरणप्राप्ताशेषभुवनप्र—

(४) सिद्धिनानाशास्त्रोदयन्नप्रबलबुद्धिप्राग्भारभावितांतःकरणाश्वपतिगजपतिछत्रपति—

(५) प्रणतपादारविंदद्वंदप्रथिततनुभवभव्यभुजादंडचंडप्रचंडकोदंडखंडितानेकका—

(६) ठिन्यतमकुशितारिप्रकरतरवशीकृताखिलखंकजूपालमौलिसंधृतनिर्देशाधिशेषधर्म्म—

(७) शर्म्माधिकावाससत्कीर्त्तिनिःशेषसार्वभौमशार्दूलसमस्तमनुजाधिपत्यपदवीपौ—

* दिल्ली सम्राट जहांगीर के समय ये मूर्त्तियां की प्रतिष्ठा हुई थी, उस समय पातसाह को कई लोगोंने कह दिया कि सेवड़ोंने (जैनी लोगोंने) मूर्त्तियां बन थाई हैं और हजूरके नामको अपने बुतोंके (मूर्त्तियों के) पैरों के निचे लिख दिया है। फिर क्या था। पातिसाहके क्रोधका पार न रहा। श्री संघने पातिसाह का क्रोध शांति तथा राज्यके तर्फसे सर्व प्रकार अनिष्ट दूर करनेको ये मूर्त्तियों (नं० १५७८ - १५८४) के मस्तक पर पातिसाह का नाम खुदवा दिया था ऐसा प्रवाद है ।

(८) श्रीमीपरिरंजमुनाशोरविजयराज्ये । ऊसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे आंगाणी संघश्री
(९) रेषा तद्भार्या श्रा० रेषश्री तत्पुत्र श्री कुंरपालसोनपालाख्याः । तेषां प्रागुक्तमासीयुत
(१०) प्रतिष्ठाया ॥ स्तन्नाम्ना प्रतिमा इय प्रतिष्ठा गतः संघेशैः स्वपितॄणाम् धर्म्म चिंतामणि
(११) पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठापितं । अचलगच्छेश श्री धर्म्ममूर्त्ति सूरि पट्टालंकार पूज्य
(१२) श्री ५ कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन ॥
(मस्तकपर) पातिसाह सवाई श्री जहांगीर सुरत्राण

[1579]

(१) संवत् १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ ऊसवाल ज्ञाती-
(२) य लोढा गोत्रे आंगाणी सं० ऋषभदास तद्भार्या श्रा०
(३) रेषश्री तत्पुत्रप्रवरैः श्री कुंरपाल सोनपाल सं-
(४) घाधिपैः सुत सं० संघराज रूपचंद चतुर्भुज धन-
(५) पालादियुतैः श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ श्री धर्म्ममूर्त्ति
(६) सूरि पट्टे श्री कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन
(७) विद्यमान श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्रीरस्तु ॥
(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजय राज्ये ।

[1580]

(१) ॥ स्वस्ति श्रीमन्नृपविक्रमादित्य संवत्सर समयातीत संवत् १६७१ वर्षे
(२) शाके १५३६ प्रवर्तमाने वैशाख सुदि ३ शनौ श्रीमदागरा दुर्ग वास्तव्योपकेश
(३) ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावंशे साह जत्रमल तत्पुत्र सा० राजपाल तद्भार्या श्रा० रा
(४) जश्री तत्पुत्र श्री विमलाद्यादि संघकारक सं० ऋषभदास तद्भार्योजयकुमा-
(५) रानंददायिनी रेषश्री तत्पुत्राभ्यां श्री शत्रुंजय समेतगिरि संघ महन्महश्चिर्वा-
(६) ह प्राप्तमत्कीर्त्तिभ्यां श्री कुंरपाल सोनपाल संघाधिपाभ्यां ॥ सुत सं० संघराज
रूपचंद पौत्र

(७) सं० भूधरदास सूरदास सिवदास पदमश्री। प्रपौत्र साधारणादि परिवारयु-
(८) ताभ्यां श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ धर्म्ममूर्त्ति सूरि पट्टांभोजभास्वराणां पूज्य श्री ५
(९) श्री कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन श्री संभवनाथ बिंबं प्रतिष्ठापितं भव्यैः
पूज्यमानं चिरं नंद्यादिति श्रेयस्तुः ॥
(मस्तक पर) पातिसाह श्री ५ श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1581]

(१) ॥ स्वस्ति श्रीमन्नृप विक्रमादित्य समयात् संवत् १६७१ वर्षे शा-
(२) के १५३६ प्रवर्त्तमाने श्री आगरादुर्ग वास्तव्य उपकेश ज्ञा-
(३) तीय लोढा गोत्रे ... सा० राजपाल तद्भार्या श्रा० राजश्री त-
(४) त्पुत्र संघपतिपदोपार्ज्जनक्षम सं० ऋषभदास तद्भा-
(५) र्या श्रा० रेषश्री तत्पुत्राभ्यां श्री कुंरपाल सोनपाल संघाधिपाभ्यां श्री अंचल-
(६) गच्छे पूज्य श्री ५ धर्म्ममूर्त्ति सूरि पट्टे श्री ५ कल्याणसागर सूरीणामुपदे-
(७) शेन श्री अभिनंदन स्वामि बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ पूज्यमानं चिरं नंद्यात्
(मस्तकपर) पातिसाह अकबर जलालुदीन सुरत्राणात्मज पातिसाह श्री जहांगीर
विजयराज्ये

[1582]

(१) ॥ संवत् १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ उसवाल ज्ञा-
(२) तीय लोढा गोत्रे आंगाणी वंशे सं० ऋषभदास त-
(३) द्भार्या श्रा० रेषश्री तत्पुत्राभ्यां सं० श्री कुंरपाल सं० सोन-
(४) पाल संघाधिपैः तत्पुत्र सं० संघराज सं० रूपचंद चतुर्भुज
(५) धनपालादिसहितैः श्रीमदंचलगच्छे पूज्य श्री ५ धर्म्ममूर्त्ति सूरि तत्प
(६) ट्टे श्री कल्याणसागर सूरिरुपदेशेन विद्यमान श्री ऋषभानन जिन
(७) बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्री रस्तु ॥
(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1583]

(१) ॥ संवत् १६७१ वर्षे वैशाष शुदि ३ शनौ रोहिणी नक्षत्रे श्री आ-
(२) गरा वास्तव्योपकेश ज्ञातीय लोढा गोत्रे गाधंशे सं० ऋषजदास
(३) भार्या रेषश्री तत्पुत्र संघाधिप सं० श्री कुंरपाल सं० श्री सोनपा-
(४) ल तत्सुत सं० संघराज सं० रूपचंद चतुर्भुज धनपालादियुतैः
(५) श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ श्री धर्म्ममूर्त्ति सूरि तत्पट्टे पूज्य
(६) श्री ५ कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन विहरमान श्री ईश्वर
(७) जिन बिंबं प्रतिष्ठापितं सं० श्रीकान्ह ... ।
(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1584]

(१) ॥ श्रीमत्संवत् १६७१ वैशाष शुदि ३ शनौ रोहिणी नक्षत्रे आगरा वा-
(२) स्तव्योसवाल ज्ञातौ लोढा गोत्र गाधंशे सा० राजपाल भार्या राजश्री
(३) तत्पुत्र सं० ऋषजदास भा० रेषश्री तत्सुत संघाधिप सं० कुंरपाल सं०
(४) श्री सोनपाल तत्सुत सं० संघराज सं० रूपचंद सं० चतुर्भुज सं० धन-
(५) पाल पौत्र जुधरदास युतैः श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री
(६) ५ श्री धर्म्म सूरि पट्टालंकार श्री कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन
(७) श्री पद्मानन जिन बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्री ॥
(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1585]

(१) ॥ ऐं ॥ स्वस्ति श्री संवत् १६६७ वर्षे ॥ ज्येष्ठ शुदि १५ तिथौ गुरूवासरे
(२) अनुराधा नक्षत्रे उसवाल ज्ञातीय अगड़कडोर्ली गोत्रे सा० कूना
(३) ॥ संताने सा० कान्हड़ । भा० भामनी ... पुत्र सा० पद्दीराज ...
(४) भा० इंद्राणी । भा० सोनी पुत्र सा० निहालचंद । तेन श्री चंद्रानन शाश्वत जि
(५) न बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री खरतरगच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरि संताने

(६) श्री जिनसिंह सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥ श्री आगरा नगरे ॥ शुभं भवतु ॥

[1586]

स० १००० मा० शु० ५ श्री वर्द्धमान जिन बिंबं कारितं ऊसवंशे चोरडिया गोत्रे हरीमल्ल भार्या ननी तया । प्र । बृ । भ । खरतर ग । श्री जिनोदय सूरि पङ्कजप्रबोध स्वपितृसम श्री जिनचंद्र सूरिभिः कारितं पूजकयोः श्रेयोर्थं । लखनउ नगरे ।

पंचतीर्थियों पर

[1587]

सं० १५१५ वर्षे माह व० ६ बुधे श्री उएस वंशे सा० जिणदास भा० मूल्ही पु० सा० लाषा भा० लाषणदे पु० सा० काह्ना भा० लषमादे पुत्र सा० बाबा सुश्रावकेण पुहती पुत्र नरपाल पितृव्य सा० पूंजा सा० सामंत सा० नासण प्रमुख समस्तकुटुंबसहितेन श्री अंचल गछ गुरु श्री जयकेशरी सूरीणां उपदेशेन मातुः श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[1588]

सं० १५१७ व० माघ शिति १ ओस षावली गोत्रे सा० ईसर भा० गोपालदे पु० धीरा भा० दमहलदे पु० जावड़ासा निज भ्रातृ श्रेयोर्थे श्री नेमिनाथ बिंबं का० तपापक्षे श्री जयशेषर सूरि पट्टे प्र० कमलवज्र सूरिभिः ॥ शुभं ॥

[1589]

॥ सं० १५३५ वर्षे माघ व० ए शनौ ज्ञा० व्य० समा भा० गुरा सुत धना भा० रूपाई नाम्ना पितृ व्य० जाणा भ्रातृ धर्मा कर्मादिकुटुंबयुतया स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपागछेश श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । कुतबपुर वास्तव्य ॥ श्रीः ॥

चौवीशी पर

[1590]

सं० १५२० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ए रवौ आजुभि वास्तव्य श्री श्रीमाली मं० सिंघा भार्या

वीरू सुत अर्जुन सहिदे वरदे पुत्री आजु नाम्न्या स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितो बृद्ध तपापक्षे जट्टा० श्री ज्ञानसागर सूरिजिः ॥

[1591]

। संवत् १५५१ वर्षे फाल्गुन शुदि तृतीया ३ तिथौ बुधे ॥ श्री पटोलिया गोत्रे । सा० पोल । तत्पुत्र षेता । तत्पुत्र रूवा । तत्पुत्र गईपाल । तत्पुत्र मोहण । तत्पुत्र एडा पुत्रौ द्वौ । चांपा पाहा । चांपा स्वनिजपुण्यार्थं । स्वयशसे च । श्री चतुर्विंशति पट्टं कारितवान् प्रतिष्ठितः श्री राजगछीय श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः ॥ श्रेयसे ॥

श्री संजवनाथजी का मंदिर – फूलवाली गली ।

श्याम पाषाण के मूर्तियों पर ।

[1592]

सं० १७७७ माघ सुदि ५ सोमे श्री गौड़ी पार्श्वनाथ बिंबं का० । उंस वंशे सखलेचा गोत्रे मह्ताव ···· ।

[1593]

सं० १७७७ माघ सुदि ५ सोमे श्री चंद्रानन शास्वतजिन बिंबं कारितं उंस वंशे कुपेरा गोत्रे वसंतलालस्य जार्या ···· ।

धातु की मूर्त्तियों पर ।

[1594]

श्री मूलसंघे वघेरवालान्वये वांजा मेला प्रणमति ।

[1595]

सं १७९३ माघ सु० १३ बु । उ । वंशे डागा गोत्रे सेढमल तद्भार्या गिलहरी ताभ्यां श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं का० । बृ० ज । खर । ग । श्री जिनचंद्र सूरिजिः ।

[1596]

सं० १९२१ शाके १७७६ । मा । शु । पक्षे ६ । बुधे श्री महावीरजी जिन बिं० प्र० श्री शांतिसागर सूरिभिः का० सुचिंती गोत्रे रुपचंद तत्पुत्र धर्म्मचंद्र श्रेयोर्थं ।

[1597]

सं० १९२१ शाके १७७६ । मा । शु० ६ बुधे श्री महावीर जिन बिंब प्र० श्री शांतिसागर सूरिभिः का० सुचिंती गोत्रे बाबू रूपचंद तद्भार्या मनि बिबि श्रेयोर्थं ।

[1598]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री अजित जिन बिंबं ऊस वंशे सुचिंती गोत्रे लाला रूपचंद पुत्र धर्मचंद तद्भार्या गुलाबो बिबि श्रेयोर्थं प्र० श्रीशांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1599]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री महावीर जिन बिंबं ऊस वंशे सूगणा गोत्रे लाला खैरातीमल पुत्र रूपचंद तद्भार्या छोटीबिबि का० प्र० श्रीशांतिसागर सूरिभिः विजयगच्छे ।

[1600]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं ऊस वंशे चोरडिया गोत्रे ला। रजूमल तत्पुत्र इंद्रचंद्रेण का० प्र० श्री शांतिसागर सूरिभिः विजय गच्छे ।

[1601]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं ऊस वंशे सुचिंती गोत्रे लाला रूपचंद पुत्र धर्म्मचंदेण का० प्र० श्री शांतिसागर सूरिभिः विजय गच्छे ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1602]

सं० १३१३ फा० शु० ६ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० बोचा भार्या सहज मननयी (?) पूर्वज

श्रेयोर्थं सुत सांगणेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं।

[1603]

॥ संवत् १५४४ वर्षे आषाढ़ वदि ८ गुरौ उपकेश ज्ञातौ डुंडोयूरा गोत्रे सं० गांगा पु० पदमसी पु० पासा भा० मोहणदेव्या पु० पाल्हा श्रीवंतसहितया स्वपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छे श्री देवगुप्त सूरिभिः॥

[1604]

संवत् १५५२ वर्षे ज्येष्ठ शु० १३ दिने ऊ० ज्ञा० वलदउठ ग्रामवासि व्य० वेला भा० सारू पु० व्य० येसाकेन भा० कील्हु सहितेन स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री हेमविमल सूरिभिः॥ श्रीरस्तु।

[1605]

संवत् १५५८ वर्षे कार्तिक वदि ५ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० मोकल भा० वरजू पु० पांचा भा० जासू पु० वन्नासहितेन स्वपूर्वजश्रेयोर्थं शीतलनाथ बिंबं का० नागेंद्र गच्छे भा० श्री कमलचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमरत्न सूरि प्रतिष्ठितः॥

[1606]

... श्री नागपुरीय गच्छे श्री हेमसमुद्र सूरि पट्टावतंसैः श्री हेमरत्न सूरिभिः॥ शुभं॥

लाला माणिकचंदजी और राय साहब का देरासर।

मूर्त्तियों पर।

[1607]

सं० १९२० मि० फा० कृष्ण २ बुध सा। प्र। भा० महताब कुंवर श्री अधिष्ठायक जिन बिंबं का० श्री अमृतचंद्र सूरिभिः।

[1608]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री ऋषभदेव जिन बिंबं कारितं ओस वंशे चोरडिया

गोत्रे लाला प्रतापचंद्र तत्पुत्र शिखरचंद्रेण । प्रतिष्ठितं । भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1609]

सं० १५२७ आषाढ़ सुदि १० बुधे श्री वीर वंशे ॥ सं० पोपा भा० करणू पुत्र सं० नरसिंघ सुश्रावकेण भा० लषू भ्रातृ जयसिंघ राजा पुत्र सं० वरदे कान्हा पौत्र सं० पदमसी सहितेन निज श्रेयोर्थं श्री अंचलगच्छेश श्री जयकेशर सूरीणां उपदेशेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्र० संघेन पत्तन नगरे ।

[1610]

॥ संवत् १५६३ वर्षे आषाढ़ सुदि ७ गुरौ पत्तन वास्तव्य । मोढ ज्ञातीय श्रे० जीवा भा० होरू पुत्र श्रे० अमराकेन भा० पुहुति सुत हांसादिकुटुंबयुतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छनायक । श्री निगमाविर्भाविका । परमगुरु । श्री श्री श्री इंद्रनंदि सूरिभिः ॥

लाला खेमचंदजी का देरासर ।

[1611]

सं० १९०४ माघ शुक्ल ९ बुधे श्री । वज्रजातीय गोत्रे ला० रोसनलाल तत्पुत्र सोताबचंद्रेण भा० नति बिबि तया श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं पांचाल देशे कंपिलपुर प्र० भ श्रीमद् भट्टारक ... सूरिभिः ।

लाला हीरालालजी चुन्निलालजी का देरासर ।

मूलनायकजी पर ।

[1612]

संवत् १९२५ वर्षे चैत वदि १ सुत दलसुख जगमल । श्री ऋषभदेवजी ... ।

मूर्त्ति और पंचतीर्थियों पर।

[1613]

सं० १७०५ व० वै० व० २ उपकेश ज्ञा० सा० कान्हजी सुत वीरचंद नाम्ना श्री विमलनाथ कारि० प्रति० त० श्री विजयदेव सूरिभिः। जय।

[1614]

सं० १७१० व० जै० सु० ६ मि० प्राग्वाट लघुशाखायां श्री व्य० सं० मनजीकेन सुपार्श्व बिंबं कारितं। प्रतिष्ठितं तपा विजयराज सूरिभिः।

[1615]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री सुविधिनाथ जिन बिंबं श्रीमाल नांडिया कन्हैयालाल तद्भार्या फूनु श्रेयोर्थे भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रति० विजय गच्छे।

[1616]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री अनंतनाथ जिन बिंबं श्रीमाल टांक गोत्रे हुक-मतरायजी तत्पुत्र हजारीमलेन कारितं प्र० श्री विजय गच्छे भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः।

[1617]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री आदिनाथ बिंबं .... निहालचंदेण कारितं प्रतिष्ठितं विजय गच्छे श्री शांतिसागर सूरिभिः श्रेयोर्थं।

[1618]

सं० १९२४ माघ शुदि १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्रीमाल पारड़ गोत्रे पडुचंद [?] तत्पुत्र श्री कपूरचंदेण कारितं। प्र० भ० श्री पूज्य शांतिसागर सूरिभिः। विजय गच्छे

[1619]

सं० १५२० चैत्र व० १० गुरौ श्री ओएस व० मिठडीआ सो० जावड़ भा० जसमादे

पु० सो० गुणराज सुश्रावकेण ना० मेघाई पु० पूनां महिपाल भ्रातृ हरषा श्री राजसिंह राज सोनपालसहितेन श्री अंचल गच्छे श्री जयकेशरि सूरि उ० पत्निपुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं। प्र० श्रीसंघेन चिरं नंदतु।

[1620]

॥ ॐ सं० १५७० वर्षे आ० सुदि ५ बुधे सूराणा गोत्रे सं० शिवराज पु० सं० हेमराज भार्या हेमसिरि पुत्र संघवी नाल्हा भा० नारिगदे संघवी सिंहमल्ल भार्या संघवीणि चापश्री पुत्र पृथ्वीमल्ल प्रमुखपुत्रपौत्रसहितैः श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं। पितृमातृपुन्यार्थं। आत्मश्रेयसे श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मानंद सूरि पट्टे श्री नंदिवर्द्धन सूरि प्रतिष्ठितं।

चौवीसी और पाषाण के चरणों पर।

[1621]

॥ ॐ संवत् १५३८ वर्षे जेठ सुदि २ मंगलवारे उपकेश ज्ञातीय सोनी गोत्री स० तिणाया पुत्र सा० संसारचंद्र पुण्यार्थं श्री चतुर्विंशति कारापितं। प्र। रुद्रपल्लीय गच्छे भट्टारक श्री जिनदत्त सूरि पट्टे भ० श्री देवसुंदर सूरिभिः॥

[1622]

॥ सं० १९१४ व० ज्ये। छि। ति। चं। श्री जिनकुशल सूरि पादौ भ। श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः का। श्री गो। कन्हैयालालेन मुद्रार्थं।

[1623]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ श्री गौतमस्वामी पादुका कारिता ओ० वं० नाहर गोत्रे लाला चंगामल पुत्र जवाहिरलालेन प्रतिष्ठितं। श्री विजय गच्छ श्री जिनचंद्रसागर सूरि पट्टोदयाद्रिदिनमणि पूज्य श्री शांतिसागर सूरिभिः॥

श्रीमंदिर स्वामीजी का मंदिर — सहादतगंज।

[1624]

॥ संवत् १५१८ वर्षे माघ सूदि ७ शुक्रे श्री मोढ ज्ञा० मं० गोरा भा० राजू सुत भोजा

महिराज .... भ्रातृ नागानिमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री विद्याधर गच्छे भ० श्री हेमप्रभ सूरिभिः ॥ मांडलि वास्तव्यः ॥ १ ॥

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर – सहादतगंज ।

पंचतीर्थी पर ।

[1625]

सं० १५७६ वर्षे वैशा० सुदि ६ सोमे डूगड़ गोत्रे सा० वील्हा भा० पूना पु० ४ सा० मेहा भा० रेडाही सा० कामी भा० डूला सा० पूला भा० मूलाही सा० उदा० भा० षीमाही सा० सधारण श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं रद्रुल गच्छे श्री सूरि प्रतिष्ठितं ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर – सहादतगंज ।

मूलनायकजी पर ।

[1626]

॥ संवत् १५९१.. ।

पचतीर्थियों पर ।

[1627]

संवत् १५६७ वर्षे वैशाष सुदि ३ दिने श्री श्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि राउल भार्या लाछी सुत जोगा भार्या रूपी जसमादे सुत करमण कान्हा करमण भार्या रत्नादेसहितेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं श्री .... गच्छे शांति सूरि पट्टेश सर्वदेव सूरिभिः । कंथरावी वास्तव्यः ॥

[1628]

संवत् १६७० वर्षे वैशाष शित पंचम्यां तिथौ सोमे मेड़तानगर वास्तव्य समदड़ीया गोत्रीय । उकेश ज्ञातीय वृद्धशाषीय सा० माना भा० मनरमदे सुत रामसिंह नाम्ना भ्रातृ शामसिंह प्रमखकुटुम्बयुतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा गच्छे श्री अकबर सुरत्राण-

दत्तबहुमान भ० श्री हीरविजय सूरि पट्टालंकार श्री अकबरछत्रते (?) परिषतप्राप्तवाद-जयकार भ० श्री विजयसेन सूरिभिः ॥

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर – सहादतगंज ।

मूर्त्तियों पर ।

[1629]

सं० १८८८ मा । सु । ५ । श्री आदि जिन बिंबं कारितं ओस वंशे पहलावत गो । सदानंद पुत्र गुलाबराय भार्या फूलाख्या का० प्र । बृ । भ । खरतर । ग । श्री जिनाक्षय सूरि तत् पंङ्कजभृंगैः श्री जिनचंद्र सूरिभिः ।

[1630]

सं० १९१७ फागुण शीत २ बुधे श्री श्री आदि जिन परिकरं कारितं पांचालदेशे कांपिलपुर प्रतिष्ठितं । श्रीमद्भट्टारक बृहत् खरतर गच्छाधिराज श्री जिनअक्षय सूरि पट्टस्थित श्री जिनचंद्र सूरि पदकजलयलीन विनेय श्री जिननंदिवर्द्धन सूरिभिः ओस वंशे पहलावत गोत्रे लालाजी श्री सहानंदजी तत्पुत्र लाला श्री सदानंदजी तत्पुत्र लाला गुलाबरायजी तद्भार्या फून्नु बिबि तेन कारितं महता प्रमोदेन ।

पंचतीर्थी पर ।

[1631]

सं० १५१८ वर्षे माघ वदि २ बुधे भदेउरा ज्ञा० सा० कमलसी भा० तेजू सुत सा० खेताकेन भा० वीरणिश्रेयोर्थं पुत्र गोविंदादियुतेन श्री संभवनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः ॥

श्री शांतिनाथजी का मंदिर – सहादतगंज ।

चौकी पर ।

[1632]

॥ संवत् १९७३ का मिति जेष्ठ सुदि १० म्यां श्रीमाल वंशे ढाटेसाजन फूसपाणी गोत्रे

लाला विसनचंद जी तत्पुत्र काशीनाथजी तत्पुत्र देवीप्रसाद तद् भ्रातृवधुः ननकु ॥ श्रेयोार्थं ॥ १ ॥

पंचतीर्थियों पर

[1633]

संवत् १५२३ वर्षे माह सुदि ६ नासणुली वासि मं० भलाकेन भार्या भावलदे सुत मांडण भा० जेस्परि प्रमुखकुटुंबयुतेन भ्रातृ बलराज श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छेश श्री श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1634]

सं० १५५० वर्षे वैशाष सुदि ११ गुरौ श्री ऊसवाल ज्ञातौ कठउतिया गोत्रे । सं० पदमसी भा० पदमलदे पु० पासा भा० मोहणदे । पु० पाल्हा श्रीवंत तत्र सा० पाल्हाकेन स्वभार्या इंद्रादेपुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं । ककुदाचार्य संताने उपकेश गच्छे भट्टारक श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1635]

सं० १६७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ गुरौ श्री अहमदावाद वास्तव्य ऊसवाल ज्ञातीय वृद्ध-शाषायां श्री शांतिदास भा० बाई रूपाई सुत सा० पनजी कारितं श्री शांतिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे भ० श्री विजयदेव सूरि वरैकि (?) महोपाध्याय श्री श्री श्री मुनिसागर गणिभिः श्रेयोस्तु ॥

चौवासी पर ।

[1636]

सं० १६१९ वर्षे वैशाष वदि ५ शु० श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्त्ति देवास्त० भ० श्री भुवनकीर्त्ति देवास्त० भ० श्री ज्ञानभूषण देवास्त० भ० श्री विजयकीर्त्ति देवास्त० भ० श्री शुभचंद्र देवास्तत्पट्ट

भट्टारक श्री सुमतिकीर्त्ति गुरूपदेशात् हुंबड़ ज्ञातीय वजीयाणा गोत्रे सा० धारा भा० राणी सु० हादा भा० हरखमदे सुत० सा० जगा भा० जगमादे भ्रा० जयवंत भा० जीवादे भ्रा० जेला भा० काऊध्या सुत बचूआ सुतैः श्री मुनिसुव्रत तीर्थंकरदेव नित्यं प्रणमंति ॥

श्री दादाजी का मंदिर — जौहरीबाग।

श्वेत पाषाण के चरणों पर।

[1637]

संवत् १९१३ शालिवाहन शाके १७७७ प्रवर्त्तमाने तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां ॥ ५ ॥ शुक्रवासरे जं। यु। प्र। भट्टारक श्री जिनकुशल सूरि पादुकां लखणपुर वास्तव्य श्रीसंघेन कारितं वृहत् भट्टारक खरतर गच्छीय श्री जिननंदिवर्द्धन सूरि पट्टालंकृत श्री जिनजयशेखर सूरिभिः॥ श्रेयोस्तु ॥ श्री ॥

अयोध्या।

यह बहुत प्राचीन नगरी है। प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी का च्यवन, जन्म, और दीक्षा ये तीन कल्याणक यहां हुए। दूसरे तीर्थंकर श्री अजितनाथजी का च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक और चतुर्थ तीर्थंकर श्री अभिनन्दनजी का च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक और पांचवें तीर्थंकर श्री सुमतिनाथजी का च्यवन जन्म दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक तथा चौदहवें तीर्थंकर श्री अनन्तनाथजी का च्यवन जन्म दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक इसी नगरी में हुए, श्री महावीर स्वामी के नवमें गणधर श्री अचलभ्राता इसी अयोध्या के रहने वाले थे। रघुकुलतिलक श्री रामचन्द्रजी लक्ष्मणजी आदि भी इसी नगरी में पैदा हुए थे।

श्री अजितनाथजी का मंदिर – महल्ला कटड़ा।

पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1638]

मूलनायकजी।

संवत् १८७१ माघ सुदि ३ बृहत् खरतर गच्छे श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक श्री हीरधर्मगण्युपदेशेन श्रीमाल टांक जांवतराय सुतन चुन्निलालेन सुत बहादुरसिंहयुतेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं। श्री बाराणस्यां प्रतिष्ठितं। श्री जिनहर्ष सूरिणा श्री खरतर गच्छे।

[1639]

सं० १९५९ मि० फा० सु० ५ इदं श्री ऋषभदेवजी आदिनाथ बिंबं कारितं श्री उसवाल वंशज ताराचंद लखमीचंद प्रतिष्ठितं बृहद् भट्टारक श्री जिनचंद सूरिभिः।

[1640]

सं० १९५९ मि० फा० सु० ५ इदं श्री महावीर बिंबं कारापितं सेठ सराचंद प्र० भट्टारक जिनचंद्र सूरिभिः।

पंचतीर्थियों पर।

[1641]

सं० १४९५ वर्षे मार्ग० वदि ४ गुरौ उपकेश ज्ञातौ सुचिंती गोत्रे साह भिखु भार्या जयतादे पु० सा० नान्हा भोजाकेन मातृपितृश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेश गच्छ ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं भ० श्री श्री श्री सर्व सूरिभिः॥

[1642]

संवत् १५६७ वर्षे वैशाष सुदि १० उ० सुचिंती गोत्रे सा० जेसा भार्या जस्मादे पु० मीडा भार्या हर्षु आत्मपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं। को० श्री नन्न सूरिभिः प्रतिष्ठितं॥ श्री॥

[1643]

सं० १५७५ वर्षे फा० व० ४ दिने प्रा० सा० आल्हा जार्या आल्हणदे पुत्र सा० विसा-केन जा० विल्हणदे पुत्रीपुत्र जयवंतप्रमुखयुतेन श्री संजवनाथ बिंबं का० प्र० तपा गछे श्री जयकल्याण सूरिजिः ।

धातु की मूर्ति पर ।

[1644]

सं० १८७६ फा० व० ५ श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनमहेंद्र सूरिणा । फो० गो० सेवाराम ।

धातु के यंत्र पर ।

[1645]

श्री । संवत् १९०९ आ० सु० ३ श्री सिद्धचक्र यंत्रं का० गांधी गुलाबचंद्रस्य जार्या कल्ली नाम्ना प्र० श्री जिनमहेंद्र सूरिणा श्री बृहत् खरतर गछे ।

[1646]

सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल द्वितीया तिथौ श्री सिद्धचक्र यंत्रं प्र० ज० श्री महेंद्र सूरिजिः का० गो० नाहटा उसवाल लछमणदास तद् जार्या मुन्नि बिबि तत्पुत्र हजारीमल श्रेयोर्थमानंदपुरे ।

पाषाण के चरण पर ।

[1647]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां पाठक हीरधर्मोपदेशेन जयपुर वास्तव्य ओसवाल सेठ हुकुमचंदजेन उदयचंदेन अयोध्यायां श्री मरुदेव १ विजया २ सिद्धार्था ४ सुमंगला ५ सुयशा १४ गर्जरत्नानां परमेष्ठिनां चरणन्यासाः कारिताः प्र० श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

समवसरणजी के चरणों पर।

[1648]

॥ सं १८७७ रा धराकायां बृहत् खरतर भट्टारक गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन जयनगर वासिना ओसवाल ज्ञातौ सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन। उदयचंदेन अयोध्यायां श्री अजित सर्वज्ञस्य पादन्यासः कारितः। प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा॥

[1649]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां श्री जिनलाभ सूरि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन अयोध्यायां श्री वृषभनाथानां पादन्यासः कारितः ओसवाल। मिरगा जाति सामंतसिंहेन बडेर गोत्रीयेन बीकानेरस्थ पदार्थमल्लेन। प्रतिष्ठितः श्री जिनहर्ष सूरिणा।

[1650]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन ओसवाल जातौ सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन। उदयचंदेन जयनगरस्थेन। अवधौ सर्वज्ञाभिनंदन पादाः कारिताः। प्र। जिनहर्ष सूरिणा।

[1651]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन जयनगर वासिना ओसवाल जातौ सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन। उदयचंदेन। अयोध्यायां श्री सुमति सर्वज्ञ पादाः कारिताः प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा।

[1652]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां श्री बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन अवधौ सर्वज्ञानंत पादन्यासः कारितः सेठ उदयचंद प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा॥ १४॥

[1653]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन अयोध्यायां श्री अजिताजिनंदन सुमत्यनंतनाथानां चरणन्यासः कारितः जयनगर वासिना। ओसवाल सेठ गोत्रीय हुकुमचंद सुतेन। उदयचंदेन प्रतिष्ठितः खरतर भट्टारक गणेश श्री जिनहर्ष सूरिणा।

[1654]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतरगणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन। अयोध्यायां श्री नाभि १ जितशत्रु २ संवर ४ मेघ ५ सिंहसेन १४ जानामार्हतां क्रमन्यासः कारितः जयनगरस्थेन ओसवाल सेठ हुकुमचंद सुतेन। उदयचंदेन प्रतिष्ठितः श्री जिनहर्ष सूरिणा।

[1655]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां श्री जिनलाभ सूरि शिष्योपाध्याय हीरधर्मोपदेशेन जयनगरस्थेन ओसवाल सेठ हुकुमचंद सुतेन। उदयचंदेन। अयोध्यायां २। ४। ५। १४। जिनादयो गणधराणां श्री सिंहसेन। वज्रनाभ। चमरगणि। यशसां पादाः कारिताः। प्रतिष्ठिताः श्री जिनहर्ष सूरिणा।

दादाजी के चरण पर।

[1656]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां पितामहानां श्री जिनकुशल सूरीणामयोध्यायां चरणन्यासः प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर भट्टारक श्री जिनलाभ सूरि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन कारिताः। जयनगर वासिना अधुना मिरजापुरस्थेन सेठ हुकुमचंदजेन। उदयचंदेन श्रेयोर्थं।

यक्ष और देवियों के पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1657]

॥ श्री गोमुख यक्ष मूर्त्तिः ॥ १ ॥ ॥ सं० १ए३ए फाल्गुन कृष्ण ७ गुरौ प्रतिष्ठितं।

ॐ । यु । प्र । वृहत्खरतर भट्टारकेंद्र श्री जिनमुक्ति सूरि जिनामादेशात्मंडलाचार्य श्री विवेककीर्त्ति गणिना कारितं । श्री संघस्य श्रेयोर्थमयोध्यायाम् ॥ शुभम् ॥ १ ॥

नोट– ऐसेही लेख और (१)॥ श्री महायक्षमूर्त्तिः ॥ २ ॥ (२) ॥ श्री यक्षनायक मूर्त्तिः ॥ ४ ॥ (३)॥ श्री तुंबुरुयक्षमूर्त्तिः ॥ ५ ॥ (४) ॥ श्री पातालयक्षमूर्त्तिः ॥ १४ ॥ (५) ॥ श्री अजितबला देवी ॥ २ ॥ (६) ॥ श्री कालिदेवीमूर्त्तिः ॥ ४ ॥ (७) ॥ श्री अंकुशादेवी मूर्त्तिः ॥ १४ ये सात मूर्त्तियों पर हैं ।
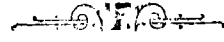
नवराई ।

नवराई फैजाबाद से १० मैल और सोहावल स्टेशन से अंदाज २ मैल पर एक छोटा गांव है । यही प्राचीन तीर्थ 'रत्नपुरी' है । यहां १५ वें तीर्थंकर श्री धर्मनाथस्वामी का च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक हुवे हैं ।

पंचतीर्थियों पर

[1658]

संवत् १५१२ वर्षे माह शुदि ५ सोमे वाडिज वास्तव्य प्राग्वाट जयसिंह भा० फाली पु० पोचा भा० जासी पु० लीबा सरवण लाहू उमालु पोचाकेन । श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं श्री विवंदणीक गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिभिः ।

[1659]

सं० १५६७ वर्षे वैशाष सु० १० बु० श्री उपकेश ज्ञातौ सं० साहिल सु० सं० हासा भा० गाजी नाम्न्या स्वपुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सं० भ० श्री सिद्ध सूरिभिः

[1660]

संवत् १६१७ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ५ सोमे श्री पत्तने उसवाल ज्ञातीय सा० अमरसी सुत आणंद । भा० वीरु सुत काहाना सारंगधर बिंबं श्री पद्मप्रभनाथ । प्रतिष्ठितं । तपा गच्छे श्री विजयदान सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1661]

॥ संवत् १६४४ वर्षे फागुण शुदि २ दिने उसवाल ज्ञातीय बंभ गोत्रीय साह कटारू भार्या दुल्लादे सुत सा० ताकू भार्या जीवादे सुत सा० टटन। प्री (?) संघनाम चिंतामणि श्री श्रेयांसनाथ बिंबं तपागच्छाधिराज श्री हीरविजय सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

पाषाण के चरणों पर।

[1662]

संवत् १८७७ रा धराकार्यां श्री रत्नपुरे श्री धर्मनाथानां पादाः कारिताः बरड़ीया बुलचंदज वेणीप्रसाद प्र। बृहत् खरतरगणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीर-धर्मोपदेशेन। ओसवालेन। काशीस्थेन प्रतिष्ठिताः श्री जिनहर्ष सूरिणा।

[1663]

संवत १८७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्माहंतापादाः कारिताः बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन बरड़ीया बूलचंदज वेणीप्रसादेन। श्री जिनहर्ष सूरिणा बृहत् खरतरगणेशेन।

[1664]

सं। १८७७ रा धराकायां बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीर-धर्मोपदेशेन काशीस्थ बरड़ीया बूलचंदज। वेणीप्रसादेन श्री धर्मपरमेष्ठिनां पादाः कारिताः श्री रत्नपुरे प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर गणेश।

[1665]

सं। १८७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्म सर्वज्ञानां पादाः कारिताः ओसवंशे

बरड़ीया बूलचंदज वेणीप्रसादेन श्री काशीस्थेन वृहत् खरतर गणनाथ श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर गणेश।

[1666] *

सं० १८७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मनाथाद्य: गणधर श्रीमद् अरिष्टाख्यानां पादा: कारिता: ओसवाल वंशे बरड़ीया बूलचंदज वेणीप्रसादेन वृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन। प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा। वृहत खरतर गणेशेन।

[1667]

सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ। श्री गौतम स्वामी जी पादन्यासौ। प्र। भ। श्री जिनमहेंद्र सूरिभि:। का। गा० श्री अगरमल्ल पुत्र छोटण-लालेन आणंदपुरे॥ श्री॥

[1668]

सं० १९१० वर्षे शाके १७१५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे श्री जिनकुशल सूरीणां पादन्यासौ प्रतिष्ठित: भ। श्री जिनमहेंद्र सूरिभि: का। गां। श्री वेणीप्रसा-दांगज छोटणलालेण आणन्दपुरे।

पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1669]

सं। १६६७ का .... अभिनंदन ...। जं। यु। प्र। भट्टारक श्री जिनचंद्र सूरिभि:।

[1670]

सं। १६७५ वैशाष सुदि १३ शुक्रे श्री वृहत् खरतर संघेन कारितं श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभि: युगप्रधान श्री जिनसिंह सूरि शिष्यै:।

---

* किन्नर यक्ष और कंदर्पा देवी मूर्त्तियों पर भी ऐसे ही लेख हैं।

[1671]

॥ सं। १८०३ शाके १७५८ प्र। माघ सुदि १० बुध वासरे श्री पादलिप्त नयरे श्री अभिनंदन बिंबं कारितं श्री बृहत् खरतर गच्छे भ। जं। यु। श्रीमहेंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं॥

[1672]

सं। १८०३ माघ सुदि १० बुध वासरे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं बृहत्खरतर गच्छे प्रतिष्ठितं जं० यु० प्र० भ० श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः।

[1673]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं भ० श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः कारितं बमा (?) गोत्रीय श्री हुकुमचंद तत्पुत्र अगरमल्ल तद्भार्या बुध तया श्रेयोर्थमाणंदपुरे।

धातु की मूर्त्ति पर।

[1674]

सं० १९२० मि० फा० कृष्ण २ बुधे डूगड़ प्रतापसिंह भार्या महताव कुंवर का० विहरमान अजित जिन २० बिंबं श्री अमृतचंद्र सूरि राज्ये वा० ज्ञानचंद्र गणिना।
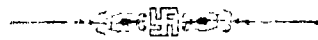
फैजाबाद।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर। महल्ला - पालखीखाना।

पंचतीर्थियों पर।

[1675]

ॐ सं० १४६१ वर्षे जेठ सुदि १० शुक्रे प्रा० श्रेष्ठि खाखा भा० देवल पु० जेसा भ्रातृव्य पीचनाम्न्यां स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं का० प्रति० पिप्पल गच्छे श्री वीरप्रभ सूरिभिः॥

[1676]

सं० १४९९ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ श्रीमाल ज्ञातीय श्री एलहर गोत्रे शा० दया-संताने सा० पूनात्मज म० मिच्चाकेन भ्रातृ डोडाप्रभृतिपरिवारयुतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं श्री बृहद् गच्छे श्री मुनीश्वर सूरि पट्टे प्र० रत्नप्रभ सूरिभिः।

धातु की मूर्त्ति पर।

[1677]

सं० १६६४ वर्षे राय पालक० मु० पा० प्र० तप ....।

पट्ट पर।

[1678]

सं १६७२ भाद्र सुदि ११ श्री चंद्रप्रभ जिन बिंबं॥ वीरदास प्रणमति। ठ. ठः॥

पाषाण के चरणों पर।

[1679]

सं० १७७९ फाल्गुण शुदि ४ वार शनि अयोध्या नगरे वंगलावसति वास्तव्य ओस वंशे नखत गोत्रीय जोरामल तत्पुत्र बषतावरसिंघ तत्पुत्र कनईयालालादिसहितेन श्री जिन-कुशल सूरि पादुका कारितं। प्रतिष्ठितं बृहत् भट्टारक खरतर गच्छीय श्री जिनचंद्र सूरिभिः कारक पूजकानां भूयसि वृद्धिलगं भूयात्॥

[1680]

सं० १७७९ मि। फा। सु० ४ श्री जिनकुशल पादौ। प्र। श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

卐卐卐卐卐卐卐

चंद्रावती।

यह तीर्थ बनारस से ७ कोस पर गंगा के किनारे अवस्थित है। आठवें तीर्थंकर चंद्रप्रभस्वामी का इसी चंद्रावती नगरी में च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक हुए हैं।

पाषाण के चरण पर।

[1681]

श्री वाराणसी नगरीस्थित समस्त श्री संघेन श्री चंद्रावत्यां नगर्य्यां श्री चंद्रप्रभु सुनाम ८ म जगनाथानां चरण न्यासः समस्त सर्व सूरिभिः प्रतिष्ठितं। संवत् १८६० मिति आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे ११ वार शुक्रवार शुभं।

पाषाण की यक्ष मूर्त्ति पर।

[1682] *

संवत् १९१३ फाल्गुण शुक्ल सप्तम्यां विजय यक्ष मूर्त्ति प्रतिष्ठितं। भट्टारक। युगप्रधान श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः कारिता च काशीस्थ श्री श्वेताम्बर श्री संघेन।

[1683]

सं०। १८८८ माघ शुदि ५ सोमे श्री जिनकुशल सूरि चरण कमलं कारितं श्री-मालान्वये फोफलिया गोत्रीय बघतमल्ल पुत्र दिलसुखरायेण प्र। बृ। भ। खरतर ग। श्रीजिन-चंद्र सूरिभिः श्री जिनाक्षय सूरि पदस्थैः।

शिलालेख।

[1684]

श्री दादाजी महाराज के मंदिरजी का जीरणउद्धार। लक्ष्मीचंद राखेचा की लड़की छोटी बिबि की तरफ से बनाया। भादो सुदि ४ शुक्रवार सम्वत् १९५२।

---

* ज्वाला देवी की मूर्त्ति पर भी इसी प्रकार का लेख है।

[1685]

श्री संवत् १८९१ शाके १७५७ माघ शुक्ल १५ सोमवार पुष्यनक्षत्रे आयुष्यमाण योगे चोरडिया गोत्रोत्पन्न लाला मन्नुलालजी बुधसिंहेन निर्मिता विश्रामस्थान।

[1686]

॥ सं। १८९४ वर्षे शा १७५९ माघ शुक्ल ४ चतुर्थ्यां चंद्रवासरे श्रीमालान्वये फोफलिया गोत्रे सा। श्री पुसवपतरायजी तत्सुत। दिलसुखराय ···· चान्निधानौ श्री चंद्रप्रभ कल्याणकभूम्यां चंद्रावती पूर्यां धर्मशाला कारापिता संघार्थं।
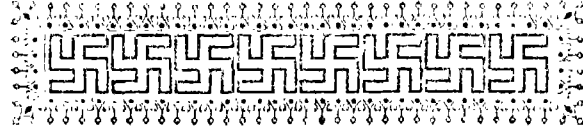
श्री सम्मेदशिखर तीर्थ।

मधुवन — जैन श्वेताम्बर मन्दिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1687]

सं० १२१० आषाढ़ सुदि ९ सोमे श्री पंडेरक गच्छे ···· प्रतिमा कारिता वसु ····।

[1688]

संवत् १२३५ वैशाख सुदि ३ बुधे तंगकीय सोहि सुत पीत श्रावकेण स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता। ···· श्री पूर्णचन्द्र सूरिणा।

[1689]

संवत् १२४२ वैशाख सुदि ४ श्री थारद्रीय गच्छे श्री जीवदेव सूरि पितृश्रेयोर्थं सूरि श्रेयोर्थं श्री० टाणाकेन कारितं।

[1691]

संवत् १४९६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० कर्मसी जार्या मटकू सुत गुणीआकेन स्वकुलश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं। श्री बृहत्तपापक्षे श्री ज्ञानकलश सूरि पट्टे श्री विजय तिलक सूरिजिः।

[1692]

सं० १५५३ वर्षे वैशाष वदि ११ शुक्रे उकेश वंशे सा० पनरबद जार्या मानू पुत्र साह वदा सुश्रावकेण जार्या धनाई पुत्र कुंरपाल सोनपाल प्रमुखसहितेन श्री वासुपूज्य बिंबं स्वश्रेयोर्थं कारितं। प्रतिष्ठितं श्री बृहत् खरतर गछनायक श्री जिनसमुद्र सूरिजि ।

[1693]

संवत् १५७० वर्षे माह वदि १३ बुध दिने सुराणा गोत्रे। सं० केसव पुत्र सं० समरथ जार्या सं० सोमलदे पु० सं० पृथीमल्ल महाराज कर्म्मसी धर्मसी युतेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं मातृपितृपुण्यार्थं आत्मश्रेयसे प्रतिष्ठितम्। श्री धर्मघोष गछे जट्टारक श्री श्री नंदिवर्द्धन सूरिजिः॥

चौवीसी पर।

[1694]

सं० १२२७ वैशाख शु० ३ गुरौ नंदाणि ग्रामेन्या श्राविकया आत्मीय पुत्र लूणदे श्रेयोर्थं चतुर्विंशति पट्टः कारिताः। श्री मोढ गछे बप्पजट्टि संताने जिनजद्राचार्यैः प्रतिष्ठितः।

[1695]

सं० १५०७ प्रा० सा० पाल्हणसी जा० जोटू सुत सा० राजाकेन जा० मंदोअरि सुत सीहा कडुआदिकुटुम्बयुतेन श्री कुन्थुनाथ सपरिकर चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजि॥ ठ॥ श्री ॥

जलमंदिर ।

पंचतीर्थि पर ।

[1696]

सं० १५११ पोष वदि ६ गु० मंत्रीअर गोत्रे श्री हुंबड़ ज्ञाति गारुडिया जा० पूजू सु० समेत जा० सहनल दे सु० समधर सोमा श्रेयोर्थं जा० पाल्हण नाल्हा एतैः श्री आदिनाथ बिंबं कारितं वृद्धतपा ज० श्री रत्नसिंह सूरिभिः प्रति० ॥

श्री पावापुरी तीर्थ ।

मंदिर प्रशस्ति ।

शिलालेख ।

[1697]

(१) ॥ ऐं ॥ स्वस्तिं श्री संवति १६९८ वैशाख सुदि ५ सोमवासरे । पातिसाह श्री साहिजांह सकलनूर

(२) मंडलाधीश्वर विजयिराज्ये ॥ श्री चतुर्विंशतितमजिनाधिराज श्री वीरवर्द्धमान स्वामी

(३) निर्वाण कल्याणिक पवित्रित पावापुरी परिसरे श्री वीरजिनचैत्यनिवेशः । श्री

(४) ऋषभ जिनराज प्रथम पुत्र चक्रवर्ती श्री भरत महाराज सकलमंत्रिमंडलश्रेष्ठ मंत्रि श्रीदलसन्तानीय म·

PAWAPURI TEMPLE PRASHASTI

Dated V. S. 1698 (1641 A.D)

(५) हतिश्राण ज्ञातिशृङ्गार चोपड़ा गोत्रीय संघनायक संघवी तुलसीदास भार्या निहा-
लो पुत्र सं० संग्राम।

(६) लघुभ्रातृ गोवर्द्धन तेजपाल जोजराज। रोहदीय गोत्रीय मं० परमाणंद सपरिवार
महधा गोत्रीय विशेष धर्म्म।

(७) कर्म्मोद्यम विधायक ठ० डुलीचंद काकड़ा गोत्रीय मं० मदनस्वामीदास मनोहर
कुशला सुंदरदास रोहदिया।

(८) मथुरादास नारायणदासः गिरिधर सन्तादास प्रसादी। वार्त्तिदिया गो० गूजरमल्ल
बूदड़मल्ल मोहनदास।

(९) माणिकचन्द बूदमल्ल जेठमल्ल ठ० जगन नूरीचन्द। नान्हरा गो० ठ० कल्याणमल्ल
मलूकचन्द मना-

(१०) चन्द। संघेला गोत्रीय ठ० सिंघू कीर्त्तिपाल बाबूराय केसवराय सूरतिसिंघ।
काकड़ा गो० दयाल-

(११) दास जोवालदास कृपालदास मीर मुरारीदास किलू। काणा गोत्रीय ठ० राजपाल
रामचन्द॥

(१२) महधा गो० कीर्त्तिसिंघ रो० ठवोचन्द। जाजीयाण गो० मं० नथमल्ल नंदलाल
नान्हड़ा गोत्रीय।

(१३) ठ० सुन्दरदास नागरमल्ल कमलदास॥ रो० सुन्दर सूरति मूरति सबल कृती प्रताप
पाहड़िया।

(१४) गो० हेमराज जूपति। काणा गो० मोहन सुखमल्ल ठ० गढ़मल्ल जा० हरदास पुर-
सोत्तम। मीणवा-

(१५) ण गो० बिहारीदास बिंदु। मह० मेदनी जगवान गरीबदास साहरेणपुरीय जींवण
वजागरा गो०।

(१६) मलूकचन्द जूफ गो० सचल बन्दी संती। चो० गो० नरसिंघ हीरा घरमू उत्तम
वर्द्धमान प्रमुख श्री।

(१७) बिहार वास्तव्य महतीयाण श्री संघेन कारितः तत् प्रतिष्ठा च श्री बृहत् खरतर गच्छाधीश्वर युगप्रधान श्री ।

(१८) जिनसिंह सूरि पट्टप्रभाकर युगप्रधान श्री जिनराज सूरि विजयमान गुरुराजानामा-देशेन कृत ।

(१९) पूर्वदेश विहारे युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्य श्री समयराजोपाध्याय शिष्य वा० अभयसुन्दर ग-

(२०) णि विनेय श्री कमललाभोपाध्यायैः शिष्य पं० लब्धकीर्त्ति गणि पं० राजहंस गणि देवविजय ग-

(२१) णि थिरकुमार चरणकुमार मेघकुमार जीवराज सांकर जसवन्त महाजलादि शिष्य सन्ततिः सपरिवार्यैः । श्रीः ।

क्षत्रियकुण्ड । *

पंचतीर्थी पर ।

[1698]

संवत् १५५३ वर्षे माह सुदि ५ दिने । चरडेचा गोत्रे सा० कोहा भा० सोनी पु० साह सीहा सहजा सीहा भा० हीरूश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री कोरंट गच्छे श्री नन्न सूरिभिः ॥

* ' लछवाड़ ' ग्रामसे १ कोस दक्षिण में छोटे पहाड़ पर यह स्थान है । श्वेताम्बर सम्प्रदाय वाले २४ वें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के च्यवन, जन्म और दीक्षा ये ३ कल्याणक इसी स्थान में मानते हैं । वहां के लोग इसको 'जन्म थान' कहकर पुकारते हैं । पहाड़ के तलहटी में २ छोटे मन्दिर हैं । उन में श्री वीर प्रभु की श्याम वर्ण के पाषाण की मूर्त्तियां हैं । पहाड़ पर मन्दिर में भी श्याम पाषाण की मूर्त्ति है और मन्दिर के पास ही एक प्राचीन कुण्ड का चिह्न वर्त्तमान है ।

लछवाड़ ।

धातु की मूर्ति पर ।

[1699]

॥ सं० १९२० मि० फाल्गुन कृ० २ बुधे माळू गो० केसरीचंद भार्या किसन बिबि वीर जिन बिंबं का। भं। यु। भ। श्री जिनहंस सूरि राज्ये उ। सं। ग। च। प्रति० ।

पंचतीर्थियों पर।

[1700]

सं० १५१३। वै० सुदि ५ गुरौ श्री हुंबड़ ज्ञातीय फडो शिवराज सुत महीया श्रेयसे भ्रातृ हीयकेन भ्रातृज कुरूया युतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० बृहत्तपा पक्षे श्री श्री रत्नसिंह सूरिभिः ॥

[1701]

सं० १९२० फा० कृ० २ बुधे प्रतापसिंह दूगड़ गोत्रे भार्या महताब कुंवर श्री सुमति जिन पंचतीर्थी का० भ०। सदालाभ गणिना श्री जिनहंस सूरि राज्ये।

यंत्र पर।

[1702]

सं० १९३३ ज्येष्ठ शुक्ल १२ शनिवासरे श्री नवपद यंत्र कारितं ओस वंशे दूगड गोत्रे श्री प्रतापसिंह तत्पुत्र रायबहादुर धनपत्सिंहेन कारितं प्रतिष्ठितं विजयगच्छे भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः।

[1703]

सं० १९३३ का ज्येष्ठ शुक्ल १२ द्वादश्यां शनिवासरे नवपद यंत्र.......का० मकसूदाबाद वास्तव्य ओस वंशे दूगड गोत्रे बाबू प्रताप सिंह तत्पुत्र राय बहादुर लक्ष्मीपतसिंह रायबहादुर धनपतसिंह ने कारितं विजय गच्छे श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

चन्दनचौक ।

मन्दिर का शिला लेख ।

[1704]

१ । ॐ ॥ संवत् १३४४ वर्षे आ-
२ । षाढ़ सुदि पूर्णिमायां देव श्री ने-
३ । मिनाथ चैत्ये श्री कल्याण....
४ । यस्य पूजार्थं श्रे० सिरधर । त-
५ । त्पुत्र श्रे० गांगदेवेन वीस....
६ । स प्रीय द्रमाणं ९२० श्री नेमि
७ । नाथ देवस्य भांडागारे निक्षि-
८ । सं वृद्ध फल भोगेन सम्प्रति द्र-
९ । ....३२ प्रदत्तं पूजार्थं आचंद्र-
१०। कालं यावत् शुभं भवतु श्री ॥

मूर्त्ति के चरण चौकी पर ।

[1705]

१ । गुणदेव भार्या-जइतसिरि साल्हू-
२ । पुत्र दइरा पूना लूणावी ... कम-
३ । रेवता हरपति कर्मद राणा क-
४ । मंट पुत्र खीमसीह तथा धीर-
५ । देव सुत अरसीह तत्पुत्र वस्तु-
६ । पाल तेजःपाल प्रभृति सकल-
७ । कुटुंब सामस्त्येन श्रे० गांग-
८ । देवेन कारितानि ।

रत्नपुर-मारवाड़ ।

जैन मंदिर ।

शिला लेख ।

[1706]

१ । सं० १३४३ वर्षे माह सुदि १० शनौ रत्नपु-
२ । रे श्री पार्श्वनाथ चैत्ये श्री उसिवाल ज्ञातीय व्यवसीं-
३ । ह गछ सुतयासी पुत्राह्नि सरोराज ह्रसिकया व्यव महि-
४ । लण जार्यया महणदेव्या स्वात्म श्रेयसे कारितं श्री आ-
५ । दिनाथ बिंबस्य नेचक निमित्तं श्री पार्श्वनाथ देव जांडा-
६ । गारे क्षिप्त वीसल प्रिय ड्रम्म २० तथा सं० १३४६ माह सुदि
७ । १५ पूर्णिमायां कल्याणिक पंचकनिमित्तं क्षिप्तं ड्र १० ज
८ । जयं ड्र ३० अमीषां ड्रम्माणां व्याजे शतं मासं प्रति ड्र २०
९ । विशति ड्रम्मा पूम्त्राणां व्याजेन नवकं करणीयं दश ड्रम्मा-
१० । णां व्याजेन कल्याणिकानि करणीयानि शुजं जवतु ।

मूर्तियों पर ।

[1707]

१ देव श्री शान्तिनाथ
२ । दीसावाल न्याती सुरमा-
३ । णपुर वास्त (व्य) साधु रतन
४ । सुत सा० हापु ऊलगे

[1708]

१ । ॐ ॥ सं० ॥ १३३० फागुण सुदि १० गुरौ । अद्येह रत्नपुर श्री षंडेर गच्छे श्री
२ । ....महं मदन पुत्रमहं डूंगरसीहेन
३ । ....श्रे

४। योर्यं श्री जिनेन्द्रस्य बिंबं---कारितं ॥ प्र०

५। श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री सुमति सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

गांधाणी (मारवाड़)।

प्राचीन जैन मंदिर।

धातु की मूर्त्ति पर

[1709] *

(१) ॐ ॥ नवसु शतेष्वब्दानां । सप्तत्रिं (त्रिं) शदधिकेष्वतीतेषु । श्रीवच्छलांगभीभ्यां । ज्येष्ठार्याभ्यां

(२) परमभक्तया ॥ नाभेय जिनस्यैषा ॥ प्रतिमा ऽषाढ़ार्द्धमास निष्पन्ना श्रोम-

(३) तोरण कलिता । मोक्षार्थं कारिता ताभ्यां ॥ ज्येष्ठार्यपदं प्राप्तौ । द्वावपि

(४) जिनधर्म्मवच्छलौ ख्यातौ । उद्योतन सूरेस्तौ । शिष्यौ श्रीवच्छवच्छदेवौ ॥

(५) सं० ९३७ अषाढ़ार्द्धे ॥

---

* गांव 'गांधाणी' जोधपुर से उत्तर दिशा में ९ कोस पर है। वहां तालाव पर एक प्राचीन जैन मन्दिर में यह सर्वधातु की श्री आदिनाथजी की मूर्ति है और उसके पृष्ठ पर यह लेख खुदा हुआ है। जोधपुर निवासी पण्डित रामकर्णजी की कृपा से मुझे यह लेख का छापा और अक्षरान्तर प्राप्त हुआ है। उन्होंने इस लेख पर निम्न लिखित नोटस् लिखे हैं।

पंक्ति— १। "ज्येष्ठार्य" यह पदवी वाचक शब्द ज्ञात होता है, जो पंक्ति ३ में के "ज्येष्ठार्य पदं प्राप्तौ" इस वाक्य से स्पष्ट है।

„ — २। "आषाढ़ार्द्ध" पद से आषाढ़ सुदि १ और वदि १५ का भी ज्ञान हो सकता है; परन्तु यहां प्रतिपदा का सम्भव अधिक है, क्योंकि शुभ कार्य में अमावस्या वर्जित है।

„ — ४। "उद्योतन सूरेः" —पट्टावली में इनके स्वर्गवास का संवत् ९९४ मिलता है परन्तु उन के पट्टाधिकारी होनेका संवत् देखने में नहीं आया। लेख से जाना जाता है कि उद्योतन सूरि संवत् ९३७ में आचार्य पद पा चुके थे। इनके समय पर्यंत गच्छ भेद नहीं था इसी लिये लेखमें गच्छ का उल्लेख नहीं है। ऐतिहासिक दृष्टिसे यह लेख बड़े महत्व का है।

सूरपुरा - नागौर।

माताजी के मंदिर के स्तम्भ पर।

शिला लेख।

[1710]

(१) संवत् १२१५ पोस व-
(२) दि १ श्री नेमिनाथचैत्ये
(३) ···· पुत्र्या धाहरू ज्ञा-
(४) येया देवधरमात्रा सू
(५) हवाभिधानया आत्म श्रे-
(६) योर्थं स्तंभद्वयं दत्तं ॥

[1711]

(१) संवत् १२३९ पोस व-
(२) दि १ श्री नेमिनाथचैत्ये
(३) ······ पुत्र्या धाहरू ज्ञा-
(४) येया देवधरमात्रा सू-
(५) हवाभिधानया आत्म श्रे-
(६) योर्थं स्तंभद्वयं दत्तं ॥
(७) मूल्ये द्र १० ॥ सर्व शु-
(८) भं ॥

उसतरां - नागौर।

शिला लेख।

[1712]

(१) संवत् १६४४ वर्षे फागुण वदि १५ उपकेश ज्ञातीय बाहणा गोत्रे।
(२) ······
(३) संभवनाथ ····· तपागच्छ श्री श्री हीरविजय सूरि।

नगर - मारवाड ।

मूर्त्तियों के चरणचाकी पर ।

दाहिने तर्फ ।

[1713] *

१। ॥ ॐ ॥ संवत् १२७२ वर्षे आषाढ़ सुदि ७ रवौ श्री नारदमुनि विनिवेशोते श्री नगर-
वरमहास्थाने सं० ७०

२। ७२ वर्षे अतिवर्षाकालवशादतिपुराणतया च आकस्मिक श्री जयादित्य देवीय
महाप्रसाद विनष्टायां ।

३। श्रीराजुलदेवी मूर्त्ते पश्चात् श्रीमत् पत्तन वास्तव्य प्राग्वाट ठ० चंडपात्मज ठ० श्रीचंड-
प्रसादांगज ठ० श्री सो- ।

४। मतनुज ठ० श्री आसाराजनन्दनेन ठ० श्री कुमारदेवीकुक्षिसंभूतेन महामात्य श्री
वस्तुपालेन स्वभार्या म-

५। हं श्री स ..... पुण्यार्थमिहैव श्री जयानित्य देवपत्न्या श्री राजलदेव्या मूर्त्तिरियं कारिता
॥ शुभमस्तु ॥

बायें तर्फ ।

[1714]

१। ॥ ॐ ॥ संवत् १२७२ वर्षे आषाढ़ सुदि ७ रवौ श्री नारद मुनि विनिवेशीते श्री नगर
वर महास्थाने सं० ७०७२ वर्षे अ-

२। तिवर्षाकालवशादतिपुराणं तया च आकस्मिक श्री जयादित्य देवीय महाप्रसाद
पतन विनष्टायां श्री रत्नादेवी मूर्त्तौ

३। पश्चात् श्री मत् पत्तन वास्तव्य प्राग्वाट ठ० श्री चण्डपात्मज ठ० श्री चण्डप्रसादाङ्गज
ठ० श्री सोमतनुज ठ० श्री आसाराजनन्द-

---

* श्री भीड़भंजन महादेव के मंदिर में सूर्य के मूर्ति के दोनों तर्फ श्री मूर्त्तियों के चरणचौकी पर यह लेख है ।

४। नेन ठ० श्री कुमारदेवीकुक्षिसम्भूतेन महामात्य श्री वस्तुपालेन स्वभार्या भय्याः ठ० कन्हड पुत्र्याः ठ० संपू कुक्षिजवा

५। याः महं श्री ललिता देव्या पुण्यार्थमिहैव श्री जयादित्य देवपत्न्या श्री रत्ना देवी मूर्त्तिरियं कारिता ॥ शुभमस्तु ॥ छ ॥

नगर - खेडगढ़।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर। *

[1715]

१। ॐ सं० १६६६ वर्षे। भाद्रपदे शुक्लपक्षे। श्री द्वितीया दिने। शुक्रवारे। वीरमपुर वरे। श्री शान्तिनाथ प्रासाद

२। भूमि गृह। श्री खरतर गच्छे। युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि विजयराज्ये। आचार्य श्री जिनसिंह सूरि यौवराज्ये। श्री

३। राउल श्री तेजसिजी विजयिराज्ये। कारितं श्री संघेन ॥ लिखितं वा० श्री गुणरत्न गणिना विनेयेन रत्नविशालगणिना

४। सूत्रधार। चांपा पुत्र। रत्ना। पुत्र। जोधा दामा। पुत्र मन्ना। घन्ना। वर योगेन कृतं। भार्या सोमा किल पाणा। वल्ली। मेघ। श्री रस्तु।

घाणेराव मारवाड़।

महावीर स्वामीका मन्दि। †

[1716]

सं० १२१३ भाद्रपद सुदि ४ मङ्गल दिने श्री दण्डनायक तैजल देव राज्ये श्रीवंश

---

* यह लेख मन्दिर के भूमिग्रह का है।

† यह मन्दिर "घाणेराव" से १॥ कोस पहाड़ पर है।

ज्ञातीय राउत महणसिंह नक्तिवसहत वाटमध्यात् । श्री महावीर देव बिंबं प्रति द्राम ४ पालसुधे दत्ताः यस्य नूमि तदा फलं ॥ से० रायपाल सुत रावविकु महाजन कुरुपाल विना पिय सारिवहिं ॥

अझार ।

श्री पाश्र्वनाथजी का मन्दिर ।

प्रशस्ति ।

[1717]

१ । ॐ नमः श्री पार्श्वनाथाय । ५ श्री ह ···· र्षे गणेशाय ····

२ । श्री मेह मुनीन्द्र गुरुभ्यो नमः ॥ स्वस्ति श्री पार्श्वनाथांघ्रिं तुष्टि

३ । हेतु स्मृतौ सतां । यौ विश्वत्रय विख्यातौ तावभिष्टप्रदौ मम ॥ १ ॥

४ । श्री मद्विक्रमतः संवत् । मुनिवाजीरसेन्दुके । १६७७ । वर्षे वैशाख मा

५ । सेंदुवृद्धिपक्षेऽर्कनूदिने ॥ २ ॥ अक्षयायां तृतीयायां रोहिणीस्थे ···· वां

६ । नवे एवं सर्वे शुनेभ्यस्ते । जीर्णः प्रसाद उद्धृतः ॥ ३ ॥ श्री मत्पार्श्वजिनेन्द्रस्य कल्या

७ । ण फलहेतवे । श्रीमत्यात्मज पुण्यां च धुर्यायां तीर्थ संसदि ॥ ४ ॥ श्री श्री-

८ । मालीकुलांजोधि । चान्द्रेण सितकीर्त्तिना । दोसी श्री श्री जीवराजाह्व सुत-

९ । न गुणशालिना ॥ ५ ॥ सद्धर्मचारिणा हर्षाद्नुन्नतपुरवासिना । श्रीम-

१० । रकुंअरजी नाम्ना सद्द्रव्यस्य व्ययेन च ॥ ६ ॥ साहाय्यद्दीरसंघस्य

११ । गुरुदेव प्रसादतः । जाता कार्यस्य संसिद्धिः । पुण्यैः किं किं न सि-

१२ । द्धति ॥ ७ ॥ श्रीमत्तपागणाधीश श्री हीरविजय प्रनोः । पट्टे श्री विजय

१३ । : सेन । सूरि परमनाग्यवान् ॥ ८ ॥ तत्पट्टेऽनविराजति । सुगुणै श्री

१४ । विजयदेव सूरीन्द्रे । निष्पन्नोयं पुण्यः । प्रासादवरश्चिरंजीयात् ॥ ९ ॥ तस्य द

१५ । द्रिप दिग्भागे। सद्भंगरचनान्विते । स्तूपे श्री कुशलस्वामी पादुकेऽत्र महाद्भु-
१६ । ते ॥ १० ॥ पूजनीयाः शुभाः श्लाघ्याः । गुरूणां तत्र पादुकाः कारिता मदनाख्येन । दो-
१७ । सीना चालयान्विता ॥ ११ ॥ धर्म्मशाला विशाला च शालाकारेन निर्म्मिता। साहाय्या-
१८ । दूरसंघस्य दोसीसंज्ञस्य तुष्टयेः ॥ १२ ॥ पण्डितगणमौलीमणेः । तार्क्किकसिद्धान्त -
१९ । शब्दशास्त्रार्थः । श्रीमत्कल्याणकुशलं । सुगुरोश्चरणप्रसादेन ॥ १३ ॥ तच्छिष्यस्य सुबु -
२० । द्धेर्विबुधः सुयतेर्दयाकुशलनाम्नः । महतोद्यमेन कृत्यं । सिद्धं श्री जगपतः कृ-
२१ । पया ॥ १४ ॥ रम्यो जीर्णोद्धारो । श्रीपार्श्वनाथान्वितोऽर्थ्यमानश्च। आचंद्रार्कं राजतु जी-
२२ । याज्जनसुखकरो नित्यं ॥ १५ ॥ संवत् १६७७ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ श्री अजपु-
२३ । रे महातीर्थे जीर्णोद्धारो जातः श्रीमत्तपागच्छेश भट्टारक प्रभु भ० श्री ५
२४ । श्री विजयदेव सूरि विजयराज्ये । पं० श्री मेरुमुनीन्द्र गणि शिष्य पं० श्री
२५ । कल्याणकुशल गणि पं० । श्री दयाकुशल गणि शिष्येन । प्र-
२६ । शस्तिरियं लिखिता गणि भक्तिकुशलेन ॥ श्री रस्तु ॥ श्रीः ॥

पाषाण की मूर्त्तियों पर । *

[1718]

१ । सं० १३४३ वर्षे माघ वदि २ शनौ श्रीमालीय हरिपालेन
२ । .... सूरिभिः ।

[1719]

१ । सं० १३४६ वर्षे वै० सुदि २ बुधे दीशावाल ज्ञातीय मह० लापण सुत धी-
२ । रमन सुत । वासल श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ कारितं प्रतिष्ठितं श्री महेन्द्र सूरिभिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1720]

सं० १५०० वर्षे वैशाष सुदि १५ शनौ श्री .... पदेशेन हुंबड़ ज्ञातीय ठ० अर्जुन

* ये मूर्तियां खण्डित हैं, लेख चरणचौकी पर है ।

मारुतयो युत धीधा जुट्टा सुत नेमिनाथ प्रणमति ।

[1721]

सं० १५१९ वर्षे वैशाष सुदि ३ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० वाछा भार्या गोमती तया आत्मश्रेयसे श्री पद्मप्रभ स्वाम्यादि पञ्चतीर्थी श्री आगम गच्छे श्री हेमरत्न सूरीणामुपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना ।
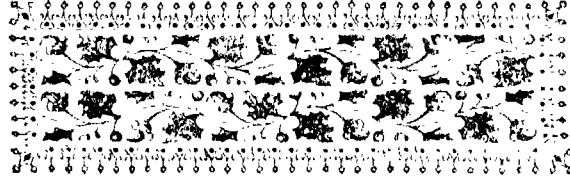
पिंडवाड़ा-सीरोही ।

श्री महावीरजीका मन्दिर ।

शिला लेख

[1722]

(१) नीरागगन्धादिभावेन सर्वज्ञानविनायकं। ज्ञात्वा भगवतां भापं जिनानमिव पावनं ॥

(२) द्रोणयेयक यशोदेव देव ···· । ···· ग्दिं जैनं कारितं युग्ममुत्तमं ॥

(३) भयशतपरम्पराजित गुरुकर्म्मराजो ···· कारापितां परदर्शनाय शुरूं सज्ज्ञानचरणलाभाय ॥

संवत् ८(७?)४४ ।

उं साक्षात्पिता महन व विश्वरूपविनायिना । शिल्पिना गोपगार्गेन कृतमेतज्जिनद्वयम् ॥

खीमत-पालणपुर ।

जैन मंदिर ।

मूर्त्तिकी चरणचौकी पर ।

[1723]

१ । ॐ० ॥ सं० १२१५ वैशाष वदि ४ शुक्रे खीमंत स्थाने प्राग्वाट वं-
२ । शीय श्रे० आसदेव जार्यया दमति श्राविकया स्वपुत्र जसचन्द्र देवय
३ । तत् पुत्र पूना अजयडवड्ड प्रति समस्तमानुषसमेतया श्रा-
४ । त्मश्रेयसे श्री महावीर जिनयुगलं कारितं सूरिजिः प्रति(ष्ठितं) ।

श्री तारंगा तीर्थ ।

श्रीअजितनाथ स्वामीजी का मंदिर ।

सहस्रकूट के चरण पर ।

[1724]

श्री शाश्वता परमेश्वर ४ श्री चौवीस तीर्थंकर २४ श्री वीस विहरमाण २० श्री गणधरना १४५२ सर्वमलिने संख्या पनरसो जोड़ावि छई सहि । सं० १८७२ वर्षे माघ सुदि ७ शुक्रे श्री तारंगाजी दुर्गे । श्री श्री विजयजिनेन्द्र सूरि प्रतिष्ठितं तपा गछे । सा० करमचन्द मोतीचन्द सुत पनाचन्द करापितं । वीसनगर वास्तव्य ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1725]

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि १० शनौ उकेस वंशे साहु गोत्रे सा० तुंणा जा० जूपादे

पु० सा० सातलकेन भा० संसारदे पुत्र सा० हेमादियुतेन श्री कुंथु बिंबं का० प्र० खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरिभिः।

[1726]

सं० १५१० वर्षे ज्येष्ठ शुदि ६ बुधे श्री कोरंट गच्छे। उपकेश मड़ाहड वा० सा० श्रवण भा० राजू पु० साल्हा भा० सांपू पु० काजण सहितेन स्वमातृपितृश्रेयोर्थं श्री चंद्रप्रभ बिंबं कारितं। प्रति० श्री सांवदेव सूरिभिः

[1727]

सं० १५२४ वर्षे वै०। सु० ३ विद्यापुर वासि श्री श्रीमालि ज्ञा० म० लषमीधर भा० जासू पु० मं० जूठाकेन भा० डीरू द्वि० जसमादे प्रमु० पुत्रादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं। श्री विवंदनीय गच्छ श्री कक्क सूरिभिः।

[1728]

सं० १५३२ वर्षे मार्गशिर सुदि ५ दिने श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० अर्जन भा० हवकू पु० सहिजाकेन भा० मांनू सु० जूठा जावा स्वस्वपुर्वनिमित्तं कुटुंब० श्री सुमति नाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमापक्षे भट्टा० श्री गुणतिलक सूरि प्रतिष्ठितं॥ श्री॥

[1729]

॥ सं० १५७० वर्षे माघ वदि १ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० चुंडा भा० चांपलदे सुत वीसा भरणा वीसा भा० माणिकदे पितृमातृश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं पिप्पल गच्छे भ० श्री गुणप्रभ सूरि पं० श्री तिलकप्रभ सूरि प्रतिष्ठितं॥ साचुरा॥ छ॥

[1730]

सं० १५८० वर्षे वैशाष सुदि १२ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय मडं धना सुत मडं जीवा भार्या जसमादे सुत गोगा भार्या रूपाई श्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री तपा गच्छे हेमविमल सूरिभिः पेथापुर।

चौविशी पर।

[1731]

सं० १४८९ वर्षे आषा० शुक्र ५ दिने प्रग्वाट ज्ञातीय मंत्रि बाहड़ सुत सिंघा भा० पूजल सुत वरुआकेन भा० कपूरीयुतेन निजश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ मूलनायक चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री तपागच्छाधिप श्री सोमसुन्दर सूरिभिः।

[1732]

॥ सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि राणा संताने श्रे० रत्ना भा० धरणू सुत पूर्णसिंहेन भार्या देमाई सहितेन तथा भ्रातृ हरिदास स्वपुत्र पासवीर युतेन श्री अजितनाथ बिंबं चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्र० श्री साधुपूर्णिमापक्षे भ० श्री रामचन्द्र सूरि पट्टे शिष्य पूज्य श्री श्री पूर्णचन्द्र सूरीणामुपदेशेन विधिना नारु श्रावकैः॥

[1733]

सं० १५०८ वर्षे वैशाष वदि ११ दिने उपकेश ज्ञा० डागलिक गोत्रे। सा० धिना भा० वारू पुत्र संघवी पासवीरेण भा० संपूरदे सहितेन स्वश्रेयसे श्री मंगलादि तीर्थङ्करचतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री कोरंटगच्छे श्रीनन्नाचार्यसंताने श्री कक्कसूरि पट्टे श्री सावदेव सूरिभिः॥ श्रीः॥

नन्दीश्वरद्वीप की देहरी पर।

[1734]

सं० १८८८ महा सुदि ५ शुक्रे श्री विजयजिनेन्द्र सूरिजी नन्दीश्वरद्वीप बिंबप्रवेश प्रतिष्ठित श्रीमत्तपागच्छे श्री गाम वडनगर दो० पानचन्द जयचन्द स्थापित।

सिहोर-काठियावाड़ ।

श्री सुपार्श्वनाथजी का मंदिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1735]

सं० १४०० वर्षे वैशाष सुदि १२ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० मं० रत्ना भा० रजाई पु० सं० सहस्रकिरण भार्या धरणू सुत तजदे कुटुंबयुतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री हेमविमल सूरिभिः । घलासर वास्तव्य ॥

[1736]

सं० १५१६ वर्षे चैत्र वदि १ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय व० तयरा भा० वाढू सुत नाणा वड़ीय गोवल भा० हांसू सु० वोरा भा० वांफज़दे सुत लालु काण्हु वानर एतै जिनपितृमातृ श्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मधुकर गछे भ० ···· ।

[1737]

सं० १५३६ वर्षे पोष वदि ···· गुरू श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० टोइया भा० लखा सुत पर्वत भ्रातृ कमि श्रेयोर्थं जीवितस्वामी श्री नमिनाथ बिंबं कारितं श्री आगमगछे श्री श्री सिंघदत्त सूरिभिः प्रतिष्ठितं विधिना कारितानि ।

पालिताना ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर—माधोलालजी की धर्म्मशाला ।

धातु की मूर्त्तियों पर ।

[1738]

संवत् १५०५ वर्षे माह शुदि १२ शुक्रे आणंदविमल सूरि वा० चन्दा भा० माहवजी श्रीवजदेव (?) ···· ॥

[1739]

संवत् १६०० [पो]स वदि ५ सोम० श्रीमालज्ञातीय सा० हेमा श्रेयसे शा० नाथुजी-केन धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1740]

संवत् १६२६ वर्षे फाल्गुण सुदि ८ सोम उस० ज्ञा० व्य० ···· श्री सुमतिनाथ बिंबं ···· हीरविजय सूरिः ···· ।

[1741]

संवत् १६७० वर्षे माघ सुदि २ दिने ८। इन्द्राणीता (?) श्री श्री आदि बिंबं का० प्र० तपागच्छे श्री विजयसेन सूरिभिः ॥

[1742]

संवत् १६८७ वै० शु० ५ शु० स ···· ।

[1743]

संवत् १७०२ वर्षे मार्गशिर सुदि ६ शुक्रे श्री अंचलगच्छाधिराज पूज्य भट्टारक श्री कल्याणसागर सूरीश्वराणामुपदेशेन श्री दीव बंदिर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय नाग गोत्रे मंत्रि विमल सन्ताने मं० कमलसी पुत्र मं० जीवा पुत्र मं० प्रेमजी सं० प्रागजी मं० आणंदजी पुत्र केशवजी प्रमुखपरिवारयुतेन स्वपितृ मं० जीवा श्रेयोऽर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं चतुर्विध श्रीसंघेन।

[1744]

संवत् १७१२ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने शा० मनजी भार्या बाई मनरंगदेकेन मुनि-सुव्रत बिंबं का० प्र० श्री विजयसेन सूरि।

[1745]

सं० १७५८ वर्षे वै० शु० १ सो[म] शा० खिमचंद भार्या त्रिश्च श्री अनन्त बिंबं प्र० भ० श्री विजयऋद्धि सूरि।

[1746]

संवत् १८४ ... ॥ फाल्गुण सुदि २ ... वासरे ठदिने श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्र० बाई खीमी भरावती ॥

[1747]

दो० बाघा श्री जीराउलाउ श्री पार्श्वनाथ ।

[1748]

बा० हीराई श्री शान्तिनाथ ‥ श्री हीरविजयसूरि प्र० ॥

[1749]

संवत् १९०३ वर्षे माघ विदि ५ शुक्रे श्री चन्द्रप्रभ बिंबं काराविनं श्रीमालि वंशे शा० अनोपचन्द तस्य भार्या बाई नाथी अंचल गछे ॥

श्री सिद्धचक्र यन्त्र पर।

[1750]

संवत् १९५४ ना वर्षे माघ विदि ५ चन्द्रे श्री तपागछे बाई झूबी तस्यं पुत्री बाई जवब श्री सिद्धचक्र करापितं पं० पद्मविजैः (?) प्रतिष्ठितं श्री राजनगर मध्ये ।

चौबीसी पर।

[1751]

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख विदि ७ रवौ श्री सीरूंज वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० वाछा भा० मानूं सुत श्रेष्ठि समधरेण भा० जासी भा० धर्म्मादे सुता लाछी प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री तपागछे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे गछनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1752]

सं० १४३९ (?) ... प्राग्वाट ज्ञातीय शा० हाला भार्या दानू सुत शा० डुंगरेण

श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री देवचन्द्र सूरिभिः ।

[1753]

सं० १५०३ वर्षे आषाढ़ सुदि १० शुक्रे श्री प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० पींचा भार्या लाखणदे तयोः पुत्रैः श्रे० वीरम भीटा चीगाख्यैः मातृपितृश्रेयोऽर्थं श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे वृद्धशाखायां श्री जिनरत्नसूरिभिः । श्री सहूआला वास्तव्य ।

[1754]

सं० १५१२ वर्षे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आसपाल भा० पचू पुत्र धना भा० चमकू पुत्र माधवेन भा० वाल्ही भ्रातृ देवराज भा० रामकी देपालादियुतेन श्री सुमति बिंबं कारितं प्र० तपागच्छेश श्री सोमसुंदर सूरि श्री मुनिसुंदर सूरि श्री जयचन्द्र सूरिशिष्य श्री श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1755]

सं० १५१७ वर्षे आषाढ़ सुदि १० बुधे ऊकेश वंशे लुंकड गोत्रे शा० गुजर पु० शा० देवराज पु० आसा पु० शा० समधरेण स्वमातृ चांई पुण्यार्थं श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतरगच्छे श्री विवेकरत्न सूरिभिः ।

[1756]

सं० १५१८ वर्षे वैशाख सुदि १३ सलखरि वासि प्रा० सा० जावड़ भा० वारू सुत हरदासेन भा० गोमती भ्रातृ देवा भा० धर्मिणियुतेन श्रेयोऽर्थं श्री सुमति बिंबं का० प्र० तपा श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

[1757]

सं० १५१९ वर्षे माघ सुदि १५ गुरु श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्यव० गड़गा भार्या वाल्ही आत्मश्रेयोऽर्थं जीवतस्वामी श्री अजितनाथ मुख्य पंचतीर्थी बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री मुनितिलक सूरि पट्टे श्री राजतिलक सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ जाबू वास्तव्य ।

[1758]

सं० १५२१ वर्षे वैशाख सुदि ६ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय दो० गोपाल ज्ञा० सखी सु० पोमाकेन ज्ञा० रूमकू श्रेयोऽर्थं श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं श्री पूर्णिमापक्षे ज० श्री सागर-तिलक सूरि पट्टे ज० श्री गुणतिलक सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

[1759]

सं० १५३१ वर्षे माघ वदि ८ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय शा० राजा ज्ञा० राजबदे सु० स० शाह गिरूया ज्ञार्या राजाई तया सु० पासा जीवायुतया स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं श्री आगम गछे श्री जयानन्द सूरि पट्टे श्री देवरत्न सूरि गुरुउपदेशेन कारितं प्रतिष्ठापितं च ॥ शुजं जवतु ॥ श्री स्तम्जतीर्थे ॥ ७४ ॥

[1760]

सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ३ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय म० देवसी ज्ञा० देहइणदे पुत्र सहिजाकेन ज्ञा० धनी पुत्र गंगदास सचू हांसा ज्रातृ कीपा प्रमुखकुटुम्बयुतेन पितृ-निमित्तं स्वश्रेयसे च श्री कुन्थुनाथ बिंबं श्री पूर्णिमापक्षे श्री सौजाग्यरत्न सूरीणामुपदेशेन का० प्र० विधिना श्री लीवासी ग्रामे ॥

[1761]

सं० १५५२ वर्षे माघ वदि १२ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय प० सधा ज्ञा० अमकू सु० प० मूलाकेन ज्ञा० हांसी सु० हर्षा लषा सहितेन स्वश्रेयोऽर्थं श्री सम्जवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बृहत्तपापक्षे ज० श्री उदयसागर सूरिजिः ॥ श्री पत्तने ॥

[1762]

सं० १६३७ वर्षे माघ वदि ए शनौ श्री दीव वास्तव्य श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघुशाखा-मण्डन श्रे० काबा ज्ञा० कामलदे सुत कक्की ज्ञार्या हर्षादे सुत सचवीर ज्ञार्या सहिजलदे सुत हीरजी ज्ञार्या हीरादे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं तपागछे श्री हीरविजयसूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ ७ ॥

[1763]

सं० १६५१ वर्षे मार्गशीर्ष वदि ४ गुरौ दो० वेधराजकेन निजश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छे श्री हीरविजयसूरिश्वरैः भार्या मोलादे सुत धनजी प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्री दीवबन्दिर वास्तव्येन ॥ श्री रस्तु ॥

[1764]

सं० १६५६ वर्षे फाल्गुण वदि २ गुरौ दीवबन्दिर वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय बाई मनाईकया निजश्रेयसे श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छाधिराज परम-गुरु श्री ६ विजयसेन सूरिभिः परिकरसहितैः।

शत्रुंजय तीर्थ।

दिगम्बर मन्दिर।

श्री शान्तिनाथजी की मूर्त्ति पर।

[1765] *

सं० १६८६ वर्षे वैशाष सुदि ५ बुधे शाके १५५१ वर्त्तमाने श्री मूलसंघे सरस्वतीगछे बलात्कारकगणे श्री कुंदकुंदान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री भुवन-कीर्त्ति देवास्तत् पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण देवास्तत्पट्टे भ० श्री विजयकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री गुणकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री वादिभूषण देवास्तत्पट्टे भ० श्री रामकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री पद्मनन्दि गुरूपदे-शात् पादशाह श्री साहजांह विजयराज्ये श्री गुर्जरदेशे श्री अहमदाबाद वास्तव्य हुंबड़ ज्ञातीय वृहच्छाखीय वाग्वर देश स्थातरीय नगर नौतनभद्रप्रसादोद्धरणधारजाज (?) सं० भोजा भा० सं० खकु सं० संवस्ता भा० सं० रनादे तयोः सुत ब्रह्मचर्यव्रतप्रतिपालनेन

* यह लेख "जैन मित्र" माघ वदी २ वीर सं० २४४७ के अङ्क से मिला है।

पवित्रीकृतनिजांग सप्तक्षेत्रारोपितस्वकीयवित्त सं० छटकणा ज्ञा० सं० ललतादे तयोः सुत [अनकुवकमलविकाशनैकसूर्यावतारः दानगुणेन नृपतिश्रेयांससमः श्री जिनबिंब-प्रतिष्ठातीर्थयात्रादि धर्मकर्मैकरणोत्सुकचित्त संघपति श्री रत्नसी ज्ञा० लि० रुपादे द्वि० ज्ञा० सं० मोहणदे तृतीय ज्ञा० सं० नवरंगदे द्वितीय सुत संघवी श्री रामजी ज्ञा० सं० केशरदे तयोः सुत संघवी कूंगरसी ज्ञा० सं० फाऊसदे द्वितीय सुत संघवी शुद्धमती ज्ञा० सं० मसतादे एतेषां महासिद्धक्षेत्र श्री सेत्रुंजय रत्नगिरौ श्री जिनप्रासाद श्री शांतिनाथ बिंबं कारयित्वा नित्यं प्रणमति। शुभं जवतु।

चोरवाड़-जुनागढ।

जैन मन्दिर।

शिला लेख।

[1766]

१। सुरमण्डलविशाल नगर श्री चोरवाटके रुचिरचिंतामणि पार्श्वनाथ विजोदव पद-रजस्य तत् सुत व.

२। सी। सायर तनयो। आंबाख्यस्तत्र चादिमो गुणवान्। द्वितीयो मनाभिधानो जिन-धर्म रतः कृपावासः॥ २॥ श्री

३। बाल्यस्य तनूजः सुविवेकः समरसिंह इत्याह्वः। देवगुरुजक्तिरमः तत् सुत चेत-पालाख्यः॥ ३॥ श्री

४। सं० १५२९ वर्षे वैशाख सुदि तृतीया गुरौ। श्री मंगलपुर वास्तव्य। श्री उसवाल ज्ञातीय सोनी साय-

५। रजनदे सुत सोनी आंबा जार्या वाई सहित सुत सोनी समरसी जार्या मनाई अपर जार्या सखवाई

६। त० सोनी जयपाल भार्या मृगाई ॥ ततः ॥ सोनी सायर भार्या बाई बाकू सुत सोनी मना भार्या बाई

७। बरजू सुत सोनी श्रीवंत सोनी जयवंतौ। सपरिजनसहितेन ॥ सोनी समरसिंह भार्या बाई पाही-

८। सहितेन ॥ एतै श्री चारवाड पुरे वर (?) ॥ निजभुजोपार्जितधनकृतार्थहेतोः ॥ श्री चिंतामणि पार्श्वना-

९। थ चैत्यं कारापितं ॥ श्री बृहत्तपागच्छे भट्टारक श्री जयचन्द्र सूरि पट्टावतंस ॥ भट्टा० श्री जिन-

१०। सूरि शिष्य महोपाध्याय श्री जयसुन्दर गणि शिष्य महोपाध्याय श्री संवेगसुन्दर गुरूपदेशेन ॥ प्र-

११। तिष्ठितं चेति कल्याणमस्तु ॥ शुभं भवतु ॥

घोघा-काठियावाड़।

श्री सुविधिनाथजी का मन्दिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1767]

॥ ॐ सं० ११६१ माघ ११ श्री नागेंद्रकुले श्री विजय तुंगसूरि....।

[1768]

सं० १५०३ धर्म्मप्रभ सूरि त० पट्टे श्री धर्म्मशेखर सूरिभिः शुभं भवतु आराधकस्य।

[1769]

सं० १५१७ वर्षे मह्य सुदि ५ शुक्रे श्रेष्ठि नरपाल भा० कडुई तेषां सुता सामल हेमा

रोका षीमा स्वभार्या पितृमातृश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० श्री आगम गच्छे श्री आनन्दप्रभ सूरिभिः आबरणि वास्तव्य ।

[1870]

सं० १५३६ वर्षे आषाढ़ सुदि ६ श्री ओसवाल ज्ञाती सा० पाला भार्या वरूधू सुत गोविन्द भा० गंगादे नाम्ना आत्मश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० बृहत्तपा पक्षे भ० जिनरत्न सूरिभिः

[1771]

सं० १५५५ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ घनौघ वास्तव्य श्री उसवाल ज्ञा० सा० गोगन भा० गुरदे सुत हांसाकेन भा० कस्तुराई सहितेन स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० श्री बृहत्तपा गच्छे भ० श्री धर्म्मरत्न सूरिभिः ।

[1772]

सं० १५५५ वर्षे वै० सु० ३ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञा० मनोरद भा० मांकी सु० वाहराज भा० जीविनी सु० देवदासेन भा० दगा सु० पासा करन धर्मदास सूरदास युतेन श्री विमलनाथ बिंबं कारितं श्री अंचलगच्छे श्री सिद्धांतसागर सूरि गुरूपदेशात् ।

[1773]

सं० १५५७ वर्षे पोष वदि ६ रवौ घनौघ वासी श्री श्रीमाल ज्ञा० सा० माईया भा० जीवी सुत कानाकेन स्वश्रेयसे श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० श्री बृहत्तपा पक्षे श्री लक्ष्मी-सागर सूरिभिः । श्रेयो भवतु पूजकस्य ।

[1774]

सं० १५५३ वर्षे वै० सु० ११ शुक्रे श्री श्रीवंशे मं० माईया सुत मं० मूला भा० रमा सुश्राविकया सुत मं० धना मेघा रामा सहितया निजश्रेयार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० धर्मवल्लभ सूरिभिः श्री जांबू ग्रामे ।

चौविशी पर ।

[1775]

सं० १५१९ वर्षे फा० शु० शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० कह्ला भार्या राजुल सुत सिंह-राज मं० विरुपाकेन पितृमातृभ्रातृश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति जिनपट्टः का० श्री भ० गुणसुंदर सूरिभिः ।

[1776]

सं० १५२४ वर्षे आ० सुदि १० शुक्रे श्री श्रीवंशे मं० सांगन भा० सोहागदे पुत्र मं० वीरधवल भा० गुरी पु० खेतसी जन्मनाम्ना जूठाकेन मं० भार्या जयतलदे भ्रातृ काला चडघा भारपुत्र भोजा देवसी धीरा प्रमुखसमस्तकुटुम्बसहितेन तत्पितृश्रेयोर्थं श्री अंचल-गच्छेश्वर श्री जयकेसरी सूरीणामुपदेशेन श्री नमिनाथ चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री श्री-संघेन श्री भिटुंडड़ा ग्रामे ।

शीयालबेट-काठियावाड़ ।

जैन मंदिर ।

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1777]

१। ॐ संवत् १२३२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ रवौ अद्येह

२। टिंबानके मिहरराज श्री रणसिंह प्रतिपत्तौ समस्तसंघेन श्री महावी-

३। र बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चन्द्रगच्छीय श्री शान्तिप्रभ सूरि शिष्यैः श्री हरिप्रभ सूरिभिः ॥

[1778]*

ए० ॥ सं० १३०० वर्षे वैशाष वदि ११ बुधे श्री सहजिगपुर वास्तव्य पल्लि० ज्ञातीय ठ० देदा भार्या कमूदेवी कुक्षिसंभूत परी० महीपाल महीचन्द्र तत् सुत रतनपाल विजयपालैर्निजपूर्वज ठ० शंकर भार्यां लक्ष्मी कुक्षिसंभूतस्य संघपति मूं(धगदेवस्य निजपरिवार सहितस्य योग्यं देवकुलिकासहितं श्री मल्लिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चन्द्रगच्छीय श्री हरिप्रभ सूरिशिष्यैः श्री यशोभद्र सूरिभिः ॥ छ ॥ मंगलमस्तु ॥ छ ॥

[1779]*

सं० १३१५ फाल्गुण वदि ७ शनौ अनुराधा नक्षत्रे अद्येह श्री मधुमत्यां श्री महावीर देवचैत्ये प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि आमदेव सुत श्री सपाल सुत गंधि छिवाकेन आत्मनः श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ देव बिंबं कारितं चन्द्रगच्छे श्री यशोभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

[1780]*

सं० १३२० माघ सुदि .... गुरौ प्राग्वाट ज्ञात .... प्र ठ्य० वीरदत्त सुत ठ्य० जाल्हा भार्या माल्हिकया स्वश्रेयोर्थं रांकागच्छीय श्री महीचन्द्र सूरिभिः महावीर चैत्ये श्री ऋषभदेव बिंबं कारितं ।

---

* यहां के गोरखमण्डी में भोयरे के पास पड़े हुए मूर्तियों पर ये लेख हैं।

JAMNAGAR TEMPLE PRASHASTI - Dated, V. S. 1697 (A. D. 1640)

जामनगर-काठियावाड़।

श्री शांतिनाथजी का मन्दिर—वर्द्धमान सेठवाला।

शिला लेख

[1781]

(शिरोभाग) जाम श्री लक्षराजराज्ये ॥

१। ॥ ए८० ॥ श्री मत्पार्श्वजिनः प्रमोदकरणः कल्याणकंदांबुदो। वि.
२। घ्नव्याधिहरः सुरासुरनरैः संस्तूयमानक्रमः ॥ सर्पांको जविनां म.
३। नोरथतरुव्यूहे वसंतोपमः। कारुण्यावसथः कलाधरमुखो नी-
४। लच्छविः पातु वः ॥ १ ॥ क्रीड़ां करोत्यविरतं। कमलाविलास। स्थानं
५। विचार्य कमनीयमनंतशोभं। श्री उज्जयंतनिकटे विकटाधिना.
६। थे। हालारदेश अवनि प्रमदाललामे ॥ २ ॥ उत्तुंगतोरणमनोहर-
७। वीतराग। प्रासादपंक्तिरचनारुचिरीकृतोर्वी। नंद्यान्नवीनग-
८। री क्षितिसुन्दरीणां वक्ष(:)स्थले ललति साहि लसंनिकेव ॥ ३ ॥ सौराष्ट्रना-
९। थः प्रणतिं विधत्ते। कलाधिपो यस्य जयाह्विनेति। अर्द्धासनं यच्छति मालवेशो
१०। जीव्याद्यशोजितुरक्कुलावतंसः ॥ ४ ॥ श्रीवीरपट्टक्रमसंगतोऽभूत् भाग्या-
११। धिकः श्रीविजयेंदुसूरिः। श्रीसंघरैः प्रस्तुतसाधुमार्ग्गश्चक्रेश्वरीदत्तवरप्रसा-
१२। दः ॥ ५ ॥ सम्यक्त्वमार्ग्गो हि यशोधनाह्वो। दृढीकृतो यत् सपरिच्छदोऽपि।
१३। संस्थापित श्रीविधिपक्षगच्छः। संघैश्चतुर्धा परिसेव्यमानः ॥ ६ ॥ पट्टे तदीये ज-
१४। यसिंहसूरिः। श्री धर्म्मघोषोऽथ महेंद्रसिंहः। सिंहप्रभश्चाजितसिंहसूरि।
१५। देवेंद्रसिंहः कविचक्रवर्त्ती ॥ ७ ॥ धर्म्मप्रभः सिंहविशेषकाह्वः। श्री मा-

* जामनगर का सेठ वर्द्धमान शाहका बनाया हुआ प्रसिद्ध मन्दिर का यह लेख वहां के पण्डित हीरालालजी हंसराजजी ने अपने "जैनधर्म नो प्राचीन इतिहास" नामक पुस्तक के २ य भाग के पृष्ट १७७-१७९ में अक्षरान्तर छपवाया था, आचार्य महाराज मुनि जिनविजयजी ने अपने "प्राचीन जैन लेख संग्रह" के २ य भागमें पृष्ट २८६ से २८८ में प्रकाशित किया है, परन्तु मूल शिलालेख की प्रत्येक पंक्तियां दोनोंमें स्पष्ट नहीं है इस कारण यहां पुनः प्रकाशित किया गया।

१६ । न् महेंद्रप्रजसूरिरार्य्यः ॥ श्रीमेरुतुंगोऽमितशक्तिमांश्च । कीर्त्यद्भुतः श्री ज-
१७ । यकीर्त्ति सूरिः ॥ ० ॥ वादिद्विपौघे जयकेसरीशः । सिद्धांतसिंधुर्त्तुवि जा-
१० । वसिंधुः । सूरीश्वरश्रीगुणशेवधिश्च । श्री धर्म्ममूर्त्तिर्मधुदीपमूर्त्तिः ॥ ए ॥
१ए । यस्यांघ्रिपंकजनिरंतरसुप्रसन्नात् । सम्यक्फलंतिसमनोरथवृक्षमालाः ॥ श्री-
२० । धर्म्ममूर्त्तिपदपद्ममनोज्ञहंसः । कल्याणसागरगुरुर्जयताद्धरित्र्यां ॥ १० ॥
२१ । पंचाणुव्रतपालकः स करुणः कल्पद्रुमाजः सतां । गंजीरादिगुणोज्वलः शु-
२२ । जवतां श्रीजैनधर्म्मे मतिः । ठे काव्ये समतादरः क्षितितले श्री उसवंशे विजुः
२३ । श्रीमल्लालणगोत्रजो वरतरोऽजूत् साहि सींहाजिधः ॥ ११ ॥ तदीय पुत्रो हरपालना-
२४ । मा देवाच्चनंदोऽथ स पर्वतोऽजूत् । वस्तुस्ततः श्रीअमरास्तु सिंहो । जाग्याधिकः कोटि-
२५ । कलाप्रवीणः ॥ १२ ॥ श्रीमतोऽमरसिंहस्य । पुत्रामुक्ताफलोपमाः । वर्द्धमानचांपासिंह
२६ । पद्मसिंहा अमीत्रयः ॥ १३ ॥ साहि श्री वर्द्धमानस्य । नंदनाश्चंदनोपमाः । वीराह्वो
२७ । विजपालाख्यो जामो हि जगमूस्तथा ॥ १४ ॥ मंत्रीश पद्मसिंहस्य । पुत्रारत्नोपमा
स्त्रयः ।
२० । श्रीश्रीपालकुंरपाल । रणमल्ला वरा इमे ॥ १५ ॥ श्रीश्रीपालांगजो जीया । न्नारायणो
मनो-
२ए । हरः । तदंगजः कामरूमः कृष्णदासो महोदयः ॥ १६ ॥ साहि श्रीकुंरपालस्य । वर्त्तते
ऽन्व-
३० । यदीपकौ । सुशीलस्थावराख्यश्च । वाघजिह्वाग्यसुन्दरः ॥ १७ ॥ स्वपरिकरयुतान्यामं-
मात्यः
३१ । शिरोरत्नाज्यां साहि श्रीवर्द्धमानपद्मासिंहाज्यां हल्लारदेशे नव्यनगरे जाम श्रीशत्रु-
शल्यात्मज
३२ । श्री जसवन्तजी विजयिराज्ये श्री अंचलगछेश श्री कल्याणसागर सूरीश्वराणामुप-
देशनात्र श्री शां-
३३ । तिनाथप्रासादादिपुण्यकृत्यं श्रीशांतिनाथप्रभृत्येकाधिकपंचशत्प्रतिमाप्रतिष्ठायुगं कारा-

३४। पितं चाचा सं० १६७६ वैशाख शुक्ल ३ बुधवासरे द्वितीया सं० १६७० वैशाख शुक्ल ५ शुक्रवासरे

३५। सं० १६७७ मार्गशीर्ष शुक्ल ३ गुरुवासरे उपाध्याय श्रीविनयसागरगणेः शिष्य सौभाग्यसागरैः

(अधो भाग)

३६। रलेखीयं प्रशस्तिः ॥ मनमोहनसागरप्रासाद

(वाम भाग)

३७। मंत्रीश्वर श्रीवर्द्धमान पद्मसिंहाभ्यां सप्तलक्षरूप्यमुद्रिकाव्ययीकृतानवक्षेत्रेषु साहि श्रीचांपसिंहस्य पुत्रैः श्रीअमियाभिधः। तदंगजौ शुद्धमती। रामजीमाबुभावपि १० ॥

श्री आदीश्वरजी का मन्दिर।

[1782]

१। ॐ श्री गौतमस्वामीनि लब्धि ॥ भ-
२। ट्टारक चक्रवर्त्ति भट्टारक श्री
३। हीरविजय सूरीश्वर चरण पादु
४। काभ्यो नमः ॥ सं० १६३३ वर्षे परम
५। गुरु श्रीमत्तपागछाधिराज सकल-
६। भट्टारकपुरंदर भट्टारक श्री हीरवि-
७। जय सूरिराज्ये तथा जाम श्री शत्रुशल्य
८। राज्ये प। श्रीरविसागर गणि विशिष्यो
९। पदेशेन नवीननगर सकल संघ मु-
१०। खसंघेन स्वश्रेयसे नवीनशिख-
११। रं बध्वा प्रासादः कारितः ॥ ततो अक-
१२। बर सुरत्राण प्रेषित मुग्गलैरुप-
१३। द्रवकरणान्तरं भट्टारक श्री श्री
१४। हीरविजय सूरि पट्टोदयाद्रिदिन-
१५। कर भट्टारक श्री ५ श्री विजय से-
१६। न सूरिराज्ये ॥ सं० १६५१ वर्षे
१७। श्री श्रीमाली ज्ञातीय। भणसाली
१८। आणन्द भणसाली अबजीभ्यां
१९। भणसाली आणन्द सुत जीवरा-
२०। ज मेघराज प्रमुखसकलकुटुं-
२१। बयुताभ्यामेक त्रिंशत् सहस्र
२२। ३१००० रौप्य मुद्राव्ययेन पुनर-
२३। पि तथैव कारितं। सांप्रतं विज-
२४। यमान आचार्य श्री श्री श्री ३ श्री

२५। विजयदेव सूरीश्वर प्रसादात् । २६। चिरं तिष्टतु । शिवमस्तु सकल सं-
२७। घस्य ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ आदिनाथ २८। आत्वां कृतः । प्रासादनामविजयभूषणः प्रासादः

तालाजा—काठियावाड़ ।

पाषाण के चरणचौकी पर ।

[1783]*

ॐ सं० १३०२ वैशाख सु० ३ धवलकक्का वास्तव्य ठ० पदमसीह सुत ठ० जाला ठ० मदन जयता तेन ॥ ठ० मदन जायाँ ठ० लष्मा देवी श्रेयोर्थं सुत ठ० पाल्हणेन श्री महावीर बिंबं पट्टकं च प्रतिष्ठितं आचार्य श्री माणिक्य सूरिभिः ।

[1784]

१। सं० १३१८ वर्षे दण्ड श्री धांध प्रभृति पञ्चकुलेन श्री मुनिसुव्रतस्वामी देवा
२। ···· णि ···· पा विशेषपूजाप्रत्ययमण्डपिकायां प्रतिवर्षा हो
३। ···· द्र (२) ४ चतुर्विंशतिद्रम्मा: । द्र० खवमादेश. । बहुभिर्वसु
४। [धा भुक्ता] राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य
५। तदा फलं ॥ १ ॥ तथा समस्तप्रमदाकुलाय अ .... पूर्णिमादि
६। ···· (रके) ४ चत्वारि द्रमाश्च ॥ पञ्चकुलसमक्षं देवद्....
७। ···· द्र ४ पींजाक—द्र ३४ रक्तपटा
८। —मठाय

* यह लेख तलाजा से पूर्व में हजूरापीर की कबर से मिली हुई मूर्तिरहित पाषाण की चरण चौकी पर है और भावनगर बारटुन लाइब्रेरी के म्युज़ियम में सुरक्षित है ।

माङ्गरोल-काठियावाड ।

पाषाण की मूर्त्ति पर ।

[1785] *

१। ॐ ॥ सं० १२५३ वर्षे आषाढ़ सुदि ४ शनौ ठ० चाचिगठ महं वस्तराजे(न आ)त्म-
श्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रतस्वामि प्रतिमा

२। कारिता प्रतिष्ठिता च श्री देवचन्द्र सूरि शिष्यैः श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥
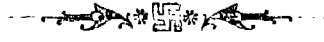
वेरावल-काठियावाड ।

शिला लेख ।

[1786] †

१। ········ स्त्रभिवस्त्राति नित्यमद्यापि वारिधौ ॥ श्रे(?) प्रपा(सा) दभीष्ट संसिद्ध्यै
मुखं चन्द्रप्रभं ····

२। ······ त्र पाटकाख्यं पत्तनं तद्विराजते ॥ ३ ॥ मन्ये वेधा विधायैतद्विविधिरसुः
पुनरीदृ ···· दे

३। ········· रेन्द्रैस्त्रयमंत्रैर्यत्रलक्ष्मीः स्थिरीकृता ॥ ५ ॥ तन्निःशेषमहीपालमौलीः
घृष्टांघ्रि

४। सौ नृपः। तेनोत्खातासुन्मूलो मूलराजः स उच्यते ॥ ७ ॥ एकैकाधिकभूपाला
सम ····

५। ···· स्त्रजखुराहतं। अतुच्छलत्युयं पर्वत्रममजीजनत् ॥ ए ॥ पौरुषेण प्रज्ञापेन
पुण्येन ···

* यह लेख रावली मसजीद के पास खुदाई में निकली हुई मूर्ति के चरणचौकी पर है।

† यह लेख वहां के फौजदारी उतारे में रखा हुआ है।

६ । ······· र न्यूनविक्रमः । श्री जीमजूपतिस्तेषां राज्यं प्राज्यं करोत्ययं ॥ ११ ॥
जावाङ्गराएयनम्राणि यो वसङ्गम(वजजम)

७ । ···· नंदि संघे गणेश्वराः । बजूबुः कुंदकुंदाख्या साक्षात्कृतजगत्रयाः ॥ १३ ॥ येषा-
माकाशगामित्वं त्य ।

८ । ······ शत(पं)चकमुज्वलं । रमयित्वाथ जन्मांतियेऽन्यन्नियमपुर्वकं ॥ १४ ॥ कालेऽ-
स्मिन् जारते क्षेत्रे जाता

९ । ···· रीणा तत्व वर्त्मनि तेषां चारित्रिणो वंशे जूरयः सूरयोऽजवन् ॥ १७ ॥ सदूषाद्य-
पि निर्दोषाः सकलांकः

१० । प्रजा यस्या रुरोह तत् । श्रीकीर्त्ति प्राप्य सत्कीर्त्ति सूरिं जूरिगुणं ततः ॥ १९ ॥ यदीयं
देशनावारिं सम्यग् वि(प्रो)

११ । ········ कश्चित्रकूटाच्च चाखसः श्रीमन्नेमिजिनाधिशः तीर्थयात्रानिमित्ततः ॥ २१ ॥
श्रणहिल्लपुरं रम्यमाजगा

१२ । ···· नींड्राय ददौ नृपः । विरुदं मण्डलाचार्यः सछत्रं ससुखासनं ॥२३॥ श्रीमुलवसंति-
काख्यं जिनजवनं तत्र

१३ । ···· संज्ञयैव यतीश्वरः । उच्यतेऽजितचन्द्रोयस्ततो जूत् स गणीश्वरः ॥ २४ ॥ चारु
कीर्त्तियशः कीर्त्तिश्च

१४ । ········ र्युक्तो को रत्नत्रयवानपि । यथावद्विदितात्मां साजूत् क्षेमकीर्त्तिस्ततो गणि
॥ २७ ॥ उदेतिस्म लसद्ज्योति

१५ । ····· लेंपित्रासिते हेमसूरिणा वस्तू प्रायरणं येन वशे ···· लेयिनं ॥ २९ ॥ ·····
पू ····

१६ । ············· कीर्त्तिर्यत्कीर्त्तिर्न्नर्त्तको व ···· । त्रिजुवनरा ···· वासुकिं नूपुरशशितिलक-
निपव्या ॥ ३१ ॥ ते

१७ । ···· ति ॥ ३२ । समुल्लुनसमुत्पन्नश्रीर्णजीर्णजिनालयः । यः कृता रत्ननिर्वाहेसमुत्साह
शिरोमणि

१८। .... शयैरवगण्यते ॥ ३४ ॥ वादिनो यत्पद् द्वन्द्वनखचन्द्रेषु बिंबिताः। कुर्वंते विगत श्रीकाः कलंक

१९। ... दं तीर्थभूतमनादिकं ॥ ३६ ॥ सीतायाः स्थापना यत्र सामेशः पक्षपातकृत्। प्रभो- स्त्रैलोक्य

२०। ....तदुद्धृततेन जातोद्धारमनेकशः ॥ ३८ ॥ चैत्यमिदं ध्वजमिषतो निजभुजमुद्धृत्य सक

२१। .... षतो मंडलगणि ललितकीर्त्ति सुकीर्त्तिः। चतुरधिकविंशति जसध्वजपटपट्टहंसूक॥

२२। ..... मेतदीय सगोष्ठिकानामपि गल्लकानां ॥ ४१ ॥ यस्य स्तानपयोनुलिप्तमखिलं जुष्टं दत्री

२३। .... चन्द्रप्रभः स प्रभुस्तीरे पश्चिमसागरस्य जयताद्दिग्व्यसरसां शासनं ॥ ४२ ॥ जिन पतिगृह

२४। .... चाणवर्णिवर्यो व्रतविनयसमेतैः शिष्यवर्गैरुपेतैः ॥ ४३ ॥ श्रीमद्विक्रम नृपस्य वर्षाणां द्वादशे

२५। .... क कीर्त्ति लघुबंधुः। चक्रे प्रशस्तिः मनघो गणि .... प्रवरकीर्त्तिरिमां ॥ ४५ ॥ सं० १२ ....

जैन मंदिर।

शिला लेख।

[1787]

१। ॥ ऐं ८० ॥ संवत् १८७६ वर्षे शाके १७४१ प्रवर्त-
२। माने माघ मासे शुक्लपक्षे अष्टमी तिथौ शनिवा-
३। सरे श्री देवका पाटण नगरे श्री चन्द्रप्रभ जि-
४। न जीर्णोद्धार समस्त संघेन कारापितं भट्टार-
५। क श्री श्री विजयजिणेन्द्र सूरि उपदेशात् श्री
६। मांगलोर वास्तव्य शा० नानजी जयकरण
७। सुत मकनजी ॥ ८ ॥ सुन्दरजीकेन जीर्णोद्धा-

८। र प्रतिष्ठा कारापितं भट्टारकं श्री श्री विजय-
९। जिणेन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री मत्तपागछे
१०। जब लग मेरु अडग है तब लग शशि ओ-
११। र सूर। जिहां लग ए पट्टक सदा रहजो स्थि-
१२। र नरपूर १ लि। बजी र ज्योति लोकविजयेन।

गाणेसर-गुजरात।

जैन मन्दिर।

शिखा लेख।

[1788]

१। ॥ ९० ॥ स्वस्ति सं० १२११ वर्षे वैशाख सुदि १४ गुरौ श्रीमदणहिलपुर वास्तव्य प्राग्वाट ठ० श्री चण्डपात्मज ठ० (चं)

२। डप्रसादांगज ठ० श्री सोमतनुज ठ० श्री आशाराज तनुजन्म ठ० श्री कुमारदेवी-कुक्षिसमुद्भूत ठ० लूणि(ग)

३। महं० श्रीमालदेवयोरनुजमहं० श्री तेजःपालात्मज महामात्य श्री वस्तुपालात्मज महं० श्री जयतसिंह (स्तम्भ)

४। तीर्थमुद्राव्यापारं सं ७९ वर्ष पूर्वं व्यावृण्वति महामात्य श्री वस्तुपाल महं० श्री तेजःपालाभ्यां समस्तमहातीर्थेषु

५। तथा अन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्म्मस्थानानि जीर्णोद्धारश्च कारिताः तथा सचिवेश्वर श्री वस्तु-

६। पालेन आत्मनः पुण्यार्थमिह गाणउलि ग्रामे प्रपा श्रीगाणेश्वरदेवमण्डपः पुरतस्तोरणं (अपर)तः प्रतोली द्वारालं(कृ)

७। त प्राकारश्च कारित: ॥ ७ ॥ गांजीर्ये जलधिर्वशिर्वितरणे पूषा प्रतापे स्मरः सौन्दर्ये पुरुषव्रते रघुपति र्वाचस्पतिर्वा ····

८। ये। लोकेऽस्मिन्नुपमानतामुपगता: सर्वे पुन: सम्प्रति प्राप्तास्तेऽप्युपमेयतां तदधिके श्री वस्तुपाले सति ॥ १ ॥ विद(धति)

९। विदग्धमतयस्तुल्यौ कौटिल्यवस्तुपालौ ये। ते कुर्वते न कस्मात्कूणाकूणारयो: समतां ॥ २ ॥ वदनं वस्तुपाल(स्य)

१०। कमलं को न मन्यते। यत् सूर्यालोकने स्मेरं जवति प्रतिवासरं ॥ ३ ॥ श्री वस्तुपाल सम्प्रति परं महति कर्म(कुर्व)

११। ता जवता। निर्वृतिरर्थिजने च प्रत्यर्थिजने च संघटिता ॥ ४ ॥ तस्मै स्वस्ति चिरं चुलुक्यतिलकामात्याय ····

१२। क्रान्तक्रतुकर्म्मनिर्म्मलमति: सौवस्तिक: शंसति। राधे येन विना विना च शिखिना ि···· य ना ि····

१३। ष्वासित मम्मटा: स्वसदनं गर्च्छति सन्त: सदा ॥ ५ ॥ महामात्य श्री वस्तुपालस्य प्र(शस्तिरियं) ····

प्रभास पाटण - गुजरात।

बावनजिनालय मन्दिर।

मूर्त्तियों पर।

[1789]

१। ठ० हीरा देवि पितृ० वीरदेव मातृ सक्क संघ० पेथरू संघ० कूशुरा संघ० पदमेल महं० वि(कम)सी वयजलदेवि महं० आल्हणसीह महं० महणसीह व्यव० लाषण सो० महिपाल मातृ सक्क

२। ठ० रत्न ठ० लूणी ॥ ठ० ॥ षीमसीह श्रे० डोकर भ्रा० धडलसीह ठ० थांध श्रे० आमुल नागल श्रे० नागसूर राजल सा० वस्तुपाल धांधलदेवि ठ० वरदेव ठ० महतू

३। फो० रिणसीह ठ० महणा बड्हरा अरसीह राजपाल श्रे० रतना भ्रा० रामसीह मातृ लक्ष्मी कमरसी दो० लूणा ठ० पाता श्रीयादेवी सूहव ठ० पतसीह ठ० सिरी

४। ठ० सीहा ॥ मातृ० वालिणि ठ० वयरसीह फो० धरणिग धांधलदेवि राजल ॥ बा०ई बा० तेजी ठ० तिहुणपाल ठ० लाछि फो० मूणा सुपल १ द्वा० सोवल कामलदेवि ठ० लषमीधर।

चरणचौकी पर।

[1790] *

१। ॥ ए० ॥ सं० १६एए वर्षे फाल्गुन सित द्वादशी सोमवासे श्री द्वीप बन्दिर वास्तव्य वृद्धशाखीय उकेश ज्ञातीय सा० सुडुणसी भार्या संपूराई सुत सा० सिवराज नाम्ना श्री कुंकुमरोल पार्श्व बिंबं सपरिकरं कारितं प्रतिष्ठितं च स्वप्रतिष्ठायां। प्रति-

२। ष्ठितं च तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री १ए श्री हीरविजय सूरीश्वर पट्टालंकार भ० श्री १ए श्री विजयसेन सूरीश्वरपट्टप्रभाकर भट्टारक प्रभु श्री १ए श्री विजयदेव सूरिभिः। स्वपट्टप्रतिष्ठिताचार्य श्री ५ श्री विजयसिंह सूरिभिः साथ(?)स्वशिष्योपाध्याय श्री ५ श्री लावण्यगणिप्रमुखपरिकरितैः ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥

[1791] †

१। सं० १३३० वैशाख सुदि(२) शनौ पल्लीवाल ज्ञातीय ठ० आसाढ ठ० आसापल्लात्य भा० जाल्ह श्रेयोर्थं

२। श्री मल्लिनाथ बिंबं ठ० आसपालेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री पूर्णभद्र सूरिभिः।

[1792] †

१। ॥ ॐ सं० १३४० ज्येष्ठ वदि १० शुक्रे पल्लीवाल···भा० वीरपाल भ्रा० पूर्णसिंह भा० वय

* यह लेख जमीन से निकली हुई मूर्ति के चरणचौकी पर है।

† मल्लिनाथ महादेव के मन्दिर के पास पड़ी हुई खण्डित मूर्तियों पर ये लेख हैं।

२। जसदेवि पु० कुमरिसिंह केलिसिंह जा० ठ०····आत्मश्रेयोर्थं ॥ श्री पार्श्वनाथ बिंबं का-
३। रितं प्रतिष्ठितं श्री कोरंटकीय ·····सूरिभिः शुभं ॥

खंभात-गुजरात।

श्री आदीश्वर भगवान का मन्दिर।

शिला लेख

[1793]

१। ॥ ए० ॥ ॐ नमः श्री सर्वज्ञाय ॥ धीराः सत्वमुशंति यन्त्रिभुवने (यन्नेति) नेति श्रुत साहित्योपनिषन्नि
२। षण्णमनसो यत् प्रतिज्ञं मन्वते सार्वज्ञं च यदा मनंति मुनयस्तत्किंचिदत्यद्भुतं ज्योतिर्योतितत्रि-
३। ष्टपं वितनुतां भुक्तिं च मुक्तिं च वः ॥ १ ॥ श्री मद्गुर्जरचक्रवर्त्तिनगरप्राप्त प्रतिष्ठोऽजनि प्राग्वाटाह्वयर-
४। म्य वंशविलसन्मुक्तामणिश्चंडपः ॥ यः संप्राप्य समुन्नतां किल दधौ राजप्रसादोल्लसद्दिक्कूलंकष-
५। कीर्त्तिशुभ्रलहरीः श्रीमंतमंतर्जिनं ॥ २ ॥ अजनिरजनिजानिज्योतिरुद्योतकीर्त्तिस्त्रिजगति तनुज-
६। न्मातस्य चण्डप्रसादः ॥ नखमणिसख(शार्ङ)सुन्दरः पाणिपद्मः कमकृत न कृतार्थं यस्य कल्पद्रुकल्पः
७। ॥ ३ ॥ पत्नी तस्या जायतात्पायताक्षी मूर्त्तेन्दु श्रीः पुण्यपात्रं जयश्रीः ॥ जज्ञेताभ्याम प्रिमः सूरसंज्ञः पुत्रः श्री

८। मान् सोमनामा द्वितीयः ॥ ४ ॥ निर्माप्यादि जिनेन्द्रबिंबमसमं शेषत्रयोविंशति श्री जैनप्रतिमा विराजि-

९। तमसावभ्यर्चितुं वेश्मनि ॥ पूज्यः श्री हरिभद्रसूरिसुगुरोः । पार्श्वात् प्रतिष्ठाप्य च स्वस्यात्मीय कुलस्य चाद्भ-

१०। यमयं श्रेयो निधानं व्यधात् ॥ ५ ॥ असावत् साबाशाराजं तनुजसमं सोमसचिवः प्रियायां सीतायां शुचि च

११। रितनत्यामजनयत् ॥ यशोभिर्यस्यैभिर्जगतिविशदे क्षीरजलधौ निवासैकप्रीतिं मुदस-त्तजार्दिं-

१२। दुःदुःप्रतिपदं ॥ ६ ॥ श्री रैवते निर्म्मितसत्यपात्रः केनोपमानस्त्विह सोऽश्वराजः ॥ कलंकशंकामुपमान-

१३। मेव पुष्णात्यहो यस्य यशः शशांके ॥ ७ ॥ अनुजोऽस्यापि सुमनुजस्त्रिभुवनपालस्तथा स्वसाकेली

१४। आशा राजस्याजनि जाया च कुमारदेवीति ॥ ८ ॥ तस्याऽभूत्तनयो जयो प्रथमकः श्री मल्लदेवोऽपरश्चं

१५। चञ्चत्कमरीचिमण्डलमहाः श्री वस्तुपालस्ततः । तेजःपालइति प्रसिद्धमहिमा विश्वेऽत्र तुर्यः स्फुरद्धा-

१६। तुर्यः समजायतायतमतिः पुत्रोऽश्वराजादसौ ॥ ९ ॥ श्री मल्लदेव पौत्रौ लीलू सुत पुण्यसिंह तनुज-

१७। न्मा ॥ आल्हणदेव्या जातः पृथ्वीसिंहाख्ययाऽस्ति विख्यातः ॥ १० ॥ श्री वस्तुपाल सचिवस्य गेहिनी देहिनीव गृ-

१८। हलक्ष्मीः ॥ विशदतरचित्तवृत्तिः श्री ललितादेवी संज्ञास्ति ॥ ११ ॥ शीतांशुप्रतिवीर पीवर यशा विश्वेऽत्र

१९। पुत्रस्तयो र्विख्यातः प्रसरद्गुणो विजयते श्री जैत्रसिंहः कृती ॥ लक्ष्मीर्यत्करपंकज प्रणयिनी हीनाश्रयोत्थेन

२० । सा प्रायश्चित्तमिवाचरत्यहरहः स्नानेन दानं जसा ॥ १२ ॥ अनुपमदेव्यां पत्न्यां श्री तजःपाल सचिवतिलकस्या ।

२१ । लावण्यसिंह नामा धाम्नांधामायमात्मजो जज्ञे ॥ १३ ॥ नाजूवन्कति नाम संति कतिनो नो वा नविष्यंति के किं-

२२ । तु क्वापि न कोपि संघपुरुषः श्री वस्तुपालोपमः ॥ पुण्येषु प्रहरन्नहर्निशामहो सर्वा-जिसारोद्धुरो येनायं वि-

२३ । जितः कलिर्विदधता तीर्थेशयात्रोत्सवं ॥ १४ ॥ लक्ष्मीधर्माङ्गयोगेन स्थेयसीतेन न-न्वता ॥ पौषधालयमालायं(लेग्यं)

२४ । निर्म्ममेन विनिर्म्ममे ॥ १५ ॥ श्री नागेन्द्रमुनीन्द्रगच्छतरणिर्जज्ञे महेन्द्रप्रजोः पट्टे पूर्वमपूर्ववाङ्मयनि-

२५ । धिः श्री शांति सूरिर्गुरुः ॥ आनन्दामरचन्दसूरियुगलं । तस्मादजूत्तत्पदे पूज्य श्री हरिजद्र सूरि गुरवोऽजूवन् नु-

२६ । वो जूपणं ॥ १६ ॥ तत्पदे विजयसेन सूरयस्ते जयंति जुवनैकजूषणं ये तपोज्वलन जूविजूतिजिस्तेजयंति

२७ । निजकीर्त्तिदर्प्पणं ॥ १७ ॥ स्वकुलगुरुर्गणिरेषः पौषधशालामिमाममात्येन्द्रः ॥ पित्रोः पवित्रहृदयः पुण्यार्थं

२८ । कल्पयामास ॥ १८ ॥ वाग्देवतावदनवारिज (मित्र) सामन्तराज्यदानकलितोरुयशः पताकां चक्रे गुरोर्विज-

२९ । यसेन मुनीश्वरस्य शिष्यः प्रशस्तिमुदयप्रज सूरिरेनां ॥ १९ ॥ सं० १२८१ वर्षे महं श्री वस्तुपालेन कारित पौषध-

३० । शालाख्य धर्म्मस्थानेऽस्मिन् श्रेष्ठि० रावदेव सुत श्रे० मयधर । जा० सोजाउ जा० धारा । व्यव० वेलाउ विकल श्रे० पूना

३१ । सुत वीजावेड़ी उदयपाल । उ आसपाल । जा० आहड़ण उ गुणपाल एतैर्गोष्ठिकत्वमं-गीकृतं ॥ एजिर्गोष्ठिकैरस्य धर्म्मस्थानस्य

३१। ····स्तम्भतीर्थे – कायस्थवंशेनाक्ष ···· उद्वंकितः ···· लिश ····· लिख ···· मिइच ठ० सु० ···· सूत्रधार कुमरसिंहनोत्कीर्णा ॥

शिला लेख–भोंयरे के द्वार पर ।

[1794]

१। ॥ ए० ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री विक्रम नृपात् संवत् १६६१ वर्षे वैशाख सुदि ७ साम श्री

२। स्तंभतीर्थनगर वास्तव्य ॥ ऊकेश ज्ञातीय ॥ आबूहरा गोत्रविभूषण ॥ सौवर्णिक ॥ कलासु-

३। त ॥ सौवर्णिक ॥ वाघा भार्या रजाई ॥ पुत्र ॥ सौवर्णिक वछिआ ॥ भार्या सुहासिणि ॥ पुत्र । सौव-

४। र्णिक ॥ तेजपाल भार्या ॥ तेजलदे नाम्न्या ॥ निजपति सौवर्णिक तेजपाल प्रदत्ताज्ञ-

५। या ॥ प्रभूतद्रव्यव्ययेन सुभूमिगृहश्रीजिनप्रासादः कारितः ॥ कारितं च तत्र मूल-

६। नायकतया स्थापनकृते श्रीविजयचिंतामणि पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं च श्रीमत्त-

७। पागच्छाधिराज भट्टारक श्री आणंदविमल सूरि पट्टालंकार ॥ भट्टारक श्री विजयदा-

८। न सूरि तत्पट्टप्रभावक सुविहितसाधुजनध्येय सुगृहितनामधेय ॥ पात ॥

९। साह श्री अकब्बरप्रदत्तजगद्गुरुविरुदधारक भट्टारक श्री हीरविजय सूरि

१०। तत्पट्टोदयशैलसहस्त्रपाद ॥ पातसाह । श्री अकब्बरसभासमक्षविजितवा-

११। दिवृंदसमुद्भूतयशः कर्पूरपूरसुरभीकृतदिग्वधूवदनारविंद भट्टारक श्री विजय-

१२। सेन सूरिभिः ॥ क्रीडायातसुपर्वराशिरुचिरो यावत् सुवर्णाचलो ॥ मेदिन्यां ग्र-

१३। हमण्डलं च वियति भ्राजिष्णुरुच्यंशुमान् ॥ तावत्सत्रगतासुसेवितपद श्री पार्श्वना-

१४। थप्रभो ॥ मूर्त्ति श्री कलितोऽयमत्र जयतु श्रीमज्जिनेन्द्रालयः ॥ १ ॥ छः ॥ : ॥
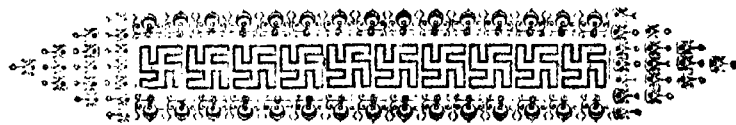
पोसिना-भरुअछ।

शिला लेख

[1795] *

१। प्राग्वाटवंशे श्रे० ठहुड यन श्री जिन-
२। भद्र सूरि सदुपदेशेन पादपरा ग्रामे उं-
३। दिरवसहिका चैत्यं श्रीमहावीर प्रतिमा
४। युतं कारितं। तत्पुत्रौ ब्रह्मदेव शरणदे-
५। वौ। ब्रह्मदेवेन सं० १३७५ अत्रैव श्रीने-
६। मि मंदिर रंगमंडपे दाढ़ाधरः कारितः
७। श्रीरत्नप्रभसूरि सदुपदेशेन तदनुज श्रे०
८। शरणदेव भार्या सूहवदेवि तत्पुत्राः श्रे०
९। वीरचंद्र पासड। आंबड रावण। यैः श्री पर-
१०। मानन्द सूरीणामुपदेशेन सप्ततिशततीर्थं का-
११। रितं॥ सं० १३१० वर्षे। वीरचंद्र भार्या सुषमिणि
१२। पुत्र पूना। भार्या साहग पुत्र लूणा झांझण आं-
१३। बड़ पुत्र बीजा खेता। रावण भार्या हीरू पुत्र बो-
१४। डा भार्या कामल पुत्र कडुआ॥ द्वि० जयता भार्या मूं-
१५। धा पुत्र देवपाल। कुमरपाल। तृ० अरिसिंह भा०
१६। गउरदेवि प्रभृतिकुटुम्बसमन्वितैः श्री परमा-
१७। नन्द सूरिणामुपदेशेन सं० १३३८ श्री वासुपूज्य
१८। देवकुलिका। सं० १३४५ श्री संमेतशिषर-
१९। तीर्थं मुख्यप्रतिष्ठा महातीर्थयात्रां विधाप्या-
२०। त्मजन्म एवं पुण्यपरंपरया सफलो कृतः
२१। तदद्यापि पोसिना ग्रामे श्री संघेन पूज्यमान-
२२। मस्ति॥ शुभमस्तु श्री श्रमणसंघप्रसादतः॥

---

* भरुअछ से ६ मैल दूर पर 'पोसिना' ग्राम में जैन मन्दिर के भैरवजी की मूर्ति के निचे पत्थर पर यह लेख है।

उना-काठियावाड़।

जैन मन्दिर—शाहवाला बाग।

शिला लेख।

[1796] *

१। ॐ स्वस्ति श्री सं० १६५२ वर्षे कार्त्तिक वदि ५ बुधे
२। येषां जगद्गुरूणां संवेगवैराग्यसौभाग्यादिगुणगण-
३। श्रवणात् चमत्कृतैर्महाराजाधिराज पातिसाहि श्री अकब्बराभि-
४। धानैः गूर्जरदेशात् दिल्लीमण्डले सबहुमानमाकार्य धर्म्मोपदेशा-
५। कर्णनपूर्वकं पुस्तककोशसमर्पणं डावराभिधानमहासरोमत्स्यब-
६। धनिवारणं प्रतिवर्षं षाण्मासिकामारिप्रवर्त्तनं सर्वदा श्री शत्रुंजयतीर्थे मुं-
७। डकाभिधानकरनिवर्त्तनं जीजियाभिधानकरकर्त्तनं निजसकलदेशे दा-
८। णमृतं स्वमोचनं सदैव बूंद(?)ग्रहणनिवारणं सत्यादिधर्म्मकृत्यानि सकल-
९। लोकप्रतीतानि कृतानि प्रवर्त्तं तेषां श्री शत्रुंजये सकलदेशसंघयुतकृत-
१०। यात्राणां भाद्रपदशुक्लैकादशीदिने जातनिर्वाणं शरीरसंस्कारस्थानासन्न-
११। कलितसहकाराणां श्री हीरविजय सूरीश्वराणां प्रतिदिनं दिव्यनाथनाद-
१२। श्रवण दीपदर्शनादिकैर्जातस्वभावाः स्तूपसहिताः पादुकाः कारिताः पं०
१३। मेघेन भार्या लाडकी प्रमुखकुटुम्बयुतेन प्रतिष्ठिताश्च तपागच्छाधिराजैः भ-
१४। ट्टारक श्री विजयसेन सूरिभिः उ० श्री विमलहर्षगणि उ० श्री कल्याण-
१५। विजय गणि उ० श्री सोमविजय गणिभिः प्रणतभव्यजनैः पूज्यमानाश्चि-
१६। रं नंदंतु ॥ लिखिता प्रशस्तिः पद्मानन्दगणिना। श्री उन्नतनगरे शुभं भवतु ॥

* 'उना' का प्राचीन नाम 'उन्नत नगर' था। यह शिलालेख मन्दिर के ७ देहरी में पश्चिम तर्फ से पहली देहरी का है।

[1797]

(१) ॥ ऐं० ॥ स्वस्ति श्री प्रणयाश्रयः शिवमयः श्री वर्द्धमानाह्वयस्तीर्थेशश्चरमो बभूव भुव-

(२) ने सौभाग्यभाग्यैकभूः । नंदीश प्रथमोपि पंचमगतिः ख्यातः सुधर्म्माग्रणी । जज्ञे पंचमपंचमः शमव-

(३) तां निग्रथं १ गोत्रेग्रणी ॥ १ ॥ श्री कौटिक २ वनवासिक ३ चन्द्र ४ वृहद्गच्छ ५ सत्तगा ६ क्रमतः । तदा

(४) गच्छानां संज्ञाजातास्तपगच्छस्तथाऽभूत् ॥ २ ॥ प्राणभृत्क्षितिपालजाल विलसत्कोटीर-हीरस्फुरज्यो-

(५) तिर्जालजलाभिषेकविधिना (जा)नाबुपंकेरुहः ॥ चि(द्रु)पाव लिहीरहीरविजयाह्वानः प्रधान प्र-

(६) भुः श्रामण्यैकनिकेतनतनुभृताम् कल्याणकल्पद्रुमः ॥ ३ ॥ तदादेशवाक्यैः सुधा-सारसारै । मुदा

(७) कब्बरः पातिसाहिः प्रबुद्धः । स्वदेशेऽखिले जीवहिंसा न्यवारीदमुंचत्करंचापिशत्रुं-जयाद्रेः ॥ ४ ॥

(८) तमध्योदयिशैलमौलिमहिमावर्षैसहस्रत्विषि । जातः श्री विजयादिसेनसुगुरुः प्रज्ञाल-वालारुणः ।

(९) येन श्रीमदकब्बरक्षितिपतिः पर्षद्यनेकद्विजान् ॥ निर्जित्यैव जयश्रिया सह महां-श्चक्रे विवाहो

(१०) नवः ॥ ५ ॥ (त)त्पट्टे (सा)रगजमूर्द्धनि देवराज (सू)रिर्बभूव भगवान् वि(जया-दिदे)वः । य(स्या)त्रसत्यवचना-

(११) दनले तपोर्कः साक्षद्भजौ कुमतद्रुस्तपसां वि(ना)शी ॥ ६ ॥ सम्यग् निशम्य च यदीय यशःप्रशस्तिमा-

(१२) ह्वतद्गुणगणस्य दिदृक्षयैव । सूरेर्महातपइतिप्रथितं विरुदं श्रीपातिसाहिरकरोत्स-सलेममाहि

(१३) ॥ ७ ॥ यस्याद्याप्युपदेशपेशलरसङ्गोणंजगात्सिंह्जीः संबुद्धः सरसार्थिसारविसरे मारीन्यावारीत्ततः ॥

(१४) [सं]व्यूढां गुणरागरंगललितैः कीर्त्तिस्त्रिलोकोत्रमश्रांतां स्थानविधानतोऽनुरंमते किंकिरर्पिडिध्वलात् ॥

(१५) ॥ ७ ॥ श्री विद्यापुर पाति[साहि]मुचितैर्वाचाप्रपंचैर्यकः । स्वर्गोज्यप्रतिमः प्रबोध्य सूरत्तीरारंजतो मोचयन्

(१६) तद्वत श्रीमनुजादिमर्दनपतेः श्री पातिसाहेश्वरः । स्थानेऽस्थापयेदग्निपातनपरो धर्मं सपक्षंगतः ॥

(१७) ॥ ए ॥ एवं विहृव्यनगरानवनीतमस्मिन् राजन्य ···· । श्रीमज्जिन-

(१८) ···· र्द्धता ···· चय मूर्त्तिति ···· मूर्त्तिः सकलरात्रौध्वजरूपमूच्चैः ॥ १० ॥ पूज श्री मालि कुलोपु-

(१९) रा जरण ···· यो ··· नामतिनामा । ··· र्मना: ॥ ११ ॥ तस्यांगजोगजइन्द्रो पवि-

(२०) ···· श्रीमालिविमलकुलांबुज ···· माली । विश्वातिशायियशसाजिनपूर्णचन्द्रः श्री राजव-

(२१) ···तिस···रि · तृ प्रतापं ॥ १२ ॥ अथ तेनमंशे किमहाग्र···पूर्वंखड्व्यस्यसफलीकरणाय श्री विजया-

(२२) दि सूरीश्वराः श्री गूर्जरदेशात्सौराष्ट्रके पादानांसस्याः कारिताः श्री सिद्धाद्रियस्यापिप्रजूणांमहामहसां

(२३) ···· कारिता ॥ ततश्च सं० १७१२ वर्षे आषाढ़ शुद्धैकादशी तिथौ । जट्टारक श्री विजयदेवसूरी-

(२४) श्वराणा स्व ···· मुषापाडुकास्तूपेयं ······· श्रीवासणात्मजेन बाई पातली जन्मना श्रीरायचन्द्

(२५) नाम्ना कारितः प्रतिष्ठापितश्च सं० १७१२ वर्षे माघमास सितपञ्चमी तिथौ महा महोत्सवेन ।

(२६) सूरेः श्री विजयादिदेवसुगुरोः पट्टाब्जसूर्योंऽयः सूरि श्री विजयप्रज्ञाव्यदधत श्रेष्टा प्रतिष्ठा

(२७) मिमां श्रीमद्वाचकरान् विनीतविजयैः शांत्याह्वयैः पाठकैर्युक्ताश्चारुयशोजराः प्रतिम-

(२८) या वाचस्पतेः सन्निजाः ॥ १३ ॥ तथा साधु श्री नेमिदासेन तथा साधु वाघजीकेन त्रिनोप्रमेन का

(२९) रितः । कृतश्चायं हरजीनाम्ना शिल्पिना । मुहूर्त्तदातातु अत्र उन्नतपुरवास्तव्य जट्ट-गुसांई

(३०) पुत्र जट्ट रणछोड़ नामा ॥ श्रीद्वीपबंदरवास्तव्यसंघजातिव्याजे जीयतां श्रीदेव-विहारजा

(३१) गः स्तूपरूपः ॥ श्रीमत् श्री विजयादिदेवगणभृत्पट्टोदयोषकृतेः । सूरेः श्री विजय-प्रजस्य क-

(३२) रुणादष्ट्या प्रकृष्टोदयः ॥ विद्वद्रूपमणीकृपादिविजयां तेवासिमेणाह्वयो । खेस्यदेव-विहार ....

(३३) विदिते स्तूपप्रशस्ति श्रिये ॥ १४ ॥ इति प्रशस्ति संपूर्ण ॥ श्रीरस्तु ॥ छः ॥ छः ॥

बम्बई ।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर—वालकेश्वर ।

पञ्चतीर्थी पर ।

[1798]

सं० १४८८ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञा० पं० राणा जा० रूपादे सुत आसाकेन स्वमातृश्रेयसे आगमगच्छे श्री जयानन्दसूरीनामुपदेशेन श्री पार्श्वनाथ पञ्चतीर्थी कारितं श्री सूरिजिः । शुजं जवतु ॥

चौविशी पर।

[1799]

सं० १७६४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ गुरौ स्तम्भतीर्थ बंदिर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्ध-शाषीय वे। मेघराज भा० वैजकुआर सुत सूसगलेन स्वद्रव्येण श्री शांतिनाथ चौविशी पट्ट कारापितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे भ० श्री विजयप्रभ सूरि पट्टे संविज्ञपक्षीय भ० श्री ज्ञान-विमलसूरिभिः।

घरदेरासर — गामदेवी, वाचागांधी रोड।

चौविशी पर।

[1800]

संवत १५२५ वर्षे माघ सुदि १३ बुधे मोढ ज्ञातीय ठकुर वरसिंह भार्या चांपू सुत ठकुर मूलू भार्या कीबाई सुत ठकुर मधुरेण भार्या संपूरी प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री अभिनन्दननाथादि चतुर्विंशतिपट्टः श्री आगमगच्छे श्री जयचन्द्रसूरिपट्टे श्री देवरत्न गुरूपदेशेनकारितः प्रतिष्ठापितश्च ॥ श्री स्तम्भतीर्थवास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

सिरपुर-सागर (सी. पी.)।

शिला लेख।

[1801]

१। ॐ ॥ स्वस्ति श्री सं० १३३४ वर्षे वैशाख सुदि २ बुधदिने श्रीवृद्गच्छे सा० प्रह्लादन पुत्र सा० रत्नसिंह कारितः श्री शांतिनाथ चैत्ये सा० समधा पुत्र महण भार्या सोहिणी पुत्री कुम-

२। रख श्राविकया पितामह सा० पूना श्रेयसे देवकुलिका कारिता ॥

श्री सम्मेत शिखर ।

टोंक पर के चरणों पर ।

[1802]

॥ श्री ऋषभानन जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[1803]

॥ श्री चंद्रानन जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[1804]

॥ श्री वारिषेण जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[1805]

॥ श्री वर्द्धमान जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[1806]

(१) संवत् १ए३१ माघे । शु । १० । चंद्र श्री चंद्रप्र
(२) भु जिनेन्द्रस्य चरण पादुका । मसधार पूर्णिमा ।
(३) श्री मद्विजयगच्छे । त । श्री जिन शांति सागर सू ।
(४) रिभिः । प्रतिष्ठितं । स्थापितं । श्रेयसेस्तु ।
(५) श्री संघेन कारापिता ।

[1807]

(१) संवत् १८४ए मिति माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचमी तिथौ ।
(२) बुधवारे श्री पार्श्वनाथ जिनस्य चरण न्यासः श्री संघाग्रहेण ।
(३) श्री बृहत् खरतर गच्छीय । जंगम । युग प्रधा
(४) न भट्टारक । श्री जिनचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितः श्रीरस्तु ॥

[1808]

(१) संवत् १९४२ का मि। पोष शुक्ल त्रयोदश्यां वर सोमवारे श्री चतुर्विंशति जिन साधु संख्या पादुकाः श्री पार्श्व जिन गणधर पादुका

(२) खरतर गच्छे महो श्री दानसागरजी गणिः तत् शिष्य पं। हित वल्लभ मुनिना प्रतिष्ठितं गुज्जर देशान्तरगत मांडल वास्तव्य ....

(३) वीर सोभाग्यवर लक्ष्मीचंदेन श्री समेत शिखरि प

(४) रि स्थापितं ॥

१। श्री ऋषभ १०००० साधुसुं अष्टापद उपर २। श्री अजित १००० साधु सुं ३। श्री संभव १००० साधुसुं ४। श्री अभिनंदन १००० साधुसुं ५। श्री सुमति १००० साधुसुं ६। श्री पद्मप्रभ ३०८ साधुसुं ७। श्री सुपार्श्वनाथ ५०० साधुसुं ८। श्री चंद्रप्रभ १००० साधुसुं ९। श्री सुविधि १००० साधुसुं १०। श्री शीतल १००० साधुसुं ११। श्री श्रेयांस १००० साधुसुं १२। वासुपूज्य ६०० साधु चंपापुर १३। श्री विमल ६००० साधुसुं १४। श्री अनंत ७००० साधुसुं १५। श्री धर्म्म १०८ साधुसुं १६। श्री शांति ९०० साधुसुं १७। श्री कुंथु १००० साधुसुं १८। श्री अरि १००० साधुसुं १९। श्री मल्लि ५०० साधुसुं २०। श्री मुनिसुव्रत १००० साधु २१। श्री नमि १००० साधुसुं २२। श्री नेमि ५३६ साधुसुं गिरनार २३। श्री पार्श्व ३३ साधुसुं २४। श्री महावीर एकाकी पावापुरी ॥

[1809]

॥ सं। १९४९ माघ शुक्रवारे श्री समेत शैलस्य पर्वतोपरि भव्य जीवस्य दर्शनार्थे श्रीमत् आदिनाथस्य चरण पादुका स्थापिता राय धनपतिसिंह बाहादूरेण का० प्र० श्री विजयराज सूरि तपागच्छे ॥

[1810]

(१) सं। १९२५ फा० कृष्ण ५ बुधवासरे श्री चंपापुरे तीर्थे श्री वासपूज्य जी
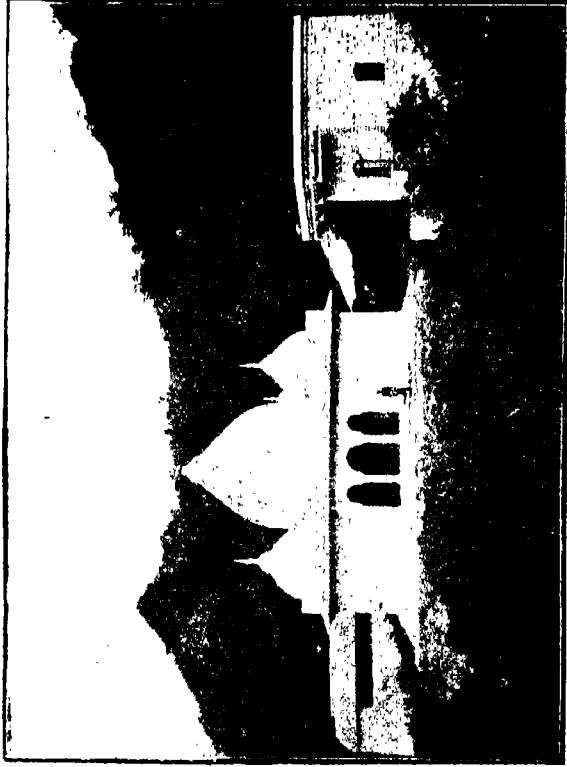
TIRTHA SAMMET SIKHAR— Jalmandira.

(२) पंच कल्याणक चरण न्यास मकसुदाबाद वास्तव्य डुगड़ साः प्रतापसिंह
(३) भार्या महताब कुमर ज्येष्ठ सु० लक्ष्मीपतस्य कनिष्ठ भ्रात धनपत सिंह
(४) कारापितं प्रतिष्ठितं च: श्री जिनहंस सूरिभिः बृहत्खरतरगच्छ ॥

[1811]

(१) ॥ संवत् १९३४ माघ वदि ५ बुधवार श्री नेमनाथ जिन तीन कल्यानक रेवत ··
(२) भवतो तस्य चरण न्यास: समेत शिखरे स्थापिता मकसूदाबाद अजीमगंज
(३) वास्तव्य डुगड प्रतापसिंह भार्या महताब कुमर सुत लक्ष्मीपत कनिष्ठ भ्राता
(४) धनपत सिंह कारापितं प्रतिष्ठितं श्री पूज्यजी भ. श्री जिनहंस सूरीतः खरतर गच्छे
(५) बृहत् खरतर गछ ॥

[1812]

(१) ॥ सं १९३४ श्री फाल्गुण वदि ५ श्री वीर वर्धमानजी का चरण पादुका मकसुदा
(२) बाद वासी राय धनपत सिंह डुगडने स्थापित किया था सो उसकी छत्री बिजली
(३) उपद्रव सु गिरगइ उसपर सं १९६५ के फाल्गुण सुदी ६ को कच्छ मांडवी वासी
(४) साः जगजीवन बालजी ने जीरण उधार कराइ ।

जल मंदिर ।

पाषाण की मूर्तियोंपर ।

[1813]

(१) ॥ संवत् १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री मगसुदाबाद वास्तव्य सावसुखा गोत्रीय ओसवंस ज्ञातीय
(२) य वृद्धशाखायाम् ॥ लालचंद् सुत सुगालचंदेन श्री सद्गुरुणा उपदेशात् आत्म सं श्रेयार्थं च श्री समेत शैल
(३) श्री जैन विहारे श्री सहस्त्र फणा पार्श्व जिन बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च सुविहितामणीभिः सकल सूरिवरैः ॥ मंगलं ॥

[1814]

(१) ॥ सं १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री मगसुदाबाद वास्तव्य सावंसुखा गोत्रीय ओसवंस ज्ञातीय

(२) बृद्धशाखायां सा सुगालचंद भार्यया केसरकया आत्म संश्रेयार्थं श्री समेत गिरौ श्री जैन विहार श्री सं-

(३) भवनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च सुविहिताग्रणीभिः । सकल सूरिभिः ॥ इति मंगलं ॥
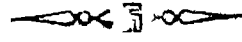
मधुवन ।

जगतसेठजी का मंदिर ।

मूर्त्तियों पर ।

[1815]

॥ सं १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ सा सुगालचंदेन श्रीपार्श्व बिंबं कारापितं । प्र। सकल सूरिभिः ।

[1816]

(१) संवत् १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ मग ······ ज्ञातीय बृद्ध शाखायां सा रूपचंदजी सुत लखमीचंदजी

(२) सुत लालचंदजी माता मद कपूरचंदजी ······ देत स्वश्रेयोर्थं श्री सम्मेत गिरौ श्रीजिन वि

(३) हार श्री पार्श्व जिन बिंबं कारापितं ······

[1817]

॥ संवत् १८२२ वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री खरतर गछ आचार्य्यीय सा भीमजी सुत सा निहालचंदेन पं ··· कारापितं ॥

[1818]

॥ सं० १८२७ शाके १६९३। प्रवर्त्तमाने वैसाख सुदि द्वादशी तिथौ। भृगुवारे ओसवाल ज्ञाती वृद्धशाखायां॥ आदि गोत्रे। सा० ऋषभदास तद्भार्या गुलाबकुअर सहितेन श्रेयोर्थं। कायोत्सर्ग्ग मुद्रास्थित सहस्रफणालंकृत श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं॥

[1819]

॥ सं० १८२१ [?] वैशाख सु० १३ गुरौ श्री गहिलडा गोत्रीय साह कस्तुरचंद॥

धरणेन्द्र पद्मावती की मूर्ति पर।

[1820]

॥ संवत् १८२५ माहा सुदि ३ सा। सुगालचंदेन श्री धरणेन्द्र पद्मावत्या कारापिता प्र० तपागच्छे॥

प्रतापसिंहजी का मंदिर।

शिलालेख।

[1821]

(१) ॥ संवत् १८८९ मिति माघ शुक्ल १० दशम्यां तिथौ श्री गो-
(२) डी पार्श्वनाथस्य द्विभूमि युक्त चैत्यं। श्री बालूचर वास्त-
(३) व्य डुगड़ गोत्रीय। श्री प्रतापसिंघेन कारित। प्रतिष्ठि-
(४) तं च श्री खरतर गच्छेशाःजं। यु। ज। श्री जिन हर्ष सूरी-
(५) णामुपदेशात्। उ। श्री क्षमाकल्याण गणीनां शिष्येणेति

पाषाण की मूर्तियोंपर।

[1822]

(१) ॥ सं० १८८८ माघ सुदि ५ सोमे श्री गवडी पार्श्वनाथ जिन बिं-

(२) बं कारितं ओसवंशे डुगड गो। प्रतापसिंहेन। प्र। बृ। ज। खरतर ग-
(३) च्छाधिराज श्री जिनचंद्र सूरि ··। ······ स्थितैः।

[1823]

॥ श्री गोडी पार्श्व जिन बिंबं ॥ (ॐ) ॥ संवत् १९३२ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ११। चंद्रे जीर्णोद्धाररूपा। विजय गच्छे। भट्टारक श्री पूज्य श्री जिन शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं स्थापितं च ॥

पाषाण के चरणों पर।

[1824]

(१) संवत् १८८९ मिति माघ शुक्ल १० दशम्यां तिथौ श्री गौडी पार्श्वनाथ चैत्ये विंशति जिनेश्वराणां चरण न्यासाः श्री बालूचर नगर वास्त
(२) व्य डुगड गौत्रीय साह श्री प्रताप सिंघेन कारिताः प्रतिष्ठिताश्च। श्री मद्बृहत्खरतर गच्छेशाः जंग-
(३) म युग प्रधान भट्टारकाः श्री जिन हर्ष सूरीश्वराणामुपदेशात् उपाध्याय पद शो-भिता। श्री क्षमाकल्याण गणीनां शि-
(४) ष्य प्राज्ञ ज्ञानानंदेन पं। आनंदविमल पं। सुमति शेखर सहितेनेति। श्रेयोर्थं। सम्यक्त बृद्ध्यर्थं च ॥

॥ श्री अजितनाथजी २ ॥ श्री संभवनाथजी ३ ॥ श्री अभिनंदन नाथ जी ४ ॥ श्री सुमति नाथ जी ५ ॥ श्री पद्मप्रभ जी ६ ॥ श्री सुपार्श्वनाथ जी ७ ॥ श्री चंद्रप्रभजी ८ ॥ श्री सुविधिनाथ जी ९ ॥ श्री शीतल नाथ जी १० ॥ श्री श्रेयांस नाथ जी ११ ॥ श्री विमल नाथ जी १३ ॥ श्री अनंत नाथ जी १४ ॥ श्री धर्म नाथ जी १५ ॥ श्री शांति नाथ जी १६ ॥ श्री कुंथुनाथ जी १७ ॥ श्री अरनाथ जी १८ ॥ श्री मल्लिनाथ जी १९ ॥ श्री मुनिसुव्रत नाथ जी २० ॥ श्री नमिनाथ जी २१ ॥ श्री पार्श्वनाथ जी २३ ॥

पाषाण के चरणों पर।

[1825]

(१) ॥ संबत् १८३१ ॥ माघे ॥ शुक्ला ए। चंद्रे। गोतम स्वामी ॥
(२) चरण पादुका काराविता ॥
(३) मुनि गोकल चंद्रेण
(४) जट्टारक श्री जिन शांति सागर सूरिजिः। प्रतिष्ठितं ॥ श्री बिजय गच्छे ॥

[1826]

(१) ॥ संबत् १८३३ मिति माघ शुक्ल ११ अजिनंदन जिन पादुकामिदं मक्
(२) सूदावाद् वास्तव्य ओशवंशोय लुंपक गणोमानाक् डुगड गोत्रीय बाबु
(३) प्रतापसिंहस्य जार्या महताब कुमारिकस्य बृद्ध पुत्र राय बहादुर
(४) लछमीपत सिंघस्य लघु ज्रातृ रा। धनपत सिंघेन करापितं प्रतिष्ठितं सर्व सूरिणा ॥

कानपुरवालों का मंदिर।

शिलालेख।

[1827]

॥ सं १८४३ का वर्षे शाके १८०० प्रवर्तमाने माघ मासे कृष्ण पक्षे एकादश्यां बुधे श्रेष्ठी श्री सिखरूप मल तादात्मज जंडारी श्री रघुनाथ प्रसाद तद्भार्या श्री बदामो बीबी तया कारितं श्री पार्श्वजिन मंदिरं महोत्सवेन स्थापना कारापिता श्री शिखर गिरि मधुवने बृहद्भजयगच्छे सार्वजौम जट्टारक श्री जं. यु. प्र. श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रेयसे। (इसके बाईं ओर एक पंक्ति में) श्री मत्तपागछाधिराज जट्टारक श्री १०८ श्री विजयराज सूरि राज्ये शुजं जवतु।

मूर्तियों पर।

[1828]

॥ सं० १८५४ वर्षे माघ वदि ५ चंद्रे श्री मरखरतर पीपल्या गछे श्री जिनदेव

सूरीश्वर राज्ये ओसवंस वृद्ध शाखायां सा पानाचंद श्री पार्श्वजिन बिंबं .... येन प्रति ....

[1829]

॥ सं. १९०५ शाके १७६७ वदि ५ भृगौ सीपोर वास्तव्य सा. र (त) न चंद तद्भार्या जीजा बाइ तत्पुत्री बेन नवल स्वश्रेयोर्थं श्री चंद्रप्रभ बिंबं ॥ कारापितं तपागछे भट्टारक श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

लाला कालीकादासजी का मंदिर।

मूर्तियों पर।

[1830]

॥ १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल २ तिथौ श्री सुपार्श्वनाथ जिन बिंबं प्रतिष्ठितं खरतर गछे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्ट प्रभावक ....

[1831]

॥ सं. १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल द्वितीयायां श्री वासुपूज्य जि बिंबं प्रतिष्ठितं भ। श्री जिन महेन्द्र सूरिभिः कारितं च श्री ....

[1832]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल २ तिथौ श्री धर्मनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं खरतर गछे श्री जिन हर्ष सूरीणां पट्ट प्रभावक ....

पाषाण की पंचतीर्थी पर।

[1833]

॥ सं० १९३१ बर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे १२ बुधे श्री पंचतीर्थीय जिन बिंबं वेलुयुतो गोत्रे लाला कालीकादास तद्भार्या चत्री बीबो तया कारितं मलधार पूर्णिमा श्री मद्विजय गछे भ। श्री पूज्य श्री शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

चंद्रप्रभुजी का मंदिर

मूर्त्तियों पर।

[1834]

॥ सं १८०८ माघ सुदि ५ सोमे श्री चंद्रप्रभ जिन बिंबं कारितं ओसवंसे नवलखा गोत्रे मोटामल पुत्र यश रूपेन प्र। बृहत् खरतर ग। श्री जिनाक्षे सूरि चरणकज चंचरीक श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

पार्श्वनाथ जी का मंदिर।

मूर्तियों पर।

[1835]

॥ सं. १६७६ मिति फालगुण शुक्ल १३ · · · · · · · ·

[1836]

॥ सं. १८७७ वै। शु। १५ श्री पार्श्व बिंबं प्र। श्री जिनहर्ष सूरीणा गोलवच्छा महता बोजानी मूलचंदेन धर्मचंदेन कारितं कास्यां बृहत् खरतर गणे

[1837]

॥ सं. १८७७ वै। शु। १५ श्री चंद्रप्रभ बिंबं प्र। श्री जिन हर्ष सूरीणा कारितं....

[1838]

॥ सं. १८७७। वै। शु। १५ श्री चंद्रप्रभ बिंबं प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा कारितं मालफस चेनसुखज कुंदन लालेन श्री · · · · · ·

पट्ट पर।

[1839]

॥ सं. १८८५ मि। फालगुण सुदि १३ रवौ शिखर गिरौ श्री सिद्धचक्रमिदं प्रतिष्ठितं

ज। श्री जिनहर्ष सूरिभिः श्री बृहत् खरतर गछे कारितं डु० पुरणचंदेन सभार्यया स-
पुत्रेण श्रेयोर्थं।

[1840]

॥ संवत् १८८४ वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्थी चंद्रवासरे अमृत सिद्धि योगे राजनगर
निवासि वायचाणा शा ··· जेचंदेन श्री तपागछ सूरीश्वर विजयसिंह सूरीणा ·····

सुव्र स्वामीजी का मंदिर।

चरणों पर।

[1841]

(१) सं. १८७५ मि। मार्गशीर्ष ९ तिथौ रविवासरे
(२) श्रीमच्छ्री जिनदत्त सूरीणां चरणपंकजानि
(३) बृ। ख। जं। यु। प्र। भ। जिनहर्ष। सू। प्रतिष्ठितानि॥

[1842]

(१) ॥ सं. १८७५। मिति मार्गशीर्ष शुक्ल ९ तिथौ रविवासरे
(२) श्री सद्गुरुणां पादौ बृहत् खरतर ग
(३) छे। जं। यु। प्र। भ। श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं॥ श्री॥
(४) ॥ दादाजी श्री जिनकुशल सूरिः
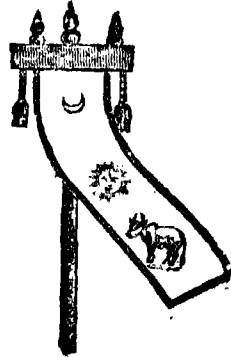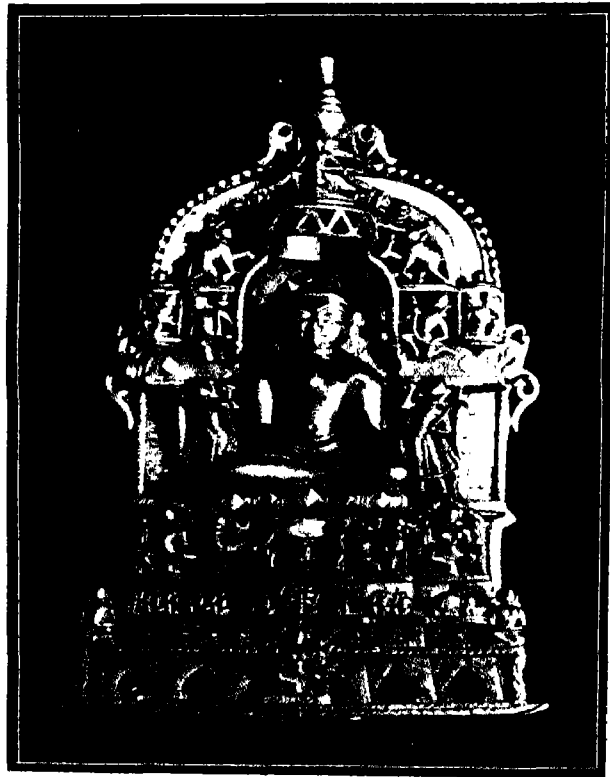
METAL IMAGE OF SHRI SUMATINATH.

Jain Swetambara Temple—Tirtha Rajgriha.

Dated V. S. 1512 (A.D. 1455)

श्री राजगृह ।

गांव मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[1843]

संवत् १५१२ वर्षे वैशाष सुदि १३ उकेश सा० जादा जार्या जरमादे पुत्र सा० नायक जार्या नायक दे फदेकू पुत्र सा० अदाकेन जा० सोनाई ज्रातृ सा० जोगादि कुटुंबयुतेन श्री सुमति नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ वढली वास्तव्यः ॥ श्री ॥

धातु की मूर्ति पर ।

[1844]

सं० १९२० । म । का । कृस २ बुधे डुगड प्रतापसिंह जार्या महताव कंवर श्री संती नाथ जिन बिंबं का० ॥

सफण मूर्ति पर ।

[1845]

संबत् १६२० आषाड वदि २ । मित्रवाल वंशी षी (वी) सेरवार गोत्रीय सं० गनपति पु० स० तारात पुत्र हेमराज पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं खरतर गछे जिनजड सूरिजिः ॥ शुजमस्तु ॥

श्याम पाषाण की मूर्ति पर ।

[1846]

(१) ॥ संवत् १५०४ वर्षे फागण सुदि ए महतीयाण वंशे ठ० देवसी पुत्र सं० जेलू बहुनी लखाई जार्या बेणी । श्री शांति

(२) नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वा० शुभशील गणिभिः

चरण पर ।

[1847]

॥ ॐ नमः ॥ संवत् १८१९ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे ६ तिथौ श्री चंद्रप्रभ जिनवर चरणकमले शुभे स्थापिते ॥ हुगली वास्तव्य ओसवंशे गांधी गोत्रे बुलाकिदास तत्पुत्र साह माणिक चंदेन पत्रीकुंडे कुंडघाटे जीर्णोद्धार करापितं ॥ १ ॥

वैभार गिरि ।

चौथे मंदिर में ।

चरणों पर ।

[1848]

(१) संवत् १९३० वर्षे शाके १८०३ प्रवर्तमाने मासोत्तममासे
(२) शुभे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादशी गुरूवासरे · · · श्री व्यवहार
(३) गिरि शिखरे श्री जिनचैत्यालये मूलनायक श्री
(४) महावीर जिन चरणन्यासः प्रतिष्ठितं श्री तपागछे बृद्धवि
(५) जय थापीतं (दू) साह बाहादरसंह प्रताप-
(६) सिंह तत् पुत्र राय लछमीपत धनपतसिंग
(७) बाहाद (र) जिरणोद्धार करापितं श्री रस्तु
(८) ॥ प्रथम प्रतिष्ठा संवत १८७४ शा० १७३९ मासो
(९) त्तमासे शुभे ज्येष्टमासे कृष्णपक्षे पं-
(१०) चम्यां तिथौ सोमवासरे श्री जिनचन्द्र
(११) सूरिजी महाराज का० श्री ।

[1849]

(१) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे
(२) शुभे ज्येष्टमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां तिथौ गुरुवासरे व्य-
(३) वहार गिरिशिखरे श्री आद देव चरण न्या-
(४) सः प्रतिष्ठितं बृद्धविज [य] गणी राय लछमिपत
(५) सिंह धनपतसिंह जीरणोद्धा-
(६) र करापितं श्रीरस्तु

[1850]

(१) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने
(२) मासोत्तममासे ज्येष्टमासे शुक्लपक्षे
(३) द्वादशम्यां गुरुवासरे श्रीव्यवहारगिरि शिखरे
(४) श्री शांतिजिन चरणप्रतिष्टा । प्रथम
(५) श्री जिनहर्ष सूरिभिः बृद्ध विजय प्रतिष्ठा
(६) राय लछमिपत धनपत बा-
(७) हादुर जिरणोद्धार करापितं श्री
(८) रस्तु

[1851]

(१) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने
(२) मासोत्तममासे ज्येष्टमासे
(३) शुक्लपक्षे द्वादशम्यां गुरुवासरे
(४) श्री व्यवहार गिरिशिखरे श्री नेमिजिन
(५) चरणन्यास प्रतिष्ठ (1) बृद्ध विजयगणि राय लछमिपति
(६) धनपत संग जिरणोद्धार करापितं श्रीरस्तु ।

[1852]

(१) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे
(२) ज्येष्टमासे शुक्लपक्षे द्वादशम्यां तिथौ गुरूवासरे
(३) श्री व्यवहार गिरिशिखरे
(४) श्री पार्श्वनाथ चरणयनसः प्रतिष्ठितं वृद्धविज-
(५) य गणि राय लछमिपत सिंह धन-
(६) पत संग जिरणोद्धार करापीतं

छठे मंदिर में।

चरण पर

[1853]

(१) संवत् १९३८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे
(२) द्वादशम्यां तिथि गुरूवासरे आदिनाथ जिन चरण-
(३) न्यास प्रतिष्ठितं वृद्धविजय गणि प्रथ-
(४) म जीरणोद्धार बुलाकिचंद तत् पुत्र माणिक
(५) चंद जिरणोद्धार करापीतं द्वुति-
(६) य जिरणोद्धार राय लछमिपति सं-
(७) घ धनपतसंघ करापितं। श्रीरस्तु   ८। व्यवहारगिरी

बड़ी मूर्त्ति पर

[1854]

॥ संवत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने मडतियाण............श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्री खरतर गच्छे................श्री जिनसागरसूरीणां निदेशेन श्री शुभशील गुणिभिः॥

खंडहर ।

पाषाण की मूर्तियों पर

[1855]

॥ ॐ संवत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महतीयाण वंशे जाटड गोत्रे सं० देवराज पुत्र सं० षीमराज पुत्र सं० जिणदासेन श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्रीजिनचंद्रसूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाचनाचार्य शुभशील गणिभिः ॥

[1856]

(१) संवत् १५०४ फागुण सुदि ९ दिने महतीयाण वंशे वार्त्तिदिया (?) गोत्रे ठ० हरिपा
(२) लेन भार्या लाडो पु० ठ० हरिसि । श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री
(३) खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाच
(४) नाचार्य शुभशील गणिभिः ॥

सोन भंडार ।

[1857] *

निर्वाणलाभाय तपस्वियोग्ये, शुभे गुहेऽर्हत् प्रतिमा प्रतिष्ठे ।
आचार्यरत्नं मुनि वैरदेवः, विमुक्तये ऽकारयद्दीर्घतेजः ॥

मणियार मठ ।

चरण पर

[1858] †

सं. १८३७ वर्षे मासे माह सुदी ५ तद्दिने श्रीओसवाल वंशे विराणी गोत्रे केशोदास तस्य मोतुलालकस्य भार्या बीबी सताबो राजगृहे नागस्य शालिभद्रजीकस्य चरण स्थापितः ।

* देखो—आर्किओलजिकल सर्भे रिपोर्टस्—१९०५-०६ पृ० ९८
† „ — „ — „ — „ — पृ० १०३

[242]

'खुस्यालचंद्स्य पत्नी' के स्थान में 'खुस्यालचंद्स्य पीपाड़ा गोत्रस्य पत्नी' होना चाहिये। यह लेख विपुल गिरि के मंदिर में है।

[244]

'सा श्री हकु—' के स्थान में 'सा। श्री हकुमतराय—' होना चाहिये।

[256]

'देवराज सं० षीमराज' के स्थानमें 'देवराज पुत्र सं० षीमराज' होना चाहिये।

संशोधित पाठ।

[257]

॥ ओँ सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ खरतर गणेश श्री जिनचंद्रसूरि विजयराज्ये तदादेशे .... श्री कमलसंयमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिनचन्द्र सूरि पादुके प्र० का० श्रीमाल वं० नीपू पुत्र ठ० ठीतमल श्रावकेण श्री वैभार गिरौ मुनि मेरुणा लि० ॥

यह चरण गांव के मंदिरमें है।

[258]

॥ सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ श्री जिनचंद्र सूरीणामादेशेन श्री कमलसंयमोपाध्यायैः धनाशालिचन्द्रमूर्त्ति ॥ प्र० का० ठ० ठीतमल श्रावकेण।

[268]

"पत्नी महाकुमा—तस्या" के स्थान में "पत्नी महाकुमार्या तस्या" होना चाहिये।

पटना।

शहर मंदिर।

संशोधित पाठ।

[323]

॥ संवत १५४७ वर्षे वैसाष शुदि ३ मुलसंघे भट्टारक जी श्री जिनचन्द्र देवा साह् जीवराज पापडिवाल नित्य प्रणमति सर मंगासा श्री राजा सिवसिंघ जी रावल....।

[324]

संवत १५४७ वर्षे वैसाष सुदि ३ मुलसंघे भट्टारक श्री जिनचंद्र देवा सा० जिवराज पापडिवाल सहर मंगासा श्री राजा सिवसघंजी रावल....।

दिगंबरी मंदिर—घीया तमोली गली, सिटी।

श्वेत पाषाण की मूर्त्ति पर।

[1859]

॥ सं० १४९९ वर्षे फाल्गुण वदि २ श्री संडेर गछे ऊ० साह् कंल्हा भार्या कस्तुरी पुत्र श्री देपाल भा० देवल दे पुत्र मोकल सहितेन श्री शीतल बिंबं का० प्र० श्री शांति सूरिभिः॥

पटना—म्युज़ियम।

संशोधित पाठ।

[555]

सम्वत्। १८७४। वर्षे शाके १७३९। प्रवर्त्तमाने। शुभ ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे पंचम्या तिथौ। सोमदिने श्री व्यवहार गिरि शिखरे श्री॥ शांति जिन चरणान्प्रतिष्ठितं च। श्री जिनहर्ष सूरिभिः।

[734]

॥ सं। १९११ व। सा। १७७५....शुचिः। शु। १० ति। श्री शांति जिन पादन्यासो प्र। खरतर गच्छ भट्टारक श्री महेन्द्र सूरिभिः का। से। श्री उदेचंद भार्या माहा कुमार्य्य श्रे०॥
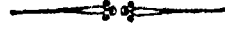
बनारस।

पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1860] *

(१) ॐ संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ गुरौ (२) श्रीमाल वंशे [ढोर] गोत्रे ठ०
(३) सं० उढरव अजीतमल्ल भार्याया (४) पुत्र.........
(५) श्री सुमति नाथ बिंबं का० (६) प्रति० श्री जिनचंद्र सूरि...
(७) श्री जिनतिलक सूरिभिः प्रतिष्ठितं॥

[1861] *

(१) ॐ स्वस्ति संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ पुष्यनक्षत्र गुरौ श्रीमालवंशे ढोर गोत्रे सोवनपाल भार्या......
(२) ....आदिनाथ................
(३) खरतर ग० श्री जिनहर्षसूरि संताने श्री जिनतिलक सूरि प्रतिष्ठितं

[1862] *

(१) [नर] पाल भार्या। महुरी पुत्र ठ० भरतपाल....
(२) सं० उडरव अजितमल्ल....

श्याम पाषाण की छोटी मूर्त्ति पर।

[1863] *

सं० १३७२ वैसाख वदि......

काले पाषाण की टूटी परकर के बांये तर्फ

[1864] *

(१) ....ज्येष्ठ सुदि १३ शुक्र वासरे । व० के....

(२) ....। बिंबं कारितं ।

[1865] *

(१) ॥ ओँ ॥ सं० १५०३ वर्षे माघ वदि ६ दिने श्रीमाल वंशे नांदी गोत्रे सं० नरपाल भार्या मदु-

(२) री कारितं श्रीमहावीर बिंबं । श्री खरतर गच्छे प्रतिष्ठितं श्रीजिनसागर सूरिभिः ॥

मूलनायकजी पर ।

[1866]

सं० १९१० शाके १७०३ मिती आषाढ कृष्ण २ श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जिन बिंबं प्रतिष्ठिता कृता बृहत् खरतर भट्टारक गणेश जङ्गम यु० प्रधान भट्टारक श्री जिनमुक्ति सूरिभिः कारिता च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज दीपचन्द्रेन स्वश्रेयोर्थ सोम वासरे ॥

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1867]

सं० १९१० शाके १७०३ मिती आषाढ कृष्ण २ सोमे श्रीवर्धमान जिन बिंबं प्रतिष्ठा कृता बृहत् खरतर भट्टारक गणेश जं० यु० प्रधान श्री जिनमुक्ति सूरिभिः कारित च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्र पौत्र मनोरथचन्द्र श्रेयोर्थमिति ।

[1868]

सं० १९१० शाके १७०३ मिती आषाढ कृष्ण २ सोमे श्री ऋषभ देव जिन बिंबं प्रतिष्ठा

* ये मूर्त्तियां हाल में जौनपुर से डेढ़ कोस पर गोमती के किनारे खेत से मिली हैं। बाबू शिखरचंद जी जौहरी ने लाकर अपने बनारस के मंदिर में रखी हैं।

कृता बृहत् खरतर भट्टारक गणेश जं० यु० प्रधान श्री जिनमुक्ति सूरिभिः कारिता च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज फूलचन्द्र श्रेयोर्थमिति ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[1869]

सं० १८९७ फा० सु० ५ श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्र० श्री जिनमहेन्द्रसूरिणा कारिता नाहटा लक्ष्मीचन्द्र तत् भार्या लक्ष्मी बीबी विधत्ते ।

[1870]

सं० १८९७ फा० सु० ५ श्री सुपार्श्व बिंबं प्र० श्री जिनमहेन्द्र सूरिना का० बा० लक्ष्मीचन्द्र पुत्री नानकी नाम्ना बुद्धोत्तम श्री कुशलचन्द्र गण्युपदेशतो बृहत् खरतर गछे ।

[1871]

सं० १०२० फा० सु० २ बुधे प्रतापसिंहजी भार्या महताब कुंवर कारितं श्री चन्द्रप्रभ श्री सागरचन्द्र गणि प्रतिष्ठितं ।

सिद्धचक्र पर ।

[1872]

सं० १९१८ आषाढ कृष्ण २ सोमे श्री सिद्धचक्र प्रतिष्ठितं ज० यु० प्र० भ० श्री जिन मुक्ति सूरिभिः कारितं च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज दीपचन्देन स्वहितार्थं ।

देहली।

लाला हजारीमलजी का घरदेरासर।

देवी की मूर्त्ति पर।

[1873] *

(१) संवत् ११२५ श्री
(२) पद्मासरीय (!) गच्छे
(३) श्रीमल्लवादि संताने
(४) चेल्लकेन विरोल्या कारिता ॥

चीरेखाने का मंदिर।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1874]

सं० ११९९........।

[1875]

सं० १२३४ आषलू वदि २ सनौ ज्ञातृ लीवूंदेव श्रेयोर्थं नागदेवेन प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता मल्लवादि श्री पूर्णचंद्र सूरिभिः।

[1876]

सं० १४६१ वर्षे माघ सुदि १० नाहर वंशे सा० षेता पु० सा० तोला भार्या तिहुणश्री पु० हेमा धर्म्मभार्य्यां पितृव्य श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री धर्म्मघोष गच्छे श्री मलयचंद्र सूरिभिः ॥ गिर....ग।

[1877]

संवत् १७०३ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३........।

[1878]

सं० १७७५....वदि ७ श्री ऋषभानन........।

* यह लेख १२ वीं विद्यादेवी की धातु की मूर्त्ति के पृष्ठ पर खुदा हुआ है। देवी की मूर्त्ति सुखासन में बैठी हुई सर्प-वाहन चार हाथवाली प्राचीन है।

चौवीशी पर।

[1879]

संवत् १५५३ वर्षे वैशाष सु० ३ बुधे श्री हुंबड ज्ञातीय सा० देवा ज्ञा० रामति सु० जेई-आकेन ज्ञा० माणिकदे सु० डाहीयानाथ पु० स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारितं प्र० श्री बृहत्तपा पक्षे ज्ञ० श्री उदयसागर सूरिभिः॥ गिर...ग।

जोधपुर

राजवैद्य ज्ञ० श्री उदयचंद्रजी का देरासर।

पंचतीर्थी पर।

[1880]

संवत् १५१६ बै० सु० ५ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० मोषसी टमकू पु० जाणा हरखु पु० पुंजा रषसा० पाहु प० जिनदत्त युतेन श्री संजव बिं० कारितं प्र० श्री तपा रत्नशेखर सूरिभिः।

जसोल (मारवाड़)।

पीले पाषाण की मूर्ति पर।

[1881]

॥ सं० १५३३ वर्षे ज्येष्ठ सु० १०.....श्री महावीर बिंबं.....खरतर श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

पंचतीर्थियों पर ।

[1882]

संवत् १४७६ वैशाष वदि २ श्री ऊकेशवंशे डाजहड़ गोत्रे सा० षेता पु० आसधर पु० करमा भा० कूरमादे पु० भारमलेन भा० भरमादे पु० सहणा सादा यु० श्री आदिनाथ बिंबं कारितं आत्मश्रेयसे प्रति० श्री पल्लीवाल गच्छे श्री यशोदेव सूरि (भिः) ।

[1883]

॥ संवत् १५१७ वर्षे माघ वदि ५ दिने श्री ऊकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने श्री उप-केश ज्ञातौ चिंचट गोत्रे सं० दादू पु० सं० श्रीवरस पु० सुललित भा० ललतादे पु० साहण-केन भा० संसार दे युतेन पितरौ श्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1884]

सं० १५१९ माघ सु० शुक्रे प्रा० व्य० मीचत भा० नासल दे पुत्र सूचाकेन भा० चांपू माल्ही पु० मेरा तोलादि युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा श्री लक्ष्मी-सागर सूरिभिः ॥
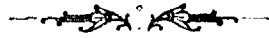
नाकोड़ा ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

पीले पाषाण के चरण पर ।

[1885]

संवत् १५२५ वर्षे वैशाष वदि ५ दिने श्री वीरमपुरे श्री खरतर गच्छे श्री कीर्तिरत्न सूरिणां स्वर्गः ॥ तत्पादुके संखवालेचा गोत्रे सा । काजल पुत्र सा० त्रिलोकसिंह षेतसिंह जिणदास गउडीदास कुसलाकेन करापितं । सं० १६३१ वर्षे मगसर सुदि २ दिने प्रतिष्ठितं ॥

पंचतीर्थियों पर।

[1886]

सं० १४०५ वैशाष सुदि ३ ऊएस ज्ञातीय गाजहड़ गोत्रे सा० गणधर जार्या बलनू पुत्र मोहण जयताकेन पित्रो श्रेयसे श्री आदिनाथः कारितं प्रति० श्री अजयदेव सूरिजिः।

[1887]

सं० १५१३ वर्षे माघ मासे ऊकेश वंशे सा० बल्हा जा० सूल्ही पुत्र सा० बाहड़ जा० गउरी सुत डूंगर रणधीर सुरजनैः रणधीर श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री यशोदेव सूरिजिः॥ गाजहड़ गोत्रे॥

[1888]

ओँ संवत् १५३६ वर्षे श्री कीर्तिरत्न सूरि गुरुज्यो नमः सा० जेगा पुत्र रोहिनी प्रणमति॥
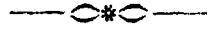
बाड़मेर–मारवाड।

पार्श्वनाथजी का मंदिर।

[1889]

सं० १६६५ वर्षे ऊकेश वंशे सा० गकुरसी कु० प्र० क..... प्रमुख श्री संघेन उ० श्री विद्यासागर गणि शिष्येण श्री विद्याशील गणि शिष्य वा० श्री विवेकमेरु गणि शिष्य पं० श्री मुनिशील गणि नित्यं प्रणमति। श्री अंचल गछे।

उदयपुर।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर–सेठों की बाड़ी में।

पचतीर्थियों पर।

[1890]

॥ सं० १५०६ वर्षे मा० वदि ५ दिने श्री संडर गछे उप० ज्ञा० सा० आसा पु० सात जा० षेठी पु० षितमा जा० धारू पु० जाषर जा० लाडी पु० पामा स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री यशोजद्र सूरि संताने गछेशैः श्री शांति सूरिजिः॥

[1891]

॥ संवत् १६२७ वर्षे वैशाष सुदि ११ बुधे नारदपुरी वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय सा० टीला सुत सा० चूनाख्येन भार्या बाई पानु सुत लाधा हीता प्रभृति कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री हीरविजय सूरिभिश्चिरं नन्दतात् ॥

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर—हाथीपोल।

पंचतीर्थी पर।

[1892]

॥ सं० १३४२ ज्येष्ठ शु० ए गुरौ गेपुत्रीवाल(?) ज्ञातीय व्यव० पुनाकेन भार्या ..श्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं का० प्र० श्री सुमति सूरिभिः ॥

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर—कसेरी गली।

पंचतीर्थियों पर।

[1893]

॥ सं० १५०१ वर्षे आषाढ सुदि ५ उपकेश ज्ञातीय....श्री आदिनाथ बिंबं का०....

[1894]

॥ सं० १५३३ वर्षे वैशाष सु० ५ शुक्रे श्रीमाल ज्ञा० व्य० मेला भा० ऊबकू सुत मुधाकेनपितृमातृभ्रातृ श्रेयोर्थं आत्मश्रेयसे श्री सुमति नाथ बिंबं का० प्र० श्री नागेंद्र गच्छे श्री गुणदेव सूरिभिः ॥ वडेचा सषवाराही ग्रामे वास्तव्य ॥

[1895]

॥ संवत् १५५ए वर्षे आषाढ सुदि ७ दिने डूगड़ गोत्रे भार्या सिरिया पुत्र करमसी भार्या फुल्ला धरमाई पुत्र षीमपाल नरपाल नरपति मानृ श्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री वृहद्गच्छे भ० श्री श्री वयर सूरिभिः ॥

[1896]

॥ सं० १५७१ वर्षे चैत्र वदि ३ बुधे ऊकशे वंशे वईताला गोत्र सा० तोला जा० डोडी पु० सा० आसाकेन जा० राना दे पु० जीवा द्वितीय जा० छचला दे पुत्र गोल्हा पदमादि परिवार युतेन स्वपुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतर गछे श्री जिनहर्ष सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥ पं० कुशल....सुप....।

श्री गौतमस्वामी की धातु की मूर्त्ति पर।

[1897]

॥ सं० १६२५ व० का० सु० ३ गुरुवारे...सरताण...श्री गौतमस्वामि बिंबं का०..।

धातु के यंत्र पर।

[1898]

॥ सं० १९१२ वर्षे मिती आसोज सुदि १५ शुक्रे मेदपाट देशे उदयपुर ओशवंशे वृद्धिशाखायां गोत्र बोल्यां साहाजी श्री एकलिंग दासजी तत्पुत्र साहाजी श्री जगवान दासजी तत्पुत्र कुंवरजी श्री......श्री सिद्धचक्र यंत्र कारापितं जट्टारक श्री आनन्द सागर सूरि कारापितं बृहत्तपा गछे।

श्री ऋषजदेवजी का मंदिर—सेठों की हवेली के पास।

मूलनायकजी पर।

[1899]

(१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति श्री ऋद्धिवृद्धि जयौ। मंगलाभ्युदय श्री ॥ अथ संवत्सरेस्मिन् श्री मन्नृपति विक्रमार्क्क समयातित संवत् १६९९ वर्षे श्री शालिवाहन राज्यात् शाके १५६४

(२) ॥ प्रवर्त्तमाने उत्तरगोले माघ मासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री रामगढ दुर्गे महाराजाधिराज महाराव श्री हर्नासिंघ जी विजयराज्ये ऊपकेश वंशे बृद्धि शाखा

(३) श घांघ गोत्रे साह श्री माल्हण तत्भार्या सरूप दे तत्पुत्र संघवि श्री कान्हजि तस्य वृद्धि भार्या दीपां लघु भार्या सूषम दे पुत्र चिरंजिवी पुन्यपाल सहितेन श्री प्रासाद् बिं

(४) बं ॥ श्री ऋषभदेव बिंबं स्थापितं प्रतिष्ठितं मलधार गछे भट्टारिक श्री महिमा सागर सूरी तत्पट्टे श्री कल्याणसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं धर्माचार्य विजामति श्री उदय सागर सूरिः । शुभं ।

पंचतीर्थियों पर।

[1900]

॥ ॐ ॥ सं० १४९९ वर्षे फा० सुदि २ दिने ओसवाल ज्ञातीय सा० ऊऊण पु० सा० भुदा सुश्रावक भार्या रतनु तत्सुतेन सा० सोमाकेन पुत्र देवदत्त जगमालादि सहितेन श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं खरतर गछे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1901]

॥ सं० १४९९ माह सुदि ६ सोमे उ० ज्ञा० गूंदोचा गोत्रे सा० लाषा भा० लाषण दे पु० मेहाकेन भा० मयणल दे पु० षित्रपाल रणपालादि सह भाई षेता भा० षेतल दे निमित्तं सुमतिनाथ का० प्र० चैत्र गछे श्री मुनितिलक सूरि गुणाकर सूरिभिः ॥

[1902]

॥ संवत् १५२९ बर्षे वै० व० ४ शुक्रे प्रा० ज्ञातीय प० चांपसी भा० पोमादे सु० सांगाकेन भा० दई सुत करण भ्रा० सहसादि कुटुंबयुतेन स्वमातृपितृश्रेयसे कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । ऊड़उलि ग्राम वास्तव्यः ॥

चौवीशी पर।

[1903]

॥ सं० १५११ व० आषा० व० ८ श० उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे धाधू शा० सा०

भाया भा० भांब श्री पु० सुवर्णपाल भार्या सोमश्री पुत्र सा० भाश्रा केन भा० अधकू पु० सदरथ सूरचंद्र हरिचंद्र युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं उपकेश ग० ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभि ॥ श्रीः ॥

प्रतिमा पर ।

[1904]

॥ सं० १९१९ रा मिगसर सु० १० उसवाल फागा गोत्रे सा० लिषमीदास जी भार्या अनरुप दे पुत्र नाथजी अनरुप दे जी पंच पर....प्रतिष्ठितं ।

करेडा-मेवाड ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[1905] *

(१) ओं देव धर्म्मोयं सुमति गुरोः मध्यम शाखस्य
(२) वसति का० देवसूरि संवतु ....
(३) भिः

[1906]

सं० १६०४ व० ज्येष्ठ व०...वा कहानी (?) श्री कुंथुनाथ व जि...दान...सरवत्र खत सोनी सीदकरण

[1907]

॥ संवत् १६१९ वैशाख सुदि ६ श्री आदिनाथ......श्री विजयदान सूरि प्र० वा० ....पु० ना० सुंदर......।

---

* संवत् के अंकों का स्थान टूट गया है, परन्तु लेख के अन्य अक्षरों से स्पष्ट है कि प्रतिमा बहुत प्राचीन है ।

[1908]

॥ सं० १६३२ व० वैशाख सुदि १२ बो श्री शीतलनाथ बिंबं गुरू श्री विजय सूरिभिः ॥

[1909]

॥ सं० १६४६ असा० सुदि ६ वाजसा श्री धर्म......

[1910]

॥ संवत् १७१० वर्षे ज्येष्ठ सित ६ गुरौ श्री सुविधि बिंबं श्रेयोर्थं का० प्र० ज० श्री विजयराज सूरिभिः श्रा० कनका ज० श्री विजय सेन सूरिभिः ॥

पंचतीर्थी पर ।

[1911]

॥ सं० १५०९ वर्षे माघ सुदि ५ शुक्रे प्राग्वाट वंशे सं० कर्मट जा० माजू पु० उधरणेन जार्या सोहिणि पुत्र आल्हा वीसा नीसा सहितेन श्री अंचल गच्छेश श्री जयकेसरि सूरि उपदेशेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य स्वामी बिंबं कारितं प्र० श्रीसंघेन ॥

[1912]

॥ सं० १५१६ वीरम ग्रामे श्रे० वीठा सोनल पुत्र श्रे० जुडसिकेन जा० संपूटी पुत्र धन्ना वाघा जार्या झांझ प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छ नायक श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥

[1913]

॥ संवत् १५२९ वर्षे फागुण सुदि २ शुक्रे श्री श्री (?) वंशे रत्नोड़्या गोत्रे श्रे० गुहा जार्या रंगाई पुत्र श्रे० देधर सुश्रावकेण जा० कुंवरि भ्रातृ सीधा युतेन श्री अंचलगच्छेश्वर श्री जयकेसरि सूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयोर्थं श्री शांति नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥ श्री पत्तन नगरे ॥

[1914]

॥ संवत् १५४१ वर्षे वैशाख मासे नागर ज्ञाती श्रे० केल्हा जा० मानूं सुत चांगा भार्याकेन सुत हरखा चांगा बाला सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंब का० प्र० बृद्ध तपापक्षे भ० श्री जिनरत्न सूरिभिः ॥

[1915]

॥ संवत् १५०७ वर्षे माघ सुदि ७ गुरौ उपकेश ज्ञा० सा० हापा पु० बिजा भा० बइजल दे पु० ठाकुर रीडा ठाकुर भा० अजवा दे पुत्र कुंरपाल युतेन आत्मश्रे० पित्रोः पु० श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्र० श्री० बृ० वो० श्री मलयहंस सूरिभिः ॥ कईउलि वास्तव्य ॥

रंगमंडप के बांये तर्फ आले के नीचे का शिलालेख।

[1916]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत् १३३४ वर्षे वैशाख सुदि ११ शुक्रे श्री आंचल गच्छे । प्राग्वाट ज्ञातीय महं साजण महं तेजा .... सा झांझणेन निज मातृ

(२) ...... कपूर देवी श्रेयोर्थं रवनक (?) श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं ॥ संताने महं मंडलिक महं माला महं देवसीह महं प्रमत्तसीह .....

सभामंडप में दरवाजे के दाहिने स्तंभ पर।

[1917]

॥ ॐ ॥ संवत् १४६६ वर्षे चेत्र सुदि १३ सुविहित शिरोरत्न शेखर श्री रत्नशेखर सूरि पट्टांबुधि पूर्णचंद्र श्री पूर्णचंद्रसूरि गुरुक्रम कमलहंसाः श्री हेम हंससूरयः सपरिकरा करः...

सभामंडप के २ मजले के स्तंभ पर।

[1918]

श्री जिनसागर सूरि उदयशील गणि आज्ञासागर गणि क्षेमसुंदर गणि मेरुप्रभ मुनि श्री ......

बावन जिनायलमें पंचतीर्थीयों पर।

[1919]

॥ सं० १२४९......लषमिणी श्रेयोर्थं पुत्र उधरणेन जात्रि आसधर श्रेयोर्थं श्री पार्श्व-नाथ बिंबं कारितं ॥

[1920]

ॐ संवत् १२६२ ज्येष्ठ सुदि १० शनौ बायट ज्ञातीय स्वसुर नायक आसल श्रेयोर्थं ......श्री श्रेयांस बिंबं कारितं। श्री नागेन्द्र गच्छे श्री वर्द्धमान सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

[1921]

संवत् १३२१ वर्षे फागुण सु०.... भा० घाटी पु० ऊदा भा० रुपिणि सुत आसपालेण माता पिता पूर्वज श्रेयोर्थं चतुर्विंशति पट्टः कारितः श्री चैत्रगच्छीय श्री आमदेव सूरिभिः श्री शांतिनाथ ......।

[1922]

सं० १३५५ श्री ब्रह्माण गच्छे श्रीमाल ज्ञातीय रिज पूर्वज श्रेयसे सुत मालाकेन श्री आदि नाथ बिंबं प्र० श्री विमल सूरिभिः।

[1923]

सं० १३५६ श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री कक्क सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

[1924]

सं० १३७१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० धीना भार्या देवल पुत्र चकूजा केन मातृ पितृ श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्री पूर्णिमा गच्छे श्री सोमतिलक सूरि उपदेशेन बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः॥

[1925]

सं० १३७३ वैशाख वदि ११ श्रे० सिरकुंथ्यार भा० सींगार देव्या प्र० सा लू ...... श्री महावीर कारितं।

[1926]

संवत् १३ए१ मा० सु० १५ खरतर गछीय श्री जिन कुशल सूरि शिष्यैः श्री जिन पद्म सूरिभिः श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा प्रतिष्ठिता कारिता च भव० बा.हि सुतेन रह्मसिंहेन पुत्र आल्हादि परिवृतेन स्वपितृ सर्व पितृव्य पुन्यार्थं ।

[1927]

सं० १४०७ व० सु० ५ प्रा० रोस्तरा पदम । साहूक साकल श्रे० देवसीहेन का० प्रति० सिद्धान्तिक श्री माणचन्द्र सूरि ।

[1928]

सं० १४२२ व० ज्येठ सु० ११ बुधे......मंडलिक जा० माल्हण दे सुत धाणा श्रेयोर्थं व्य० षानाकेन श्री संभवनाथ बिंबं का०...तपा गछे श्री रत्नशेखर सूरीणामुपदेशेन .....

[1929]

सं० १४३ए माह वदि ७ श्रीमाल ज्ञा० व्यव० राणासीह जा० लखती पुत्र बयरा केन श्री सुमतिनाथ बिंबं का० श्री विजयसेन सूरि पट्टे....

[1930]

सं० १४३१ वर्षे माघ सुदि ......श्री मुनिसुव्रत बिंबं का० प्र० कठोलीवाल गछ श्री संघतिलक सूरि....

[1931]

सं० १४०२ वर्षे....साहलेचा गोत्रे सा हांपा....जा० गयणल दे पुत्र सा० झींबा जा० वीरणी पुत्र वरहेयेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री श्रेयांस बिंबं का० प्र० श्री पल्लीकीय गछ श्री यशोदेव सूरिभिः ।

[1932]

ॐ सं० १४ए१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे श्रीमाल वंशे वहगटा गोत्रे सा० ऊदा पुत्र सा० जगकेन आसा जूसा सहसादि पुत्रयुतेन पुन्यार्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गछे श्री जिनसागर सूरिभिः ।

[1933]

सं० १४९३ व० वै० सु० ५ श्री संडेर गच्छे पीपलउडेचा गोत्रे श्रे० जा० सा० कान्हा जा० वोमणि पु० रतनाकेन पित्रौ निमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० श्री जशोभद्र सूरि संताने श्री शालि .....।

[1934]

सं० १५०३ व० ज्ये० सु० ११ शु० श्री उप० ग० ककुदाचार्य सं० त्रिपड गो० सा० जीऊण पु० रामा जा० जीवदही पु० जिलाकेन पत्नीपुत्रस्वश्रे० श्री श्रेयांस बिं० का० ......।

[1935]

सं० १५०८ मा० व० १३ उकेश सं० सारंग सुत संजा जा० हेमा दाणा डुंगर नापा सं० रावा जा० पोबू सुत साहस जहाए जा० लक्ष्म्या श्री संभव बिंबं का० प्र० श्री उदयनंदि सूरिभिः।

[1936]

संवत् १५१३ वर्षे वैशाख सुदि २ सोमे उपकेश ज्ञा० कस्याट गोत्रे। सा० धाना जा० ससमादे पुत्र सा चउसीडाकेन पितर वालू निमित्तं श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० उपकेश० कुल श्रावक ......।

[1937]

सं० १५१७ वर्षे चैत्र वदि १ शुक्रे श्रीश्रीमाल ज्ञा० ......सु० बडूआस पुत्र पौत्र सहितेन श्री अजितनाथ मु० जिवितस्वामि प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे श्री राजतिलक सूरिणा-मुपदेशेन।

[1938]

सं० १५२१ वर्षे मार्ग० सु० ९ आगर वासि प्राग्वाट सा० वाघा जा० गाऊ पुत्र सा० मालाकेन जा० आल्हू पुत्र पर्वत जा० नाई प्रमुख कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुंदर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[1939]

सं० १५३....। व० वैशाख सुदि ३ शनौ श्री संडेर गच्छे उ० टप गोत्रे देल्हा भा० देल्हण दे गोरा भा० मल्हा दे पु० आल्हा भा० करमा भा० आनूण दे पु० तोला श्रे० पूर्वज पुन्यार्थं वासुपूज्य बिंबं का०...।

[1940]

॥ संवत् १५३२ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे ऊकेश वंशे जाजा गोत्रे सा० धर्मा भा० धर्मा दे पुत्र सा० काजा सुश्रावकेण भा० भोजा प्रमुख परिवार सहितेन श्री श्रेयांस बिंबं का० प्र० खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1941]

संवत् १५३८ वर्षे ज्येष्ठ सु......माला भा० माला दे सुत केल्हा भा० सिवा सुत पोचकेन स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुंदर शिष्य श्री जयचंद्र सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1942]

संवत् १६३७ वर्षे वैशाख सुदि १३ रवौ श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री नागर ज्ञातीय सा० पना भार्यां कीलादे सुत सा० होसा भार्या वा। हांसलदे नाम्ना श्री आदिनाथ पंचतीर्थी करापितं। श्रीमत्तपा गच्छे भट्टारक प्रभु श्री हीर विजय सूरिभिः प्रतिष्ठितं। शुभं भवतु ॥

[1943]

॥ संवत् १६७५ वर्षे वैशाख सुदि ७ गुरुवासरे......वास्तव्य उकेश ज्ञातीय द० साह थांहसा भा० प्रभा सुता भोथा......सुत हेमा कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनि.... तपा गच्छे भ० श्री हीरविजय सूरि भ० श्री विजयदेव सूरिश्वर.......।

[1944]

संवत् १७७७ माघ सु० ५ गुरुदिने आचार्य श्री क्षेमकीर्तीः तत्पट्टे श्री हेमकीर्ति देवाः

अग्रोतकान्वये साधु राजा जा० हीनाही तयोः पुत्राः साधु कौला चूला कौला जार्या सुनुना तयो पुत्र कील्हा जार्या धंदो पुत्र दासू वस्तुपाल नित्यं प्रणमति ॥

चौवीशी पर ।

[1945]

(१) ॐ संवत् ११४२ मार्ग सु० ७ सोमे श्री सांबदेवा धंमके (?) . . . जासल श्रावक पुत्रि

(२) कया श्रीमत्थसिंकया श्रेयोर्थं चतुर्विंशति पट्टकः कारितः ॥

(३) (बिंबं) शं० बि० . . . . चालू । का० प्र० तपा गच्छे ॥

चौवीसी पर ।

[1946]

॥ सं० १५६५ वै० शु० ८ शनौ श्री नटीपद्र वास्तव्य श्रीश्रीमाल ज्ञातीय सा० कान्हा जार्या फुतिंगदे सुता सा० मेघा जा० बारधाई सुत रूपा षीमादि सकुटुंब युतया सा० राजा जार्या बीमाई सुता राकू नाम्न्या श्री अनंतनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री सोम सुंदरसूरि संताने श्री हेमविमल सूरिजिः ॥

ह्रींकार यंत्र पर ।

[1947]

॥ संवत् १६७९ वर्षे पोस मासे १० दिने श्री वृहत् खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि विजय राज्ये चंदा पूर्ष्यां ओसवाल ज्ञातीय नाहटा गोत्रे सा० सहसराज पुत्र सा० सिंघराज तत्पुत्राः सा० श्री चंद संवतु १ सा० सधारण सा० श्री हंस सा० करसण हासा सधारण जार्या सहयदे सुत तत्पुत्रा सहसकरण सुमति सहोदर शुजकर प्रतिष्ठितं श्रीमत् श्री परानयन सुहगुरुणा ॥ हितं कारापितं ॥

बावन जिनालय की देहरियों के पाट पर।

[1948]

(१) संवत् १०३९ (व) र्षे श्री संडेरक गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री श्यामा (?) चार्या......

(२) ....प्र० भ० श्री यशोभद्र सूरिभिः श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं ॥ न ॥ पूर्व-चंद्रेण कारितं....

[1949]

(१) ॐ संवत् १३०३ वर्षे चैत्र वदि ४ सोमदिने श्री चित्र गच्छे श्री भद्रेश्वर संताने राटउरीय वंशे

(२) श्रे० भीम अर्जुन कडूवट श्रे० बूडा पुत्र श्रे० घयजा धांधल पासड झदादिभिः कुटुंब समेतैः....

(३) थ प्रतिमा कारिता। प्रति० श्री जिनेश्वर सूरि शिष्यैः श्री जिनदेव सूरिभिः ॥

[1950]

(१) ॐ संवत् १३१७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री कोरंटक गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने...

(२) सा० भीमा पुत्र जिसदेव रतन अरयमदन कुंता महणराव मातृ लाछी श्रेयोर्थं बिंबं (कारि)

(३) (ता)। प्रतिष्ठितं। श्री सर्वदेव सूरिभिः ॥

[1951]

(१) ॥ (संवत् १३१७) ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री षंडेरक गच्छे प्रतिबद्ध चैत्यालये श्री यशो भद्र सूरि संताने श्रे० साढ देव पुत्र मह सामंत मह आसपालेन पु० धांधल सा०...

(२).... (श्रे) योर्थं श्री संभवनाथ बिंबं देवकुलिका सहितं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरि शिष्यैः ईश्वर सूरिभिः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

[1952]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत् १३३९ वर्षे फागुण सुदि ८ शनौ नां देवान्वये साधु पजमदेव सुत संघपति साधु श्री पासदेव जार्या षेढी पुत्राश्चत्वारः सा० देहड सा० काजल रतन

(२) गाहड पौत्र जिणदेव दिवधर प्रभृतिजिः देवकुलिका सहितं श्री सुमति नाथ बिंबं का० प्र० वादींद्र श्री धर्म्मघोष सूरि गछे श्री मुनिचंद्र सूरि शिष्यैः श्री गुणचंद्र सूरिजिः ॥ ७ ॥

[1953]

(१) ॥ ॐ नमः ॥ संवत् १३३९ फागुण सुदि ८ शनौ श्री राज गछे साधु नेमा सुत धार सत तनुज साधु नाहड तत्पुत्रास्त्रयो यथा सा० काकढ जार्या नान्ही पुत्र पाल्हा ॥

(२) सा० धर्मसिरि देपाल जार्या देवश्री तथा सा० नरपति पत्नी लखतू द्वि० पत्नी नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाल जार्या हीरा देवी द्वि० हरिसिणि पुत्र महीपाल ॥

(३) देव तृ० हिमश्री सा० कुमरसिंह तथा सा० तेजा जार्या सीलू पुत्र धरणिग पून सीह एतस्मिन्ननुक्रमे पितृ सा० नरपति श्रेयसे सा० हरिपालेन श्री चंद्र ॥

(४) र गछे प्रतिबद्ध श्री पार्श्वनाथ चैत्य देवकुलिका सहितं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० वादींद्र श्री धर्मघोष सूरि पट्टक्रमे श्री आनंद सूरि शिष्यैः श्री अमरप्रज सूरिजिः ॥

[1954]

(१) ॥ ॐ ॥ सं० १३३९ वर्षे फा० सुदि ८ शनौ श्री राज गछे सा० नेमा सुत सा० धार सत सुत सा० गाहड तत्पुत्रास्त्रयो यथा सा० काकढ जार्या नान्ही पुत्र पाल्हा जा० ॥

(२) धर्मसिरि देपाल जार्या देवश्री पुत्र तथा सा० नरपति जार्या लखतू द्वि० नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाल पत्नी हीरादेवी द्वि० हरिसिणि पुत्र महीपा-

(३) ल देव तृ० हेमश्री कुमारसीह तथा सा० तेजा जार्या सीलू पुत्र धरणिग पूनसीह

पुत्रादि धर्म्म कुटुंब समुदये पितृ सा० काकड श्रेयसे सा० पाल्हाकेन श्री

(४) षंडेर गच्छे श्री पार्श्वनाथ चैत्ये देवकुलिका श्री आदिनाथश्च कारितं प्र० वादींद्र श्री धर्म्मघोष सूरि पट्टक्रमे श्री आनंद सूरि शिष्य अमरप्रभ सूरिभिः ॥

[1955]

(१) ॥ संवत् १३०२ वर्षे पौष सुदि ७ रवौ श्री चित्रकूट स्थाने महाराजाधिराज पृथ्वीचंद्र . . . . . .

(२) श्री मालदेव पुत्र श्री वणवीर सत्कं सिलहदार महमद देव सुहड सींह चउंडरा सत्कं पुत्र . . . . . .

(३) दिवं गतं तस्य सत्कं गोमट्ट कारापितं : ॥

[1956]

(१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति ॥ संवत् १४९१ वर्षे ॥ माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचम्यां तिथौ बुधवारे श्रीमाल ज्ञातीय मजठिया गोत्रे सा० गाढ्ढा सा० धाना जा० इल्हा पुत्र सं० हेमराज सं० थिरराज सं० लालू सं० गाइपाल कु . . . . . .

(२) . . . दे पुत्र सा० हेमराज पुत्र समुद्रपाल जार्या . . . . श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनप्रभ सूरि अन्वये । श्री जिनसर्व सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1957]

(१) ॥ ॐ ॥ सं० १४९६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ बुधवारे श्री ऊकेश वंशे नाहट शाखायां । सा० माजण पुत्र सा० व

(२) णवीर पुत्र सा० जोमा । वीसल रणपाल प्रमुख पौत्रादि परिवार सहितेन श्री करहेडक स्थाने श्री पार्श्व

(३) नाथ जुवने श्री विमलनाथ देवस्य देवकुलिका कारापिता ॥ प्रतिष्ठिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सू-

(४) रीणामनुक्रमे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टकमलमार्तंडमंडलैः श्री मज्जिनसागर सूरिभिः
॥ शिवमस्तु ॥

(५) वरसंग देवराज पुन्यार्थः ॥
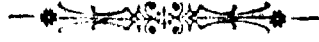
नागदा – मेवाड़।

श्री शांतिनाथ जी का मंदिर।

मूलनायक की श्वेत पषाण की विशाल मूर्ति की चरण चौकी पर।

[1958]*

(१) संवत् १४९४ वर्षे माघ सुदि ११ गुरुवारे श्री

(२) मेदपाट देशे श्री देवकुल पाटक पुरवरे नरेश्वर श्री मोकल पुत्र

(३) श्री कुंभकर्ण नृपति विजयराज्ये श्री ऊसवंसे श्री नवलक्ष शाष मंडन सा० लक्ष्मी

(४) धर सुत सा० लाघू तत्पुत्र साधु श्री रामदेव तद्भार्या प्रथमा मेला दे द्वितीया माल्हण दे। मेला दे कुक्षि संभूत

(५) सा० श्री सहणपाल। माल्हण दे कुक्षिसरोजहंसोपम श्री जिनधर्मकर्पूरवासितसद्धीनुक सा० सारंग तदंगना हीमा दे लखमा दे

(६) प्रमुख परिवार सहितेन सा० सारंगेन निजभुजापार्जित लक्ष्मी सफली करणार्थं निरुपममद्भुतं श्रीमहत् श्री शांति जिनवर बिंबं सपरिकरं कारितं

(७) प्रतिष्ठितं श्री वर्द्धमानस्वाम्यन्वये श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनवर्द्धन सूरि त(स्त)त्पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि त(स्त)त्पट्टपूर्वाचलचूलिका स·

* यह लेख "भावनगर इन्सक्रिपशन्स" पृ० ११२-१३-में और "देवकुलपाटक" पृ० १६ नं० १८ में प्रकाशित हुआ है।

हलकरावतारैः श्री मज्जिनसागर सूरिभिः ॥

(७) सदा वन्दंते श्रीमद् धर्ममूर्ति उपाध्यायाः घटितं सूत्रधार मदन पुत्र धरणा सोम- पुराध सूत्रधारः रोमी सुंरो रुमोवीकाभ्यां ॥ आचंद्रार्क्कं नंद्यात् ॥ श्रीः ॥ ७ ॥

सभामंडप के बायें तर्फ स्तम्भ पर ।

[1959]

(१) संवत् १८७९ वर्षे वैशाष सुदि ११ सोमे साहजी श्री जेठमल जी ताराचंद जी कोठारी जात श्री . . . . साहजी श्री उदेचंदजी . . . .

पाषाण की टूटी चौवीसी पर ।

[1960]

(१) ॐ सं० १४२५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बुधवारे ऊकेश वंशे नवलखा गोत्रे साधु श्री रामदेव पुत्रेण माल्हण देवि पुत्र . . . . . .

(२) कारकेण निजभार्या । जिनशासन प्रभाविकाया हेमा दे श्राविकायाः पुण्यार्थं श्री सप्ततिशतं जिनानां कारितं . . . . . .

(३) तत्पट्टे श्री जिनसागर सूरिभिः ।

देलवाड़ा-मेवाड़ । *

श्री पार्श्वनाथजी का बड़ा मंदिर ।

मूलनायकजी पर ।

[1961]

सं० १४०६ श्री पार्श्वनाथ बिंबं सा० सहणा . . . . . .

---

* यह स्थान प्राचीन है । "देव कुलपाटक" नामकी पुस्तक में लेखों के साथ यहां का वर्णन है ।

पुंडरिकजी के मूर्ति पर।

[1962]

संवत् १६०९ वर्षे आषाढ बहुल ४ शनौ देलवाड़ा वास्तव्य शवर गोत्रे ऊकेश ज्ञातीय वृद्धशाखीय सा० मानाकेन जा० हीरा रामा पुत्र कापा गांगा फपा युतेन स्वश्रेयसे श्री पुंडरीक मूर्तिः कारापितं प्रतिष्ठितं संडेर गछे जा० श्री मानाजी केसजी प्र० ॥

आचार्यों के मूर्ति पर।

[1963]

. . . .

. . . जिनरतन सूरिगुरु मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता . . . .

. . . .

[1964]

संवत् १४०६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ दिने नवलक्ष शाखीय सा० रामदेव जार्यया श्री मेला-देव्या श्री जिनवर्द्धन सूरि मूर्तिः कारिता प्र० श्री जिनचंद्र सूरिजिः।

[1965]

संवत् १४०६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ सा० रामदेव जार्या मेला देव्या श्री द्रोणाचार्य गुरुमूर्तिः कारिता प्र० श्री खरतर गछे श्री जिनचंद्र सूरिजिः।

श्वेत पाषाण की कायोत्सर्ग मूर्तियों पर।

[1966] *

(१) ॥ ए० ॥ संवत् १४९३ वर्षे वैशाख वदि ५ . . . . . यवक प्रासाद गोष्ठिक प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० फांफा जा०

* यह लेख धोरीवाव नामक स्थान में मिट्टी से निकली हुई विशाल मूर्ति के चरण चौकी पर है

(२) लाडि पुत्र दपा नार्या देवल दे पुत्र ३ व्यव ...... कुंरपाल सिरिपति नर दे धीणा पंडित लषमसी आ-

(३) त्मश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ जिनयुगल कारापितः प्रतिष्ठितः कलोलीवाल गच्छे पूर्णिमा पक्षे द्वितीय शाखा-

(४) यां नट्टारक श्री नडेश्वर सूरि संताने तस्यान्वये न० श्री रत्नप्रन सूरि तत्पट्टे नट्टारक श्री सवाण-

(५) द सूरीणा शिष्य लषमसीहेन आत्मश्रेयोर्थं कारापितः प्रतिष्ठितः न० श्री सर्वाणद सूरी-

(६) णामुपदेशेन ॥ मंगलान्युदयं ॥

[1967]

(१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रमादित्य संवत् १५०० वर्षे वैशाष शुदि ३ श्रीमाल-ज्ञातौ मांथलपुरा गोत्रे सा०

(२) देहड़ संताने सा० काला तत्पुत्र सा० मेला केला मेला पुत्र सा० सोमा स० सा-यरकेन पुत्र हुंफण पुत्र

(३) तोला सोमा पुत्र महिपति डुंगर नापर सायर पुत्र बाला पासा हुंफण पुत्र वस्त-पाल त ......

(४) ल रत्नपाल कुमरपाल तोला पुत्र नरपाल नरपति प्रभृति पुत्र पौत्रादि सहितेण

पट्टों पर।

[1968]

सं० १४९४ वर्षे फाल्गुन वदि ५ प्राग्वाट सा० देपाल पुत्र सा० सुहडसी नार्या सुहडा दे पुत्र पीळउलिआ सा० करणा नार्या चनू पुत्र सा० धांधा हेमा धर्मा कर्मा हीरा काला व्रातृ सा० हीसाकेन नार्या लाखू पुत्र आमदत्तादि कुटुंबयुतेन श्री द्वासप्तति जिनपट्टिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री तपागछनायक श्री सोमसुंदर सूरिनिः ॥ श्रीः ॥

[1969]

सं० १५०३ वर्षे आषा० शु० ७ प्राग्वाट सा० देपाल पु० सा० सुहडसी जा० सुहडा दे सुत पीठउलिआ सा० करणा जार्या वनू पुत्र सा० धांधा हेमा धर्मा कर्मा हीरा हांसा काला सा० धर्माकेन जा० धर्माणि सुत महसा सालिग सहजा सोना साजणादि कुटुंबयुतेन एदं जिनपट्टिका कारिता ॥ प्रतिष्ठिता श्री तपागछाधिराज श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री जय चंद्र सूरिजिः ॥

[1970]

सं० १५०६ फा० शुदि ए श० सा० सोमा जा० रूडी सुत सा० समधरेण ज्रातृ फाफा सोधर तिहुणा गोविंदादि कुटुंबयुतेन तीर्थ श्री शत्रुंजयगिरिनारावतार पट्टिका का० प्र० श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

भोंयरे में ।

मूलनायकजी पर ।

[1971]

१४ए४ ऊकेश सा० वाछा राणी पुत्र वीसल खीमाई पुत्र धीरा पत्नी सा० राजा रत्ना दे पुत्री माल्हण देव का० आदि बिंबं प्र० तपा श्री सोमसुंदर सूरिजिः ॥

पट्ट पर ।

[1972]

सं० १४ए५ वै० शु० ३ ऊकेश वंश सा० वाछा जार्या राणा दे पुत्र सा० वीसल पत्न्या सा० रामदेव जार्या मेला दे पुत्रा सं० खीमाई नाम्न्या पुत्र सा० धीरा चयांपा हांसादि युतया श्री नन्दीश्वर पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः तपागछे श्री देवसुंदर सूरि शिष्य श्री सोम सुंदर सूरिजिः स्थापितः तपा श्री युगादि देवप्रासादे ॥ सूत्रधार नरवद कृतः ॥

[1973]

सं० १५०३ वर्षे आषा० शु० ७ प्राग्वाट सा० आका भा० जसल दे चांपू पुत्र सा० देल्हा जूठा सोना पीमाद्यैः चतुर्विंशति जिन बिंबं पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सोमसुंदर सूरि शिष्यैः श्री जयचंद्र सूरिभिः ॥

देहरी में ।

मूलनायकजी पर ।

[1974]

सं० १४९५ ज्येष्ठ सुदि १४ बुधे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं भानसिरि श्राविकया। प्र। श्री जिनसागर सूरिभिः। श्रीमाल ज्ञातीय भांभिया गोत्रे।

पट्टों पर ।

[1975]

सं० १४९५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १४ बुधे श्री ऊकेश वंशे नवलक्षा शाषायां सा० राम भार्या नारिंग दे पुण्यार्थं श्री श्री सिद्धिशिलाकायां श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरिभिः।

[1976]

(१) ॥ संवत् १४९९ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ ॥ ऊकेशवंशशृंगारो भुवन पाल इत्यभूत्। भुवनं पालयत् यः स्वुंनामनिन्ये (?) यथार्थतः ॥ १ ॥ तदन्वये ततो जात ... तक ......

(२) त्यः पृथु प्रतापी ननु रोष तापी। जिनांघ्रिरक्तो गुरुपादलक्तो। गुणानुरागी हृदय विरागी ॥ ४ ॥ युगलकं ॥ तस्यांगना ... ग कुरंगनेत्रा सीतेव ......

(३) धार सहितेन सा० सहणा सुश्रावकेण जिनमातृ पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य बिंबं चतुर्विंशति पट्टक विंशति विहरमानादि ......

[1977]

(१) संवत् १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे नवलक्ष गोत्रे सा० रामदेव जार्या मेला
(२) दे पुत्र सहणपाल जार्या नारिगं देव्या श्री . . . . जिन मूर्ति बिंबानि प्र-
(३) तिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

दरवाजों पर ।

[1978]

(१) संवत् १४९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ गुरुवासरे . . . . . .
(२) . . . .

[1979]

(१) श्री ॥ सं० १४७३ नागपुरे ऊकेश वंशे सा० हीरा जा० धर्मिणि पुत्र्या सरस्वती पत्तनवासि सा० हीरा सुत सा० संग्राम सिंह जार्यया सम्यक्त्वदेशविरत्यादि गुण
(२) युक्तया श्रा० देऊ नाम्न्या न्यायोग(र्जि)तं निजवित्त व्ययेन तपापक्षे श्रीआदिदेवप्रासादे श्रीपार्श्वनाथ देवकुलिका कारिता प्र० गच्छनायक श्रीसोमसुंदर सूरिजिः ।

[1980]

(१) सं० १४७४ वर्षे श्री अणहिल्लपुरवासि श्री श्रीमालज्ञाति सा० समरसी पुत्रेण सा० सोमाकेन संप्रति अहमदावादपुरवासी सजार्या . . . . . .
(२) सुत मो० वाघादि कुटुंबयुतेन श्री तपापक्ष श्री आदिनाथ प्रासादे श्री अजित देवकुलिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री तपापक्षे श्री सोमसुंदर सूरिजिः ॥

[1981]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत् १४७६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ शुक्रे नवलक्ष गोत्रे
(२) सा० रामदेव जार्या मेला दे श्राविकया निजपुण्यार्थं
(३) . . . . . . श्री आदिनाथ प्रासाद कारितं ॥ प्रतिष्ठितं

(४) श्री खरतर गछे श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1982]

(१) ॥ संवत् १४७६ वर्षे कार्तिक सुदि ११ सोमे ॥ ऊकेश ज्ञातीय सा० ठाहड़ भार्या सुषुव दे पु० राना साना सलषाके(न) निज मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ प्रासादे श्री सुमतिनाथ देव प्रतिमा

(२) कारिता ॥ ऊकेश गछे श्री सिद्धाचार्य संताने प्रतिष्ठितं । श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥ छ ॥ श्री ॥ मल्लधारीयकैः ॥

[1983]

(१) सं० १४८८ फा० सु० ७ श्रीमाल ज्ञा० सा० . . . . . .

(२) देवकुलिका कारिता प्रतिष्ठिता तपागछनायक श्री सोमसुंदर सूरि श्री मुनि सूरिभिः ॥ श्री अणहिलपुरपत्तन वास्तव्य

[1984]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत् १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधवारे ऊकेश वंशे श्री नवलखा गोत्रे श्री रामदेव भार्या श्राविका मेला दे पुत्र साधु श्री सहणपाल भार्यया नारिंग दे श्राविकया पुत्र सा० रणमल्ल सा० रणधीर रणभ्रम सा० कर्मसी पौत्रादि सहितया निज पुण्यार्थं जिनानां

(२) . . . .
श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनवर्द्धन सूरि तत्पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि तत्पट्टपूर्वाचल श्रीयुत श्री जिनसागर सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

नये मंदिर में ।

मूलनायकजी पर ।

[1985]

॥ सं० १४९२ वर्षे वैशाख सुदि २ श्री पार्श्वनाथ बिंबं ॥ सा० समुदय वहस्य ॥

कायोत्सर्ग मूर्तियों पर

[1986]

(१) ॥ ॐ ॥ सं० १४६४ वर्षे आषा० शु० १३ दिने गूर्जर ज्ञातीय ठ-

(२) णसाली लाषण सुत मं० जयतल सुत मं० सादा जार्या सूमल

(३) दे सुत मं० वरसिंह भ्रातृ मं० जेसाकेन जार्या शृंगार दे पुत्र

(४) हरिचंद्र प्रमुख सकल कुटुंबसहितेन स्वश्रेयसे प्रजु

(५) श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री सूरिजिः ॥

[1987]

॥ ॐ ॥ संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ गुरुवारे श्रीमाल ज्ञातीय मंत्रि . . . . णं प्रा सुत नंदिगेस । सुत पुत्र सा० आसा सुश्रावकेण श्री पार्श्वनाथ बिंब स्वपुण्यार्थे कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

आचार्यों के मूर्तियों पर ।

[1988]

॥ ॐ ॥ सं० १३७१ वैशाष वदि ५ श्रीपत्तने श्री शांतिनाथ विधि चैत्ये श्री जिनचंद्र सूरि शिष्यैः श्री जिनकुशल सूरिजिः श्री जिनप्रबोध सूरि मूर्तिः प्रतिष्ठिता ॥ कारिता च सा० कुंमरपाल रत्नैः सा० महणसिंह सा० देपाल सा० जगसिंह सा० मेहा सुश्रावकैः सपरिवारैः स्वश्रेयोर्थं ॥ ठ ॥

[1989]

संवत् १४७१ वर्षे माह सुदि ५ बुधे नवलक्ष गोत्रे सा० सहणपालेण स्वपुण्यार्थे श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरीणां मूर्तिः प्र० श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

ऋषभदेवजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1090]

सं० १५१० पौष वदि १० घांघ गोत्रे सा० सारंग जा० सुहागिणि सु० सा० कालू सा० चाहड़ नामाभ्यां पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री मलधारि गच्छे श्री विद्यासागर सूरि पट्टे श्री गुणसुंदर सूरिभिः ॥

[1091]

॥ संवत् १५१५ वर्षे माह वदि ए शुक्रे श्री संडेर गच्छे ऊ० काश्यप गोत्रे सा० षेता पु० षीमा जा० षीमसिरि पु० चुडा जा० जरमी पु० पूजा नयमा वीढा रंगा सहितेन श्री नेमिनाथ बिं० कारितं प्रति० श्री ईश्वर सूरिभिः ॥

[1092]

॥ सं० १५७२ वर्षे वैशाष सुदि पंचमी सोमे । उ० ज्ञा० काठड़ गोत्रे । दो० ऊदा जार्या ऊमा दे पु० दो० रूपा दो० देपा अमर नाथा । रंगा देवा जार्या दाडिम दे पु । पहिराज साल्हा रायमल्ल युतेन सुपुण्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

मूलनायकजी पर ।

[1093]

ॐ ॥ स्वस्ति सं० १४६ए वर्षे माघ . . . . ६ रवौ श्रीमाल वंशे नावर गोत्रे ठ० ऊहड़ संताने श्री पुत्र मंत्रि करम . . . . श्रेयोर्थं लघु भ्रातृ ठ० देपालेन भ्रातृव्य ठ० जोजराज ठ० नयणसिंह जार्या माल्ह दे सहितेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः देवकुलपाटके ।

श्याम पाषाण की पादुका पर ।

[1994]

संवत् १४९१ वर्षे माघ वदि ५ दिने बुधे ऊकेश वंशे नवलखा गोत्रे साधु श्री रामदेव भार्या मेला दे तत्पुत्र साधु श्री सहणपालेन भार्या नारिंग दे पुत्र रणमल्लादि सहितेन देवकुलपाटके पूर्वांचलगिरा श्री शत्रुञ्जयावतारे मोरनाग कुटिका सहिता प्रति० श्री खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि तत्पट्टे श्री जिनसागर सूरिभिः ।

पट्ट पर ।

[1995]

॥ ॐ ॥ संवत् १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ गुरुवारे सा० आंबा पुत्र सा० वीराकेन स्वमातृ आंबा श्राविका स्वपुण्यार्थं ॥ श्री चतुर्विंशति जिन पट्टकः कारितः श्री खरतर गच्छे प्रतिष्ठितं श्री जिनवर्द्धन सूरिभिः ॥

आचार्यों के मूर्तियों पर ।

[1996]

संवत् १४६९ वर्षे माघ शुदि ६ दिने ऊकेश वंशे सा० सोषा संताने सा० सुहडा पुत्रेण सा० नान्हाकेन पुत्र वीरमादि परिवारयुतेन श्री जिनराज सूरि मूर्त्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरिभिः ।

[1997]

सं० १४६९ वर्षे सा० रामदेव भार्यया मेला दे श्राविकया स्वभ्रातृसहलया श्री जिनदेव सूरि शिष्याणां श्री मेरुनंदनोपाध्यायानां मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री जिनवर्द्धन सूरिभिः ॥

श्री पार्श्वनाथजी की बसी।

पंचतीर्थी पर।

[1998]

॥ सं० १२०१ वर्षे आषाढ सुदि १० रवौ श्री देवाजिदित गछे श्री शील सूरि संताने आमण पुत्रेण कनुदेवेन भ्रातृ सुंजदेव श्रेयोर्थं आत्मश्रेयोर्थं च प्रतिमा कारिता।

तपागछ का उपासरा।

पंचतीर्थियों पर।

[1999]

सं० १२९३। गोसा भ्रातृ जेजा भार्या हेमा .... श्रेयोर्थं प्रतिमा कारिता॥

[2000]

सं० १४७४ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ उपकेश वंशे नोसतिकि (?) शाखायां साकू-वाल भा० माल्हण दे लाषाकेन भ्रातृ पुंजा भा० मेला दे .... पितृ श्रे० शांतिनाथ बिंब कारितं प्र० श्री जयप्रभ सूरिभिः।

[2001]

ॐ सं० १४९४ वैशाष वदि ७ बुधे ...... बिंबं कारितं श्री ......।

[2002]

॥ ॐ सं० १५२० वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ शुक्रे ऊ० गूगलिया गोत्रे सा० सूरा भा० सुहमा दे पु० धणपाल भा० लाछल दे ...... हा निमित्तं श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संडेर गछे श्री यशोभद्र सूरि संताने प्रतिष्ठितं श्री शालिभद्र सूरिभिः॥

धातु की मूर्ति पर।

[2003]

सं० १७०२ आषाढ़ सुदि १० श्री ऋषभनाथ बिंबं का० हरषा लोत ......।

DEVALVARHA (MEWAR) INSCRIPTION
Dated, V. S. 1491 (A. D. 1434)

पाषाण की मूर्तियों पर।

[2004]

सं० १४७१ वर्षे माह सुदि ५ बुधे खरतर गच्छे नाग .... मुनिचंद्र शिष्य जयराज गणि पार्श्वनाथ बिंबं ......।

[2005]

सं० १३७७ वर्षे माह सु० १३ श्री प्र ... ल्लू ज्ञा० ... कुंथुनाथ ....।

शिलालेख

[2006]

(१) ॥ ॥ श्रेयः श्रेणिविशुद्धसिद्धलहरीविस्तारहर्षप्रदः श्री मत्साधुमरालकेलिरणिभिः

(२) प्रस्तूयमानक्रमः। पुण्यागण्यवरेण्यकीर्तिकमलव्यालोललीलाधरः सोयं मानससत्सरो

(३) वरसमः पार्श्वप्रभुः पातु वः ॥ १ ॥ गंभीरध्वनिसुंदरः क्षितिधरश्रेणिभिरासेवितः सारस्तोत्रप-

(४) वित्रनिर्जरसरिद्वर्द्धिष्णुसज्जीवनः। चंचज्ज्ञानवितानभासुरमणिप्रस्तारमुक्तालयः सोयं

(५) नीरधिव ... भाति नियतं श्री धर्मचिंतामणिः ॥ २ ॥ रंगद्गांगतरंगनिर्मलयशः कर्पूर पूरोद्धुरा-

(६) मोदक्रोदसुवासितत्रिभुवनः कृत्तप्रमादोदयः। भास्वन्मेचककज्जलद्युतिभरः शेषाहि-

(७) राजांकितः श्री वामेयजिनेश्वरो विजयते श्री धर्मचिंतामणिः ॥ ३ ॥ इष्टार्थसंपादन-कल्पवृक्षः

(८) प्रत्यूहपांशुप्रशमे पयोदः। श्री धर्मचिंतामणिपार्श्वनाथः समग्रसंघस्य ददातु भद्रं ॥ ४ ॥ संवत्

(९) १४९१ वर्षे कार्तिक सुदि २ सोमे राणा श्री कुंजकर्णविजयराज्ये उपकेश ज्ञातीय साह सह·

(१०) णा साह सारंगेन मांडवी उत्परे लागू कीधु । सेलहथि साजणि कीधु अंके टंका चऊद १४ जको

(११) मांन्ववी लेस्यइ सु देस्यई । चिहु जणे बइसी ए रीति कीधी । श्री धर्मचिंतामणि पूजानिमित्ति । सा०

(१२) रणमल महं डूंगर से० हाला साइ साडा साह चांप बइसी विहु रीति कीधी एह बोल

(१३) लोपवा को न लहइं । टंका ५ देउलवाडानी मांडबी ऊपरि टंका ४ देउलवाडाना मापा उप

(१४) रि । टंका २ देउलवाडाना मण हुंड वटा उपरि । टंका २ देउलवाडाना षारी वटां ऊपरी ।

(१५) टंकाउ १ देउलवाडाना पटसूत्रीय ऊपरी ॥ एवं कारई टंका १४ श्री धर्मचिंतामणि पूजा

(१६) निमित्ति सा० सारंगि समस्त संघि लागु कीधउ ॥ शुभं जवतु ॥ मंगलाभ्युदयं ॥ श्रीः ॥

(१७) ए आसु जिको लोपइ तहेरहिं राणा श्री हमीर राणा श्री षेता राणा श्री लाषा रा० मोकल

(१८) राणा श्रीकुंजकर्णनी आणलइ। श्रीसंघनी आण। श्रीजोराउला श्रीशत्रुंजयतणा सम ॥

देवी मूर्ति पर।

[2007] *

॥ सं० १४९८ वर्षे मार्ग शु० १० दिने मोढ ज्ञातीय सा० वउहत्थ जार्या साजणि सुत मं० मानाकेन अंबिका मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री . . . . . . रिजिः ॥

* महात्मा श्रीलालजी नाणावाल के यहां मूर्ति है ।

खंडहर उपासरा।

शिलालेख

[2008]

सूर्य   चंद्र

(१) परमात्मने नमः

(२) ॥ ॐ ॥ प्रणम्य श्री सूर्यदेवाय सर्वसुखंकर प्रजो। सर्वलब्धिनिधानस्य तं

(३) सत्यं प्रणमाम्यहं ॥ १ ॥ मेदपाटे गिरो देसे गिरजागिरस्थानयो तां नगरो उ-

(४) त्तमा ज्ञेया देवको प्रमपट्टणौ २ तत्र राज्ञा श्रेयो ज्ञेयाः राघवो राज्य मा-

(५) नयोः षट्दर्शनसदामान्यः श्वेतांबरा अजिश्रियो ३ श्रीमदंचल ग-

(६) च्छेस्था श्री उदयसागर सूरिणा। तस्य आज्ञा कारेण चारित्र रत्न-

(७) गुर प्रजौ ४ शिष्य लक्ष्मीरत्नस्य साधुमुद्धा सदा सुखी। राजधर्म स-

(८) नेहादि जिनमंदिर करापितं ५ कोटिवर्षचिरंजीवो बहुपुत्र-

(९) गजवाजिना अचलं मेरुकर्णोयं राज्यं पालति राघवः ६ जे

(१०) अन्य राजा स्वईवः लोपतो परदत्तयो नरकं ते नरा जाति ज-

(११) स्य धर्मस्य अवृथा ७ सं० १७९८ वर्षे माघ सुदि ५ तिथौ गुरू

(१२) श्री चतुराजी शिष्य कुशलरतन लक्ष्मीरतन उपासरो करा

(१३) यो श्री पुण्यार्थे। श्री राज श्री राघव देवजी वारके देलवाडा

(१४) नगरे श्रीसंघ समस्तां साध अर्थे पं लिखमीरतन चेला हेमरा-

(१५) ज कुपासरो करायो वीजो को रहे जणीहे गाय

(१६) मार्यारो पाप है जती आंचलया टाल रहेवा पावे नहीं

दरवाजे की छतरी पर का लेख ।

[2009]

श्री गणेश . . . रतन चेला हेम . . . कारापितं ॥ साह अषा साह नाराण साह ठाकुरसी साह हेमा साह हमीर साह लुना साह सिवा साह हर . . . साह फतेल साह मेघा साह जोपा साह विरधा कटान्या चतुरा कीथा सगता . . . समसथ श्रावका . . . लषाणा श्री राघवदेवजी बारको मंदिर कारा . . . लक्ष्मीरतन सं० १८०५ माघ सुदि १३ शुक्रे प्रतिष्ठा करावो . . . लक्ष्मीरतन . . . . . . ॥

कलकत्ता ।

श्री आदिनाथजी का देरासर – कुमारसिंह हाल ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2010]

सं० १४६८ वर्षे मागसिर वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय संघ गोवल भार्या माल्हण दे तयोः सुतः महमाइयाकेन श्री सुमतिनाथ स्वामी बिंबं कारापितं श्री जिनहंस गणि श्रेयोर्थं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः उघईज वास्तव्यः ।

[2011]

संवत् १५२७ वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे श्री श्री (माल) वंशे ॥ सं० कर्मा भार्या जासू पुत्र सं० पीमा भार्या चमकू श्राविकया पुत्री कर्माई पुण्यार्थं श्री अंचल गछे श्री जयकेसरि सूरिणामुपदेशेन चंद्रप्रभ स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ श्री पत्तन नगरे ॥
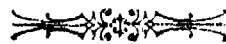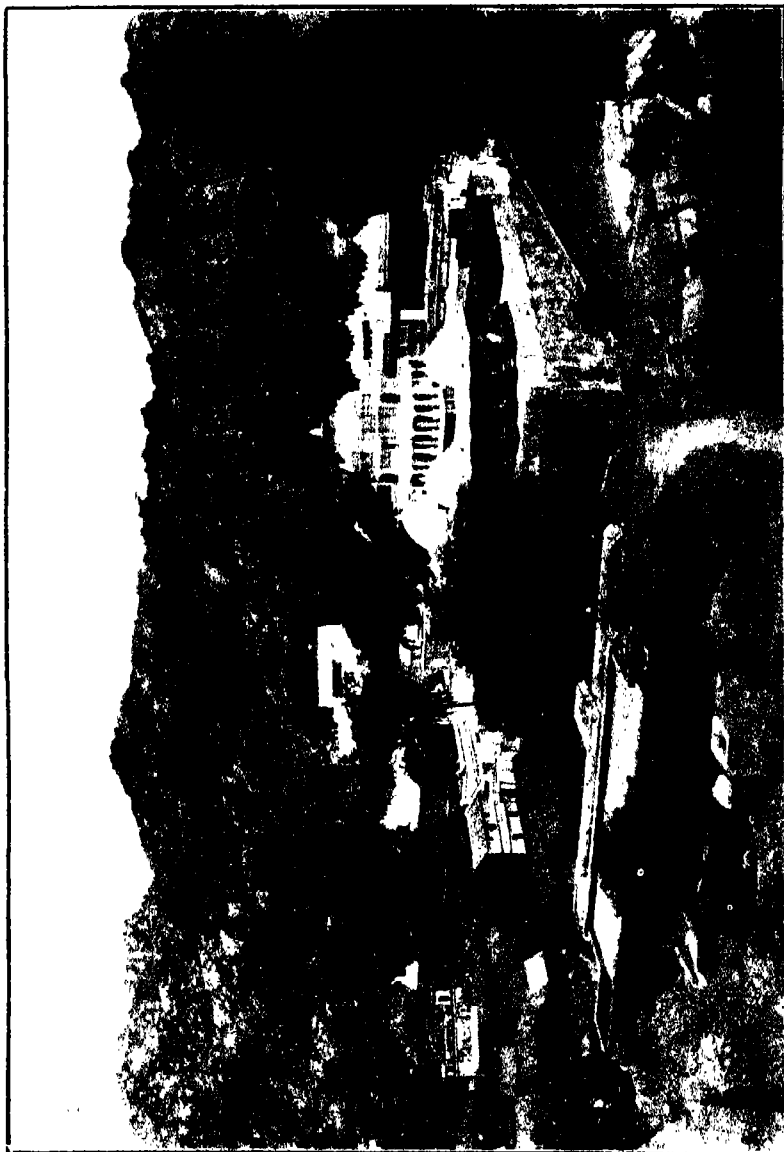
TIRTHA ABU — Dilwara Temples

आबू-रोड।

श्री आदिनाथ जी का मंदिर–धर्मशाला।

पंचतीर्थी पर।

[2012]

सं० १५०९ वै० व० ११ शुक्रे श्री कोरंट गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने। उवएस वंशे। शंखवालेचा गोत्रे श्रे० खुमसी भा० सांसल दे पु० रामा भा० राम दे पु० तेजा नाम्ना स्वमातापित्रोः श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिं० का० प्र० श्री सांबदेव सूरिभिः।

चौवीशी पर।

[2013]

॥ सं० १५२८ वर्षे माघ सुदि १३ गुरौ श्री उदयसागरगुरूपदेशेन श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मेघा भा० माणिकदे सुत श्रे० नाईयाकेन भा० वाल्हा सु० गहिगा राघव गाईया तथा द्वि० भा० नामल दे प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री संभवनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारिताः प्र० श्री बृहत्तपा गच्छे ज्ञानसागर सूरिभिः।

आबू-तीर्थ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर–देलवाड़ा।

पाषाणकी कायोत्सर्ग मूर्ति पर।

[2014]

(१) संवत् १४०९ वर्षे वैशाष मासे शुक्ल पक्षे ५ पंचम्यां तिथौ गु·

(२) रुदिने श्री कोरंट गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने महं कउंरा
(३) भार्या महं कुंरदे पुत्र महं मदन नर पूर्णसिंह भा० पूर्णासि-
(४) रि सुत महं डुङ्गा मं० धांधल मूल मं० जसपाल गेदा रुदा प्रभृति स-
(५) मस्त कुटुंब श्रेयसे श्री युगादि देव प्रसादे महं धांधुकेन श्री जिन-
(६) युगलहृयं कारितं प्रतिष्ठितं श्री नन्न सूरि पट्टे श्री कक्क सूरिभिः ।

धातु की मूर्ति पर ।

[2015]

सं० १५२१ वर्षे वैशाष सुदि १० रवौ सं० रत्ना सं० पन्नाभ्यां श्रीशांतिनाथ बिंबं का० ।

पंचतीर्थी पर ।

[2016]

सं० १४७१ वर्षे माघ सुदि १३ बुधे प्रा० व्य० लषमण भा० रूडी पु० भीलाकेन पित्रो आत्मश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रति० ब्रह्माणीय गच्छे भ० श्री उदयाणंद सूरिभिः ।

चौवीशी पर ।

[2017]

सं० १४७५ प्राग्वाट व्य० डूंगर भार्या उम दे पुत्र व्य० माल्हाकेन भा० माल्हण दे पुत्र कीजा भीनादि युतेन श्री सुपार्श्व चतुर्विंशतिका पट्टः कारितः प्रतिष्ठितस्तपा गच्छे श्री सोमसुंदर सूरिभिः ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर—अचलगढ़ ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[2018]

ॐ सं० १३०२ वर्षे ज्येष्ट सु० ए शुक्रे . . . . ।

TIRTHA ABU.
Carving work on ceiling in Dilwara Temples.

[2019]

सा० धन्ना श्रावकेण श्री आदिनाथ बिंबं कारितं।

[2020]

पं० मांजू श्राविकया श्री सुमतिनाथ कारितं . . . . . ।

[2021]

श्री खरतर गच्छे श्री पार्श्वदेवद्वितीयजूमौ पार्श्वनाथ सा० माला भा० मांजू श्राविका कारितः।

देवी की मूर्ति पर।

[2022]

सं० १५१५ वर्षे आषाढ वदि १ शुक्रे श्री ऊकेश वंशे दरडा गोत्रे सा० आसा भा० सोखु पुत्रेण सं० मंडलिकेन भा० हीराई सु० साजण द्वि० भा० रोहिणि प्र० भ्रा० सा० पाल्हादि परिवार संयुतेन श्री चतुर्मुख प्रासादे श्री अंबिका मूर्ति का० श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

श्री ऋषभदेव जी का मंदिर—अचलगढ़।

पाषाण की कायोत्सर्ग मूर्ति पर।

[2023]

सं० १३०२ वर्षे . . . . . . अमरचंद्र सुरि जयदेव सूरिभिः।

पंचतीर्थी पर।

[2024]

सं० १५२० वर्षे आ० सु० २ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० सा . . . . . . भा० रूपिणि सुत सोमा दे भा० वीकमादि कुटुंबयुतेन श्री मुनिसुव्रतनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री तपागच्छनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

धातु की मूर्तियों पर ।

[2025]

सं० १५१५ फा० सु० ७ शनि रोहिण्यां श्री अर्बुदगिरौ देवड़ा श्री रावधर सायर डूंगरसिंह विजय राज्ये सा० ता भीमचैत्ये गूर्जर श्रीमाल राजमान्य मं० मंडन भार्या जोली पुत्र मं० शूड़ पु० मं० गदाभ्यां भार्या हासी पद्माई मं० मदा भा० आसू पुत्र श्रीरंग वाघादि कुटुंबयुताभ्यां १०८ मन प्रमाण सपरिकर प्रथमजिन बिंबं कारितं तपागच्छनायक श्री सोमसुंदर सूरि पट्टे श्री मुनिसुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरि पट्ट प्रभाकर श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री सुधानंदन सूरि श्री सोमजय सूरि महोपाध्याय श्री जिनसोमगणि प्रमुख । विज्ञानं सूत्रधार देवाकस्य श्री रस्तु । कृतं मेवाड़ ज्ञातीय सूत्रधार मिहीपा भा० नागल सुत सूत्रधार देवा भार्या करमी सुत सू० हला गदा हांपा नाला हाना कलाः सहित व्यापारितः ।

[2026]

संवत् १५२९ वर्षे वैशाख वदि ४ शुक्रे डूंगरपुर नगरे राउल श्री सोमदास वि० रा० तत्प्रधान प्रभावक धुरंदर सा० साभा प्रमुख श्री संघोपक्रमेन . . . . श्री आदिनाथ बिंबं प्र० तपागच्छनायक श्री सोमसुंदर सूरि पट्टे मुनिसुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरि तत्पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरि श्री सोमजय सूरि महोपाध्याय जिनहंसगणि प्रमुख सुदरादि शिष्यै परिवार परिवृतः

[2027]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुन सुदि १० सोमे श्री अचलगढ़ महादूर्गे महाराजाधिराज श्री जगमालविजयराज्ये सं० सालिग सुत सं० सहसा कारित श्री चतुर्मुखविहारे भद्रप्रासादे श्री सुपार्श्व बिंबं श्री संघेन कारित प्र० तपागच्छ श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री कमलकलस सूरि शिष्य श्री जयकल्याण सूरिभिः भ० श्री चरणसुंदर सूरि प्रमुख परिवार परिवृतैः श्रीरस्तु श्री संघस्य सूत्रधार हरदास ॥
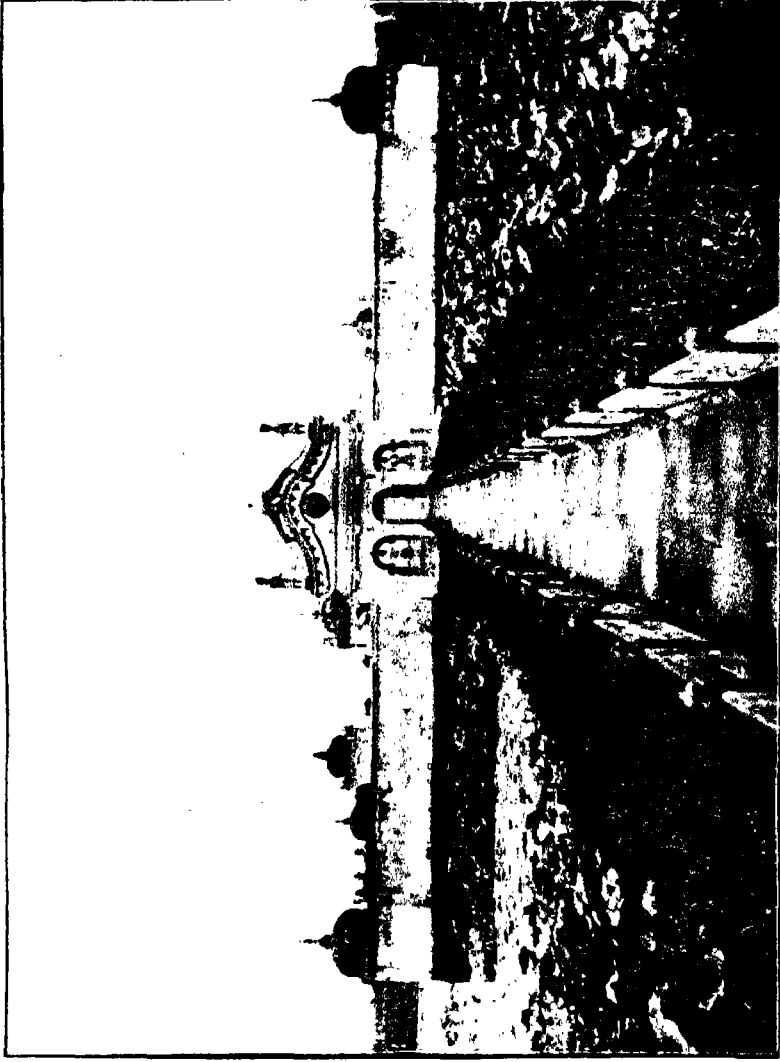
TIRTHA PAWAPURI--JALAMANDIR.
(Front View)

[2028]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुन सुदि १० सोमे श्री अचलगढ़ महादूर्गे महाराजाधिराज श्री जगमालविजयराज्ये सं० सालिग सुत सं० सहसा कारित श्री चतुर्मुखविहारे जङ्‌प्रासादे श्री आदिनाथ बिंबं श्री संघेन कारित प्र० तपागच्छ श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री कमलकलस सूरि शिष्य श्री जयकल्याण सूरिभिः उ० श्री चरणसुंदर सूरि प्रमुख परिवार परिवृतैः श्री रस्तु श्री संघस्य । सूत्रधार हरदास ॥

श्री पावापुरी तीर्थ ।

जल मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2029]

सं(व)त् १२६० ज्येष्ठ सुदि २ रेनुमा(?) पु० चोराकेनात्मश्रेयोर्थं श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री अभयदेव सूरिभिः

मूलवेदी के दाहिने तर्फ का लेख ।

[2030]

(१) सं० १६२९ मिः आसिन सुदि २
(२) श्री मंदिरजी के बीच के फेरी में वः नी
(३) चे के फेरी में पत्थर बैठाया नानकचं-
(४) द जीवनदास जैन श्वेताम्बरी के तर
(५) फ से साः कलकत्ता शुभं

सोने के चरण पर ।

[2031]

सं० १९२३ डूगड़ धनपतसिंह कारापितं सर्व सूरि प्रतिष्ठित (श्री)संघस्य श्रेयसे जवतु ।

दादाजी के चरण पर ।

[2032]

१९५० साल मिति अघन वदि १२ सोमवार निहालचंद इंद्रचंद डुगड़ तस्य परिवार प्रतिष्ठा कारापितं मुर्शिदाबाद ॥ श्री जिन कु(श)ल सूरि महाराज का चरन ॥ शुजं जवतु ॥

समोसरन ।

मंदिर का शिलालेख ।

[2033]

(१) श्री शुज संवत् १९५३ मिती कातिक वदी
(२) त्रयोदशी मंगलवार श्री महावीर स्वामी जी के समोस
(३) रनजी में मंदिर कराया श्री संघ ने श्वेताम्बरी आमनाये
(४) व: मनिजर गोविन्द चंद सचेती विहारवाले के
(५) हस्ते वना । इदं प्रतिष्ठितं गंगारीखी जति

महताव बिबि का मंदिर ।

शिलालेख ।

[2034]

(१) संवत् १९३२ का मिति माघ शुक्ल १० तिथौ
(२) चंद्रवारे श्री मन्महावीर स्वामी मंदिर श्री वंगदे-

(३) शे । मकसुदाबादाजीमगंज वासिनी डुधेड़िया
(४) गोत्रे श्री नेमिचंद्र तस्य भार्या महताब कुमारि-
(५) णा कारापितं च श्री हर्षचंदजी तत् पुत्र बुधसीह
(६) बिसनचंद्रेण प्रतिष्ठा कारापिता । श्री बृहत्खरतर
(७) गौर्ज्जराधिपति श्री अभयराज सूरि तत्पट्टालंकृ
(८) त श्री अजयराज सूरिणा प्रतिष्ठितं श्री शुभं भूयात् ।
(९) ॥ श्लोकः ॥ भवारण्यगोपालकं त्रैशलेयं । भवांबोधि-
(१०) संस्तारणे यानतुल्यं ॥ मुक्तिश्रीनाथं मयायं जिनेंद्रं
(११) प्रसंस्तौमि श्री वर्धमानं विभुं च ॥ १ ॥

गांव मंदिर ।

दक्षिण तर्फ के दिवार पर का लेख ।

[2035]

(१) श्री गांव मंदिर जि मे दक्ष
(२) ण पश्चिम उत्तर दालान
(३) तथा चारो कोठे मे पत्थल
(४) जैन श्वेताम्बर भंडार के तर
(५) फ से मैनेजर गोविंदचंद सुचं
(६) ति विहारवालो ने बैठाया सुभ
(७) सं० १९६४ आसिन बदि ५

सभा मंडप के दाहिने तर्फ के आले का लेख ।

[2036]

(१) श्रीमदविर जीनेंद्र प्रणम्य श्री पावापुरी नगरी मधे आ श्री जिन
(२) बींब स्थानापन करोती स्वेतांबर आमनाय धारक शा० रूपचंद

(३) रंगीलदास देवचंद सा पाटन वाला हाल मुकाम येवला तथा मुंबई
(४) वालाये आगो खजार तथा सभा मंडपमां जमती सहीत आरस कराव्यो
(५) संवत् १९६० लं० सेवक उत्तमचंद वालचंद मंत्री नगरवाला।

सभा मंडप के बांये तर्फ के आले का लेख।

[2037]

(१) श्रीमद विर जिनेंद्र प्रणम्य श्री पावापुरी नगरी मधे आ श्री जि
(२) न बींब स्थापन्नं शा० रूपचंद रंगीलदास सा पाटन वा
(३) ला हाल मुकाम येवला तथा मुंबई स्वेतांबर आमना धारक वा
(४) ला ओ कराव्या छे संवत् १९६०
(५) मीस्त्री भाईचंद जगजीवन सलाट पालीताणा वाला।

हैदराबाद-दक्षिण। *

श्री पार्श्वनाथ जी का मंदिर-बेगम बजार।

मूलनायक जी पर।

[2038]

सं० १५५७ वर्षे ॥ महा सुदि ५ सोमे श्री पार्श्वजिन बिंबं कारितं . . . . . ।

पाषाण की मूर्ति पर।

[2039]

संवत् १५४७ वैशाख सुदि ३ श्री संघे भट्टारक जी श्री जिन तपापति वाक जी प्रति०

* यहां के लेख स्वर्गीय पं० बालचंद्रजी यति से प्राप्त हुवे थे।

श्री राजा जशसिंघ राज्ये . . . . . . ।

[2040]

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदि १ श्री चंद्रप्रभु बिंबं कारापितं ।

धातु की प्रतिमाओं पर ।

[2041]

संवत् १६६८ फागुण सुदि १३ साह मनोरथ सदापगामे प्र० . . . . . . ।

[2042]

संवत् १७०० वर्षे मार्ग० सुदि २ शुक्रे राजनगर वास्तव्य ओसवंस ज्ञा० सा० वर्द्धमान तत्पुत्र सा० रायसिंघ केन स्वश्रेयोर्थं श्री पद्मावती बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा पं० श्री कीर्ति-रत्नगणिभिः ॥

[2043]

सं० १७०७ व० फा० सु० ८ सोमे श्रीमाली ज्ञा० सा० कुंअरजा भा० रतनबाई नाम्न्या उ० श्री विवेकहर्षजी श्री शांतिनाथ बिं० का० प्र० श्री तपा० भ० श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

पंचतीर्थियों पर ।

[2044]

सं० १५१२ माघ वदि . . . सोमे नागर ज्ञातीय श्रे० कर्मसी भा० फहू सुत जोगी नाम्ना भा० भटि सुत लखमादि कुटुंबयुतेन श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० बृहत्तपा श्री रत्न-सिंह सूरिभि ॥

[2045]

सं० १५३० वर्षे वैशाख वदि १२ बुधे वडाजल्ला गोत्रे ओस वंशे सा० पेटा भा० माल्ही सुत सा० धर्म्मा भा० मह्रू पुत्र नापा बाला हीरादि कुटुंबयुतेन आत्म श्रे० श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री यशचंद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

[2046]

संवत् १५६२ वर्षे माघ सुदि १५ दिने ऊकेश वंश घोरवाड गोत्रे सा० वान्हा भा० वाल्हिण दे पुत्र सा० रंगाकेन भा० रत्ना दे पुत्र सा० माहा षेता वेता प्रमुख परिवारयुतेन श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनहंस सूरिभिः ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—कारवान साहुकारी।

धातु की प्रतिमाओं पर।

[2047]

संवत् १३२२ वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय भा० जयतेन निजमातामह ठ० सोढ भा० ठ० श्रियादेवी श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री पृथ्वीचंद्र सूरि शिष्यैः श्री जयचंद्र सूरिभिः ॥

[2048]

संवत् १४५८ वर्षे फा० सुदि १ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० धरणि सुत सिंघा श्रेयोर्थं तद् भ्रातृ श्रे० कान्हडेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छीय भट्टारक श्री देवसुंदर सूरिभिः ॥

[2049]

संवत् १४८१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सामत भा० सामल दे सु० धर्माकेन भ्रातृ हीरा सिवा सहदे सहितेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री अभिनंदन बिंबं का० प्र० मडाहड गच्छे श्री उदयप्रभ सूरिभिः ॥

[2050]

सं० १६७७ व० फा० सु० ८ सोमे श्रो० ज्ञा० सा० शिव सा० भा० सुजारादि पुत्र सा० रामाकेन भा० रतनबाई प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा गच्छे विवेकहर्षगणिभिः ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—रेसीडेन्सी बजार ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2051]

संवत् १४७४ मा० सु० ११ ओस वंशे काल्हणसीह लाइणि सुत कोवापाकेन श्री अंचलगच्छे श्री जयकीर्ति सूरिणामु० श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[2052]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ उकेश ज्ञातौ श्रेष्ठी गोत्रे म० कमला म० सिंघा भा० लखमा दे पु० साजण युतेन स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं श्री ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[2053]

संवत् १५३७ वर्षे महावदि १३ शुक्रवारे सूराणा गोत्रे सा० नाथू पुत्र थिरा भार्या मुहडादे पुत्र सा० धेना भार्या हिमा दे पुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं श्री धर्मघोष गच्छे प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री मानदेव सूरिभिः ॥

[2054]

सं० १५४१ माघ सुदि १२ प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० झांटा भा० सूलेसिरि सु० जिणदासेन भा० लखी सुत हरदास सूरदासादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री ३ लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ मोर । षोयाणा वासी ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—चार कवान ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2055]

सं० ११७७ फा० सु० ४ श्रा० वाकूकया स्वश्रेयसे श्री महावीर प्रतिमा कारिता ।

[2056]

सं० १४०१ व० मार्ग० सु० ५ बा० चतुर नाम्ना श्री संखेश्वरपार्श्व बिंबं का० प्र० तपा श्री विजयहर्ष सूरिभिः ॥

[2057]

सं० १६६७ वर्षे फागुण सुदि ८ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय सा० सूरज कुटुंबयुतेन श्री शांति० बिं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

[2058]

सं० १६९० व० फा० सु० ५ गुरौ दौलत्तीबाद ऊ० ज्ञा० सा० श्रीमंत भा० पमांबाई नाम श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपा गच्छे . . . . . . ।

[2059]

सं० १६९७ फा० सु० ५ बृ० ऊकेश बा० धीरा नाम्नी श्री शांति बिं० का० प्र० श्री तपा गच्छे विजयदेव सूरिभिः ॥

[2060]

सं० १७०१ (?) व० मा० गं० सु० द० ५ भा० बृ० प्रा० बा० कानू नाम्ना श्री पार्श्व-नाथ बिं० का० प्र० तपा श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

दादाजी के चरणों पर।

[2061]

॥ संवत् १९६१ का वर्षे मिति माघ सुदि ५ गुरूवासरे श्री जं० युग प्रधान जगद् चूडामणि दादा साहिब १००८ श्री जिनदत्त सूरि गुरूराज चरणपादुका श्री चारकवांण का श्रीसंघेन करापितं। पं० चारित्रसुखेन प्रतिष्ठापितम् श्रीसंघस्य कल्याण खेम कुशलम् समुपस्थिता ॥ हैदराबाद ॥

[2062]

॥ सं० १९६१ वर्षे मि । माघ सु । ५ दिने । जं । युग प्र० १००८ दादा साहेब श्री जिन-कुशल सूरि पादुका । च्यारकवांण ।

[2063]

श्री जिनकुशल सूरि चरणकमल पादुकेभ्यो नमः ॥ शुभ संवत् १९६४ वैशाख धवल १० गुरुवासरे प्रतिष्ठितम् ॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

मद्रास । *

चंद्रप्रभस्वामी का मंदिर - शूला बजार ।

मूल मंदिर का लेख ।

[2064]

(१) ॥ संवत् १९५२ रा शाके १८१७ मासोत्तममासे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे तिथि दशम्यां रविवारे शूलाग्रामस्थः मालू गोत्रे सा० । कालू-

(२) राम रतनचंद खरतरगणोपासकेन कारापित जिनभवने चंद्रप्रभु बिंबं स्थापितं खर-तर गच्छे क्षेमकीर्ति शाखायां विद्धद्रामचंद्रगणि

(३) तच्छिष्य पं प्र । उदयचंद्रगणिः तच्चरणांतेवासी उपाध्याय नेमिचंद्रेण प्रतिष्ठितं जिनभवनं स्थापितं बिंबं च पं० । श्यामलाल साकम्

मूलनायक जी पर ।

[2065]

॥ संवत् १७६० वैशाष सुदि ६ . . . कारितं श्री संघेन . . . . . . ।

---

* यहां के लेख स्वर्गीय पं० बालचंद्रजी यति से मिले थे ।

मूर्तियों पर।

[2066]

॥ सं०। १९२१ माह सुदि ७ गुरु। श्री चंद्रजिन बिंबं कारितं। श्री बृहत्खरतरगच्छीय भ० श्री जिनहंस सूरिभिः प्रति......।

[2067]

॥ सं० १९२१ माह ॥ सु०। ७। गु। श्री सुमतिजिन बिंबं कारितं। श्री बृहत्खरतरगच्छीय भ० श्री जिनहंस सूरिभिः प्रति......।

धातु की पंचतीर्थी पर।

[2068]

॥ सं० १५०५ वर्षे पोस सुदि १५ श्रा० विणवट गोत्र पा० रतना भा० मूदल दे पु। सहसा भा० सुहड़ दे पितृमातृ पु० श्री चंद्रप्रभो बिंबं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गच्छे पूर्णचंद्र सूरि पट्टे श्री महेंद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

ताम्रपट्ट पर।

[2069]

॥ संवत् १९७० रा शाके १८३५ रा ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ त्रयोदश्यायां चंद्र-वासरे ॥ भट्टारक श्री जिनफत्तेंद्र सूरि प्रतिष्ठितं श्री मद्रास शूलामध्ये ॥

चंद्रप्रभस्वामी का मंदिर—साहूकार पेठ।

शिलालेख।

[2070]

(१) ॐ (२) ॥ नमः श्री वीतरागाय ॥
(३) ॥ श्लोकः ॥ आसीत्सूरिपदप्रतिष्ठितरघोः श्री हेमसूरिप्रभुस्तत्पीठे प्रतिवादिवृन्द-

(४) जयदो विद्याकलानां निधिः ॥ श्री सूरीश्वरमूर्द्धवन्दितपदः श्री सिद्धसूरिगुरुर्भ-
(५) मोजोदयत्तारकत्येतिनिपुणो वर्वर्त्ति सर्वोपरि ॥ १ ॥ प्रासादस्य कृतास्य तेन
(६) विदुषा माघस्य शुक्ले बुधौ त्र्योदश्यां श्रुतिसप्तनन्दकुमिते श्री विक्रमाब्देऽधुना ।
(७) सौजन्यात्समृतसागरेण जगतां धर्म्मोपकाराय वै श्रीमज्जैनधुरंधरेण कृतिना नूनं
(८) प्रतिष्टानघाः ॥ २ ॥ श्री विक्रम संवत् १९७२ माघ शुक्ल १३ बुधवारके दि-
(९) न श्री मदरास पत्तन शाहूकार पेठमें श्री चन्द्रप्रभस्वामी बिम्ब प्रतिष्ठा श्री-
(१०) मज्जैनाचार्य बृहत्खरतरगच्छीय जं । यु । भट्टार्क श्री जिनसिद्ध सूरिजी ।
(११) महाराज के करकमलों से समस्त संघ सहित जैरुंबकसजी सुखलालजी ।
(१२) समदड़िया ने बड़े महोत्सव से कराई । हरषचंद रूपचंदजी ने बिम्ब स्थाप-
(१३) न किया बादरमलजी ने कलश चढ़ाया और हंसराजजी सागरमलजी
(१४) ने ध्वजा आरोपण करी यह मंगल कार्य श्री संघको सर्वदा श्रेयकारी हो ॥
(१५) ॥ हस्ताक्षराणि यति किशोरचन्द्रजी तच्छिष्य मनसाचन्द्रस्य ॥

श्री दादाजी के बंगले में ।

[2071]

ॐ नमः दत्तसूरिजी ॐ नमः कुशलसूरिजी

मिति माह सुदि ५ संवत् १९३६ का ।

जैन मंदिर—साहुकार पेठ ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2072]

संवत् १४९७ वर्षे माघ सुदि ५ बुधौ श्रीमाल ज्ञातीय नान्दी गोत्रे सा० प्रह्लाद पुत्र शा० प्रेताकेन पुत्र हरराज सहित तत् पिता पुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरिभिः ॥

[2073]

संवत् १५१७ वर्षे पौष वदि ५ गुरू श्री श्रीमाल ज्ञातीय महं त्रित्रा जा० जासी सुत सोजा जा० हीरू आत्मश्रेयोऽर्थं जीवितस्वामी श्री श्री श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पिप्पल गच्छे त्रितविया श्री धर्म्मसागर सूरिभिः। जीलुटग्रामे।

[2074]

संवत् १५१९ वर्षे माघ शुक्ल १३ पाल्हण पुर ऊकेश ज्ञातीय सा० पर्वत जा० जीविणी पुत्र शा० गेहाकेन जा० वीरू पुत्र वस्ता जावड प्रमुख कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे पार्श्वबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः॥

चौवीसी पर।

[2075]

संवत् १४८७ वर्षे माघ . . . दि . . . वाडज्ञा ज्ञातीय श्रे० खीमा जा० लहिकू सुत धाथा जा० हीसु पुत्र हापा गोपा जीरादि कुटुंबयुतेन श्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथ चतुर्विंशति पट्टकारितः प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज भ० श्री सोमसुंदर सूरिभिः॥ श्रीशुभं भवतु॥

[2076]

संवत् १५२१ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल प्राग्वाट ज्ञातीय सं अर्जुन जा० टबकु सुत सं० वस्ता जा० रामी सुत सं० चान्दा जा० जीविणि सुत लींबा आका प्रमुख कुटुंबयुतेन ७२ चतुर्विंशतिपट्टान् कारयितश्च श्रेयसे श्री पद्मप्रभः चतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः। श्री तपा पक्षे श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री रत्नशेखर सूरि तत् पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः॥
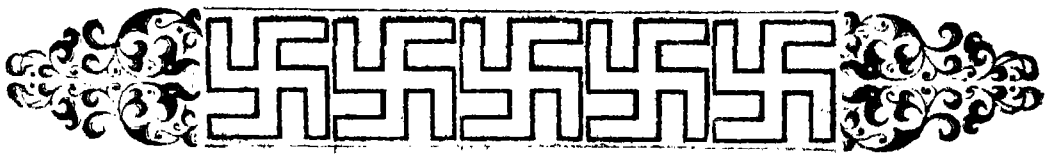
रायपुर–सी० पी० । *

जैन मंदिर–सदर बजार ।

शिलालेख ।

[2077]

(१) ॥ श्री मदिष्टदेवेभ्यो नमः ॥ श्रीमच्छ्रीवीरविक्रमादित्य राज्यात् नगवर्ण-
(२) निधिइंदुब्द (१९५०) शाके इंद्रिचंद्रसिद्धि नक्षत्रेश प्रमिते मासोत्तममासे द्वि-
(३) तीय आसाढ मासे शुक्लपक्षे अष्टम्यां तिथौ भार्गववासरे स्वाति नक्ष-
(४) त्रे साध्ययोगे बुधमार्गे एवं पंचांग शुद्धावत्र समये कर्कार्क गते रवौ शेषे-
(५) षु शुभ निरिक्षित वेलायां श्री महाजपुरवरे मालु गोत्रे साह तनसुखदा
(६) स(दास) तत्पुत्र साह आसकरणेनासौ श्री मच्चंद्रप्रभ जिनप्रभो प्रासा
(७) द कारितं स्वश्रेयोर्थं श्री बृहत्खरतर भट्टारक गच्छाधिपे भट्टारक श्री
(८) जिनचंद्र सूरीश्वर प्रतिष्ठितश्चेति पं० सिवलाल मुनिरुपदेशात् ।

ताम्रपत्र पर ।

[2078]

(१) श्री जिनायनमः ॥ श्रीमत् वीर सं० २४२१ विक्र-
(२) म सं० । १९५१ शाके १८१६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मा-
(३) से आषाढ शुक्लपक्ष तृतिया तिथौ गुरूवारे पु-
(४) ष्यनक्षत्रे मिथुनार्कगते रवौ शेष शुभ निरिक्षि-
(५) त वेलायां श्री रतं(राज)वरे मालू गोत्रे साह धन-
(६) रूपजी तत्पुत्र साह फूलचंदजी कस्या भार्या

* स्वर्गीय पं० बालचंदजी यति से प्राप्त ।

(७) हीरादेवी तया श्री अभिनंदनजिनप्रभो प्रासाद
(८) कारित स्वश्रेयं श्रीवृहत् खरतर गच्छे श्री जिनचंद सूरीश्वर
(९) जी आदेशात् श्री शिवलाल मुनि प्रतिष्ठितम् ॥ श्री शुभम् ॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

उथमण - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पबासण के नीचे का लेख ।

[2079]

॥ सं० १२४३ वर्षे माह्य सुदि १० बुधदिने नाणकीय गच्छे उथमण चैत्ये धणेसर जा० धारमती पु० देवधर जेसड आल्हा पाल्हादि कुटुंब संयुते मातृ निमित्तं जलवटु करापितं ॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

रोहेड़ा - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2080]

सं० १२९३ वर्षे फागण सुदि ८ कोरंट गच्छे . . . जोला . . . धर्मनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठितं कक्क सूरिभिः ॥

[2081]

सं० १३४१ वर्षे नाणकिय गच्छे . . . . . . चतुर्विंशतिपट्ट कारितं प्रतिष्ठितं भट्टारक महेन्द्र सूरिभिः ॥

[2082]

सं० १४ए१ फागण सुदि १२ गुरौ कोरंटवाल गछे उपकेश ज्ञातीय संखवालेचा गोत्रे नपसी पु० जाणाकेन श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं सांबदेव सूरिनिः ॥

[2083]

सं० १४ए३ वर्षे माघ सुदि १३ उपकेश ज्ञातीय म० मांडण जा० सिरियादे पु० काजाकेन जार्या जब्री सहितेन आत्मश्रेयसे श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं जट्टारक श्री धनप्रन सूरिनिः ॥

[2084]

संवत् १५१३ वर्षे फागुण वदि ११ नागेंड गछे उपकेश ज्ञातीय कोठारी . . . जा० लक्ष्मी पु० मेघा जा० हीरु पु० नेग कुंगर तोल्हा युतेन श्री आत्मपुण्यार्थे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्टितं विनयप्रन सूरिनिः ॥

[2085]

सं० १५१७ वर्षे वैशाष वदि ७ शुक्रे श्री श्रीमाल श्रेष्ठी जामा जा० साढी पु० गोल्हा जा० आसि पु० पहिराज कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं पूर्णिमापक्ष पुण्यरत्न सूरीणां प्रतिष्ठितं बाराही ग्रामे ॥

[2086]

सं० १५१७ वर्षे माघ वदि २ प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० कोहाकेन जार्या कामल दे पु० नाल्हा हीदा युतेन धर्मनाथ बिंबं कारितं कछोलीवाल गछे पूर्णिमापक्षे गुणसागर सूरिनिः ॥

[2087]

सं० १५७६ आसाढ सुदि ए रवौ उपकेशज्ञातीय नाग गोत्रे साह जोजा जा० जावल दे पु० मांडण आल्हा जेसा सहितेन माडण जा० माणक दे पु० रंगा युतेन आत्मपुण्यार्थे संजवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं नाणावाल गछे जट्टारक श्री . . . . . ।

भारज - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2088]

सं० १५२४ वर्षे वैशाख सुदि २ शनौ श्रीमाल ज्ञातीय पितृ धरकण भा० धरणा सुत कालु भा० कुंथि करमी सुत सहिता युतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं बृहत्पाया गच्छे प्रतिष्ठितं श्री विमल सूरिभिः वटपद्र वास्तव्य ॥

—•—卐—•—

गुडा - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2089]

सं० १५३४ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ उसवाल वृहद् सज्जने ठाकुर गोत्रे साह० घोमादे पु० जावड़ भावड़ गीदा सा० माणाकेन भा० माणिक दे पु० मेघराज हांसादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारापितं । नाणावाल गच्छे श्री धनेश्वर सूरिभिः प्रतिष्ठितं तपा श्री सोमसुंदर सूरिभिः सं . . . . . ॥

तिवरी - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

काउसग्ग प्रतिमा पर ।

[2090]

सं० १३३४ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ प्रा० ज्ञा० श्रे० जभा भादा भा० रुपल दे पु० . . . श्री नयगल कारितं प्रतिष्ठितं चित्रगच्छीय श्री देवभद्र सूरि संतानीय रा० पं० सोमचंद्रेण ॥

पाडीव – सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2091]

सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्रीमाली ज्ञातीय राउल जा० वाला पु० देवा जा० ललियता सुत तेजा श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं आगम गच्छे अमररत्न सूरि गुरूपदेशेन करापितं प्र० विधिना पत्तन वास्तव्य ॥

मडिया – सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2092]

सं० १४७० वर्षे माघ सुदि ९ गुरौ बाफणा गोत्रे साह लुंबा सुत देपाल जा० मेला दे पु० जोगराज जा० जसमादे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्याभिधान प्र० देवगुप्त सूरिभि ॥
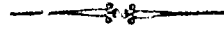
निंबज – सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2093]

सं० १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्री नाणकेड़ा गच्छे श्री कालिकाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय खांटेड़ गोत्रे साह लाला जा० . . . पु० सामंत जा० हांसल दे पु० जोपाल

उदा जोपाल भा० नतु दे पु० नाल्हा सीवा उदा भा० अमा दे पु० रतना समरथ कुटुंबेन सह स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री विजयसिंह सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं वीर सूरिभिः ॥

छुड़वाल-सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पाषाण की प्रतिमा पर ।

[2094]

सं० १६४४ वर्षे फागण वदि १३ बुधे हालीवाका वास्तव्य श्री संघेन कारितं श्री शांतिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज श्री हीरविजय सूरिभिः ॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

डीसा ।

श्री आदीश्वरजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2095]

सं० १५२४ वर्षे का० व० २ शुक्रे श्री भावडार गच्छे श्रीमाल ज्ञातीय म० धिरणल भा० ब्रह्मादेवि पु० मना भा० माल्हण दे पु० सिंघा मेघा मेहा साणा जुगा सहितेन जीवितस्वामी श्री पद्मप्रभु प्रमुख चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० कालिकाचार्य संताने श्री भावदेव सूरिभिः श्री वनरिया ग्रामे ॥

[2096]

सं० १५६३ वर्षे माघ सुदि १५ गुरौ उपकेश ज्ञातीय गा० कनुज सो० करणा भा० अरघु पु० विसाल पितृव्य नयणा निमित्त श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० भिन्नमाल गच्छे श्री कम्मतिक्क सूरिभिः ॥

[2097]

सं० १६६३ वर्षे वैशाख वदि ११ दिने श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० टाहापान जा० चोतु निमित्तं सुत लिंबा राणा जाजण सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ब्रह्माण गच्छे च० जाजीग सूरिभिः स्थिराद्र वास्तव्यः ॥

श्री महावीर स्वामी का मंदिर।

पंचतीर्थियों पर।

[2098]

सं० १३२० वर्षे फागण सुदि ४ शुक्रे ब्रह्माण गच्छे श्री जज्जक सूरि गुरौ श्रीमाल ज्ञातीय पिणनालक वास्तव्य आचा सुत देवधर श्रेयोर्थे आसधर सुत जाल्हणेन पितृव्य श्रेयोर्थे श्री महावीर बिंबं कारितं प्र० श्री वयरसेणोपाध्याय शिष्यि ॥

[2099]

सं० १३४४ वर्षे जे० व० ४ शुक्रे ओसवाल ज्ञा० श्रे० वीरमस्य सुत बीजडेन निजमातु वयज देवि श्रेयोर्थे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रं० मल्लधारि श्री रत्नदेव सूरिभिः ॥

[2100]

सं० १४७६ वर्षे चैत्र वदि १ शनौ उपकेश ज्ञा० वडालिया गोत्रे सा० जेता भा० जइतश्री सुत जीमा भा० सनपतआल श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रति० मलधारि गच्छे श्री विद्यासागर सूरिभिः ॥

[2101]

सं० १४६३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ए भौमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय सिंघा भा० मेला दे पितृमातृ श्रेयसे सुत लषमणेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० ब्रह्माण गच्छे श्री वीर सूरिभिः ॥

[2102]

सं० १४७४ वर्षे वैशाख सुदि १० रवौ श्री कोरंटकीय गछे श्री नन्नाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय मं० मलयसिंह जा० माल्हण देवि स० मं० मदनेन पु० लुणा सहितेन जा० हेमा श्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं कक्क सूरिभिः ॥

[2103]

सं० १५२० वर्षे वैशाष वदि ५ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय सदा जा० सहजू पु० धीरा-केन जा० काली सहितेन पितृमातृ श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री नागेंद्र गछे श्री गुणसमुद्र सूरिभिः प्र० सर्व सूरिभिः ॥

[2104]

सं० १५२२ वर्षे कार्तिक वदि ५ गुरौ पाल्हावत गोत्रे सा० शिवाराज जा० कर्मणि तत्पुत्र मेघा भार्या युतेन पु० सालिग मातृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मलधारि गछे श्री गुणसुंदर सूरिभिः ॥

[2105]

सं० १५३७ वर्षे वैशाख सुद ३ उपकेश गछे श्री ककुदाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय बाफणा गोत्रे सा० . . . . वक जा० जसमा दे पु० सोहडा दे पु० वस्ता आत्मश्रेयोर्थं श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[2106]

सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ वायडा ज्ञातीय व० साह नारिंग सुत व० राजा-केन जा० रई पु० रीड़ा मेघा रीड़ा जा० इंदु प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्यादि पंचतीर्थी आगम गछे श्री अमररत्न सूरिभिः गुरूपदेशेन कारितं प्र० विधिना पत्तन वास्तव्यः ॥

गुडली-मेवाड़ ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2107]

सं० १५४२ वर्षे वैशाख वदि ४ उपकेश ज्ञातीय सा० करमा जा० साहु पुत्र पीदा जा० लखमा दे पु० गोदा उजल जा० वडी पु० जेसा मेघा केमा हरमा सहितेन जिदरू निमित्तं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छे जट्टारक श्री धनप्रज सूरिजिः ॥

[2108]

सं० १५५ए वर्षे वैशाख सुदि १५ शनौ उपकेश ज्ञातीय मानींग जा० नंदि पु० देपाकेन पितृयुतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ब्रह्माण गछे हुमतिलक सूरि पट्टे श्री उदयाणंद सूरिजिः ॥

खारची-मारवाड़ ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2109]

सं० १५३७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ . . . . . . धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं षंडेर गछे श्री शांति सूरिजिः हाविल ग्रामे ॥

खंडप - मारवाड ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[2110]

सं० १५२७ वर्षे वैशाख सुदि ३ ओसवाल ज्ञातीय साह हंसा पु० उधरण देदा वेला भा० वाहनु मोदरेचा गोत्रे साह लाधु भा० नामल दे पुत्रिका नानुं आत्मपुण्यार्थे श्री चंद्र प्रभु बिंबं कारितं श्री नाणकीय गछे धनेश्वर सूरिभिः ॥

[2111]

सं० १५२८ वर्षे . . . उपकेश ज्ञातीय भाजेड़ गोत्रे पना भा० सुहवि दे पु० नरसिंग त्रिभुवणा सहितेन श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पल्लीवाल गछे श्री यशोदेव सूरि पट्टे श्रीश्री नन्न सूरिभिः ॥
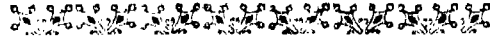
मांकलेश्वर - मारवाड ।

जैन मंदिर ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[1187]

सं० १५३० वर्षे फागुण सुदी १० श्री ज्ञानकीय गछे उ० उसभ गोत्रे सं० भांभा भा० पदमिनी पु० साहा पीथा स्याभ प्रतिष्ठितं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० सिद्धसेन सूरि पट्टे श्री धनेश्वर सूरिभिः ॥

आचार्यों के गच्छ और संवत् की सूची।

अंचल गच्छ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४६९	मेरुतुंग सूरि	१३५९
१४८३	जयकीर्ति सूरि	१०७१
१४९०	" "	१२४२
१४९४	" "	२०५१
१५०५	जयकेसरी सूरि	१५६६
१५०९	" "	१४९३, १९११
१५१३	" "	१४७३
१५१५	" "	१५८७
१५२३	" "	१०१६
१५२४	" " ...	११२९, १२७३, १७७६
१५२७	" " ...	१३१६, १६०९, २०११
१५२८	" "	१६१९
१५२९	" "	१९१३
१५३०	" "	१२८४
१५४५	सिद्धान्तसागर सूरि ...	११६६
१५५४	" "	१४१२, १५७३
१५५५	" "	१७७२
१५७९	गुणनिधान सूरि	१४३९
१६२१	धर्ममूर्ति सूरि	१४५२
१६६५	मुनिशील गणि	१८८९
१६७१	कल्याणसागर सूरि	१४५६, १५२०, १५७८—१५८४
१६७६	" " ...	१७८१
१६७८	" " ...	१७८१
१७०२	" " ...	१७४३
१६९७	उपाध्याय विनयसागर ...	१७८१
१६९७	सोभाग्यसागर ...	१७८१
१७९८	पं० लक्ष्मी रतन ...	२००८
१८०५	" "	२००९
१७९८	पं० हेमराज	२००८
१८०५	" "	२००९
१९२१	रत्नशेखर सूरि ...	१४८६

आगम गच्छ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४८८	जयानंद सूरि ...	१७९८
१५०६	हेमरत्न सूरि ...	१००४
१५१७	" " ...	१५०५
१५१९	" " ...	१७२१
१५१७	आनन्दप्रभ सूरि ...	१७६९
१५२५	देवरत्न सूरि ...	१८००
१५३१	" " ...	१७५९
१५३२	अमररत्न सूरि ...	१३२३
१५३६	" " ...	२०९१

संवत्	नाम	लेखांक
१५१८	गुणसागर सूरि (पूर्णिमापक्ष) ...	२०८६
१५३०	विद्यासागर सूरि	१३६१
१५३४	विजयप्रभ सूरि	१३८२

कोरंट गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१२६६	कक्क सूरि	२०८०
१३१७	सर्वदेव सूरि	१६५०
१३४०	... सूरि	१७६२
१४०६	कक्क सूरि	२०१४
१४३७	सांवदेव सूरि	१०५७
१४८४	कक्क सूरि	२१०२
१४६१	सांवदेव सूरि	२०८२
१४६६	„ „	१३३०
१५०६	„ „	११८३
१५०८	„ „	१७३३
१५०६	„ „	२०१२
१५१७	श्री पाद्...	१४०४
१५१८	सांवदेव सूरि	१७२६
१५३२	„ „	१३८०
१५५३	नन्न सूरि	१६६८
१५६७	नन्न सूरि	१६४२

खरतर गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
......	वर्द्धमान सूरि	११६०
१३८१	जिन कुशल सूरि	१६८८
१३८७	„ „	१३५०
१३६६	„ „	१५४५
१३६१	जिनपद्म सूरि	१६२६
१४८२	जिनभद्र सूरि	१५०३
१४६३	„ „	१२४४
१४६६	„ „	१६००
१५०३	„ „	१३२५
१५०७	„ „ ...	११५१, १४००
१५०६	„ „ ...	१२५५, १३३३
१५११	„ „	१५५०
१५१७	„ „	१०१०
१४६१	भव्यराज गणि	२००४
१५०६	जिनतिलक सूरि	१२५७
१५११	„ „ ...	१८६०–६१
१५२८	„ „	११५८
१५१५	जिनचंद्र सूरि	२०२२
१५१६	„ „	१३३५
१५१६	„ „	१२७०
१५२६	„ „	१३७६
१५२६	„ „	१०६५
१५३१	„ „	१२०६
१५३२	„ „	१६४०
१५३३	„ „	१८८१
१५३४	„ „ ...	१२८७, १२८६, १३१७
१५३६	„ „ ...	१०५६, १३४१
१५१७	विवेकरत्न सूरि	१७५५
१५२५	कीर्तिरत्न सूरि	१८८५
१५२८	जिनप्रभ सूरि	११५८
१५५३	जिनसमुद्र सूरि	१६६२

संवत्	नाम			लेखांक
१५५५	जिनसमुद्र सूरि	…	…	१२२४
१५५६	जिनहंस सूरि	…		१२१८, १४६३
१५६२	" "	…	…	२०४६
१६०६	जिनमाणिक्य सूरि	…	…	१३५१
१६२८	जिनभद्र सूरि	…		१४४८, १८४५
१६५३	जिनचंद्र सूरि	…	…	११९६
१६२७(?)	जिनसिंह सूरि	…	…	१३८८
१६६६	" "	…	…	१७१५
"	गुणरत्न गणि	…	…	"
"	रत्नविशाल गणि	…	…	"
१६६८	जिनचंद्र सूरि	…	…	१४५७
१६६८	" "	…	…	१५८५
१६६८	लब्धिवर्द्धन	…	…	१४५१
१६७५	जिनराज सूरि	…	…	१६७०
१६८६	" "	…	…	१९४७
१६९८	" "	…	…	१६९७
१६८९	परानयन (?)	…	…	१९४७
१६९८	समयराज उपध्याय	…	…	१६९७
"	अभयसुन्दर गणि (वाचनाचार्य)		…	"
"	कमललाभ उपाध्याय	…	…	"
"	लब्धकीर्त्ति गणि	…	…	"
"	पं० राजहंस गणि	…	…	"
"	पं० देवविजय गणि	…	…	"
१६९०	जिनकीर्ति सूरि	…	…	११०७
"	जिनसिंह सूरि	…	…	"
१७२७	म० राम विनय गणि	…	…	१००६
१८४६	जिनचंद्र सूरि	…	…	१८०७

संवत्	नाम			लेखांक
१८५२	लालचंद्र गणि	…		१२०५, १२११
१८५४	जिनदेव सूरि	…	…	१८२८
१८६३	जिनहर्ष सूरि	…	…	१५२५
१८६४	" "	…		१५२६–२८
१८७१	" "	…	…	१६३८
१८७३	" "	…	…	१०१९
१८७५	" "	…		१८३१ ४२
१८७७	" "			१०२७, १६४७ ५६, १६६२–६६, १८३६–३८
१८८५	" "	…	…	१८३६
१८८९	" "	…		१८२१, १८२४
१९३८	" "	…	…	१८५०
१८७७	उ० रत्नसुन्दर गणि	…	…	१०२७
१८७७	हर्षधर्म (पाठक)			१६४७–५६, १६६२–६६
१८९३	जिन महेन्द्र सूरि	…		१६७१–७२
१८९६	" "	…	…	१६४३
१८९७	" "	…	…	१८७०
१९०९	" "	…	…	१६४५
१९१०	" "			१५२९–३२, १६४६, १६६७–६८, १६७३, १८३०–३२
१९१३	" "	…	…	१६८२
१९१४	" "	…	…	१६२२
१८९३	जिन सौभाग्य सूरि			१०१७, १०२०–२१
१९०५	" "	…	…	१३५२
१८९३	आनन्द वल्लभ गणि	…	…	१०१७
१९३६	" "	…		१०२०–२१
१८९७	कुशलचंद्र गणि	…	…	१८७०
१९१८	जिन मुक्ति सूरि	…		१८६६–६८, १८७२

खरतर गच्छ।

जिनवर्द्धन सूरि शाखा।

रंगविजय शाखा।

संवत्	नाम	लेखांक

चंड्र गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१०७२	सोलगल सूरि	३८६
१२३५	पूर्णभद्र सूरि	१६८८
११५८	देवभद्र सूरि	१०३४
१२७२	हरिप्रभ सूरि	१७७७
१३००	यशोभद्र सूरि	१६७८
१३१५	” ”	१७७६

चाणांचाल गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५२६	वज्रेश्वर सूरि	११५६

चित्रवाल (चैत्र) गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३०३	जिनदेव सूरि	१६४६
१३२१	आमदेव सूरि	१६२१
१३३४	पं० सोमचंद्र	२०६०
१३४०	अजितदेव सूरि	११३४
१३५२	गुणचंद्र सूरि	१०४१
१४६६	मुनितिलक सूरि	१६०१
१५०१	” ”	११४५
१४६६	गुणाकर सूरि	१६०१
१५१३	” ”	१२६४
१५१५	रामदेव सूरि	१०६०
१५२७	चारुचंद्र सूरि	१०६४
१५३१	नारचंद्र सूरि	१०६६
१५३४	लक्ष्मीसागर सूरि	११६३
१५३६	” ”	१४१०

ठहितेरा गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१६१२	धर्म्ममूर्त्ति सूरि	११६४
”	भावसागर सूरि	”

जापडाण गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५३४	कमलचंद्र सूरि	१२८८

जीरापल्लीय गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४०६	रामचंद्र सूरि	१०४६
१५२७	उदयचंद्र सूरि	१५०६

तप गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४०१	विजयहर्ष सूरि	२०५६
१४२२	रत्नशेखर सूरि	१६२८
१४३६(?)	देवचंद्र सूरि	१७५२
१४५३	हेमहंस सूरि	१४८६
१४६६	” ”	१६१७
१४७५	” ”	१२४०
१४६०	” ”	१३२६
१४६६	” ”	१४८१
१४६८	” ”	११६७
१५०१	” ”	१४८२
१५०४	” ”	११४७
१५१०	” ”	११५२
१५११	” ”	१४०१
१५१३	” ” ...	१०८६, १२६६, १३७४
१४५८	देवसुंदर सूरि	२०४८

संवत्	नाम	लेखांक
१४८२	सोमसुंदर सूरि	... ... १४२१
१४८४	" "	... ... १९८०
१४८५	" "	... १९७२, २०१७
१४८७	" "	... ... २०७५
१४८८	" "	... ... १९८३
१४८९	" "	... १०२९, १०६७, १७३१
१४९१	" "	... १०७४, ११८१
१४९२	" "	... ... १०७६
१४९४	" "	... १९६८, १९७१
१४८८	मुनिसुंदर सूरि	... ... १९८३
१५००	" "	... ... १४६१
१५०१	" "	... ... ११२६
१४८९	रत्नसिंह सूरि	... ... ११४०
१५१०	" "	... ... १०८६
१५११	" "	... ... १६९६
१५१२	" "	... ... २०४४
१५१३	" "	... ... १७००
१४९६	विजयतिलक सूरि	... ... १६९१
१५०२	रत्नशेखर सूरि	... ... ११४९
१५०४	" "	... ... १२४९
१५०६	" "	... १११२, १९७०
१५०७	" "	... ... १६९५
१५०८	" "	... ... १०८४
१५०९	" "	... ... १०८५
१५१०	" "	... १५३९, १५४९
१५११	" "	... ... १४०२
१५१२	" "	... १२६०, १२६२, १७५४
१५१३	" "	... ११८४, १४०३
१५१६	" "	... १८८०, १९१२
१५१७	" "	... १०३०, ११८५
१५३८	" "	... ... १९४१
१५०३	जिनरत्न सूरि	... ... १७५३
१५३६	" "	... ... १७७०
१५४१	" "	... ... १९१४
१५०३	जयचंद्र सूरि	... १९६९, १९७३
१५०५	" "	... ... १३७०
१५०८	उदयनंदि सूरि	... ... १९३५
१५१०	रत्नसागर सूरि	... ... १२५८
१५१७	कमलवज्र सूरि	... ... १५८८
"	लक्ष्मीसागर सूरि	... ... १०९१
१५१८	" "	... ... १७५६
१५१९	" "	... १२६८, १८८३, २०९३
१५२०	" "	... ... २०२३
१५२१	" "	... १२७२, १३१४, २०७६
१५२२	" "	... ... १११७
१५२३	" "	१०९२, १४३७, १६३३, १७५१
१५२४	" "	... १२०८, १५६०, १५६९
१५२५	" "	... १४८५, १५७०, १९३८
१५२७	" "	... ... १२७९
१५२९	" "	... १५७२, १९०२, २०८६
१५३०	" "	११६०-६१, १२८२-८३
१५३४	" "	... ११६४, १२९१, १३१९
१५३५	" "	... ... १५८९
१५३६	" "	... ... १४६५

संवत्	नाम			लेखांक
१६४१	हीरविजय सूरि	...	...	१४५९
१६४२	,, ,,	...	...	१००२
१६४४	,, ,,	...		१६६१, १७१२, २०९४
१६५१	,, ,,	...	...	१७६३
१६८५	,, ,,	...	...	१९४३
	,, ,,	...	...	१७४८
	,, ,,	...	...	१५००
१६३३	रविसागर गणि	...	...	१७८२
,,	शत्रशल्ल	...	...	,,
,,	विजयसेन सूरि	...	...	,,
१६४३	,, ,,	...	...	१३०८
१६५२	,, ,,	...	...	१७९६
१६५६	,, ,,	...	...	१७६४
१६६१	,, ,,	...	...	१७९४
१६६७	,, ,,	...	...	११०५
१६७०	,, ,,	...		१६२८, १७४१
१६५१	विजयदेव सूरि	...	...	१७८२
१६६७	,, ,,	...	...	२०५७
१६७४	,, ,,	...	...	१४६०
१६७७	,, ,,	...	...	१९१७
१६८५	,, ,,	...		१३११, १९४३
१६८६	,, ,,	...	...	११०६
१६८७	,, ,,	...	...	११७३
१६९४	,, ,,	...	...	११०८
१६९७	,, ,,	...	...	२०५९
१६९९	,, ,,	...	...	१७९०
१७०१	,, ,,	...	...	२०६०

संवत्	नाम			लेखांक
१७०५	,, ,,	...	...	१६१३
१७०७	,, ,,	...	...	२०४३
१६५२	सोमविजय गणि	...	...	१७९६
१६६७	,, ,,	...	...	११०५
१६५२	विमलहर्ष गणि	...	...	१७९६
,,	कल्याणविजय गणि	...	...	,,
,,	पद्मानंद गणि	...	...	,,
१६७७	विवेक हर्ष गणि	...	...	२०५०
,,	कल्याण कुशल	...	...	१०१७
,,	दया कुशल	...	...	,,
,,	भक्ति कुशल	...	...	,,
१६८२	म० मुनि सागर गणि		...	१६३५
१६८६	विजय सिंह सूरि	...	...	११०६
१६९३	,, ,,	...	...	१०२८
१६९९	,, ,,	...		१३१०-११, १७९०
१७०१	,, ,,	...	...	१५७५
१७०३	,, ,,	...	...	११९७
१६९३	मतिचंद्र गणि	...	...	१०२८
१६९४	उ० लावण्यविजय गणि		...	११०८
१६९९	,, ,,	...	...	१७९०
१७००	पं० कीर्त्तिरत्न गणि	...	...	२०४२
१७०६	विजयानंद सूरि	...	...	१०१४
,,	विजयराज सूरि	...	...	,,
१७१०	,, ,,	...		१६१४, १९१०
,,	विजयसेन सूरि	...	...	१९१०
१७१२	,, ,,	...	...	१७४४
१७१३	विजयप्रभ सूरि	...	...	१७९७

संवत्	नाम	लेखांक
१७४४	विजयप्रभ सूरि	११७७
,,	मुक्तिचंद्र गणि	,,
१७६४	ज्ञानविमल सूरि	१७९९
१८०५	पं० कुशलविजय गणि	१४६७
१८०६	,, ,, ,,	१४६८
१८१८	,, ,, ,,	१४५५
१८०८	विजयधर्म सूरि	११९६
१८४८	विजयजिनेंद्र सूरि	१२०४
१८७३	,, ,,	१७२४
१८७६	,, ,,	१७८७
१८८०	,, ,,	१७३४
१८४८	पं० पुण्यविजय गणि	१२०४
१९०५	शांतिसागर सूरि	१८२९
१९१२	आनन्दसागर सूरि	१८९८
१९३१	धरणेन्द्रविजय सूरि	१४६९
१९३८	वृद्धविजय गणि	१८४८-५३
१९४३	विजयराज सूरि	१८२७
१९४९	,, ,,	१८०९
१९५४	पं० पवा विजै (?)	१७५०
,,	विजयसिंह सूरि	१८४०
१९६४	उ० वीर विजय	१४९९, १५०१

कृष्णर्षि गच्छ—(तपगच्छ शाखा)।

संवत्	नाम	लेखांक
१५२५	कमलचंद्र सूरि	१२७५

देवान्निदित गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१२०१	कनुदेव	१९९८

धर्म्मघोष गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३३९	गुणचंद्र सूरि	१९५२

संवत्	नाम	लेखांक
१४३८	पद्मशेखर सूरि	१२३५
१४७४	,, ,,	१२३९
१४८५	,, ,,	१४९१
१४५५	सर्वाणंद सूरि	१०६०
१४६१	मलयचंद्र सूरि	१८७६
१४६५	,, ,,	१२२०
१४७३	पद्मसिंह सूरि	१०६४
१४८६	महीतिलक सूरि	११८०
१५०१	,, ,,	११४३
१५०३	,, ,,	१४९२
१५११	,, ,,	१५३८
१४९५	विजयचंद्र सूरि	१०७७
१४९८	,, ,,	१२४७
१५०१	,, ,,	१०७९
१५०३	,, ,,	१५४७
१५०४	,, ,,	१३९९
१५०१	विजयप्रभ सूरि	११४४
१५०५	महेन्द्र सूरि	२०६८
१५०७	— —	१३६०
१५०७	पद्माणंद सूरि	१२५१
१५२९	,, ,,	१३२६
१५३५	,, ,,	१०९८
१५१३	साधुरत्न सूरि	१०८८
१५२०	,, ,,	१३७७
१५१३	पद्माणक सूरि	१४७४
१५२२	साधु — —	१०१३
१५३४	लक्ष्मीसागर सूरि	१३१८
१५६३	,, ,,	१२९९
१५३७	मानदेव सूरि	२०५३

संवत्	नाम	लेखांक
१५६३	श्रुतसागर सूरि ...	१३८४
१५६६	नंदिवर्द्धन सूरि ...	११६१
१५७०	" " ...	१६२०, १६६३
१५७६	" " ...	१३०३
१५७७	" " ...	१३२१

नमदाल गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५३६	देवगुप्त सूरि ...	१३४०

नागपुरीय गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
--	हेमरत्न सूरि ...	१६०६

नागेन्द्र गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
११६१	विजयतुंग सूरि ...	१७६७
१२६२	वर्द्धमान सूरि ...	१६२०
१२८१	उदयप्रभ सूरि ...	१७६३
१४०५	रत्नागार सूरि ...	१०४८
१४२२	रत्नप्रभ सूरि ...	१०५३
१४३७	" " ...	११३६
१४४६	उदयदेव सूरि ...	११२४
१४५०	देवगुप्त सूरि ...	१०५८
१४७४	सिंहदत्त सूरि ...	१०६५
१४८४	पद्मानंद सूरि ...	१०७३
१४६६	गुणसमुद्र सूरि ...	१३६८
१५२०	" " ...	२१०३
१५३३	गुणदेव सूरि ...	१८६४
१५५८	हेमरत्न सूरि ...	१६०५
१५७०	हेमसिंघ सूरि ...	१२१३
१५७२	—— ...	१३०१
१७१५	रत्नाकर सूरि ...	१३१२

नाणकीय (ज्ञानकीय, नाणावाल) गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१२४३	—— ...	२०७६
१३४१	महेन्द्र सूरि ...	२०.१
१३४६	" " ...	१९१६
१४०५	शांति सूरि ...	१४८७
१४६३	---- ...	११११
१५०१	शांति सूरि ...	११४३
१५६४	" " ...	१५५६
१५६६	" " ...	१३७८
१५७६	" " ...	२०८७
१५१६	धनेश्वर सूरि ...	१५५२
१५२७	" " ...	२११०
१५३०	" " ...	(पृ० २८३) ११८७
१५३४	" " ...	२०८६
१५३६	" " ...	१३३६
१५४२	" " ...	१२३१
१५५७	महेन्द्र सूरि ...	१०३१

निवृति गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४६६	श्री सूरि ...	२०३८

निवृत्त गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५०६(?)	महणं गणि ...	१००३

पंचासरीय गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
११२५	चेलक ...	१८७३

पल्लीवाल गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४५८	शांति सूरि ...	१२३७

संवत्	नाम	लेखांक
१४७६	यशोदेव सूरि	१८८२
१४८२	,, ,,	१६३१
१५१३	,, ,,	१८८७
१५२८	नन्न सूरि	२१११
१५३६	उद्योतन सूरि	१४६२ १५५५

पार्श्वचन्द्र गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५७७	पार्श्वचन्द्र सूरि	१५६१

पिप्पल गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४६१	वीरप्रभ सूरि	१६७५
१५१६	शालिभद्र सूरि	११५५
१५१७	धर्म्मसागर सूरि	२०७३
१५३०	चंद्रप्रभ सूरि	१२२२
१५७०	तिलकप्रभ सूरि	१७२६
,,	गुणप्रभ सूरि	,,

पूर्णिमा(पक्ष) गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३८१	सोमतिलक सूरि	१६२४
,,	श्रीसूरि	,,
१४८५	सर्वानन्द सूरि	१२४१
१४८६	विद्याशेखर सूरि	१३६७
१५०१	गुणसमुद्र सूरि	१५६५
१५११	राजतिलक सूरि	१४८०
१५१७	,, ,,	१६३७
१५१६	,, ,,	१७५७
१५१७	पुण्यरत्न सूरि	२०८५
१५१६	,, ,,	१५६७
१५३२	,, ,,	११६८
१५२१	गुणतिलक सूरि	१७५८
१५३२	,, ,,	१७२८
१५२३	साधुसुंदर सूरि	११५६
१५२६	,, ,,	१२८१
१५४७	जयरत्न सूरि	११११
१५४८	सौभाग्यरत्न सूरि	१७६०
१५५६	मनसिंह सूरि	१२१२

पूर्णिमा गच्छ ।

भीमपल्लीय शाखा ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४८२	जयचंद सूरि	१५६४
१५१५	,, ,,	१३७६
१५७६	मुनिचंद्र सूरि	१३०२

प्राया गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३७४	शीलभद्र सूरि	१०४२

बापदीय गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१२४२	जीवदेव सूरि	१६८४

बोकड़िया गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४५७	धर्म्मतिलक सूरि	१०६१
१४६६	,, ,,	१२४६
१५४६	मणिचंद्र सूरि	११६७
१५५६	,, ,,	१४१४
१५६२	,, ,,	११६६
१५८७	मलयहंस सूरि	११९५

ब्रह्माण गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३२०	वयरसेण उपाध्याय	२०१८
,,	जज्जक सूरि	,,

संवत्	नाम	लेखांक
१३५५	विमल सूरि	१६२२
१३७५	विजयसेन सूरि	१४३४
१४३७	हेमतिलक सूरि	११२३
१४३६	बुद्धिसागर सूरि	११३७
१४६६	धीर सूरि	१३६४
१४८३	,, ,, ...	२१०१
१५१६	,, ,, ...	१५५१
१४७१	उदयाणंद सूरि	२०१६
१५००	विमल सूरि	१३६८
१५१८	,, ,, ...	१०११
१५१६	,, ,, ...	१२६६
१५२४	,, ,, ...	२०८८
१५११	मुनिचंद्र सूरि	१२२१
१५१३	उदयप्रभ सूरि ...	१०८६, १३७४
१५२४	,, ,, ...	१४६५
१५१३	हेमहंस सूरि	१३७४
१५५६	बुद्धिसागर सूरि	११८८
,,	उदयाणंद सूरि	२१०८
१६६३	जाजीग सूरि	२०६७

जावडार(जावड़,जावहेड़ा) गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५०६	धीर सूरि	२०६३
१५२४	भावदेव सूरि	२०६५
१५३७	,, ,, ...	११६५
१५३६	,, ,, ...	१३४२

जिन्नमाल गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५६३	कर्म्मातिक्त सूरि	२०६६

मध्यम शाखा ।

संवत्	नाम	लेखांक
— —	देव सूरि	१६०५

मराहरु(मड्डारुडिय,मडूहड़) गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३५१	सोमतिलक सूरि	१०४६
१४८०	धर्म्मचंद्र सूरि	१०६८
१४८१	उदयप्रभ सूरि ...	१०६६, २०४६
१५२७	नयचंद्र सूरि	१२७६
१५४१	कमलचंद्र सूरि	१३६०
१५४५	,, ,, ...	१३६२
१५५७	गुणचंद्र सूरि	११३०
,,	उ० आणंदनंद सूरि	,,

मधुकर गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५१६	— — —	१७३६

मल्लधारि(मल्लवादि) गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१२३४	पूर्णचंद्र सूरि	१८७५
१३४४	रत्नदेव सूरि	२०६६
१४७६	विद्यासागर सूरि	२१०७
१४७७	मुनिशेखर सूरि	११२५
१५१०	गुणसुंदर सूरि	१६६०
१५१२	,, ,, ...	१७७५
१५१५	,, ,, ...	११५४
१५२२	,, ,, ...	२१०४
१५२५	,, ,, ...	१२३०
१५२७	गुणशेखर सूरि	१२९८
१५३२	पुण्यनिधान सूरि	१२८५

संवत् नाम लेखांक

१५३४ गुणविमल सूरि १३३८

१५५७ गुणवधान सूरि ११६८

१५६६ लक्ष्मीसागर सूरि ११३१

१५८१ „ „ १४८४

१६६६ कल्याणसागर सूरि १८६६

„ उदयसागर सूरि ... ... „

मोढ गच्छ ।

१२२७ जिनभद्राचार्य १६६४

रुद्रपल गच्छ ।

१५७६ श्रीसूरि १६२५

रांका गच्छ ।

१३२० महीचंद्र सूरि १७८०

राज गच्छ ।

१३३६ अमरप्रभ सूरि ... १६५३-५४

१५०६ पद्माणंद सूरि ११७४

१५५२ पुण्यवर्द्धन सूरि १५६१

रामसेनीय गच्छ ।

१४५८ धर्मदेव सूरि १२३६

१५०३ मलयचंद्र सूरि १०८०

१५११ „ „ १०८७

रुद्रपल्लीय गच्छ ।

१२६० अभयदेव सूरि २०२६

१४२१ जिनराज सूरि १०५२

१५१३ सोमसुंदर सूरि १३१५

१५१७ „ „ १२६७

संवत नाम लेखांक

१५३८ देवसुंदर सूरि १६२१

लौंपक गच्छ ।

१६३२ अजयराज सूरि २०३४

१६५३ गंगारिखी यति २०३३

वड गच्छ ।

१५७२ चंद्रप्रभ सूरि १३८६

विजय गच्छ ।

१६२१ शांतिसागर सूरि १५६६-६७

१६२४ „ „ १५११-१८, १५३५, १५४२-४३, १५५६, १५६८, १६००-०१, १६०८, १६१५, १६२३

१६३१ „ „ ... १८०६, १८२५, १८३३

१६३२ „ „ १८२३

१६३३ „ „ ... १७०२-०३

१६४३ „ „ १८२७

विद्याधर गच्छ ।

१४११ विजयप्रभ सूरि १११८

१४१३ विनयप्रभ सूरि २०८४

१५१८ हेमप्रभ सूरि १६२४

१५२० „ „ १३१३

विवंदणीक गच्छ ।

१५१२ सिद्ध सूरि १६५८

१५२४ कक्क सूरि १७२७

वृहद्गच्छ ।

१३१६ हीरभद्र सूरि १३२४

१३३४ — — — १८०१

संवत्	नाम	लेखांक
१३८६	धर्मघोष सूरि	१३९३
१४६१	रामदेव सूरि	१४३६
१४९९	रत्नप्रभ सूरि	१२०७, १६७६
१५०३	मलयचंद्र सूरि	१०८०
१५१९	,, ,,	१०१२
१५०७	सागर सूरि	११५०
१५०८	महेन्द्र सूरि	१५३७
१५१३	कमलप्रभ सूरि	१२६५
,,	सागरचंद्र सूरि	१३७५
१५१८	मेरुप्रभ सूरि	१४०६
१५४२	,, ,,	१२११
१५३१	श्री सूरि	१२२३
१५४२	धनप्रभ सूरि	२१०७
१५५९	मुनिदेव सूरि	१२९७
,,	मनिचंद्र सूरि	१४१४
,,	वल्लभ सूरि	१८९५

व्यवसीह गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३४३	— —	१७०६

षं(सं)डेर(क) गछ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१०३९	यशोभद्र सूरि	१९४८
१२१०	— —	१६८७
१३१७	ईश्वर सूरि	१९५१
१३२८	शाल्य सूरि	१०३९
१३३८	सुमति सूरि	१७०८
१३४२	,, ,,	१८९२
१४२५	ईश्वर सूरि	१४८८
१४६९	सुमति सूरि	१३९५
१४९३	शालिभद्र सूरि	१९३३
१५२०	,, ,,	२००२
१४९४	शांति सूरि	११४१
१४९९	,, ,,	१८५९
१५०१	,, ,,	११४२
१५०६	,, ,,	१८९०
१५०८	,, ,,	१५४८
१५१८	,, ,,	१६३१
१५२७	,, ,,	१५५४
१५३३	,, ,,	१४०८
१५३७	,, ,,	२१०९
१५०५	— —	१०८१
१५१३	ईश्वर सूरि	१०२५
१५१५	,, ,,	१९९१
१५३०	यशचंद्र सूरि	२०४५
१५३-	— —	१९३९
१५३२	— —	१३३७
१५३६	सालि सूरि	१०९९, १२१०
१५४९	सुमति सूरि	१३८३
१५५६	शांति सूरि	१२९६
१५६३	,, ,,	११९०
१५७२	,, ,,	१९९२
१५९९	,, ,,	१३०६
१५८१	ईश्वर सूरि	१४१६
१६८९	भ० मानाजी केसजी	१९६२

साधु पूर्णिमा पक्ष(गछ) ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५०४	पूर्णचंद्र सूरि	१७३२
१५२१	चंद्र सूरि	१३७८
१५३३	जयशेखर सूरि	१३८१, १४०९

सिद्धान्तिक गच्छ।

संवत्	नाम			लेखांक
१४०८	माणचंद्र सूरि	...	...	१४२७

हर्षपुरीय गच्छ।

संवत्	नाम			लेखांक
१५५५	गुणसुंदर सूरि	...	...	१२६५

हुंबड़ गच्छ।

संवत्	नाम			लेखांक
१४५३	सिंहदत्त सूरि	...	...	१०५६

जिनमें गच्छों के नाम नहीं हैं।

संवत्	नाम			लेखांक
६३७	उद्योतन सूरि	...	...	१७०६
,,	वच्छवल देव	...	...	,,
११६६	श्रामदेव सूरि	...	...	१०३३
१२५३	जिनचंद्र सूरि	...	...	१७८५
१२६२	भावदेव सूरि	...	...	१०३५
१२--	सर्वगुप्त सूरि	...	...	१०३६
१३०२	माणिक्य सूरि	...	...	१७८३
,,	जयदेव सूरि	...	...	२०२३
१३१०	परमानंद सूरि	...	...	१७६५
१३३८	,, ,,	...	...	,,
१३२२	जयचंद्र सूरि	...	...	२०४७
१३२३	उद्योतन सूरि	...	...	१०३७
१३३८	श्री सूरि	...	...	११२१
,,	पूर्णभद्र सूरि	...	...	१७६१
१३४०	प्रद्युम्न सूरि	...	...	१३६४
१३६१	विबुधप्रभ सूरि	...	...	११२२
१३७५	जिनभद्र सूरि	...	...	१७६५
,,	रत्नप्रभ सूरि	...	...	१७६५
१४२२	,, ,,	...	...	१०५३
१३८०	पद्मानंद सूरि	...	...	१४३५
,,	जगतिलक सूरि	...	...	,,
१३८६	धर्म्मप्रभ सूरि	...	...	१५०२
१३९९	भावदेव सूरि	...	...	१०४७
१४०५	अभयदेव सूरि	...	...	१८८६
१४०७	गुणप्रभ सूरि	...	...	१०५०
१४०९	सर्वानंद सूरि	...	...	१०५१
,,	सर्वदेव सूरि	...	...	,,
१४२३	शालिभद्र सूरि	...	...	१०५४
,,	अभयचंद्र सूरि	...	...	१०५५
१४३९	— —	...	...	१९२९
१४६८	श्री सूरि	...	...	२०१०
१४७८	,, ,,	...	...	१०६६
१४७०	देव सूरि	...	...	१३९६
१४८४	जयप्रभ सूरि	...	...	२०००
--	जिनरतन सूरि	...	...	१९६३
१४९३	अमरचन्द्र सूरि	...	...	१२४३
,,	धनप्रभ सूरि	...	...	२०८३
१४९६	शीलरत्न सूरि	...	...	१४२२
१४९७	मुनिप्रभ सूरि	...	...	१३३१
१५०१	मंगलचंद्र सूरि	...	...	१३६९
१५०३	धर्मशेखर सूरि	...	...	१७६८
१५०६	सर्व सूरि	...	...	१०८२
१५०९	साधु सूरि	...	...	१२५४
१५१६	श्री सूरि	...	...	११२७
१५३३	,, ,,	...	...	१४७०
१५२१	सुविहित सूरि	...	...	११७५
१५२३	कनकरत्न सूरि	...	...	१५६८

संवत्	नाम			लेखांक
१५५३	धर्मवल्लभ सूरि	...	...	१७७४
१५६७	सर्वदेव सूरि	...	...	१६२७
१५७१	देवरत्न सूरि	...	...	११७१
१५७३	नंदिवर्द्धन सूरि	...	...	१३५६
१५८७	श्री सूरि	...	...	११७२
१५६७	जिनसाधु सूरि	...	...	११६३
१६०४	हर्षरत्न सूरि	...	...	१४६६
१६२२	विजय सूरि	...	...	१६०८
१६६६	रत्नविशाल गणि	...	...	१७१५
१६६३	मतिचंद्र गणि	...	...	१०२८
१७७७	उ० क्षेत्रराम गणि	...	...	१५५७
१७६८	विजयऋद्धि सूरि	...	...	१७४५
१८३१	विद्याविजय गणि	...	...	१२०१
,,	ऋद्धिविजय गणि	...	...	,,
१८५२	लालचंद्र गणि	...		११७८, १४४१
१८५५	लावण्य कमल गणि	...	...	१४१७
१८५६	हेमगणि	...	...	१३४६
१६२०	अमृतचंद्र सूरि	...		१६०७, १६७४
,,	सागरचंद्र गणि	...	...	१८७१
१६३१	विजय सूरि	...	...	१४४६
१६४४	सं० रणधीरविजय	...	...	१४६८
१६६१	चारित्र सुख	...	...	२०६१

जिनमें सम्वत् नहीं है ।

	नाम			लेखांक
...	देव सूरि	...	...	१४१८
...	महप्प गणि	...	...	,,
...	जिनसागर सूरि	...	...	,,
...	उदयशील गणि	...	...	१६१८
...	आज्ञासागर गणि	...	...	,,
...	क्षेमसुंदर गणि	...	...	,,
...	मेरुप्रभ मुनि	...	...	,,

दिगम्बर संघ ।

संवत्	नाम			लेखांक
	काष्ठा संघ ।			
१३६०	तिहुण कीर्त्ति	...	...	११३५
,,	— —	...	...	१२२६
१४६७	जिनचंद्र	...	...	१४८३
१५०६	मलयकीर्त्ति	...	...	१२५२
१५४६	— —	...	...	१३४३
	काष्ठी संघ ।			
१४६७	कीर्त्तिदेवा	...	...	१४२७
१५१०	विमलकीर्त्ति	...	...	१४२८
	नंदि संघ ।			
— —	क्षेमकीर्त्ति	...	...	१७८६
	मूल संघ ।			
१४४३	— —	...	...	१३२०
१४५७	पद्मनंदि	...	...	१००६
१४७२	,,	...	...	१०६३
१५३४	भ० ज्ञानभूषण	...	...	११२०
,,	भ० भुवनकीर्त्ति	...	...	,,
,,	रत्नकीर्त्ति	...	...	१४५८
१५४१	जिनचंद्र	...	...	१०१५
१५६२	,, ,,	...	...	१४४७
१५५२	— —	...	...	१४२६
१६१६	सुमतिकीर्त्ति	...	...	१६३६
१६५२	चंद्रकीर्त्ति	...	...	११३२
१६८६	पद्मनंदि	...	...	१०६५
	जिनमें संघ के नाम नहीं है ।			
१६०८	क्षेमकीर्त्ति	...	...	१४७०

श्रावकों की ज्ञाति-गोत्रादि की सूची।

ज्ञाति – गोत्र	लेखांक
कानू	१०३१
काश्यप	१६६१
किलासीया	१५५२
कुवेरा	१५६३
केकड़िया	१२३६
कोठारी	१०२५, १३५५, १४४१, २०८४
खां(षां)टड़	११६५, १४११, २०६३
खांमलेचा	११५६
खीथेपरिया	१३७५
गहिलड़ा	१२२५, १२७८, १८६६
गादहिया	१०६२, १५४६
गांधी	१४१२, १४३१, १४८६, १६४५, १८४७
गुगलिया	२००२
गूंदोचा	१०६४, १२६४, १३८५, १६०१
गोठ	१३८८
गोलवछा	१८३६
घांघ	१४८४, १८६६, १९६०
घोरवाड़	२०४६
चउथ	१५६०
चलउट	१२३२
चलद (!)	१०८७
चिपड़	१०८३
चोपड़ा	१३५५, १५५७
चोरड़िया (चोरवेडिया)	१०२४, १३५५, १४५२, १४६७, १५२४, १५३०, १५७६, १५८६, १६००, १६०८, १६८५
चंडालिया	११६८, १२८५
छजलाणी	१३४६
छाजहड़ (छाजेड़)	१५११, १५१३, १५३१, १८८२, १८८६-८७, २१११
छाहखा	१४८१
छोहविया	१४०१
जढड़ (जहड़)	११५०, १२८६
जाइलवाल	११८०, १३२६, १५३८
जाजा	१६४०
जोजाउरा	१०६०
टप	१३०४, १६३६
ठाकुर	२०८६
डवेयता	१०१३
डागलिक	१७३३
डागा	१५६५, १६०४
डांगरेचा	११०७
तातहड़	११८६
ताल	१०८८
ताहि	१०६५
तेलहरा	१०६६
धुंभ	१२६०
दढा (दरडा)	११६७, २०२२, २०३१
दूगड़	१०१७–१८, १०२२, १०२७, १२६७, १२८०, १४६८, १६२५, १६७४, १७०१–०३, १८१० –१२, १८२१–२२, १८२४, १८२६, १८३६, १८४४, १८६५, २०३२
दूधेड़िया	२०३४
दोसी	१३३५, १५५०
धरकट	१२०७
धरावहो	१२६०
धाड़ीवाल	१४२५,

ज्ञाति — गोत्र	लेखांक
बच्छारा	११५४
बड	१४७०
बड़ाहड़ा	१२४०
बर्द्धमान	१३६६
बमा	१६७३
बायचांणा	१८४०
बासुत	१०८१
वाहना	१७१२
विणवट (दिंवट) ...	१०६०, १८८३, २०६८
विद्याधर	१०१२
वि···क	१३७४
विमल	१०८६
बोरोलिया	१४६२
वैद (मुहता) ...	१४७८, १५१२, १५१४–१५, १५३४
वोहड़	१३६६
वौकरिया	११६६
शंखवाल (शंखवालेचा)	...११६६–६७, १२६८, १५६२, १८८५, २०१२, २०८२
शोसोद्या	१२१०, १४१६
शुभ	१३३६
श्रेष्ठि	१२५६, १२७१, १२६३, १३६२, १३६०, २०५२
समदड़िया	२०७०
साउसुखा	१८१३–१४
साघु(खु)ला	१०७७, १०६८
साहलेचा	१६३१
साहु	१७२५
सिघड़ठ	१०८२

ज्ञाति — गोत्र	लेखांक
सिंघाड़िया	१२११
सीतोरेवा	१२३१
सुचंती ...	११४८, ११८३, १३३२, १३७३, १४३५, १४६४, १५१८, १५३५, १५६६–६८, १६०१, १६४१–४२, २०३३, २०३५-३६
सुराणा ...	१०७६, १११३, ११७४ ११६१, १२३८, १३०३, १३२६, १३५६, १४२३, १४७४, १५६६, १६२०, १६६३, २०५३
सेठ ...	१६४७–४८, १६५०–५१, १६५३–५५
सेठिया	१३५५
सोनी ...	१४५५, १६२१, १७६६, १६०६
हट्टवाग्रि	१२३७
हुंडोयुरा	१६०३

ओसवाल [साधुशाखा] ।

— — —	१२५५

ओसवाल [लघुशाखा] ।

— — —	१२५५

गोत्र ।

फुमण	१३०६
बुरा	,,

खंडेलवाल ।

गोत्र ।

पहाड्या	१४५८

गुर्जर ।

— — —	११३४, १३७६

ज्ञाति—गोत्र	लेखांक
गोत्र ।	
भणशाली	१६८६
गेपुत्रोवाल ।	
— — —	१८६२
जसवाल ।	
— — —	१४४७
दीसावाल ।	
— — —	१७०७, १७११
नागर ।	
— — — ...	१३८७, १६१४, १६४२, २०४४
गोत्र ।	
आलिग ण	१३५६
पल्लीवाल ।	
— — — ...	१७१८, १७६१—६२
पापड़ीवाल ।	
— — —	१०१५
प्राग्वाट [पोरवाड़] ।	
— — —	१०१४, १०२६, १०२८—३०, १०४७, १०५३—५४, १०६१, १०६६—६७, १०६६, १०७१, १०७६, १०८४—८५, १०६१—६२, १०६७, ११००—०४, ११२५—२६, ११३०, ११३६, ११४६, ११६०—६१, ११६४, ११७०, ११७२, ११८५, ११६३, ११६८, १२१३, १२४१, १२५८, १२६०, १२६८, १२७२—७३, १२७६, १२८३, १३०८, १३१४, १३१६, १३२२, १३२७, १३३१, १३५४, १३६१, १३७८, १३८१—८२, १३६१, १४०२—०३, १४११, १४३७, १४६५, १४७७, १४६६, १५४६, १५६१, १५६६—७०, १५७२, १६०२, १६४३, १६६५, १७१३—१४, १७२३, १७३०—३२, १७३५, १७५१—५४, १७५६, १७६१, १७७६—८०, १७८८, १७६३, १७६५, १७६६, १८८०, १८८४, १८६१, १६०२, १६११, १६१६, १६२४, १६२७, १६३८, १६६६, १६६८—६६, १६७३, २०१६—१७, २०२४, २०४८—४६, २०५१, २०५४, २०६०, २०७६, २०८६, २०६०
गोत्र ।	
अंबाई	१२१४
कोठा०	१२५०
कोड़की	१३०८
नाग	१७४३
भंडारी	११९६
प्राग्वाट [लघुशाखा] ।	
— — —	१६१४
बघेरवाल ।	
— — —	१५६४
वायड़ा [वायट] ।	
— — —	१२१६, १३२३, १५७७, १६२०, २०७५, २१०६
नदेवरा ।	
— — —	१६३१

ज्ञाति – गोत्र … लेखांक

ज्ञाति – गोत्र	लेखांक	ज्ञाति – गोत्र	लेखांक
चंडेजरिया	१३६७	वम्रआतोय	१६११
चंदवाड़	११३२	विणचट	१०६०
छाहड़ा	१४८१	विगड़	१९३४
तहट	१३४०	वेलुयुतो	१८३३
दहवहड़ा	१०८०	षटगड़	१२५१
फाफटिया	१२४७	सापुठा	१२२०
भाईलेचा	१५५५	सामलिया	१५३७
मुठिया	१२५७	हिंगड़	११५२

शुद्धि पत्र ।

पृ०	ले०	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	ले०	अशुद्ध	शुद्ध
१२	१०५६	१४३६	१५३६	१५१	१६६५	१९७७	१८७७
„	१०५७	कारंट	कोरंट	२१३	१८३४	१८०८	१८८८
२०	११०३	नंदकल्याण	जयकल्याण	२२४	१८७१	१०२०	१९२०
३०	११६२	जिनचंद्र	जिनभद्र	२३५	१९२३	१३५६	१३७६
„	„	जिनभद्र	जिनचंद्र	२४४	१९६०	१४२५	१४९५
३६	११९५	द्राराविजय	हीरविजय	२६५	२०३६	पावापुपी	पावापुरी
५४	१२८७	जिनचंद्र (१)	जिनभद्र	प्रतिष्ठा स्थान	(उधमण)	२०७०	२०७९
६०	१३१७	„	„	„	(चारकवांण)	२०५२	२०६१
८२	१४१५	जिनराज	जिनहर्ष	„	(ग्यारकवांण)	२०५३	२०६२
११६	१५१२	१८२४	१९२४	„	(दौलताबाद)	२०४८	२०५८